ख़ुलवात
ज़ुलफ़क़ार फ़क़्कीर

इफादात
हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबंदी
तारीख़
प्रोफ़ेसर मुहम्मद असलम नक़्शबंदी
खुल्वात
जुलफ़क़ार फ़क़ीर
5
हज़रत मौलाना जुलफ़क़ार अहमद साहब नक़शबंदी
वर्तीब
प्रोफ़ेसर मुहम्मद हनीफ़ नक़शबंदी मुज़द्दी

फरीद बुक डिपो (प्रविभ) लम्नीद
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002
# फृहरिस्त-मज़ामीन
## विषय-सूची

<table>
<thead>
<tr>
<th>उन्नवान</th>
<th>पेज नं</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>शुक्र-ए-इलाही</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>अल्लाह तअाला की कारीगरी का नमूना</td>
<td>27</td>
</tr>
<tr>
<td>ईमान की दौलत एक बड़ी नेमत</td>
<td>28</td>
</tr>
<tr>
<td>शुक्र का एहसास</td>
<td>29</td>
</tr>
<tr>
<td>एक बहुत बड़ी कमी</td>
<td>30</td>
</tr>
<tr>
<td>पलकों की नेमत</td>
<td>30</td>
</tr>
<tr>
<td>बेक्टीरिया से हिफ्फाज़त</td>
<td>32</td>
</tr>
<tr>
<td>बायरस से हिफ्फाज़त</td>
<td>32</td>
</tr>
<tr>
<td>शिकवे ही शिकवे</td>
<td>33</td>
</tr>
<tr>
<td>हालात की जंपीरें</td>
<td>33</td>
</tr>
<tr>
<td>रिश्क की तक्सीम</td>
<td>34</td>
</tr>
<tr>
<td>शुक्र का एहसास पैदा करने का तरीक़ा</td>
<td>35</td>
</tr>
<tr>
<td>नेमतों में बहुततरी और कमी के उसूल और कायदे</td>
<td>35</td>
</tr>
<tr>
<td>ज़बानी और जिस्मानी शुक्र</td>
<td>35</td>
</tr>
<tr>
<td>दो तरह की नेमतें</td>
<td>36</td>
</tr>
<tr>
<td>आँखों की नेमत</td>
<td>36</td>
</tr>
<tr>
<td>अंक</td>
<td>शीर्षक</td>
</tr>
<tr>
<td>------</td>
<td>--------------------------------------------------</td>
</tr>
<tr>
<td>57</td>
<td>दोलन की नैमन्त्व की कहार</td>
</tr>
<tr>
<td>58</td>
<td>मुन्ने की बातचीत की कहार</td>
</tr>
<tr>
<td>59</td>
<td>टेप के नियम की नैमन्त्व</td>
</tr>
<tr>
<td>60</td>
<td>मौसे की नैमन्त्व</td>
</tr>
<tr>
<td>61</td>
<td>गुज़िल की नैमन्त्व</td>
</tr>
<tr>
<td>62</td>
<td>मीठी-मीठी नबीह</td>
</tr>
<tr>
<td>63</td>
<td>फवदाद फ़ंजाने से निजात</td>
</tr>
<tr>
<td>64</td>
<td>ठीक ठीक की नैमन्त्व</td>
</tr>
<tr>
<td>65</td>
<td>ब्रॉक्स ग्रे मी नैमन्त्व</td>
</tr>
<tr>
<td>66</td>
<td>हमारी हानि</td>
</tr>
<tr>
<td>67</td>
<td>अल्लाह नज़ारा की नैमान्तों का श्रमाह</td>
</tr>
<tr>
<td>68</td>
<td>नैमन्तों की नाक़दियों का बदलान</td>
</tr>
<tr>
<td>69</td>
<td>मूलक नर्ण का ख़ीस़ा का लिखान</td>
</tr>
<tr>
<td>70</td>
<td>अल्लाह नज़ारा की परमांत</td>
</tr>
<tr>
<td>71</td>
<td>हमारे शिक्षकों की अमल विद्यार</td>
</tr>
<tr>
<td>72</td>
<td>सुधार नज़ारा के एहसान</td>
</tr>
<tr>
<td>73</td>
<td>शुक्र की बोधी का खंडान</td>
</tr>
<tr>
<td>74</td>
<td>कौमा सवा पर अल्लाह नज़ारा की नैमन्त्व</td>
</tr>
<tr>
<td>75</td>
<td>शुक्र करने के समेक</td>
</tr>
<tr>
<td>76</td>
<td>ऐवंदों की प्रदापाशी</td>
</tr>
<tr>
<td>77</td>
<td>मीला की तारीफ</td>
</tr>
<tr>
<td>78</td>
<td>पियानों के साथ हमन सलुक करना का तरीका</td>
</tr>
<tr>
<td>79</td>
<td>&quot;अल्लाहुद्दील्लाह&quot; कहने का आदर</td>
</tr>
<tr>
<td>80</td>
<td>फ़िक की पड़ी</td>
</tr>
<tr>
<td>81</td>
<td>नीन आदर्शों का आज्ञातिक</td>
</tr>
<tr>
<td>सब्ज़ की वर्धकतें</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>-----------------</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>हालात का बदलाव</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>खुशी और गुम के असवाब</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>शैतान का वररूपाना</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>जन्नत का दाख़िला</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>चिराग़ बुझ जाने पर अज़ व सवाब</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>मरीज़ के लिए अज़ व सवाब</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>आयत तरीमा की फज़ीलत</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>मरीज़ की दुआ खुशुल होती है</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>सेयदना अस्सूब अल्लाहसल्लाम का सब्ज़</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>हज़रत अस्सूब अल्लाहसल्लाम को तीन इनाम</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>अल्लाह तआला की नरफ़ से हज़रत अस्सूब</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>अल्लाहसल्लाम की बीमारपुर्सी</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>
| सब्ज़ किसे कहते हैं?
| बेहतरीन हिकमतें अभाली |
| महबूबा और महबूब का बदलाव |
| अल्लाह तआला से जंग... अल्लाह बचाए |
| नवी अकरम सल्लाल्हु अल्लाहिं यस्ल्लाम के हासिदीन |
| इनाम आज़म अबु हनीफा रहो का सब्ज़ |
| सब्ज़ के दर्जा
| ताइवान का सब्ज़ |
लिखिते का सब
сидूदीक़ीन का सब
सब दर्जों के बुलंद होने का सच
पुराने आँखों का वदला
बिता हिसाब जन्नत में दाखिला
अल्लाह तअला की तरफ़ से माज़रत
अल्लाह तअला के हाँ परीब्ठ लोगों की कृदर
एक कीमती बात
आमिरों के पास खुसुमुद की वजह
सैय्यदना सिददीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु का फरमान
सैय्यदना उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का फरमान
हज़ुरत उस्मान ग़ौनी रज़ियल्लाहु अन्हु का फरमान
अल्लाह की मदद के लिए एक सुनहरी उसूल
एक इल्मी नुक्ता
पहली दलील
दूसरी दलील
हम बदला न लेने
कवहरियों में मुक़तमेबाजी क्यों?
परेशानी दूर करने का आसान नुस्खा
सब छुदा तअला के साथ लेने का ज़रिया
बिद्धा का अजीब बहाना
तम्मान के बाद डे आसानियाँ
परेशानी और खुशहाली में अल्लाह वालों की कैफ़ियत
gुनाहों का कप़फ़ारा
एक सहायता रज़ियल्लाहु अन्हा की
sबक़्क देने वाली दास्तान
इस्लाम और मगरिबी (वेस्टन) समाज

<table>
<thead>
<tr>
<th>विषय</th>
<th>पृष्ठ संख्या</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>अमेरिका का सफर</td>
<td>99</td>
</tr>
<tr>
<td>नई टेक्नोलॉजी</td>
<td>100</td>
</tr>
<tr>
<td>मिट्टी होने के भाव</td>
<td>100</td>
</tr>
<tr>
<td>चाँद पर बैद्ध भक्ति की आँख का फोटो</td>
<td>100</td>
</tr>
<tr>
<td>रूस-अमेरिका अमन समझौते का इजाहार</td>
<td>101</td>
</tr>
<tr>
<td>वक्तृत्व में युगलत्वें में कंप्यूटरों की तापाद</td>
<td>101</td>
</tr>
<tr>
<td>जेनेटिक्स इजीनियरिंग की नई खोजें</td>
<td>102</td>
</tr>
<tr>
<td>कांग्रेस को मुक्त करने की तरफ़ इशारा</td>
<td>103</td>
</tr>
<tr>
<td>पेट्र खोले बगैर आप्रेशन</td>
<td>103</td>
</tr>
<tr>
<td>बगैर आप्रेशन फंसें से गोली निकालना</td>
<td>104</td>
</tr>
<tr>
<td>यूरोपियन लोगों का दावा</td>
<td>105</td>
</tr>
<tr>
<td>शहीदपरस्ती का जोर</td>
<td>105</td>
</tr>
<tr>
<td>मगरिबी समाज के मसवत (पोजिशनिंग) पहलू</td>
<td>106</td>
</tr>
<tr>
<td>स्वीडन के बजारे आतंक का इस्तेफा</td>
<td>106</td>
</tr>
<tr>
<td>अपोजिशन लीडर की नालाख्की का अजीब बाफ़्तिया</td>
<td>107</td>
</tr>
<tr>
<td>पारिवारिक के मेम्बरों की माजमत</td>
<td>108</td>
</tr>
<tr>
<td>यूरोप में समाजी हँसकूँ का ख्वाल</td>
<td>108</td>
</tr>
<tr>
<td>अंदरून व बैलून मुल्क में सियासी पहचान</td>
<td>110</td>
</tr>
<tr>
<td>पढ़ाई-लिखाई का ख्वाल</td>
<td>110</td>
</tr>
<tr>
<td>रूस की एक अजीब शिकायत</td>
<td>111</td>
</tr>
<tr>
<td>बच्चों की तरिकियत</td>
<td>111</td>
</tr>
</tbody>
</table>
कायदे-क़ानून
मुग़ली समाज के मन्नई (नंगेटिव) पहलू
माँ-बाप की बदहाली
व्यवन में तलाक की दर
भीया-भीयी में मुहब्बत की कमी
इस्लाम की वरक्त
औलद के बारे में तसब्बुर
eक वूढ़ी औरत की बदहाली
कुछ अच्छा है या मां
जर्मनी में बेटी से बाप की बदसलूकी
इस्लामी सोसाइटी में बेटी का मकाम
माँ की अज्ञात
फ़िक़ की बढ़ी
फ़िरौगियों (अंग्रेज़ों) एक से सवाल
फ़िरौगियों का इस्लाम खुबूल करना
पुरसुखूल ज़िंदगी का राज
मुहब्बत ही मुहब्बत होगी
इस्लाम में ईसार की रोशन मिसाल
eक मुसलमान सफ़ीर की बदहाली
अंग्रेज़ लड़कियों से शादी
महिद में मीनार या रॉकेट लांचर
nमाजियों के लिए परेशानी
अमेरिका में इस्लामिक सेंटर का क्याम
mसलमान नौजवानों की सरगर्मियाँ
eक अंग्रेज़ नौजवान का इस्लाम खुबूल करना
एक क़मती उस्तूल
एक नौजवान का इस्लाम क़बूल करना
तीन दिलचस्प सवाल
जेलों में इस्लाम की तबलीग
इस्लाम की तासीर
स्वीडिश के नज़ीक मुहम्मद अरबी सल्लाल्हु अलैहि
वसल्लम का मक़्राम
एक सच्चे आशिक का वाकिफ़ा
एक स्वीडिश नौजवान का इस्लाम क़बूल करना
आस्ट्रेलिया में एक लड़की से बातचीत

तहजुद की पाबंदी

ईसानियत का मक़्राम
बेअमली की बुनियादी बजह
मगर दिल न बदला
हमारी बदलाली
पहले ज़माने और मोजुटा ज़माने का मुक़्ताबला
तहजुद से महसूसी की बजह
tहजुद के वक़्त फ़रिश्तों की तीन जमानें
1. धर्मशास्त्रों टेकर सुलाने वाले फ़रिश्ते
2. परंपरा कर जगाने वाले फ़रिश्ते
तीन घंटों की नींद तीन मिनट में
फ़रिश्तीन की करवट बदलने वाले फ़रिश्ते
एक मिसाल से बज़ाहत
| नौजवानों की बदखाली               | 152  |
| एक मुग़लता और उसका जवाब       | 153  |
| सल्तनत के जवाल की अलामत        | 154  |
| नूर पीर दा बेला                  | 154  |
| नेक लोगों के कृहत का दौर         | 155  |
| कीमियाके अहमर से कीमती शव्हिस्त    | 155  |
| तीन रतों में नबी अकरम सल्लल्लहु अलैहि | 156  |
| बसल्लम की निष्ठात               |      |
| जिक्रों इलाही के फायदे            | 156  |
| मियान-बियान के चक्त की तक्सीम    | 157  |
| बाबूजु जिगंगी गुज़ारने की तड़प   | 157  |
| एक बांदी का इबादत का जोक्क     | 158  |
| रोज़ाना सतर तबाह करने वाले बुरुंग   | 160  |
| हजरत इमाम शाफ़िई रहो का शौकें इबादत   | 160  |
| एक अनमोल तमन्ना                   | 160  |
| सईद विन झुवेर रहो को जोक्के इबादत | 161  |
| तहज्जुद की नमाज और सौ सुपए     | 161  |
| तहज्जुद से महरुमी की इलाज       | 162  |
| शक बाले लुक़मे की नसुनत         | 162  |
| तहज्जुद से महरुमी की एक अजीब वजह | 163  |
| व्यालिस साल तक तिनायत कुरआन पाक का मामूल   | 163  |
| सताइस साल से अवज्ञिन की पाबंदी  | 164  |
| एक औरत का इबादत का शौक      | 164  |
| दौरे हाज़िर की मुसीबत         | 165  |
| इबादत का शौक कैसे पेदा होता है? | 165  |
शब बेदारी (रात को जागने) की बरकतें 165
शब जिंदादारों का एकांत 166
बगैर अज के जागने वाले लोग 167
जागकर कौन से आमाल किए जाएं? 167
खशियत इलाही की पहचान 168
अजाजील से शैलान बनने की पाँच वजहात 168
कृत्सनित तोबा की पाँच वजहात 169
हमारी जिम्मेदारी 169
बजाज आशानाई 170
एक मिसाल में वजाहत 170
हमारे लिए दया और उनके लिए पिज़ा 171
मस्जिद में गधा 172
खुशी का सौदा है 172
वैज्ञानिक करते हुए हज़रत हाजी इमराजुदुल्लाह मुहाजिर मनकी रहौ की कैपियत 172
जान बख़्शी 173
रहमानियत में ज़हिरी फ़ासलों की हैसियत 173
जमाअती क़म की फ़ज़ीलत 174
पिछने रमज़ानुल मुबारक की धकावट 174
नफ्त पर बोझ डालिए नफ्त पर बोझ डालिए 175
शब बेदारी का प्रोग्राम रखने की वजह 175

मज़ूबों की पुर-असरार (राज़ भरी) दुनिया 178
दुनिया में ज़हिरी असवाब की अहमियत 178
कुदरते इलाही का इजहार

नगर यह कुदरत का ज़हूर है

स्थानी असबाब

दो तरह के इतिहासात

1. फारिश्तों के ज़रिए

2. इसानों के ज़रिए निजाम

खुदाई निजाम

कुलुय इशांद के फराइज़

कुलुय मदर के फराइज़

कुलुय इशांद की फ़ज़ीलत

मजबूत और मजबूत में फर्क़

मजबूत बनने के लिए तथा खड़ा करें

मजबूत की किस्में

1. वहबी मजबूत

2. कस्बी मजबूत

हज़रत बाबूजी अबुदुल्लाह रहो

पर एक मजबूत का वार

एमबीसीएस डाक्टर अब्दुल अब्दाल कैसे बना?

मजबूत की एक खास कैफियत

कामिल मजबूत की पहचान

मजबूत लांड़ों का जन्म तें दाखिला

मजबूतों के हेस्तअली वाकिबात

मजबूत की दुआ के समरात

इब्ल अरबी रहो की एक मजबूत से मुलाक़ात

179
180
180
180
180
181
182
182
182
183
183
184
185
185
186
186
186
187
189
189
189
190
190
191
शर्म व हया

सीता तैयारा के मुख्तिलफ़ पहलू
• हया ईमान का शोषा 203
• नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेहि कसल्लम की शर्म व हया का आलम 203
• ग़ैरत का भक्ताम 203
• इस्लामी शरीरात का हुसून 204
• बेपर्वा औरत का अंजाम 205
• यमन से मदीना तक शर्म व हया का आलम 205
• बातिन पर मेहनत करने की जुल्तत 206
• आजकल की तबियातों की हालत 207
• बातिनी बीमारियों की अलामत 207
• मोमिन की मिसाल 208
• मौत कब आएगी? 209
• ईमाम आज़म अबू हनीफ़ा रह० में शर्म व हया 209
• एक औरत की पाकपूरी से कुह्तसली खत्म 210
• शर्म व हया से करोबारी परेशानी का ख़ात्मा 211
• ईमान का मज़ा हासिल करने का तरीक़ा 212
• कुबूलियते दुआ का लम्हा 212
• ज़िना के करीब भी न जाओ 213
• बदकारी की बजह से उपर में कर्मी 213
• सहाबा किराम रज़िय़ल्लाहु अन्हु में शर्म व हया का आलम 214
• जलदी बंद होने वाला दरवाजा 214
• दो आज़ा की दोहरी हिफ़ाज़त 215
• हैदराबाद उस्मान रज़िय़ल्लाहु अन्हु में शर्म व हया 216
• शर्म व हया पर अल्लाह की मदद के करिश्मे 216
बीबी मरयम की पाकड़तमनी की गवाही 216
हज़रत युसुफ अलेहिस्लाम की पाकड़तमनी की गवाही 222
उम्मुल मोनिनीन हज़रत ख़दीजा रज़िय़ल्लाहु
अन्हा की दास्ताने वफा 222
सैयदा आएशा सिद्दीका रज़िय़ल्लाहु अन्हा की हज़ूर
अकरम सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम से शादी मुबारक 224
आएशा रज़िय़ल्लाहु अन्हा की खुसुसियत 225
उम्मेद अबुल्लाह आएशा रज़िय़ल्लाहु अन्हा 225
हज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम को
आएशा रज़िय़ल्लाहु अन्हा से मुहब्बत 226
हज़रत आएशा का हज़ूर के संबंध में मुकाम 226
हज़रत आएशा का फ़िक्र में मुकाम 227
हज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम की तरफ से
उम्महातुल मुमिनिन ने इक्तिमार 227
सैयदा आएशा रज़िय़ल्लाहु अन्हा की
pाकड़तमनी की गवाही 227
इस्लाम में बेटी का मुकाम 237
नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम
tको आदरते मुबारका 237
इस्लाम में बहन का मुकाम 238
इस्लाम में वालिदा का मुकाम 239
चाँद देखना सुन्नत है 239
हज़रत फ़ातिमा रज़िय़ल्लाहु अन्हा में शर्म व हया 239
तीन दिन का फ़ाका 240
परशानियाँ ख़त्म करने की तरीक़ा 241
तीन बड़ी नेमतें

- पहली बड़ी नेमत 244
- अक्ल की तफरीह तहकीक 245
- जननत में अक्ल के मुताबिक दो दर्जें 245
- अक्ले मज़ाश 245
- अक्ले मज़ाद 246
- दूसरी बड़ी नेमत 247
- इमाम बेहदी और सिलसिला नवशंषबदिया 249
- तालिब इलम के एक-एक कदम की फ़जीलत 249
- इलम की फ़जीलत 249
- सैयदना सुलेमान अल्लाहिस्सलाम और इलम 250
- एक हज़ार रहमतें 250
- इलम और मक़रमे इल्लाहियीन 250
- इलम और मुहब्बते इलाही 250
- आलिम के इक़राम का फल 251
- आलिम का साथ नबी अकरम सल्ल्लाहु 251
- अलेहिः वस्त्तल वा साथ 251
- कुयामत के दिन उलमा का इकराम 252
- नबी अकरम सल्ल्लाहु अलेहिः वस्त्तल की दायत 252
- इलम का मक़हूम 253
- बुरे उलमा के पैट की बदबु 254
• ख़िज़ीर के गले में मोती
• इमाम बुखारी रह० और इल्म की कृति
• चमेली के फूल से मिसाल
• आलिम और जाहिद में फूंकूँ
• उलमा उम्मत का आईना
• बुरे उलमा और सही उलमा का किरदार
• गुमराही के राते
• इल्म और अंविया अलैहिमसलाम
• तक्कवीनी उलूम में हज़रत ख़िज़ीर अलैहिसलाम की फृजीलत
• दो बूढ़ों में मुहब्बत इलाही
• ऊलुज़-इल्म में आम लोगों को दाखिल करना
• तीसरी बड़ी नेमत
• हज़रत अकबर शानबी रह० का इशाद
• हज़रत मुज़हिद अलफ़सानी रह० और अदब
• क़िब्ला रख़ बैठने की फृजीलत
• अल्लामा! अनवर शाह कशमीरी रह० का अदब
• जादूगर और अदब
• हमारे सजदों की कैफ़ियत
• नबी अकरम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लाम और अदब
• एक अलीव वाक़ि़आ
• अदब हसिल करने का तरीक़ा
• ख़शियते इलाही किसे कहते हैं?
• माईय़ते इलाही
• मरयम रज़िय़ल्लाहु अन्हा और माईय़ते इलाही
• अंविया किराम पर असबाब का असर
• मोलाना इलायस साहब रहो का इर्दगिर्द 272
• मरयम रज़ियल्लाहु अन्हा पर असबाब का असर 272
• अल्लाह से लौ लगां लो 273
• दो नंबर मज़नूँ 275
• ख़शियते इलाही अल्लाह तज़ाला से 276
• मुलाक़ात का ध्यान रहना है 276
• असलाफ में ख़शियते (ख़ोफ़े) इलाही 276
• मोलाना हुसैन अली और ख़शियते इलाही 276
• आख़िरत का जहेज़ 277
• सैय्यदना सिह़दस़े अकबर में ख़ुदा का ख़ोफ़ 279
• हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु में ख़ुदा का ख़ोफ़ 279
• मोलाना आहमद अली लाहौरी रहो में 280
• अल्लाह का ख़ोफ़ 280
• एक मुहिद्दिन में अल्लाह का ख़ोफ़ 281
• फिक़ की घड़ी 281
• कुरआन मज़ीद के आईने में हमारी तस्सीर 282
• चटाइयों की इज़ज़त 283
• असलाफ का अल्लाह पर तत्वकलुल 284
• इल्म का तक़क़ाज़ा 284
• अल्लाह के बंदों की तलाश 285

***

हज़ूक़ुल इबाद

• बीच की राह 287
• दो किस्म के हज़ूक़ 287
| वे भी मरीज़ वे भी मरीज़ | 288 |
| पौज़े महंतर अल्लाह तबाता का पैलान | 288 |
| बहनी इवाइल को तंबहीह | 289 |
| दो इस्लामों में इश्क़लाफ़ | 289 |
| सीना-ब़े-कीना का मतलब | 290 |
| एक आशिके रसूल का वाक़िउ़ा | 290 |
| शुक्रिया अदा करने की अहमियत | 292 |
| गुस्सा पीने की फ़ज़ीलत | 292 |
| अक़ू़ की ज़क़ात | 293 |
| इस्लामों की दो क़िस्में | 293 |
| कमीने आदमी की मिसाल | 295 |
| मिराँ से बीमार के शिकवे | 296 |
| मगरस्वाय के आँसू | 296 |
| इमान की क़दर | 297 |
| एक अज़ीब वाक़िउ़ा | 297 |
| ग़लतफ़हमी का नुक़सान | 300 |
| पहलवान कौन है? | 300 |
| बांझ औरत कौन है? | 300 |
| ग़रीब कौन है? | 301 |
| ज़ब़ान की बेहतरियाती | 302 |
| मौत के बाद इस्लाम के पाँच हिस्से | 302 |
| हसद का वबाल | 302 |
| ग़ीतक का वबाल | 303 |
| भला धानिया एक पतंजाली लिप्त | 303 |
| मुसलमानों के हकीक़ | 304 |
इल्म, अपल और इ्ज्लास

- इज्जत मिलने के दो ज़रिए 314
- इल्म की फ़जीलत माल पर 315
- माल की वेसवती 316
- इल्म और मिहालत का मुकाबला 318
  कुरान पाक की राशनी में 319
- इल्म की फ़जीलत कुरान मजीद से 319
- हजरत आदम अल्हिस्सलाम की मिसाल 320
- हजरत बाओद अल्हिस्सलाम की मिसाल 320
- हजरत सुलेमान अल्हिस्सलाम की मिसाल 321
- हजरत यूसुफ अल्हिस्सलाम की मिसाल 322
- हजरत ईसा अल्हिस्सलाम की मिसाल 322
- हजरत ख़िस्र अल्हिस्सलाम की मिसाल 322
- ह्वा पर हुयम 327
- जमीन पर हुयम 327
- आग पर हुयम 328
- पानी पर हुयम 328
- बेतुलमुकदस कैसे पत्ते हुआ 328
- चिराग़ इल्म जलाओ 329
- चिराग़ इल्म जलाओ बड़ा अंधेता है 330
- नबी अकरम सल्लाल्लाहु अल्लाह वसल्लम की बेहतीरीन दुआ 331
- फ़िक की घड़ी 333
- युनाहें की माफ़ि किस तरह मांगे 333
- अपनी “मैं” को मिटा दीजिए 335
- रब्बे करीम का दरवाजा 335
- अल्लाह को राजी कर लें 336
- एक देहाती की अजीब दुआ 336

***
दिल प्यारे नसीहत

- इस्लामी ज़िंदगी में तीन दिनों की अहमियत 338
- सबसे बड़ा धोका 339
- उम्र के मौसम 340
- कामयाब इस्लाम 340
- जन्मत दो कृदंत 340
- बुरे लोगों की निशानी 341
- मुहब्बत हो तो ऐसी 342
- सबसे बुरा शख्स 342
- इतनी सख्त बईं 343
- तहज्जुद की नमाज से महर्भी की बजह 343
- अपनी फ़िक्र कीजिए 344
- ज़िक्रे इलाही की अहमियत 344
- एक इलाही नुक्ता 345
- बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहम के मआरिफ 345
- इस्लामी सत्ता का यर्दा 345
- जहज्जम से बचने का मतलब 346
- गुनाहों का कपाशारा 346
- तीन क़िस्मों के गुनाहों से निज़ात 346
- अल्लाह ताआला की रज़ा की दत्तील 347
- नेमतों की क़दवानी 348
- अल्लाहुद्दुल्लाह कहने पर इनामात 348

- क़लिमा तैय्यबा में छः नकात (नुक्ते) 349
- पहला नुक्ता 349
• दूसरा नुक्ता
• तीसरा नुक्ता
• चौथा नुक्ता
• पाँचवा नुक्ता
• छठा नुक्ता
• मसनून दुआओं के दो बड़े फ़ायदे
• आफ्निखण्ड का मतलब
• रोज़ा और बातिनी तरक्क़ी
• अबियाए किराम अल्लाहुस्सलाम और नफ़्ली रोज़े
• हज़रत आदम अल्लाहुस्सलाम और अवयामे बीज के रोज़े
• हज़रत अबुदुल्लाह रज़ियल्लाहु अल्लाहु की एहतियात
• ख़ैरख़ाफ़ी की अभिमत
• ख़ैरख़ाफ़ी की एक उम्मा मिसाल
• अस्ताबे कह़फ़ का कुला जननत में
• मुहब्बते इलाही में एक एहतियात
• हज़रत इब्राहीम अल्लाहुस्सलाम का मुहब्बते इलाही में मुक़ाम
• हज़रत याक़ूब अल्लाहुस्सलाम का मुहब्बते इलाही में मुक़ाम
• एक उस्कुली बात
• हज़रत मूसा अल्लाहुस्सलाम और दीदरे इलाही
• एक इलमी नुक्ता
• तौहीद का सबक
• बज़नुूँ के ज़र्वात
• परिन्दों के अंडे और मज़ाकफ़त के नोटी
(24)

* शैतान से बचने का हंदियार 363
* दिल की कुंजी 364
* मुहब्बते इलाही का गुलबा 365
* हज़रत मारुफ़ करबी रहौ पर मुहब्बते इलाही का गुलबा 365
* वरकटों वाला नाम 366
* “अलिफ़” और “बा” के मारिफ़ 367
पेटा लापुर्जा

الحمد لله الذي نور قلوب العارفين بنور الإيمان وشرح صدور الصادقين بالتوحيد والإيمان وصلى الله تعالى على خير خلقه سيدنا محمد وعلى اله واصحابه اجمعين اما بعد.

इस्लाम ने उम्मते मुसलिमा को ऐसी मशहूर हस्तियों से नवाज़ा है जिनकी मिसाल दूसरे मज़हबों में भिलना मुश्किल है। इस एतिहास से सहाया किसाम पहली सफर के सिपाही हैं। जिनमें हर सिपाही “भेरे सहाबी सितारों की तरह हैं” की तरह चमकते हुए सितारे की तरह हैं जिसकी रोशनी में चलने वाले के बड़ी बशारत पाते हैं और रश्द व हिदायत उनके क़दम चूमती है। उसके बाद ऐसी-ऐसी रहानी हस्तियों दुनिया में आयीं कि वक़्त की रैत पर अपने क़दमों के निशानात छोड़ गईं।

मौजूदा दौर में एक ज़बरदस्त हस्ती, तरीक़ के शहस्वार, हकीक़त के दरिया के गोताक्षों, अल्लाह के भेदों को जानने वाले, नूर की तस्बीर, जाहिद, आवीद, ख़़सबंदों सिलसिले के असल, (मौलाना पीर जुलफ़ुक़क़ साहब) दामत बरकातुहम हैं। आप परवाने की तरह एक ऐसी कामिल हस्ती हैं कि जिसको जिस पहलू से देखा जाए उसमें कौज़-क़ज़ (ईंधनुश) की तरह रंग सिमटे हुए नज़र आते हैं। आपके बयान में ऐसी तासीर होती है कि हज़िरत के दिल में हो जाते हैं। आजिज़ के दिल में यह
ज़ब्बा पैदा हुआ कि उनके खुबाब को तहरीरी शक्त में एक जगह कर दिया जाए तो आम लोगों के लिए बहुत मुफ़्फ़ीद साबित होगे। इसलिए आजिज़ ने सारे खुबाब का गठ पर लिखकर हज़रत अबुद्द की खिदमत आलिया में इस्लाह के लिए पेश किये। अल्लाह का शुक्र है कि हज़रत अबुद्द दामत बरकातुहुम ने अपनी बहुत ज़्यादा मशहूलियों के बावजूद न सिर्फ उनकी सही किया बल्कि उनकी तर्तीब तर्तीब की पसंद भी फ़रमाया। यह उन्हें की हुआ और तवज्ज़ह है कि इस आजिज़ के हाथों यह किताब तर्तीब दी जा सकी।

मम्नूम हूँ में आपकी नज़रें इतिहास का

हज़रत दामत बरकातुहुम का हर बयान बेशुमार फ़ायदे और नतीजे अपने में रखता है। उनको पत्नियों पर लाते हुए आजिज़ की अपनी धैर्यमंद अनीब हो जाती है। बीच-बीच में दिल में यह बहुत ज़्यादा तमन्ना पैदा होती है कि काश! कि में भी इन बयान किए हुए हालात से सज जाऊँ। यह खुबाब यक़ीनन पढ़ने वालों के लिए भी नफ़्त़ का ज़रिया बनेंगे। ख़ालिस नीवत और दिल के ध्यान से इनका, पढ़ना हज़रत की बरकत वाली ज़ित से पैर उठाने का ज़रिया होगा, ईशा अल्लाह।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हज़ूरु़ हुआ है कि वह इस मामूली सी कोशिश को ख़ुबूल फरमाकर बदे को भी अपने चाहने वालों में शुमार फ़रमा लें। (आमीन सुम्मा आमीन)

फ़क़ीर मुहम्मद हनीफ़ अफ़ी अन्दु
एमाएबीएड़ो
मौज़ा बाग, झंग
युक्र-ए-इलाही

अल्लाह ताआला की कारिगिरी का नमूना

इस्लाम तमाम मख़्लुक से अशरफ़ है और अल्लाह रब्बुइलइज़ीज़त की कारिगिरी का नूमाना है। इसे करीम की हम पर कितनी महर्षवानी है कि उस परवर्धिगरे आलम ने हमें इस्लाम बनाया। अगर वह कोई जानवर बना देता तो उसको हक़ था। मान लो अगर वह बंदर पेड़ा कर देता तो किसी ने नाक में नकेल झाली होती और हम गलियों के अंदर नाचते फिरते, वह गधे की शक्त
ईमान की दौलत एक बड़ी नेमत

दूसरा एहसान यह हुआ कि अल्लाह रब्बुलइज्ज़त ने हमें नबी अल्लाह मस्लमान की उम्मत में ईमान के साथ पीठ किया। यह अल्लाह रब्बुलइज्ज़त की इतनी बड़ी नेमत है कि हम उसका शुक्र भी अदा नहीं कर सकते। दुनिया में वे भी लोग हैं जो इस उम्मत में पीठ हुए गए अल्लाह की माहौल मिला, उनके माँ-बाप ने उन्हें बुधवार और ईसाई और काफिर बना दिया। हमें अल्लाह ने ऐसे माँ-बाप के घर में पीठ किया कि जब हम छोटे थे, तो माँ दूध का पीड़ा लगाती थी तो बितालाह पढ़ा करती थी, यह हमें सुनाती थी तो ‘ला इलाहा इल्लाल्लाह’ के तराने सुनाया करती थी, यह पालना हिलाती थी तो ‘हस्बी रब्बी ज़ल्लाल्लाह’ के गीत सुनाया करती थी। आप यह छोटे और ना समझ थे कि वह हम से अल्लाह, अल्लाह के सफ़्ज़ के साथ बातें किया करती थी। आप अपने माता-पिता को नहीं, हमारे बाप के घर में अज़ान दिलवाई और दूसरे कान में इकाई, उस छोटी उम्र में जब हमें समझ भी न थी, जब हम अपने माता-पिता को पहचानते थे, उन माँ-बाप की बरकत से हमारे कानों में इस बक्त अपने परवर्धिता का नाम पहुँचा। यह अल्लाह रब्बुलइज्ज़त की कितनी बड़ी नेमत है। फिर
जब हम चलने फिरने के क्राबिल हुए, अभी बचपन था, दोस्त व दुश्मन की तमीज़ न थी, नफ़ा नुकसान का अंदाज़ा न था। हमारे वालिज उंगली पकड़कर मस्जिद की तरफ ले जाते थे। यह अल्लाह रब्बुलइज़ज़त की कितनी बड़ी नेमत है। हम जो आज मुसलमान बनकर बैठे हैं मालूम नहीं कि कितने लोगों की मेरनत का इसमें दखल है, कितनी अल्लाह रब्बुलइज़ज़त की रहमतें हम पर बरसीं कि आज अल्लाह रब्बुलइज़ज़त ने ईमान की दौलत से माल माल फरमाया। जिस्मानी नेमतें तो अनगिरन हैं। परवरदिगार आलम ने हमें सही सलामत जिस्म के साथ फैदा कर दिया। वह परवरदिगार अगर चाहता तो हमें किसी उज़्ज़ के साथ पैदा कर सकता था, किसी बीमारी के साथ पैदा कर सकता था। हमें जो सही सलामत जिस्म मिला है वह परवरदिगार की हम पर कितनी बड़ी मेहरबानी है।

शुक्र का एहसास

एक साहब ने जॉहर की नमाज़ पढ़ी। तंगदस्ती इतनी थी कि जूता भी टूट गया। गर्मी का मौसम था। गर्म ज़मीन थी। पाँव चलते हुए यह मस्जिद से घर की तरफ लौटने लगे तो दिल में ध्याल आया परवरदिगार! मैं तो आपके सामने सजावट में जाता हूँ, नमाज़ें पढ़ता हूँ, मस्जिद की तरफ आता हूँ, मुझे से आपके जूता भी अटा नहीं किया। अभी यह बात सोच ही रहा था कि सामने से एक लंगड़े आदमी को आते हुए देखा, वह बैसाखियों के बल चलकर आ रहा था। फूरत दिल पर चोट लगी कि ओहो! मैं तो जूते के न होने की शिकायत करता रहा, यह भी तो ईसान है जिसे परवरदिगार ने दांगे भी अटा न की। यह लकड़ियों के सहारे
बहुत बड़ी कमी

एक उसूल याद रखें कि दीन के मामले में अपने से ऊपर वालों को देखो ताकि अपना का शौक और ज्यादा हो। आज मामला उलट है, हम दीन के मामले में अपने से नीचे वालों को देखते हैं। घर में अपनी बीवी से कहेंगे कि नमाज़ँ पढ़ो। वह कहेगी कि तुम्हारी वहन कौन सी नमाज़ पढ़ती है? वह कहेगी कि फ़लां की बाधिश हो गई तो बस मेरी भी हो जाएगी। अपने से नीचे वालों की मिसालें देंगी। दुनिया की बातें करो तो उसको पता होगा कि मेरा घर इतना सुंदृश्य बना हुआ है मगर फौरन कहेगी फ़लां के घर में जो डिझाइन देखा था वह हमारे घर में तो नहीं है। आज बदकिस्मती से दुनिया के मामले में अपने से ऊपर वालों को देखते हैं तो दुनिया की हिर्स्व व लालच बढ़ जाता है और दीन के मामले में अपने से नीचे वालों को देखते हैं जिसकी वजह से दीनी मामलात में सुस्ती पैदा होती है और यह बहुत बड़ी कमी है।

पलकों की नेमत

देखें वे हमारी आँखों के ऊपर पलकें हैं। वह जिसमा कितना छोटा सा हिस्सा हैं। एक साहब का एक्स्टेंड हुआ और आँखों की पलकें किसी वजह से कट नहीं, आँखें महजू रहीं मगर वह आँख ही क्या करे जिसके ऊपर कोई पदा न रहे। जब कुछ वक्त के बाद उस पर कुछ गर्द और फिटिंग पड़ जाती हो उसे धुंधला नज़र आने लगता। अब उनको धोनी पड़ती। कुछ
दिन तो गुजरे लेकिन बार-बार धोने से अब पानी ने भी असर करना शुरू कर दिया यहाँ तक कि वह हालत हुई कि दो महीने के बाद अपने चेहरे पर पानी लगा ही नहीं सकते थे। दूंग लगता था कि जैसे जमून बन गया हो और उसके ऊपर कोई तेजाब डाला जा रहा है। डाक्टर के पास जाते तो वे कहते बस इसे धोना पड़ेगा। हवा के अंदर मिट्टी के छोटे-छोटे इतने जूंजे होते हैं कि हमें नज़र तो नहीं आते मगर मौजूद होते हैं। आप घर के फर्नीचर को देखने वाले उस पर मिट्टी की एक पतली सी परत आकर नज़र आएगी, कोई शीशा हो उसके ऊपर परत नज़र आएगी। वह असल में हवा के अंदर से मिट्टी के जूंज़े वहाँ जाकर गिरते हैं और मिट्टी की परत बन जाती है। इसी तरह मिट्टी की परत उनकी आँखों पर भी बनती और उनकी आँख धोनी पड़ती। जब बार-बार धोने तो पानी के बार-बार लगने से जिस्म का वह हिस्सा ऐसा हो गया जैसे कोई गलने वाला होता है। मिट्टी के तीर पर आप अपने हाथ पानी में पौँछ-छ घंटे अपने हाथ जूंज़ड़ा डालकर देख लेंगे कि हाथों की उंगलियाँ कैसी हो जाती हैं। उनके चेहरे की हालत यह हो गई। आखिर डाक्टर से जाकर पूछा। वह कहते लगा हमारे बस में कुछ नहीं। फिर एक डाक्टर ने उन्हें समझाता कि हक्कीकत में इंसान की आँखों का पर्दा वाइफर की तरह होता है और उसके अंदर अलाह तालाला ने एक ऑटोमेटिक सिस्टम बनाया है जहाँ से पानी आता है और थोड़ी-थोड़ी देर से पर्दा वाइफर की तरह चलता रहता है और आँख के देखने को साफ रखता है। उस वक्त इहसास हुआ कि रब्बे करूँ! यह पलक झपकना एक छोटा सा अमल है मगर हक्कीकत में यह कितनी बड़ी नैसर्गिक है। उसके न होने की वजह से इंसान के लिए अपनी आँख
को साफ़ रखना मुश्किल हो गया। जब इतनी छोटी सी चीज भी,
इतनी बड़ी नेमत है तो फिर बड़ी चीज़ें कितनी बड़ी नेमतें होंगी।

बैक्टीरिया से हिफाज़त

बैक्टीरिया एक छोटा सा जरासिम होता है। हवा के अंदर
अरबों खरबों की तादाद में बैक्टीरिया हर वक्त मौजूद होते हैं।
लेकिन कभी कोई बैक्टीरिया इनमें से ऐसा भी होता है कि वह
इंसानी जिस्म के अंदर जाकर एक्टिव हो जाता है जिसकी वजह
से इंसान बीमार हो जाता है। हम कहते हैं कि जो ईंक्रेशन से
बुखार हो गया। इतना बड़ा छ: फुट का इंसान चारसाइड के ऊपर पड़ा होता है। एक छोटे से बैक्टीरिया ने उस पर अमल करके
उसको बीमार कर दिया होता है। अब वह परवरदिगार जो आर्बों
खरबों बैक्टीरिया से रोजाना हमें बचा देता है वह उस परवरदिगार
की कितनी बड़ी नेमत है।

वायरस से हिफाज़त

बैक्टीरिया की खाते तो क्या करनी आजकल तो वायरस की
खोज हो चुकी है। यह बैक्टीरिया से भी ज़्यादा छोटा होता है।
बैक्टीरिया को देखने के लिए आपको आम माइक्रोस्कोप की जरूरत
पड़ती है लेकिन वायरस को देखने के लिए माइक्रोस्कोप की
बजाए इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप की जरूरत होती है, तब जाकर यह
वायरस नज़र आता है और यह ऐसा अजीब तमाशा कि अगर
उसका अमल शुरू हो जाए तो आज के इंसान के नास उसका
इताज़ भी नहीं है। कहते हैं जी कि आप को वायरस की वजह से
'फुड़' हो गया। अब कुछ दिनों में अपने आप ठीक हो जाएगा।
छ: फूट का इतना बढ़ा इंसान मगर वायरस ने उसको चारपाई पर लिटा दिया। अगर एक आदमी को अल्लाह ताआला ने सेहत दी है तो सोचना चाहिए कि अल्लाह ताआला ने कितनी नुकसान देने वाली चीजों से उसकी हिफाजत फरमाई होगी। इन चीजों पर गौर करने से अल्लाह ताआला की नेमतों का शुक पैदा होगा। हम उसकी नेमतों को शुक अदा करेंगे।

शिकवे ही शिकवे

आज अक्सर जगहों पर देखा गया है कि माली और कारोबारी
मसाइल की बजह से हर मड्ड और हर औरत की ज्यादा से शिकवे
सुनने में आते हैं। किसी को आदला का शिकवा, किसी को माल
का शिकवा, किसी को कारोबार का शिकवा, कुछ को छोड़कर।
कोई वंदा सैकड़ों में नज़र आता है कि जो कहे कि अल्लाह ने
मुझे इस हाल में रखा हुआ है तो जो धृष्ट है। हर एक चेहरा कि भी
वेड़ा परेशान हूँ बाकी सारी दुनिया सुखी जिंदगी गुज़ार रही है।
अगर वह जिसको यह सुखी समझता है उसके गुम लेकर इसको दे
दिए जाएं तो यह पहले से भी ज़्यादा परेशान हो जाए। अल्लाह
रब्बुलइज़्ज़त ने जिसको इस हाल में रखा है हमें चाहिए कि हम
उसका शुक्र अदा करें।

हालात की ज़ंजीरें

हर्दौस पाक में आया है कि अल्लाह ताआला के कुछ बड़ी ऐसे
होते हैं कि अल्लाह रब्बुलइज्ज़त जानते हैं कि अगर इसको ताआला
ज़्यादा से ज़्यादा रिश्ता दे दिया तो यह बड़ाई में मुख्ला हो
जाएगा, यह धमंड के बौल बौलेगा और ईमान की दोलत से हथु
रिज्जू की तक्सीम

रब्बे करीम ने रिज्जू को तक्सीम किया हुआ है। फरमाया,

हमने इसानों के दर्शनवाले रिज्जू तक्सीम किया है।

अब कौन है जो परवर्दिगार की बांट पर राजी हो। तक्शीर पर राजी रहने वाले लोग बोड़े नज़र आते हैं। हर वंदे को शिकार है।

अरे! अगर एक बाप दो बेटे के बीच कोई चीज़ बांट दे तो वह उसमील करता है कि बाप होने के नते वे बच्चे मेरी बांट जैसी भी है उसको कुशुल करेंगे। क्या हम अपने खालिक व मालिक की बांट कुशुल नहीं कर पाते? क्या हम उसकी बांट पर राजी नहीं हो पाते। हमें चाहिए कि परवर्दिगार ने जिस हाल में रखा हम उसी हाल पर राजी हो जाए।
शुक्र का एहसास पैदा करने का तरीका

सच्ची बात तो यह है कि उसने हमें हजारों से बेहतर रखा हुआ है। इसमें कोई शक नहीं। गौर करने की बात है। आप शोक सात अपने हालात पर गौर करें। आपकी कितनी चीज़ें ऐसी मिलती चली जाएंगी कि आपका दिल गरवाही देगा कि रब्बे करीम अल्लाह जल्लिशानु हैं कितनों से हमें इस हाल में बेहतर रखा हुआ है। ये चीज़ें इस्मान के अंदर फिर भी शुक्र की कौशियत को पैदा कर देती हैं।

नैमतों में बढ़ीतरी और कमी

के उस्सूल और कायदे

अल्लाह रब्बुलइज्ज़त इशाद फरमाते हैं। अगर तुम शुक्र अदा करोगे तो हम अपनी नैमतों को तुम पर और ज्यादा कर देंगे। हम जितना अल्लाह रब्बुलइज्ज़त का शुक्र अदा करेंगे उतना ही रब्बे करीम की नैमतों और ज्यादा होंगी और आगे फरमाया:

अल्लाह शुक्र अदात की उदाहरणों के लिये कफ़्र करे लें और अगर तुम कुशाने के लिए नैमत करोगे तो याद रखो कि फिर मेरी पकड़ भी सक्त है।

ज़्वानी और जिस्मानी शुक्र

अब शुक्र अदा करने के दो तरीके हैं। एक तो इस्मान अपनी ज़्वान से अल्लाहुअल्लाह कहें, सुबहअल्लाह कहें। यह भी
अल्लाह रब्बुलइज्ज़ूत का शुक्र अदा कर रहा है और एक अपने जिस्म से परवरिदिगार के हुक्मों की पाबंदी करते, गोया यह भी अल्लाह रब्बुलइज्ज़ूत का शुक्र अदा कर रहा है। जबानी शुक्र भी अदा करते और अपने जिस्म से भी अल्लाह तजाला की हताहत करते तो गोया यह अल्लाह तजाला का शुक्र अदा करने वाला रहता है। अगर इसमें कभी कोताही न हो तो फिर अल्लाह तजाला कभी-कभी अपनी नेताओं को ध्वस्त ले लेते हैं। इस पर गौर करने की ज़रूरत है।

दो तरह की नेमतें

हज़रत आकर्ष आनवी रही फरमाते हैं कि नेमतों दो तरह की हैं एक बजुई दूसरी अदमी। अल्लाह रब्बुलइज्ज़ूत ने बजुई हमें अता की जा आज हमारे पास मौजूद हैं और अदमी नेमतों वे हैं जो हमें आखिरत में मिलेंगी।

आँखों की नेमत

यौग कीजिए हमारे पास अल्लाह तजाला की कितनी नेमतें हैं। और ता और आँखों की जग देखिए, यह चबे क्रिम की कितनी बड़ी नेमत है। अगर इसकी अहमियत और कुदरत की क्रिम का मालमूम करना है तो उस अंधे से जाकर धुरिए जो माँ के पंट से पश्चिम आँखों के पंदर हुआ। वह अपनी माँ का भी पूरी जिंदगी नहीं देख सकता, अपने वाप के चेहरे का नहीं देख सकता। ये ताला! उसके दिल में किसी हसरत होगी कि काश! मुझे एक जगह के लिए लिया जानी ताकि में अपनी माँ को देखता, अपने वाप को देखता, कुरआन पाक को देखता, में अल्लाह रब्बुलइज्ज़ूत के
घर को देखता और इन नेमतों से अपनी आँखों को ठंडक पहुँचाता मगर उसके पास ये नेमत नहीं है। मेरे दोस्तो! हमारे लिए तो रात में अंधेरा होता है, उसके लिए तो दिन में भी अंधेरा हुआ करता है। जब गोर तो किया कहें उसकी ज़िदगी कैसी होती होगी। ठोकरे खाता फिरता है, कभी इधर गिरा, कभी उधर गिरा। किसी ने चाहा तो उसका हाथ पकड़कर आगे गुज़र दिया नहीं तो हाथ-पॉव इधर उधर मारता फिरता है, क्या ज़िदगी होगी। हम पर अलाह रब्बुलहज़्जुल की कितनी बड़ी रहमत है कि रब्बे करीम ने हमें सही सालिम देखने वाली आँखें अता फरमाई। गोर करते वलने जा एक अलाह तालाब की हम पर कितनी बड़ी रहमत हैं।

बोलने की नेमत की कटर

सांसारिक ऐंठे कि रवे करीम ने हमें बोलने की ताकत अता फरमाई। अब इसकी कुटर व क्रीम का अंदाजा गुर्गा से पृथिवी जो अपने दिल की कैफियत और ज़ज्वात को किसी के सामने बयान ही नहीं कर सकता। हमें तो किसी से मुहब्बत हो तो मालूम नहीं कैसे-कैसे बातों के हेर-फेर के साथ हम अपना मुद्दा उसके सामने बयान कर रहे होते हैं। कभी वच्चों के सामने मुहब्बत का इज़हार, कभी बीचे के सामने मुहब्बत का इज़हार, कभी माँ-बाप के सामने मुहब्बत का इज़हार, कभी पौर व उस्ताद के सामने मुहब्बत का इज़हार। हम तो दिल के ज़ज्वात को अल्फ़ाज़ ना का रूप पहना देते हैं लेकिन जो आदमी गूँगा है वह अपने दिल के ज़ज्वात को किसी के सामने खोल तो नहीं सकता। वह चाहे किसी से मुहब्बत करता हो उसे वता नहीं सकता, उसको किसी की जात से प्यार हो तो वह उसे वता नहीं सकता। अपने
अंदर जितना दर्द महसूस कर रहा है, जितना दुःख: महसूस कर रहा है वह अपना रंज व गुम दूसरों के सामने बयान नहीं कर सकता। जैसे जानवर खामोश होता है उसी तरह यह इसान वनकर भी खामोश होता है क्योंकि अल्लाह ने उसे गुंगा पैदा कर दिया।

सुनने की ताक़त की क़दर

जिन कानों से हम सुनते हैं वे अल्लाह ताजाला की कितनी बड़ी नेमत हैं। केवल वे लोग हैं जो देखने में बड़े खूबसूरत होते हैं पगर उनकी कानों की सुनवाई नसीब नहीं होती। वे सुनते भी नहीं बोलते भी नहीं। कई बार वचन में जब पैदा होते हैं तो उनके कानों में कोई सुनकर होता है, कानों की सुनवाई ठीक काम नहीं करती। जिसकी वजह से उनकी बोलना भी वंद होता है क्योंकि उन्होंने कभी कोई बोल सुने नहीं होते। इसलिए उनके दिमाग़ में अल्फ़ाज़ का ज्ञान नहीं होता जिसकी वजह से उनकी बोलने का पता नहीं होता। वे इसलिए नहीं बोल सकते कि उनकी सुनने का निज़ाम खराब होता है। अब वताई सुनने का निज़ाम खराब है पगर बोलने की नेमत होने के बावजूद बोल नहीं सकते। डॉक्टर कहते हैं जिसका सुनना ठीक हो गया उसकी बोलना अपने आप ठीक हो जाएगा। परवरदिगार ने हमें सुनने की तौफ़ीक नसीब फ़र्माई। सोचिए कि जब अज़ान की आवाज़ आती है तो अल्लाहु अकबर की आवाज़ हमारे कानों में सुनाई दे रही होती है, कभी कोई फ़र्माण पढ़ रहा होता है तो कानों में आवाज़ आती है, कभी नाट पढ़ रहा होता है तो कानों में आवाज़ आती है। सुबहनअल्लाह हम कितनी प्यारी-प्यारी आवाज़ें कानों के साथ
हज़म के निज़ाम की नेमत

सोचिए तो सही यह जो कुछ हम खाते हैं वह सब कुछ आराम से अंदर चले जाना और हज़म हो जाना अल्लाह रब्बुलइज़ज़्ज़ की कितनी बड़ी नेमत है। दुनिया में कितने लोग ऐसे हैं जिनका हाज़ामा ठीक काम नहीं करता, कुछ ख़ा पी नहीं सकते।

इस आज़म के पास एक बार किसी शहर से एक और ताबीज़ लेने के लिए आई। पर्दा में बैठकर अपना हाल बयान करने लगी। कहने लगी, पिछले सात साल गुज़र गए हैं, सिवाए पानी या सेवन-अप वग़ैरह के मैंने कुछ भी पेट में नहीं डाला। घर में तरह-तरह के खांने में खुद पकाती हूँ मगर मैं उनको देख तो सकती हूँ, खा नहीं सकती। इतना अजीब एहसास हुआ। रब्बे करीम! यह कितनी बड़ी नेमत है। वह औरत रोज़ाना खाने पका रही होती है मगर उसके नसीब में न रोटी है न सालन है सिर्फ़ सेवन-अप की बोतल पी ती या कभी जूस पी लिया। इसके अलावा कोई ठोस चीज़ खाने के काबिल न थी। अगर कोई चीज़ खा लेती थी तो उबकाई आती थी और फ़ौरन सारी चीज़ें बाहर निकल आती थीं। इसलिए परेशान थी। वह कहने लगी, कोई ऐसी दुआ कर दें या बता दें कि मैं पढ़ाई कर लूँ कि मैं पूरे दिन में चपाती तो खा/लिया करूँ। इतनी हताशत से वह बात कर रही
किंतु मैं पूरे चौबीस घटन में एक चपाती तो खा लिया करूँ। ऐसे दिल में यह बात आई कि बड़े! तू ज़रा अपने पर गौर कर, तू हर बक्के के खाने में कितनी चपातियाँ खा जाता है और तुझे अपने परवरदिगार की इस नेमत का एहसास भी नहीं होता। हम जो कुछ खा लेते हैं तो उसका हज़ार होना और उसका आराम ये जिसमें बाहर हो जाना भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की कितनी बड़ी नेमत है। हम उस नेमत का शुक्र भी अदा नहीं कर सकते। अगर वह चीज़ जिसमें अंदर ही रुक जाती और बाहर न निकलती तो हमें डॉक्टरों के पास जाना पड़ता। कैसे मुलुकेल बक्के गुज़रता, पेट फटने को आना, गंध समा हो जाती और अपने बक्के पर न निकलती?

साँस की नेमत

हम चौबीस घटन में कितने हज़ार बार साँस लिया करते हैं। इस साँस का आना और जाना अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की कितनी बड़ी रहमत है। कभी दमे के परीज को देखा करें कि जब साँस उखड़ता है तो उसकी कैफ्युल ऐसी होती है जैसे जान निकल रही हो, अधा साँस बाहर और आधा अंदर होता है। हालत ख़राब हो जाती है। वैहरे का रंग बदल जाता है और जिंदगी और मोत की अजीब कशमशख़ में होता है। हम अगर गौर करते चले जाए तो रब्बे करीम की कितनी ही नेमतें हमारे ऊपर खुलती चली जाएंगी। रब्बे करीम ने हम पर बड़ा कर्म किया हमें ऐसा जिसमें अल्लाह अंदर कया कि जो सेहतमंद जिस है जिस की वजह से हम अपनी जिंदगी कितने आराम से गुज़ार रहे होते हैं।
मकन की नेमत

ये तो वजूदी नेमतों थीं। अब जरा बाहर की नेमतों पर गौर करें। मेरे दोस्तो! रब्बे करीम ने हमें मकन अता किया। यह हमारे ऊपर अल्लाह तालाला की कितनी बड़ी नेमत है। जरा उन लोगों

ें इति. जो सड़कों की फुटपाथ पर अपनी जिंदगी गुजारते हैं।

उनके दिल की भी तो तमन्नाएं हुआ करती हैं, उनके दिल के 

अंदर भी कुछ हस्ताक्षर होती हैं। उनका भी जी चाहता होगा कि 

काश! कोई हमारे लिए भी सर झुपाने की जगह होती। वे तो खेमे 

लगाकर जिंदगी गुज़ार रहे होते हैं। जरा सी हवा तेज़ चलती है तो 

उनके खेमे गिरने लगते हैं और जब बारिश होती है तो उनके नीचे 

जल-थल हो जाता है। दिसंबर और जनवरी की सख़्त सर्दियाँ वे 

उन्हीं खेमों में गुज़ारते हैं। जब कि रब्बे करीम हमें इंजटों के 

साथ घरों में रहने की तौफीक अता फरमाते हैं। यह अल्लाह 

तालाला का कितना बड़ा प्रसन्न है कि हमें उसने घरों के अंदर 

रहने की तौफीक नसीब फरमाई, हमारे ऊपर नीली छत के साथ 

एक घर की छत भी अता फरमा दी।

मीटी-मीटी तंबीह

(दौराने बयान जब लोग उठने लगे तो हज़रत जी दामत 

बरकातुहम ने इशार क फरमाया) आप हज़रत तसल्ली से बैठिए। 

यह अजिज़ अपना मज़ूम उस बक़्त उठाएं जब सिर्फ़ तलब 

वाले बाक़ी रह जाएं। जो मसूफ़ लोग हैं वे जा रहे हैं और जो 

बाक़ी हैं वे भी चले जाएं और पीछे दौबाने रह जाएं, पीछे मज़ूर 

रह जाएं, पीछे कोई तलब वाले रह जाएं। जो कुछ दामन फैलाकर 


बैठेंगे तो रब्बे करीम फिर उनकी जुलूस के मुताबिक कुछ बातें कहलवा भी देगा। इसलिए आजिज का आज शुरू से इरादा यही था कि आराम और तसल्ली से बात करेंगे। जरा कुछ भिन्न देखेंगे कि तब से वाले बाकी रहें। याद रखें कि सुर वाली तकूरी एंड राग वाली तकूरी इंसान को सुलाती हैं और ये जो हम रखी सूखी बात कर रहे हैं ये इंसान को जगाती हैं। ये जब उससे पैदा कर देते हैं तो बंदा जागता है। लिहाजा हमें इससे कोई फिक्र नहीं कि कोई उठकर जा रहा है या नहीं जा रहा। उनको जरूर कोई जुलूस होगी इसलिए उन्हें जाने की इजाजत है और जो कोई सुनने के लिए बैठे हैं रब्बे करीम उनकी तलव के मुताबिक उनको अला फूसा देंगे। यह भी ज्ञान में रखिए कि यह आजिज कोई खतीब और बयान करने वाला तो नहीं है जो कोई खुला दे और वाज़ करे। कुछ सादा सी बातें हैं जो अपने मशाइख से सीखी हुई हैं यही सबक आप लोगों के सामने भी दोहराता हूँ। जो लोग सच्ची तलव के साथ बैठते हैं अल्लाह तआला उनके दमन को मुराद से भर दिखा करते हैं। तो मेरे दोस्तो! जरा अपनी बाहर की नेमलों पर गौर कीजिए कि रब्बे करीम की कितनी बड़ी नेमते हैं जो अल्लाह तआला ने हमें अता की है और मकान तो बड़ा न सही, कह्या सही मजबर यह परवर्धियां की कितनी बड़ी नेमत है। हम सारा दिन किसी काम के लिए निकले आखिर लौटकर घर आते हैं। कितनी तसल्ली होती है।

हाय फैलाने से निजात

जरा गौर कीजिए अगर आप बाहर चलते हुए देखें कि कोई
फुकीर मांग रहा है। मर्द हो या औरत आक्नाय वह भी तो एक इस्लाम है मगर रब्बे करीम ने उसे ऐसे हाल में रख दिया कि उसे दूसरे से माणने की जरूरत पड़ गई। उनके फटे हुए कपड़े होते हैं, जबान उस की बच्चियाँ होती हैं। जिनके सर पर दूषण भी पूरा नहीं होता, वे गैर मर्दों के सामने हाथ फैलाती फिरती हैं। वे भी किसी की बहन होगी, किसी की बेटी होगी, किसी की माँ होगी। मेरे दोस्तो! हमारी बहू बेटियाँ अपने घरों में इज्ज़तों की रोटी खाती हैं जबकि ये औरतें माणकर रोटी खाती हैं। कभी कोई तुकड़ा मिला, कभी कोई तुकड़ा मिला। हमारे घर की औरतें अपनी पसंद के खाने दस्तरख़्वान पर लभाकर खा लेती हैं। यह अल्लाह तअला का हम पर कितना एहसान है कि हमारी इज्ज़तों को गैर के सामने हाथ फैलाना नहीं पड़ता, उनको किसी गैर की मोहलाजी नहीं करना पड़ती, उनको किसी गैर का पहसान लेना नहीं पड़ता। रब्बे करीम ने हमें कारोबार अता कर दिया जिसकी वजह से घर के अंदर रोज़ाना खाना बन जाता है।

औलाद की नेमत

इससे एक कदम और अगर बढ़ाए कि रब्बे करीम ने औलाद की नेमत अता फूलमाई। इसकी कटर व कीमत जुरा उनसे पूछिए जो बेबूलाद होते हैं। उस औरत से पूछिए जिसकी शादी को कई साल गुज़र गए हों और उसको औलाद की नेमत नहीं मिली, उसके दिल में कितनी तमन्ना होती होगी कि अल्लाह तअला मुझे भी औलाद अता करता, मैं भी औलाद वाली हो जाती, मेरे घर में भी कोई खेलने वाला बच्चा होता, मेरा घर भी आबाद होता, मेरा घर भी मुझे बाग की तरह लगता मगर उसके दिल की तमन्ना
पूरी नहीं होती। कितनी ओस्तानों को देखा जिन्हें शीघ्र का प्यार नसीब है, घर में माल व दौलत भी नसीब है, बड़ी कोटी भी है मगर उनके पास औलाद नहीं। कहती है जो हमें यह घर खाने को आता है। इतना बड़ा घर किस काम का जब इसमें खेलने के लिए अल्लाह तआला ने कोई बेटा ही नहीं दिया। उस माँ के दिल में कितनी हसरत होती होगी जरा पूछिए तो सही। उस माँ की हसरत का अंदाजा इससे लगाया कि यह अगर रात को तहज्जुद के लिए उठती है तो यह अल्लाह तआला के सामने सजदे में जाकर औलाद मांगती है। जब दुआ के लिए हाथ उठाती है तो उसकी सबसे पहली दुआ औलाद के बारे में होती है। लोग मीठी मीठे सो रहे होते हैं और यह तहज्जुद की नमाज़ पढ़कर अल्लाह से एक नेमत मांगती है जो उसे हसिल नहीं, कभी छुराना पाक की तिलावत करती है तो तिलावत करने के बाद यह अल्लाह तआला से दुआ मांगती है, रब्बे करीम। मुझे औलाद की नेमत अता फर्स्मा, कभी किसी अच्छी महफ़िल या मजलिस का पता चला, यह वहीं पहुँचती है और दुआ मांगती है कि ऐ अल्लाह। यह तेरे नेक लोगों की महफ़िल है, अपने नेक बंदों की बरकत से मुझे औलाद की नेमत अता फर्स्मा। यह औरत हज पर गई, उसने काबा शरीफ़ गिलाफ़ पकड़कर यह दुआ मांगी, ऐ रब्बे करीम। औलाद की नेमत अता फर्स्मा, उसने मकाम इब्राहीम पर नफ़्ल पड़े तो उसने दुआ मांगी रब्बे करीम। औलाद की नेमत अता फर्स्मा। जहाँ उसे कुबूलियत के आसार नज़र आते हैं वह अपने वही दुख़ अल्लाह तआला के सामने रोती है। हर बक़्त वह फरियादें करती है। उसको कोई पढ़ने की तस्वीर बताए, उसे कोई रातों को जागकर वज़ीफ़ा करना बताए, यह रातों को जागकर वज़ीफ़ा करने के लिए तैयार, बेचारी
कुछ कार्यों मुखली पर बैठी पद्मी रहेंगी। उसे घर में कोई दिलचस्पी नजर नहीं आती। इतना बड़ा घर उसे बीवान लगता है। उसके दिल की हसरत का आदान लगाई। उसके पास माल भी है, हुसन व जमाल भी है, शीघ्र का प्यार भी है, दुनिया की इज्जत भी है मगर ये सब चीजों उसके मामूली नजर आती है क्योंकि अल्लाह तक ने उसे आलाह की नेमत अला नहीं की होती। 
अगर यह माल देकर आलाह ख्यात सकती तो भला यह अपना सब कुछ लुपा न देती, अगर महजम करने आलाह कहीं से ला सकती तो यह पहाड़ों की घोंटियों पर भी जाने से पूछे न होती। मगर यह नेमत वह है कि रब्बे करीम जिसे चाहते हैं अता फरमा देते हैं और जब वे नहीं करता तो दुनिया के डॉक्टरों की डॉक्टरी धरी की धरी रह जाती है। सब हकीमों की हिकमत धरी की धरी रह जाती है। कहते हैं मियाँ-बीवी में कोई नुकस भी नहीं मगर मेरे मौला की मर्जी नहीं, सालों गुजर जाते हैं मगर सालों के बाद भी आलाह नहीं होती। यहाँ तक कि जवानी गुजरने के कौरीब हो जाती है मगर दिल में हसरत दिल में रह जाती हैं, फिर भी दुआएं मांग रही होती हैं। आरे! भैरी और आपकी तो बात क्या करनी ये वह नेमत है जिसके लिए अवियाए किराम अल्लाहानुसरक ने भी दुआएं मांगी। क्रुदा गवाही देता है। अल्लाह के नबी हैं और उसके मकबूल बदत हैं मगर अल्लाह तक ने उनको आलाह अता नहीं की। उनके दिल में भी अल्लाह तक ने यह मुहब्बत डाल दी। हजारें जुक्रिया अल्लाहानुसरक का वाकिया है। बाल सफ़द हो गए, हड़टर्हाँ कमजोर हो चुकी और खाल लटकर चुकी मार अल्लाह ने आलाह के बारे में दिल में एक तमन्ना पैदा कर दी थी। लिहाज़ा अल्लाह तक ने से दुआएं मांगते थे। बकृत के
नबी हैं उनकी कैसी मक्खूल दुआँ होती होंगी मगर उन्हें गुज़र गई दुआँ मांगते हुए। जवाबी बुढ़पे में बदल गई। आख्तिर दुआ मांगते हुए कहते हैं इल्लामुन्न हमें उम्मीद लिएं। परवरदिगार अब तो मेरी हिदौमा भी बोली होंगी, तू मेरी दुआ को क्यूबूल फरमा है जैसे अल्लाह! मैंने सारी जिंदगी तेरा दरवाजा खटखटाया, परवरदिगार! मायूस अब भी नहीं हूँ, इस बुढ़पे में भी मेरे दिल में यह उम्मीद ज़रूर है। रब्बे करीम!

तेरा दर कभी न कभी खुशेगा और तू पुरे नेमत अल्लाह पाएगा। इतनी दुआ मांगते हैं। रब्बे करीम ने दुआ को क्यूबूल फरमा लिया और इस बुढ़पे में अल्लाह की नेमत अल्लाह फरमा दी। इसलिए वह नेमत जिसके लिए बक़्ल और अबिया किराम भी दुआ करते रहे तब अल्लाह करीम ने उन्हें यह नेमत अता फरमाई। मेरे दोस्तो! हम में निकलने आज्ञाबान हैं जिन्होंने शारी होती है और दो चार साल के अंदर ही अल्लाह तात्ताला उनकी बेटा अल्लाह देते हैं, बीतियों भी अता कर देते हैं। एक से ज्यादा अल्लाह होती है। यह रब्बे करीम की हम पर कितनी रहस्य है, यह अंदर ये बच्चे खेलते ब्यूर आते हैं। यह कितना प्यार हम से कर रहे होते हैं। कभी बेटी प्यार करती है, कभी बेटा प्यार करता है, कोई हमें अच्छा कह रहा होता है, कभी कोई जिहूद करता है, कभी कोई पास आकर खाने खा रहा होता है। मेरे दोस्तो! यह अल्लाह रब्बुलइज्ज़त की कितनी बड़ी नेमत है जो रब्बे करीम ने हमें अता फरमा दी है। हम तो दुनिया का सारा माल ख़र्च कर देते तो भी यह नेमत नहीं मिल सकती थी। हमें अल्लाह तात्ताला का कितना शुक्र अदा करना चाहिए।
बीवी जैसी नेमत

इसी तरह ज़रूरी है कि जब कभी बीवी पर नजर पड़े तो अल्लाह का शुक अदा करो कि अल्लाह रब्बुलइज्ज़त ने एक ऐसी औरत से शादी करवा दी कि जो ईमान वानी औरत है। ऐसी औरत के साथ शादी करवा दी जो सौहार के साथ अपना वक़्त गुज़ारती है, गैर की तरफ ऑख उठाकर नहीं देखती, जिसके चेहरे पर अल्लाह रब्बुलइज्ज़त ने शर्म व हया दिया, जिसको अल्लाह ताआला ने नमाजों की तौफ़ीक अता फ़रमाई, जो इसान के लिए इज्ज़त व पाकदामनी का जरिया बन जाती है। गुनाहों से बचने का सबब बन जाती है, जो औलद की तर्किस्त का जरिया बन जाती है, जो इसान के पीछे उसके घर-घर की खैर-खबर करने वाली होती है। यह अल्लाह ताआला की कितनी बड़ी नेमत है जो अल्लाह ताआला अता फ़रमाते हैं। हमें चाहिए कि घर की देखें तो शुक अदा करें, औलद को देखें तो शुक करें, अपनी तेहत को देखें तो शुक अदा करें, अपनी अच्छी शक्त को देखें तो शुक अदा करें, अल्लाह ताआला ने हम पर कितनी मेहरबानी फ़रमाई।

हमारी हालत

हालत तो हमारी ऐसी है कि तरह-तरह के खाने तो खा लेते हैं लेकिन बिसमिल्लाह पढ़ना हमें याद नहीं होती, हम खाना खाकर उठ जाते हैं लेकिन कभी ख़ास की दुआ पढ़ना याद नहीं होती। अल्लाह ताआला लज़ीज़ पीने की चीज़ें अता फ़रमाया देते हैं हम उनको पीते हुए बिसमिल्लाह नहीं पढ़ पाते। सोचिए तो तभी यह गैरूँ की रोटी जो हमारे सामने आई, यह तो गैरूँ का एक दाना
था। किसी किसान ने उसे खेत में डाला, किसी ने ज़मीन की तैयार किया फिर ज़मीन से उसको नभी मिली, फिर ऊपर से सूरज ने उसे गर्मी पहुँचायी, फिर चाँद ने उसे रोशनी दी और कभी हवा ने उसके फलने फूलने में बदराती की। इतनी वीजें उस पर कार्यवाही करती रही जब जाकर यह फसल बनी। किसी ने उसे कटा होगा, किसी ने उसे साफ़ किया होगा, किसी ने उसे बीसा होगा, किसी ने गुंडा होगा, और किसी ने उसे पकया होगा, इतने मौड़ों से गुज़रकर जब वह रोटी हमारे सामने आती है तो हम खाते हुए विस्मिल्लाह पढ़ना भूल जाते हैं। काश! हमें अल्लाह रब्बुलक़ुल्लाह की इस नेमत का इतना ख्याल होता कि हम खाते हुए विस्मिल्लाह ही पढ़ लेते। हम खाते हुए अपने परवर्धिकार का शुक ही अदा कर लेते कि रब्बे करीम! तेरी कितनी नेमतें हैं जिनको खाकर हम दुनिया में जिंदगी गुज़ारते हैं।

अल्लाह ताबाला की नेमतों का शुमार

रब्बे करीम फ़रमाते हैं:

۱۰۰۰۰

अगर तुम अल्लाह ताबाला की नेमतों को शुमार करना चाहो तो तुम अल्लाह ताबाला की नेमतों को शुमार ही नहीं कर सकते।

यह विलंबुल सच्ची यात्रा है। अगर कोई आपसं पूछे कि वताओं तुम बारिश के पानी के कूद को चिंता सकते हो? तो आप चिंता नहीं सकते। कोई आपसं पूछे कि आसमान के सितारों को चिंता सकते हो? तो आप किसता नहीं सकते। कोई आप से कहे, सारी दुनिया के रंग के ज़ुरू को गिना जा सकता है? तो आप नहीं
गिन सकते, कोई आपसे कहे सारी दुनिया के पेड़ों के पत्तों को गिन सकते हो? आप नहीं गिन सकते लेकिन मेरे दोस्तो! यह आज़ाद फिर भी अर्जु करता है, बारिश के क्वतरों का गिनना मुमकिन है, आसमान के खिलारों का गिनना मुमकिन है, सारी दुनिया के पेड़ों के पत्तों का गिनना मुमकिन है, सारी दुनिया के रेत के ज़ूरों को गिनना मुमकिन है लेकिन मौलिक करीम के हम पर कितने एहसान हैं उन एहसानों का गिनना हमारे लिए मुमकिन नहीं है। अल्लाह ताज़ाला ने क्योंकि खुद फ़्रामयाः

"क्यों तुम अल्लाह तअला की नेमतों को शुमार करना चाहो तो तुम अल्लाह तअला की नेमतों को शुमार ही नहीं कर सकते। मेरे परवरदिगार! जब तेरी इतनी नेमतों हमारे ऊपर हैं तो हम तेरी किस किसी नेमत का शुक अदा करें।

नेमतों की नाक़दरी का व्यावास

कुरआन पाक की एक आयत है उसकी ज़रा गीर से सुनिए । अल्लाह तअला इशाद फ़र्माते हैं "क्षेरबुर लह मलाह" और अल्लाह तअला मिसाल बयान करता है "क्षेरबुर लह" एक वस्तु वालों की जिसमें अमन भी था और इलिमान भी था। दो लक्ज़ इस्तेमाल किए कि उस वस्तु वालों को अमन भी नसीब था और इलिमान भी था। अमन का क्या मतलब? कि उनको बाहर के दुस्मन का कोई डर नहीं था। इलिमान का क्या मतलब? कि कोई अंदर का गुम भी नहीं था, इलिमान था। अल्लाह तअला फ़र्माते हैं "क्षेरबुर लह मलाह" इसलिए उनको चारों तरफ से हिस्से
की बहुत सीर थी। उन्होंने अल्लाह ताज़ाला की नेमतों की नाकदी की। फिर क्या हुआ?

फिर अल्लाह ताज़ाला ने उन्हें भूख, नन्यन और होफ का लिवास पहना दिया।

क्योंकि वह काम नहीं करते थे।

भूख नन्यन और होफ का लिवास

अगर गौर करें तो हम में से कितने ऐसे होंगे जिनको पहले सब कुछ नसीब था। आखिर अल्लाह ताज़ाला ने भूख और नन्यन का लिवास पहना दिया। खुद आकर कहते हैं, हज़रत! पता नहीं क्या हो गया कि पहले तो वह हाल था कि मिट्टी को हाथ लगाते थे तो वह सोना बन जाती थी और अब सोने को हाथ लगाते हैं तो वह भी मिट्टी हो जाता है। खुद कहते हैं कि हज़रत! पता नहीं एक होफ सा रहता है, कभी हम बीमार, कभी बेटी बीमार, कभी बेटा बीमार, कभी बांट बीमार, कभी शौक बीमार, कभी बीवी बीमार, किसी न किसी की बोतल डायर की टरफ जाती रहती है। हर काम डर सा रहता है कि कहीं कुछ हो न जाए। ये बातें आप क्यों सुन रहे हैं? इसलिए कि वह वह बंदा है जिसने अल्लाह की नेमतों की नाकदी की। आज अल्लाह ताज़ाला ने उसको खोफ और गरीबी का लिवास पहना दिया। सब कुछ होने के बावजूद भी आज पास कुछ नहीं है। और वह रोता फिरता है कि दिल डर से भर गया है। अगर अल्लाह ताज़ाला की नेमतों की नाकदी की जाए तो अल्लाह ताज़ाला भूख और नन्यन और डर का लिवास पहना देते हैं।
अल्लाह ताज़ाला की पसंद

रब्बे करीम चाहते हैं कि मेरे बंदों पर मेरी नेमतों के असरात ज़ाहिर हों।

वैसे अल्लाह ताज़ाला इस बात को पसंद फूसाता है कि अपनी नेमतों का असर अपने बंदों पर देखे।

अल्लाह ताज़ाला तो चाहते हैं कि जिन बंदों को मैंने नेमतें दीं, वे उन नेमतों को इस्तेमाल कर के मगर यह भी चाहते हैं कि जो मेरा खाए वह मेरे गीत गाए। इसलिए हर देने वाला इस बात को पसंद करता है कि जब किसी को दिया जाए तो वह बंदा एहसान को माने कि ही मेरे ऊपर एहसान किया गया है। रब्बे करीम तो बड़ी अज्ञात हैं। उन्होंने हमें इतना दिया और बिन मांगे दिया। अब हमें चाहिए कि रब्बे करीम का एहसान मानें और अपने परचारखाने का शुक्र अदा करें।

हमारे शिक्षकों की असल वजह

आज हम ज्यादातर शिक्षे करते फिरते हैं कि अल्लाह ताज़ाला हमारी दुआ तो सुनता ही नहीं, दुआएं कुबूल नहीं होती, हम दुआएं मांग-मांग कर थक गए हैं। और वह फिर करें कि हम ने तो वडा कुछ पड़ा भी है। ये सारे शिक्षे किस लिए होते हैं? इसलिए कि हम यह समझते हैं कि हमने इबादत के ज़रिए अल्लाह ताज़ाला पर कोई एहसान ढाए दिया है। हमारे शिक्षकों की असल वजह यही है।
खुदा तआला के एहसान

मेरे दोस्तो! याद रखना—

ऐ ब्राह्मण! तू बादशाह पर एहसान न जतला कि तू बादशाह की विद्यमान कर गया है। और! बादशाह की बिद्यमान करने वाले तो लाखों हैं लेकिन यह बादशाह का तुझ पर एहसान है कि उसने तुम्हें विद्यमान करने के लिए कुश्ल कर लिया है।

क्या एहसान जतलाते फिरते हैं कि हम इबादतें करते हैं। क्या इबादतें करने वालों की कोई कमी है? नहीं यह तो परवर्दिगार का हम पर एहसान है कि उसने आप की तौफीक़ अता फरमा दी। उसने अपने घर में बैठने की तौफीक़ अता फरमा दी। हम अल्लाह तआला का एहसान मानों कि परवर्दिगार! यह तेरा करम है—

शुक्र है तेरा खुदाया में तो इस काबिल न था तूने अपने पर बुलाया में तो इस काबिल न था में के था बे रह तूने दस्तगीरी आप की निर्देशक के फिरता में तो इस काबिल न था मुद्दतों की ज्यास को सेगाब तूने किया जाब मुमकिन का फ्रीयाम में तो इस काबिल न था डाल दी ठंडक परे सीने में तूने सकंदिया अपने सीने से लगाया में तो इस काबिल न था तेरी रहमत तेरी शुक्रकाल से हुआ मुझको नसीब गुंबदें ख़िजरा का साथ में तो इस काबिल न था बारगाह सैय्यदुल कीनेन में आकर नफ़ीस सोचता हूं कैसे आया में तो इस काबिल न था
शुक्र की कपी का वबाल

मेरे दोस्तो! हमें चाहिए कि हम अपनी ज्ञान से अपने जिस से और अपनी इबादतो से अपने परवर्दिगार का जितना शुक अदा करें उतना थोड़ा है। आज यह अमल उम्मत में से घटता चला जा रहा है जिसकी वजह से अल्लाह ताजा अपनी नेमतें वापस लेते चले जा रहे हैं।

कौम सबा पर अल्लाह ताजा की नेमतें

अल्लाह ताजा ने एक कौम से कहा \( \text{"लक्कद कान जिस व मस्कुम"} \) तुम्हारे लिए कौम सबा के अंदर निशानिया हैं। यह वह कौम थी जिसके पास इतने बागार थे कि जिस रास्ते पर चलते थे \( \text{"जॉस यन र्यम र्यम"} \) उनके बाई तरफ भी बाग होता था, बाई तरफ भी बाग होता था और फिर परवर्दिगार का उन पर क्या हुआ था?

फरमाया \( \text{"कलौम र्न र्न र्कॉम"} \) तुम अपने परवर्दिगार का दिया हुआ रिज़्क खाओ और उसका शुक्र अदा करो \( \text{"बल्दा बॉल्ड"} \) उण का पाकीजा शहर है \( \text{"फ़ारब बालो"} \) और उनका परवर्दिगार उन्हें गुणाहों को बाधा देना वाला है। अल्लाह ताजा तो चाहते हैं कि मेरा दिया हुआ खाओ और मेरा शुक्र अदा करो ताकि मैं तुम्हें जाहिर में भी इज्जत दूं। और तुम्हारे गुणों को भी धोकर रख दूं और तुम्हें रोज़ महाश्र की इज्जतें भी नसीब हो जाएं लेकिन हम पूरी तरह शुक्र अदा नहीं करते।

शुक्र करने के तरीके

हमारी हालत यह है कि अगर कोई हम से पूछे कि तुजों जी
काम कैसा है? हम जवाब देते हैं कि वस जी गुज़ारा है हालाँकि यह वह आदमी बात कर रहा होता है जिसकी कई दुकानें हैं, कई मकान हैं, जो खुद खा पी लेता है मगर उसके पास लाखों की तालाब में बहुत सा माल पड़ा होता है, लाखों की जायदाद का मालिक है। ओ खुदा के बंद! तेरी जबान क्यों शुद्ध हो गई, तेरी जबान से क्यां तेरे रब की तारीफ़ अदा नहीं होतीं। अगर कोई वजीर तेरे बच्चे की नौकरी लगवा दे तो जगह-जगह उसकी तारीफ़ करता फिरता है कि फूलों ने मेरे बेटे की नौकरी लगवा दी। ओर! उस बंदे ने तुझ पर छोटा सा एहसान किया, तू इतना एहसानमंद होता है, तेरे परवरदिगार के तुझ पर कितने एहसानात हैं, तू उस के एहसानों की तारीफ नहीं करता। पूरा भी जाता है सुनाओ, कारोबार कैसा? ओजी वस गुजारा है। तुझे चाहिए तो यह था कि यूँ कहता कि मेरे मौला का करम है, मेरी अवकाश इतनी नहीं थी जितना रबे कीर्म ने युझे अता कर दिया, में तो इस काविल न था, में परवरदिगार का किन लफ़ज़ों से शुक्र अदा कर सकता। मेरे दोस्तो! हम अपने रब के गुन गाया करें, कहा करें कि परवरदिगार ने युझ पर इतना करम किया है कि यकीनन में इस काविल न था, में तो सारी जिंदगी सज़दे में पड़ा रहूँ तो भी उस मालिक का शुक्र अदा नहीं कर सकता, में तो सारी जिंदगी अगर उसकी हवादत में गुज़ार दूँ तो फिर भी हक अदा नहीं कर सकता। हमें चाहिए कि हम इस किस्म का जवाब दे जिससे परवरदिगार की अज़मतें जाहिर हों, उसकी तारीफ़ हों कि परवरदिगार ने हम पर कितने एहसानात किये, हमें उसके शुक्र अदा करने का सबक फिर से पढ़ने की ज़रूरत है। आप ग़ौर करेंगे तो आपको अपने आसपास कितनी ही नेमतें ऐसी नज़र आएगी कि आप खुद कहेंगे
कि रब्बे करीम के मुख पर कितने एहसानात हैं, मैं तो उसका शुक्र भी अदा नहीं कर सकता।

ऐबों की पर्दापोशी

अरे! और तो और रब्बे करीम ने हम पर इतनी नेमतें की कि आज हम दुनिया के अंदर इज्ज़त भरी जिंदगी गुज़ार रहे हैं। रब्बे करीम ने हमें छिपाए रखा है। यह परवरदिगार का कितना बड़ा कराम है जो हम इज्ज़तों की जिंदगी गुज़ारते फिरते हैं। यह मौला की सत्तारी की सिप्ता का सदक्का है। अगर परवरदिगार अपनी सत्तारी की चादर हम पर न फेलाता, वह अगर अपनी रहमत का पर्दा हमारे ऊपर न डाल देता तो हमारे ऐब लोगों पर खुल जाते और हमारे अंदर के जज्बात को अगर जिस्म की शकल में करके लोगों के सामने पेश कर दिया जाता तो हम नदामत से चेहरा न दिखा सकते थे। और सोचिए कि हमारे अंदर की कैफियतें क्या हैं और ऊपर से लोग हमें क्या समझते हैं। यह जो इज्ज़तों की जिंदगी गुज़ारते फिरते हैं वह भी तो मौला का कराम है कि परवरदिगार ने हमारे ऐबों पर पर्दा डाल दिया और हमारी अच्छी बातों को लोगों के सामने फेला दिया, आज लोग तारीफ़ कर रहे होते हैं।

मौला की तारीफ़

जिसने हमारी तारीफ़ की उसने असल में परवरदिगार की सत्तारी की तारीफ़ की। सच्ची बात भी यही है कि अगर मझूँक मझूँक की तारीफ़ करे तो यह भी मौला की तारीफ़ है, अगर
मक्खूक़ः ख़ालिकः की तारीफ़ करैँ तो यह भी मौला की तारीफ़ है,
अगर ख़ालिकः मक्खूक़ः की तारीफ़ करैँ तो यह भी मौला की
tारीफ़ है और अगर ख़ालिकः अपनी तारीफ़ आप करैँ तो यह भी
मौला की तारीफ़ है। सारी तारीफ़ें उसी को सजीती हैं। सब
tारीफ़ें की शान उसी को जेबा है। अल्लाह रब्बुल-क़ृत्य को ही
यह बात सजीती है, सब तारीफ़ें उसी की तरफ़ लौटती हैं। हमें
चाहिए कि हम उन नेमतों को गौर से देखें और परवरदिगार का
शुक्र अदा करें।

भिखारी के साथ हुस्ने सलूक करने का तरीक़ा

अगर कोई सवाल करैँ तो तो तुम उसकी सेहत को न देखा
kरैँ, उसको झिड़क न दिया करैँ बल्कि कुछ न कुछ देकर रुक़सत

किया करैँ अगर मोहल्त देखा करैँ तो ज्यादा दे दिया करैँ मगर
ख़ाली न भेजा करैँ। परवरदिगार का हुकम भी तो यही है (राॅमा)

साल्फ़ा ए वैल्फ़ाहर) और तुम सवाल करने वाले को इंकार न करो,
उसके हालात कैसे हैं? यह तो यही जानता है जो सवाल की
जिल्लत को सहन कर चुका है। आप तो इसलिए उसको दे दें
क्योंकि परवरदिगार ने तुम्हें देने वाला बनाया है मांगने वाला नहीं
बनाया। अगर वह चाहता तो तुम्हें उसकी जगह पर खड़ा कर देता
और उसे तुम्हारी जगह पर ले आता मगर परवरदिगार ने तुम्हें
आज देने वाला बनाया इसलिए जब कोई मांगने आया करे तो
कोई भी और रब का शुक्र अदा किया करें कि रबे करीम। तेज
कितना करम है, मेरे हाथ भी दूसरों के सामने फैल सकते थे, मेरी
बेटी के हाथ भी फैल सकते थे, मेरी बीवी के हाथ भी फैल सकते
ये। तेरा कितना कर्म है कि तुम हमें इज्जत की हालत में रखा, हमें लेने के बजाए देने वाला बना दिया।

“अल्हठुद्विल्लिल्लाह” कहने की आदत

आप अक्सर देखते हैं कि हम अपनी जुबान में बातचीत करते हुए अल्हठुद्विल्लिल्लाह का लफ्ज़ अक्सर नहीं बोलते। कोई आकर पूछता है, सुनाओ जी! क्या हाल है? हमने कभी नहीं कहा, अल्हठुद्विल्लिल्लाह मेरी सेहत ठीक है, अल्हठुद्विल्लिल्लाह अल्लाह तबाहा ने मुझे खुबसूरत घर दिया, अल्हठुद्विल्लिल्लाह अल्लाह ने बेरा दिया, अल्हठुद्विल्लिल्लाह मेरे खाना खाया, हमारी बातचीत में अल्हठुद्विल्लिल्लाह का लफ्ज़ बहुत कम इस्तेमाल होता है। और! परवरिदिगार को खुद कर्ममाना पड़ा वो अफरेरे मेरे बड़ों में से थोड़े शुकुगज़ बने हैं। इसीलिए तो सही कि उस परवरिदिगार को यह कहना पड़ा जिस परवरिदिगार की नेत्रों तमाम इसानों पर है, जो अपनों को भी देता है और परियों को भी देता है, वह जो ईमान वालों को भी देता है और काफ़िरों को भी देता है—

उसके अलतफ़ तो थे आम शहीदी सब पर
tुझसे क्या जिब्रुद थी अगर तू किसी कायल होता

फ़िक़ की घड़ी

एक कुछ जिसको मालिक सूखा दुकड़ा डालता है वह अपने मालिक का इतना वफादार बनता है कि मालिक के घर का रात जगकर पहरा देता है। मालिक खाना खा रहा होता है तो यह जूतों में बेठकर मालिक को देख रहा होता है, मालिक हड़ड़ी पंक
दे तो हुशी से खा लेता है अगर कुछ न पंके तो सब के साथ वहीं बक्स गुजारता है। उसकी जान पर शिकार के बोल नहीं आते। ओ बदे! तैरे परवरिडिगार ने तुझे सुबह, दोपहर, शाम खाने को अता किया, तू मनमोही गिजाए खाता है, फिर कोई छोटी-मोटी नामवारी पेश आ जाती है तो फोरन शिकवे करता है कि ओजी हमने तो बड़ी दुआएं मानी हैं, सुनता नहीं।

हकीकत यह है कि आज हमारे अंदर तकबुर इतना भर चुका है कि हम जब कह रहे होते हैं कि अल्लाह ताबला हमारी सुनता नहीं तो दूसरे लोगों में धूम कह रहे होते हैं कि ऐ अल्लाह! हम ने प्लानिंग तो कर ली, प्रोजेक्ट तो बना लिया अब ऐ अल्लाह! इस पर अमल आप जल्दी-जल्दी कर लीजिए। अरे वह परवरिडिगार है, उस परवरिडिगार को हम ने अल्लाह हिन्दूजात फरमाए हमने नौकर की तरह समझ हुआ है कि अब वह इस पर अमल करेगा। उस परवरिडिगार की शान है कि अगर वह चाहें तो बंदों की दुआओं को कुश्ती कर ले और अगर वह न चाहें तो अपने अंधिया किराम की दुआओं को भी रद्द कर दे, उसे कोई रोकने वाला नहीं। वह अगर चाहें तो फासिक व फाजिया की दुआओं को कुश्ती कर ले। वह बेपरवाह ज़ात है।

मेरे दोस्तो! उसकी शाने बेनियाज़ी का जहूर होता है तो बलाम बाओर की पाँच सो साल की इबादत के बावजूद उसके फटकार के रख देते हैं और जब उसकी रहमत की हया चलती है तो फुजेल बिन अयाज रहू जो डाकुओं के सरदार थे, रब्बे करीम, उसकी वहाँ से उठाकर बलियों का सरदार बनाकर रख देते हैं। परवरिडिगार बेनियाज़ ज़ात है। ऐसा न हो कि कभी उसकी
बेनियाज़ी जाहिर हो फिर तो हम तिगनी का नाम नाचते फिरेंगे। यदि रखना कि जब अल्लाह तआला किसी से नाराज़ होते हैं तो पगड़ियाँ उखल जाती हैं, दुआटे उतर जाते हैं फिर इशान घर बैठे बिठाए जलील हो जाता है। बड़ी-बड़ी इजराएँ वालों के चेहरे दिखाने के काफिल नहीं रहते। परवरदिगार नाराज़ न हो। अगर परवरदिगार नाराज़ हो जाए तो चलते फिरते भी वह बंदा मरा फिरता है। उसके अंदर का इशान जिंदा नहीं होता। लोग खुद कहते हैं कि अब हम इतने जुलील हो गए हैं कि मेरे फिरते हैं, हमारी जिंदगी भी कोई जिंदगी है।

मेरे दोस्तो! परवरदिगार कभी नाराज़ न हो, यह दुआएं मांगा करो। रब्बे करीम हमसे राजी रहना, हम पर मेहरबानी फ़रमाते रहना, हमारी कोताैहियों की वजह से कहीं हम से नाराज़ न हो जाना। जब रब्बे करीम की रहमत की नजर हट जाती है तो फिर बंदे की नाब हिचकोले खाने लग जाती है। फिर तो इसान की हिज़ाजत मुश्किल होती है। फिर तो इसान को अपनी इजरात की हिज़ाजत मुश्किल होती है। हमें चाहिए कि सबके नेमते उसने दी उनका शुक अदा करें और मेरे ऊपर नेमते नहीं हैं हम उनको अल्लाह तआला से मांगते रहें, उसका दरवाज़ा खटखटाते रहें। एक बक़्त आएगा कि रब्बे करीम उस दरवाज़े को खोलेगा और हमें वे नेमते अता फ़रमा देगा। लिहाज़ा इस सबक को अच्छी तरह दिमाग़ में बिठाने की जुर्गर है जब हम शुक अदा करना सीख लेंगे तो अल्लाह तआला अपनी नेमतों को और ज्यादा कर देंगे। अल्लाह तआला हमें दुनिया की नेमतों से भी माला माल फ़रमाएँगे और अल्लाह तआला हमें रहनी नेमतों से भी माला माल फ़रमाएँगे।
तीन आदमियों की आज्ञामान्य

हजरत मोहल्ला बदरे आलम शहब रहौने “तर्जुमानुसननः” में इस हदीस का भी जिक्र फूरमाया है कि बनी इताली में तीन आदमी थे। उनमें से एक आदमी के चेहरे पर कोड़ के निशान थे, दूसरे के सर पर बाल नहीं थे और तीसरा आँखों से अंधा था। उन तीनों के साथ अजीब मामला पेश आया। उनमें से एक आदमी ऐसा था जिसके चेहरे पर कोड़ के दाग थे, शक्ति भी अच्छी न थी, लोग भी उसे देखना पसंद नहीं करते थे, महफ़्ल में बैठकर वह अपने आकर मुजरिम की तरह से महसूस करता था। इसलिए बड़ा परेशान फिरता था। उसका कारोबार भी नहीं चलता था।

उसके पास एक आदमी आया और आकर उस आदमी ने कहा कि बताओ कि तुफानी कोई परेशानी है? यह कहने लगा, हाँ बड़ी परेशानी है। पूछा, कौन सी परेशानी है? वह कहने लगा, अल्लाह तालाबा मेरे कोड़ के दाग ठीक कर दे। मेरा चेहरा इस काबिल हो कि मैं लोगों में इज़ज़त के साथ बैठ सकूं और अल्लाह तालाबा मेरे कारोबार को ठीक कर दे ताकि मैं इज़ज़त की रोज़ी खा सकूं, मेरे लिए यही काफ़ी है। लिहाज़ा उस आदमी ने दुआ की। अल्लाह तालाबा ने उस बदे की कोड़ की बीमारी को दूर कर दिया और उसे एक ऊँटनी अता की। ऊँटनी की नसल इतनी बड़ी कि हज़ारों ऊँट और ऊँटनियों का मालिक बन गया। उसका शुभार अमीर आदमियों में होने लगा।

फिर वह आदमी दूसरे के पास गया। जिसके तिर पर बाल नहीं थे। लोग उसका मज़ाक उठाते रहते थे और उसे गंजा कहते
ये। कारोबार भी अच्छा नहीं था इसलिए परेशान रहता था। उस आदमी ने पूछा, सुनाओ भई! तुम्हारा क्या हाल है? वह कहने लगा, वस एक तो सर पर बाल न होने की वजह से परेशान हूँ और दूसरा कारोबार न होने की वजह से परेशान हूँ। उस आदमी ने कहा, अच्छा अल्लाह तजाला तुम्हारे सर पर खूबसूरत बाल उगा दे कि तुम देखने में खूबसूरत नजर आओ और अल्लाह तजाला तुम्हें अच्छा कारोबार अता करे। लिहाज़ा उसके सर पर खूबसूरत बाल आ गए और अल्लाह तजाला ने उसको एक गाय अता की। गाय की नसल इतनी बड़ी कि हज़ारों गायों का मालिक बन गया और वक़्त के अमीर लोगों में उसका शुमार होने लगा।

फिर वह तीसरे आदमी के पास गया और पूछा कि सुनाओ तुम्हारा क्या हाल है? उसने कहा, मैं तो आँखों से अंधा हूँ, मैं तो ठोकरें क्षति होती है। मैं तो लोगों से भीख मांगता हूँ। मेरी भी क्या ज़िंदगी है? दुआ करो अल्लाह तजाला मुझे रोशनी अता फरसा दे और अल्लाह तजाला मुझे कोई अच्छा रिक्त अता करे और ग़ैर की मोहताज़ी से बचा ले। लिहाज़ा उस आदमी ने दुआ दी। अल्लाह तजाला ने रोशनी भी अता फरसा दी और उसको एक बकरी अता की। उस बकरी का रेवङ्ग इतना बड़ा कि वह हज़ारों बकरियों का मालिक बन गया। उसका शुमार अमीर और बड़े लोगों में होने लगा।

कई साल इन नेतों में गुज़र गए। लोगों में बड़े चर्चे, बड़ी इज़ाक़ में कि फलां तो चौथिरी साहब हैं, फलां तो नवाब साहब हैं, फलां तो राना साहब हैं। उनका रहन-सहन अमीरों जैसा बन गया,
बड़े नीकर-चाकर हो गए, दुनिया के मकान और महल बना लिए थे, बड़ी इज़ज़तों की जिंदगी गुजारने लगे और वक़्त के साथ-साथ गुफ़्तगृह का शिकार हो गए।

जब काफ़ी अरसा गुज़र गया तो वही आदमी पहले के पास आया और कहने लगा, मैं मोहताज़ हूँ, मैं ग़रीब हूँ, मैं आपके पास आया हूँ, एक वक़्त था जब आपके पास कुछ नहीं था। अल्लाह ताआला ने आपको सब कुछ अदा कर दिया। आप मुझे उसी अल्लाह के नाम पर कुछ दे दें। यह सुनकर उस आदमी को बड़ा गुँज़ग आया। कहने लगा, तुम ने यह क्यों कहा कि एक वक़्त था जब तुम्हारे पास कुछ नहीं था, मेरा दादा अमीर, मेरा बाप अमीर और मैं खुद अमीर, मैंने वचन में फलां जगह जिंदगी गुज़ारी, मैं तो सोने का चम्मच मुँह में लेकर पैदा हुआ था, मैंने तो वचन से दौँत देखी, अरे! मैं तो खानदानी अमीर हूँ, तुम कैसी बातें करते हो, तुमने लोगों के सामने यह बात करके मेरी बेहद ख़ुशी कर दी।

उसने कहा, अच्छा फिर जैसे तुम पहले थे अल्लाह ताआला तुम्हें वैसा ही कर दे। वह कहकर वह आदमी चला गया। अल्लाह ताआला के इरादे से उसको फिर कोई का मर्ज़ हो गया, ऐसी बीमारी फैली कि सारी की सारी ऊँटनियाँ मर गयीं, जाएदाद ख़त्म हो गई और यह उसी पहली वाली हालत में दौबारा आ गया।

फिर वह आदमी दूसरे के पास गया। उसको कहने लगा कि मैं बड़ा ग़रीब हूँ, मोहताज़ हूँ, मुझे अल्लाह के नाम पर कुछ दे दो। उसी अल्लाह के नाम पर जिसने आपको सब कुछ दिया जबकि आपके पास तो अपना कुछ भी नहीं था। वह कहने लगा, तुमने कैसी बात की? अरे मैं बड़ा अक़्लमंद आदमी हूँ, दुनिया मुझे बड़ा
बिजनिसमैन कहती है, दुनिया मेरे फूसले मानती है। मैंने फ़ला कारोबार किया, ऐसा सौदा किया कि मुझे इतनी बचत हुई, फ़ला सौदा किया इतनी बचत हुई, मियाँ! मेहनत से कमाया है। बगीर मेहनत के कुछ नहीं मिलता। तुम बैठे ही चलकर आ गए भूखे नगे बनकर, तुम्हें कैसे मिल सकता है? हमने यह मेहनत की कमाई की है, कोई आसमान से हमसे नहीं गिर गया, हम ने दिन रात इसके पीछे मेहनत की तब हमें यह मिला है। जब उसने इस किस्म की बातें की तो यह आदमी कहने लगा, अच्छा जैसे तुम पहले थे फिर अल्लाह तजाला तुम्हें बैठा ही कर दे। जब उसने बदलुआ कर दी तो उसका गाय बसकी मर मर गयी, जाएतंदे नुकसान का शिकार होकर हाथों से निकल गयी। उसके सर के बाल भी गिर गए, जिस हालत में पहले था उसी हालत में वह दोबारा हो गया।

फिर वह तीसरे आदमी के पास गया और उससे जाकर कहा कि मियाँ! मैं मोहताज हूँ, मैं गृहीब हूँ, मुझे कुछ दे दो उसी अल्लाह के नाम पर जिसने आपको सब कुछ दिया जबकि आपके पास तो कुछ भी नहीं था। जैसे ही उसने यह बात कही उस आदमी पर अजीब कैषियत तारी हुई। आँखों से आँसू आने लगे और वह कहने लगा कि भाई! तुम बिल्कुल ठीक चक्कर हो, मैं तो अंधा था, मैं तो लोगों के सामने हाथ फैलाया करता था, मैं दर-दर की ठोकरे खाता फिसाता था, मेरी दुनिया बीर्न की, मैं भीख मांगता था लोगों के सामने मांगने का कटोरा लेकर जाया करता था। एक दफ़ा कोई खुदा का बंदा आया। उसने दुआ कर दी, मेरे रब ने मुझे आँखों की रोशनी भी अता कर दी और एक ब्रकरी
ऐसी दी जो इतनी बरकत बाली थी कि आज देखो कि दोनों पहाड़ों के बीच जितना रेवड़ जड़ा आता है, यह सब मेरे मौला का कर्म है। ये सब मेरे मौला की देन है, मेरे पास अपना कुछ नहीं था, यह किसी की दुआ लग गई। मेरे दोस्त! तुम उस अल्लाह के नाम पर मांगने के लिए आए हो, मेरा रेवड़ तुम्हारे सामने है, तुम जितना चाहो उन बकरियों में से ले सकते हो। मेरे माल में से जितना चाहो तुम ले सकते हो। मैं अपनी अवकाश को क्यों भूलूं। मैं तो वही अंधा हूँ, मेरे मौला ने मुझे पर कर्म किया। उस अजनबी आदमी ने कहा, तुम्हें मुबारक हो, मैं तो अल्लाह का फरिश्ता हूँ। अल्लाह त्याला ने मुझे तीन बंदों के पास इस्तिहाद के लिए भेजा था। दो बंदे अपनी अवकाश को भूल गए और उन्हें परवर्धिगार ने नेमतों को वापस ले लिया मगर तुमने अपनी अवकाश को याद रखा, जा अल्लाह त्याला तेरी इज़्ज़त और माल में बढ़ीतरी करे। तिहाड़ा वह आदमी बनी इस्काइल के बड़े इज्ज़तदार और मालदार लोगों में से बन गया।

अल्लाह की तारीफ़ें करें

मेरे दोस्तो! हमें भी चाहिए कि हम अपनी अवकाश को याद रखें, हम दुनिया में आए थे तो क्या कुछ लेकर आए थे? जिस पर लिस्ट भी न था, दूसरी चीज़ें तो बाद की बातें होती हैं जो कुछ मिला परवर्धिगार ने दिया। हम उस परवर्धिगार का दिया हुआ खाए और उसी के गीत गए, उसकी तारीफ़ करते हुए न थकें, हर वक्त ज़बान पर उसकी तारीफ़ें हों, हर वक्त उसी परवर्धिगार की शान बनान करें, इतनी तारीफ़ें करें कि लोग हमें
दीवाना कहने लग जाएं। अगर दीवानों की तरह हम परवरदिगार की रहमतों का शुक्र अदा करें तो हम उसकी रहमत का शुक्र फिर भी अदा नहीं कर सकते। मेरे दोस्तों। सच्ची बात कहता हूँ, इस बक्त मिमरे रसूल पर बेटा हूँ, वह परवरदिगार अगर हमें आँखें न देता तो हम अंधे होते, वह हमें बोलने की ताक़त न देता तो हम गूँगे होते, वह हमें सुनने की ताक़त न देता तो हम बहरे होते, वह हमें अक़़ल न देता तो हम पागल होते, वह हमें सहत न देता तो हम बीमार होते, वह औलाद न देता तो हम बेऔलादे होते, वह हमें माल न देता तो हम भीख मंगे गुरीब होते। ये जितनी नेमतें हैं वे सब मेरे परवरदिगार का करम है।

अल्लाह तअला की कृदर करें

ओ क्यों नहीं दामन फैलाते और मालिक का शुक्र अदा करते कि रब्बे करीम! कुर्बान जाएं तुने नेमतों की हड़ कर दी मगर हम उसका शुक्र अदा नहीं कर सके। अल्लाह! जो अब तक ग़लती कर चुके नाशुकी वाली, इतने करीम आक़ा को कुरआन मज़ीद में कहना पड़ा। (जो विलिल्लियुद शकुरु) मेरे बंदों में से थोड़े मेरा शुक्र अदा करने वाले हैं। ऐसे करीम आक़ा को कहना पड़ा। (मादरो लालिल ईल्लह हुज़रदर्तियुर का) और! इन लोगों ने अल्लाह की कुदर नहीं की जैसे करनी चाहिए थी। वाक़ई हम नाक़दरे निकले, नाशुक़ी निकले। परवरदिगार! हमारे गुनाह को माफ़ फ़र्मा दे और आइंदा हमें अपनी कुदरदानी करने की और अपना शुक्र करने की तोफ़ीक अता फ़र्मा दे।

छोटे-मोटे परेशानियों जिंदगी का हिस्सा होती हैं। जब मालिक
की तरफ से लाखों खुशियाँ और नेमते मिलीं तो शुक किया करें और छोटी-मोटी परेशानियों पर सब्र किया करें। रब्बे करीम सब्र करने वाले को भी जन्मत अता करेगा, शुक करने वाले को भी जन्मत अता करेगा।

واخر دعا وان الحمد لله رب العلمين.
सब्र की वरकटें

हमद लल्ल और सलाम उपेन्द्र उनके दिन अपने एमा बढ़ा
फायदे बालोदे मुमकिन रहे
भूमि और रहमत रहे
अभी इसके इस्पात इस्म के उपर होता है
सबका नाम निष्पात होता है और कभी कुछ एक बीच के नीचे
दबा होता है, कभी जवानी और सेहत का आलम होता है और
कभी बांधक की वजह से चारपाई के साथ लगा होता है। जिंदगी
गृह और खुशी के बीच गुजरती चली जा रही है। इसने समझता
है कि कुछ गुजर रहा है वह सोत के कुछ पता चलता है कि
कुछ क्या गुजरना था में ही इस दुनिया से गुजर गया—
एक ही काम सब को करना है
यानी जीना है और मरना है
रह गई बात रंग व राहत की
यह फॉक्स कुछ का गुजरना है
भांति के लिए एक ही काम है कि जीना है और मरना है यानी अमल करने हैं और हिसाब देना है। रह गई खुशी और ग़म की बात तो यह तो नियंत्रण की तरह है।

खुशी और ग़म के असबाब

जब इस्लाम पर अल्लाह तआला के जमाल की तज्ज्विलियाँ नाज़िल होती हैं तो उसे खुशियाँ नसीब होती हैं। ऐसे में अगर वह दिवारी को अपना लिए होता, तो अनुभव करते हैं, उलटे काम को भी अल्लाह तआला भी भाग कर देते हैं, फैसलों में वर्कर डाल देते हैं, दुनिया में हर तरफ से ऐसे इस्लाम के लिए बाहर वाह की आवाजें आती हैं। और जब किसी इस्लाम पर जलाल की तज्ज्विलियाँ पड़ती हैं तो फिर इस्लाम के लिए दुनिया में मुश्किलें ही मुश्किलें होती हैं, हर तरफ से फ़रेशनीयाँ, दांया कदम उठाए तो परेरा, बांया कदम उठाए तो परेरा, सोने की हाथ लगाए तो दिवारी बन जाता है, चलते काम को हाथ लगाए तो वह अटक जाता है, सोच समझकर इंज्जुट के हासिल करने के लिए कदम उठाए है। अगर बदनामी और जिल्लत मिल जाती है, हर तरफ से बुरी खबरें, परेरा, मुश्किलें और बीमारियाँ घेरे लेती हैं। यह अल्लाह तआला के जलाल की तज्ज्विलियाँ होती हैं।

कुरआन पाँच में इशाद फ़रमाया:

अल्लाह तआला ही क़ब्र करने देता है और खोलने देता है।
कभिज और वासिन्त अल्लाह तआला के दो नाम हैं। कभिज का मतलब होता है कभिज में लेने वाला, छीन लेने वाला और
शैतान का वर्गालाना

शैतान इन दोनों हालातों में बंदे को बहकाने की कोशिश करता है। ख़ुशी के हालात में तो गुफ़ाल में डाल देता है और ग़म के हालात हें तो नाममीद बना देता है। गुफ़ाल में पड़ने वाला भी रास्ते से हट गया और नाममीद होने वाला भी रास्ते से हट गया। इन मज़कूरों का बुनियादी मकसद इसी बात को समझाना होता है। अपनी तक़रीर का जादू जगाना नहीं होता बल्कि बात समझाकर ज़िंदगियों में कोई तब्दीली पैदा करनी होती है।

जन्नत का दाख़िला

इस आज़ाद को याद है कि पिछली महफ़िल में अल्लाह रब्बुलीज्ज़त की नेताओं का शुक्र अदा करने का मज़ुमत आपकी ख़िदमत में बयान किया था और आज मुसीबतों पर सब्र करने के बारे में कुछ कहने का इरादा है। शुक्र अदा करने वाला भी जन्नती और सब्र करने वाला भी जन्नती। मानो शुक्र और सब्र दोनों जन्नत में दाख़िल होने के असवाब हैं। इसने ख़ुशी के
hareem में हो तो शुक अदा करे और गम और परेशानी के हालात में हो तो सब्र करे।

चिराग़ बुझ जाने पर अज़ व सब्र

मोमिन को दुनिया में जो भी परेशानी आती है, छोटी हो या बड़ी, अल्लाह तब जल्दी तरफ से उसका अज़ और बदला मिलता है। हज़रत आएशा रज़िय़त्ताहु अन्हा ने एक बार देखा कि रात को चिराग जल रहा है, हवा का झोका आया और चिराग बुझ गया। नबी अल्लाहुआलाम ने फौरन पढ़ा रहा रज़िय़त्ताहु अन्हा बड़ी हँसने हुई। अज़ किया कि ऐ अल्लाह के महबूब! यह आयत तो बड़े गम और मुसीबत के आ जाने पर पढ़ी जाती है। फ्यूरामा आएशा! मोमिन के लिए इस चिराग का बुझ जाना भी एक मुसीबत है और इस चिराग के बुझ जाने पर जो यह आयत पढ़ा अल्लाह रखबुलइज़ज़त की तरफ से इस पर भी अज़ मिलेगा। जब घर का चिराग बुझ जाए उस पर सब्र करने वाले को अज़ मिलता है तो जिस के बेटे की जिंदगी का चिराग बुझ जाए अगर उस पर कोई सब्र करेगा तो कितना अज़ अता किया जाएगा।

मरीज़ के लिए अज़ व सब्र

हदीस पाक में आया है कि जब कोई बंदा बीमार पड़ जाता है तो अल्लाह तब जल्दी फ़रीदों को हुक्म देते हैं कि इस मरीज़ के पूँछ से कराहने की जो आवाज निकल रही है यानी ‘हूँ’, ‘हूँ’ हर हर बार कराहने पर मुझ्नअल्लाह कहने का अज़ लिखा जाए।
और अगर मरीज़ दर्द की वजह से चीखने लगे तो फरिश्तों को हुक्का होता है कि तुम "ला इलाहा इल्लाल्लाह" पढ़ने का अज उसके आमलनामे में लिखो। जब वह मरीज़ साँस लेता है तो हर हर साँस के बदले अल्लाह के रास्ते में सदृका करने का अज उसके आमलनामे में लिखा जाता है जिस तरह कि मुसल्ले के ऊपर खड़े होकर तहज्जुद पढ़ने वाले को अज़ दिया जाता है और जब वह आदमी अपनी बीमारी और तकलीफ़ की वजह से करवट बदलता है तो अल्लाह रब्बुलहज्जूत के रास्ते में हुशमन पर पलट-पलट कर हमले करने का अज़ दिया जाता है।

आयते करीमा की फ़ज़ीलत

हदीस पाक में आया है कि जब कोई आदमी बीमार हो जाए तो उसको चाहिए कि वह पढ़े ले :

(60) ला इलाहा इल्लाह अल्ला इल्लाह-उक- इन्नी कुल्
मिनज़ातनिमीन

इसे आयते करीमा कहते हैं। अगर कोई आदमी अपनी बीमारी में इसको चालिस बार पढ़े ले तो अगर सेहत मिली तो अल्लाह तब उसने गुनाहों से पाक फ़र्मा देंगे और अगर बीमारी में ही उसकी मीत आ गई तो अल्लाह तब दिन शहीदों की क़िल में खड़ा फ़र्मा देंगे।''

मरीज़ की हुआ कुबूल होती है

हदीस पाक में आया है कि जब तुम अयादत करने के लिए
किसी मरीज के पास जाओ तो उससे अपने लिए हुआ कराओ इसलिए कि मर्ज की हालत में अल्लाह रख्मुलइज्ज़त बदें की हुआ को इस तरह कुरूल करते हैं जिसे थर कि वह अपने फरिश्तों की दुआ को कुरूल कर लिया करते हैं।

सैय्यदना अयूब अल्हिस्सलाम का सब्र

सैय्यदना अयूब अल्हिस्सलाम अल्लाह तआला के पैगम्बर थे। अल्लाह रख्मुलइज्ज़त ने उनको माल दिया, औलाद दी, हताकिर हर तरह की नेम्बर्टें दी थीं। शैतान कहने लगा कि उनकी सारी इच्छाओं इसलिए हैं कि उनकी दुनिया का माल व दौलत मिला हुआ है, जरा लेकर देखें कि तो फिर पता चले। अल्लाह रख्मुलइज्ज़त के चाहने से उनका जितना माल था वह तारा का सारा माल किसी वजह से बर्बाद हो गया। कहने लगा, औलाद तो है। ऐसी बीमारी आई कि उनकी जितनी औलाद थी वह सारी की सारी उनकी आँखों के सामने रह गई। शैतान कहने लगा, सहेत तो है। अल्लाह रख्मुलइज्ज़त ने उनके जिस्म पर भेंट के दानों की तरह दाने निकाल दिए। यहाँ तक कि उनकी जूबां और आँखों के सिवा पूरा जिस्म उन दानों से भर गया। वह दाने इतने बडे ज्ञान बन गए कि उसमें कीड़े भी पड़ गए।

मुफ़्रिसीरीन ने लिखा है कि इस बीमारी में अन्नादृश साल गुज़र गए और हर दिन अल्लाह रख्मुलइज्ज़त की तरफ से सब की वजह से उनके दर्जत बुलंद होते, जबान से कोई शिकायत व शिकायत की कोई बात न निकलती। यहाँ तक कि अगर कोई कीड़ा जिस्म के ज़ुँझ से गिरता था तो वह उसको भी उठाकर
बापस रख देते थे कि जब मेरे जिस्म को अल्लाह तजाला ने तेरी गिजा बनाया तो नीचे क्यों गिर रहा है।

अठारह साल के बाद शैतान बहुत परेशान हुआ कि यह तो अल्लाह के ऐसे खास बंदे हैं कि इतनी आज़माईशे में भी अपनी जबान से कोई बेसब्री या नाश नहीं निकाला। शैतान को परेशान देखकर उसके चेहरों ने उसे कहा कि मियाँ! तुम ने जिस तरह उनके बाप को भूत में दाला था, क्यों न हम उन पर वही गुर आज़माएं। कहने लगा, हाँ। तिहाज़ा वह उसकी बीवी के पास एक हकीम और तबीब की शक्त में गया और कहने लगा कि देखो मैं तुम्हें एक वात बताने के लिए आया हूँ ताकि तुम्हारे मियों को सहेत हासिल हो जाए। वह खुश हुई, हर बीवी चाहती है कि शौकर को सहेत मिले। कहने लगा कि उसका इलाज मेरे पास मौजूद है मगर हमारे हाँ दस्तूर यह है कि जैसे तुम अर्श के खुदा को सज्जा करते हो, एक दफ़ा मुझे भी सज्जा कर लो तो मैं एक ऐसा इलाज आज़राउँगा कि तुम्हारा शौकर सहेतमंद हो जाएगा।

बीवी ने सुना तो ख़़ामोश हो गई। कहने लगी कि मैं उनके पास जाऊँगी और उनसे पूछूँगी। तिहाज़ा तपस्वी में लिखा है कि वह आपके पास आयें और उन्होंने आकृत पूछा। हजरत अयूब अलेहिसलाम को बड़ा गुस्सा आया और फरसाया, तूने उस बक़्त उस मर्दूद को क्यों न कहा कि तू शैतान है, यह क्यों कहा कि पूछकर वताऊँगी? अगर अल्लाह ने मुझे सेहत दे दी तो मैं तुम्हारे सी कोई लगाऊँगा कि तूने ईमानी गैरत क्यों नहीं दिखाई और ऐसे शैतान मर्दूद को उसी बक़्त पुँछ पर जवाब क्यों न दे मारा।
आपका जवाब सुनकर शैतान और नाउमीद हो गया। सोचने कहा
कि दो चार साल और इसी तरह गुजरे तो हो सकता है कि यह बीमारी से परेशान हो जाएं।

एक दिन उसने क्या सुना कि हज़रत अय्यूब अल्लाह्स्लाम दुआ माँग रहे थे कि ऐ अल्लाह! मेरी जिंदगी का जो वक्त गुज़रा वह तो गुज़र गया, जब यह बीमारी और गुम तेरी ही तरफ से है तो अगर आप मुझे सी साल की जिंदगी भी देंगे तो मैं सी साल भी इस हाल में आपको नहीं भूलूंगा। जब शैल्तन ने यह सुना तो वह कहने लगा कि वाकई यह अल्लाह रखबुलौज़्ज़त के वह खास बदें हैं कि जिनके ऊपर मेरा कोई दांव नहीं चल सकता।

अल्लाह तालाला ने फिर अपने पाये नवी अल्लाह्स्लाम को सेहत दी। बीमारी की हालत में बीवी का कहा था कि सो कोड़े लगाऊँगा। लिहाज़ा बात भी पूरी करनी थी। अब अल्लाह तालाला ने उनकी बीवी के ऊपर रहम खाया और हज़रत अय्यूब अल्लाह्स्लाम से कहा कि तुम पेड़ की एक छोटी-छोटी, पतली-पतली दहनियाँ मिसवाक के बराबर इकट्ठी कर लो और एक सी को बांधकर उसके जिसम पर एक दफ्तर पारों तो सी कोड़े समझे जाएंगे। यहाँ से एक बात निकली कि जब परवरदिगार आतम किसी बदे की गुलाबी और कोताही को माफ़ करना चाहते हैं तो रबे करीम उसका रास्ता खुद बता दिया करते हैं। हदीस पाक में आया है कि अल्लाह तालाला जब किसी बदे की बहस्सश करना चाहते हैं तो उसके किरामत कालिबीन यानी जो फरिश्तें रोजाना बदल रहे होते हैं नेकी और बुराई लिखने वाले, उन में से नेकी के फरिश्तें को तो रोजाना बदलते रहते हैं मगर गुनाह लिखने वाले फरिश्तें को नहीं बदलते, वह वही फरिश्ता रहता है। इस तरह
उसकी जिंदगी में नेकी का फरिश्ता रोज़ाना आकर बदल रहा होता है और गुनाहों वाला फरिश्ता एक ही रहता है। कुयामत के दिन उस बदे के आमालानामे में गुनाह तो लिखे होंगे और उन गुनाहों पर गवाही देने के लिए एक फरिश्ता होगा। जबकि उसकी नेकियों की गवाही देने के लिए जितने उसकी जिंदगी के दिन ये उतने ही फरिश्ते खड़े होंगे। रब्बे करीम फर्माएंगे मेरे बदे की नेकियों पर जब इतने गवाह हैं तो मैं उसके गुनाहों वाले एक गवाह को कैसे कुबूल कर लूँ। तिहाज़ा अल्लाह तआला फर्माएंगे कि जाओ मैं इस बदे को माफ फर्मा दिया।

हज़रत अय्यूब अलेहिस्सलाम को तीन इनाम

अल्लाह रब्बुलइज़ज़त ने हज़रत अय्यूब अलेहिस्सलाम को फर्माया फ़िलाह और जन्म उसे सब्र करने वाला पाया। मेरा कैसा अच्छा बंदा था जब मेरी ही तरफ रूख करने वाला था। तीन बातें कहीं और उनकी अड़ताल साल की तकलीफ़ का हक़ अदा कर दिया। कुयामत तक इन सिफारिश के साथ हज़रत अय्यूब अलेहिस्सलाम का ज़िक्र किया जाएगा।

अल्लाह तआला की तरफ से हज़रत अय्यूब अलेहिस्सलाम की बीमारपृष्ठीय

किसी बुरुआ का कोई है कि हज़रत अय्यूब अलेहिस्सलाम से उनकी बीमारी के दिनों के बाद पूछा गया कि हज़रत! यह सेहत का ज्ञाना अच्छा है या वह बीमारी का ज्ञाना अच्छा था। फर्माने लगे कि सेहत भी अल्लाह की नेमत है, बीमारी भी
अल्लाह तालाला की नेमत है, लेकिन एक अजीब बात है कि मेरे जब बीमार था और सुबह होती थी तो अल्लाह रब्बुलइज़़्त पूछते थे कि अयूब! तेरा क्या हाल है? मुझे इस बात से इतना मजा मिलता था कि पूरा दिन मुझे तकलीफ़ नहीं होती थी। जब शाम होती तो अल्लाह तालाला फिर अयादत फरमाते थे कि अयूब तेरा क्या हाल है? उससे सारी रात मुझे तकलीफ़ महसूस नहीं होती थी। बीमारी तो चली गई लेकिन अल्लाह तालाला की अयादत का मजा मुझे आज भी याद आता है।

सब्र किसे कहते हैं?

सब्र कहते हैं कोई तकलीफ़ वाली बात पेश आए तो इसका पूरा ज़िबान से अर्थ-आयत के ख़िलाफ़ कोई बात न निकाला, न जिसमे अर्थ-आयत के ख़िलाफ़ काम करे, अपने आपको क़़बूल में रखे। न ज़िबान से परवरदिगार के शिकार के न आवश्यक से उसकी नामग्रामिणी हो। अगर गम, मुसीबत, बीमारी और परेशानी के बावजूद भी यह कैसफ़ियत है तो यह आदमी सब्र करने वाला कहलाएगा। आमतौर पर देखा गया है कि जब हमें कोई इस किस्म की हालत पेश आती है तो हम इससे लोगों से इस बात का बदला लेने के लिए छुद हुल जाते हैं।

बेहतरीन हिकमत अपलो

मिसाल के तौर पर किसी ने कुछ ऐसे बोल कह दिए जो हमें नागवार गुज़रे, हम सोचते है कि हम ईट का जवाब पत्थर से देंगे। रिश्वदनारों में कोई ज़गड़ी की बात हो गई तो हम कहते हैं कि उन्होंने
महबूबा और महबूब का बदला

एक बार का बाकिया है कि एक बुजुर्ग अल्लाह वाले जा रहे थे। सर्दी का मौसम था, बारिश हो रही थी। सामने से मियाँ-बीवी आ रहे थे। उन बुजुर्ग के जूतों से छींटे उड़ीं और औरत के कपड़ों पर जा गिरीं। शीर्षर ने जब देखा उसे बड़ा गुस्सा आया। कहने लगा, तू अंधा है? तुझे नज़र नहीं आता, तुझे मेरी बीवी के कपड़े खराब कर डाले। गुस्से में आकर उसने उस अल्लाह वाले को एक घंटा लगा दिया। बीवी बड़ी खुश हुई कि तुझने मेरी तरफ से ख़ूब बदला लिया। फिर खुशी-खुशी दोनों घर चले गए। यह अल्लाह वाले आगे चले गए। थोड़ी दूर आगे गए तो क्या देखते हैं कि एक हलवाई की दुकान है। हलवाई ने सोचा था आज सर्दी है इसलिए आज मुझे अल्लाह आज अल्लाह का जो भी बंदा सबसे पहला नज़र आया था उसको अल्लाह के लिए गर्म दूध का एक प्याला ज़रूर पिलाऊँगा। अब वह इतिमाद में था। यह बुजुर्ग जब उसके करीब से गुज़रे तो उसने बुलाया, बिदाया और गर्म-गर्म दूध का प्याला पेश किया। सर्दी तो थी ही सती। उन्होंने वह गर्म दूध का प्याला पिया और अल्लाह का शुक्र अदा किया। दुकान से
बाहर निकलकर आसमान की तरफ़ देखा और कहा वाह अल्लाह! तेरी शान भी कितनी अजीब है, कहीं तो मुझे थप्पड़ लगवाता है और कहीं मुझे गर्म दृढ़ के प्याले पिलवाता है। इतने में वह मियाँ बीवी अपने पर के करीब पहुँच चुके थे। शौकर सिद्धियों पर चढ़ रहा था कि उसका पूंछ अटका, वह गर्दन के बल गिरा और वहीं उसकी मौत हो गई। बीवी ने कहा कि बोड़के देर पहले एक वाक्त आए था और उस बुढ़े ने कहीं बदुआ तो नहीं कर दी। लोग उनके पास आए और कहने लगे कि उसने एक थप्पड़ ही मारा था और माफ़ कर देते, आपने उसके लिए बदुआ कर दी। उन्होंने कहा, नहीं मैंने कोई बदुआ नहीं की। बात अंसार में यह है कि उसकी बीवी से मुहब्बत थी, जब बीवी को तकलीफ़ पहुँची तो उसने बदला लिया, मुझसे मेरे परवरदिगार को मुहब्बत थी जब मुझे तकलीफ़ पहुँची तो मेरे परवरदिगार ने बदला ले लिया। इसलिए जब इंसान अपना मामला अल्लाह ताज़ा ले सुपुर्द़ कर देता है तो अल्लाह ताज़ा ले लिया करते हैं।

अल्लाह ताज़ा ले से जंग... अल्लाह बचाए

इसलिए फरमायाः

«मं अदाते लो रली पद रक्स दे देवताले बुक।»

जो मेरे बल से दुश्मनी करेगा मेरा उसके साथ ऐलाने जंग है।

ऐसा आदमी बल से दुश्मनी नहीं कर रहा होता बल्कि अल्लाह ताज़ा ले से जंग कर रहा होता है और जिसने अल्लाह ताज़ा ले से जंग की फिर अल्लाह ताज़ा उस बदे की गर्दन मरोड़ दिया करते हैं और उसे तिगनी का नाच नचा दिया करते हैं।
नबी अकरम सल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम के हस्तिदीन

यह सादा सा उस्तूल है कि दुनिया में जितने बड़े लोग गुजरे उनके मुख़लिफ़ और जलने वाले उतने ही ज्यादा। नबी सल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम से हसद करने वाले और मुख़लिफ़ करने वाले सबसे ज्यादा था। इसीलिए हसद करने वालों से वचने के लिए अल्लाह तबाला ने एक आयत नाज़िल फरमाई है।

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा फरमाती थी कि मेरे वालिद गिरामी पर इतनी मुसीबतें आयी कि अगर वे मुसीबतें दिन के ऊपर आ पड़ती तो दिन भी रात में बदल जाता।

इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रहौ का सबर

इमाम आज़म अबू हनीफ़ा रहौ का एक मुख़लिफ़ था। उसकी पता चला कि आपके वालिद की वफात हो गई। वालिदा बूढ़ी थीं, नबी साल के करीब उम्र होगी। वह एक दिन आपके पास आया और कहने लगा कि शरज़ शरीफ़ में हक़ है कि बेवाों का निकाह कर दो। तुम्हारी वालिदा क्योंकि बेवा हो चुकी हैं मैंने सुना है कि वह ख़ूबसूरत है, हसन व जरीफ़ है तो मैं चाहता हूँ कि मैं उनके साथ निकाह करूँ। हज़रत ने सुना तो भांप गए। फर्मान कभी भाई! मेरे वालिदा आफ़िल बालिग़ हैं और इस उम्र की औरत को पूरे तौर पर अपना पेस्ला ख़द मानने का इज्ज़ियार होता है। मैं उनके जानकार पाने करदेता हूँ। उसने कहा, बहुत अच्छा। हज़रत ने अपने घर की तरफ़ जाने के लिए दो कदम उठाए तो क्या देखा कि उस आदमी के पेट के अंदर
कोई दर्द उठा। उसी दर्द के अंदर वह बंदा गिरा और वहीं पर उसकी मौत आ गई। इसमा आज्ञा अबू हनीफ़ा सहौ फरमाया करते थे कि अबू हनीफ़ा के सब्र ने एक बंदी की जान ले ली।

ताइबीन का सब्र

पहला दर्जा ताइबीन का है। इसका क्या मतलब कि इस्लाम अपना गुम और परेशानी दूसरों को बताना छोड़ दे। इसका यह मतलब भी नहीं कि बीवी शौर्ह को न बताए, बेटा बाप को न बताए, मरीज बहिन को न बताए। नहीं यह ज्ञानियत है। एक होता है हालात का तत्काल करने के लिए बताना, वह नहीं बताना चाहिए। इसको बताया उसको बताया। यह जो होता है ना हालात बताने के ख़ातिर बताना, इसको माना किया गया है वरना कोई तकलीफ़ है तो डॉक्टर को बता देने में कोई हरज नहीं। बेटा बाप को बताए कोई हरज नहीं, बीवी शौर्ह को बताए। आखिर बीवी किसको सुनाएगी अगर अपने मिया को न सुनाए। लेकिन जिस चीज़ से मना किया गया है वह यह है कि कुछ लोगों की ज्ञान पर बात ही यहीं रहती है। जहाँ बेटे बस जी क्या करें अजीब मुहिमे में फँसे हुए हैं, अल्लाह तअला लो लकर जो तमाम सुनता ही नहीं। इस तरह की बातें हमेशा शिकवे में शामिल होती हैं। ऐसा कहने वाले गोया यूँ कह रहे होते हैं कि अल्लाह तअला ने हमारे साथ अच्छा नहीं किया।
जाहिदों का सब्र

दूसरा दर्जा जाहिदों का है। वह दर्जा यह है कि इसान को अगर कोई मुसीबत पेश आए तो वह उसके ऊपर राजी रहे। जब बंदा हर हाल में राजी होता है तो अच्छे हालात हों तो भी राजी होता है, बुरे हालात हों तो भी राजी तो वह जाहिदों का सब्र कहलाता है।

सिद्दीकीयों का सब्र

एक तीसरा मार्गवा है जिसे सिद्दीकीयों का दर्जा कहा जाता है और वह यह होता है कि जब वों पर कोई बल या मुसीबत आती है तो वह उस पर खुश होता है कि परवर्तिगार मुझे से राजी है क्योंकि हदीस पाक में आता है कि खुशियाँ अल्लाह तअला के सामने रोज़ाना हाथ बांधकर खड़ी होती हैं कि ऐ अल्लाह! हमारे लिए क्या पैसला है। अल्लाह तअला फरसमते हैं कि फर्स-फर्स जालिमों और मुखलिकों के पास चली जाओ। खुशियों को उन के हाँ-भेज देते हैं। उसके बाद पाक, परेशानियाँ और गुम घृंघट रह जाते हैं। अल्लाह तअला फरसमते हैं कि अच्छा, तुम मेरे प्यारों के पास चले जाओ। हदीस पाक में आया है कि जिस वों को अल्लाह और उसके सफूल से मुहब्बत होती हो उस पर परेशानियाँ इस तरह आए जैसे पानी घुलन की तरफ़ तेजी के साथ चलता है। नैकी और झिनदारी की जिंदगी में वे परेशानियाँ तो आती हैं लेकिन यह ठोड़ी सी परेशानियाँ हैं। सो साल, पचास साल की जिंदगी में दो-चार दिन की परेशानियाँ क्या हैसियत रखती हैं जबकि आगे जाकर हमेशा-हमेशा की जिंदगी में
उसका अज़ब व सच्छ मिलेगा। मगर अल्लाह वालों की नज़र इस पर होती है कि अगर हमारा अल्लाह तत्त्वाला के हाँ दर्जा होगा तो हमारे ऊपर आज़माईश और इम्तिहान आएगे।

सब दर्जों के बुलंद होने का सबब

कभी-कभी बंदा अपनी इबादतों की बजह से अल्लाह रख्मालीज़ज़त के कुर्ब के वे मुकाम नहीं पा सकता जो अल्लाह तत्त्वाला उसे देना चाहते हैं तो अल्लाह तत्त्वाला फिर उसके ऊपर कुछ बुरे हालात भेज देते हैं। जब वह बंदा उन हालात में सब्र करता है तो अल्लाह तत्त्वाला उसको बहाना बनाकर उस बंदे को बुलंद मुकाम अता फरमा दिया करते हैं। इसलिए रिवाजों में आया है कि जब कोई बीमार आदमी सेहत पाना है तो अपने गुनाहों से ऐसे शक हो जाता है जैसे उस दिन था जब उसकी मौं ने उसे जन्म दिया था। पलड़ के घूसम में चेड़ के पले गिरते हैं उसी तरह आदमी के जिस से अल्लाह तत्त्वाला उसके गुनाहों को दूर कर दिया करते हैं।

पुरुष साखों का बदला

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़िय़ल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि क्यामत का दिन होगा। हिसाब-किताब अभी कायम नहीं होगा कि ऐलान देने वाला ऐलान करेगा जिन लोगों का अल्लाह तत्त्वाला पर हक है वे अपना हक़ ले लें और मक़्ज़ूक हैरान होगी कि अल्लाह तत्त्वाला तन्हा किसका हक है। वे पूछँगे कि अल्लाह तत्त्वाला पर किसका हक है? फरशिया कहेगा कि जिस बंदे को दुनिया में कोई गुम पहुँचा जिसकी वजह से उसकी आँखें पुरुष हो गयीं,
बिला हिसाब जन्नत में दाख़िला

एक रिज़वान में आया है कि अभी इस्फ़ाफ़ का तरजू कायम नहीं होगा कि एक फरीश्ता ऐलान करेगा कि सब करने वाले कहाँ हैं तो सब करने वाले खड़े हो जाएंगे। वह फरीश्ता उनको लेकर जन्नत की तरफ जाएगा और कहेगा कि जाओ। वे सब वाले सारे के सारे जन्नत के दरवाज़े पर पहुँच जाएंगे और कहेंगे कि जन्नत का दरवाज़ा खोलो और हमें जन्नत में दाख़िल होने दो। अब रिज़वान जो जन्नत का दारेरा है वह हँसा होकर अल्लाह ताउला से पूछेगा कि ऐ अल्लाह! अभी तो मीज़ाने अदल (इस्फ़ाफ़ का तरजू) कायम नहीं हुआ और ये आपके बंदे जन्नत में दाख़िले की तमन्ना कर रहे हैं, ऐ अल्लाह! मेरे लिए क्या हुक्म है?

परवरदिगार फरमाएगे, मैंने अपना हुक्म अपनी किताब में नाज़िल फर्माया था:

(फ़िनामा बुफ़ी चुबाइयुन नाज़ारहम बजीर ख़साभ)

ये मेरे वे बंदे हैं जिनके साथ बिला हिसाब मामला है।

रिज़वान! जन्नत के दरवाज़े खोल दे और सब करने वालों को बिला हिसाब जन्नत में दाख़िल होने दे। इनसे कोई हिसाब-किताब नहीं लिया जाएगा।
अल्लाह तालाला की तरफ से माज़रत

वाज़ बुजुर्गों ने लिखा है कि कुआमत के दिन अल्लाह तालाला एक बंदे को ख़ड़ा कराए। यह वह बंदा होगा कि जिसका रिस्क दुनिया में घोड़ा होगा, तंग होगा वह और तंगी की वजह से सब और शुरु के साथ बदल गुजरेगा। अल्लाह तालाला अपने उस बंदे से इस तरह माज़रत कराए जिस तरह दोस्त अपने दोस्त से माज़रत किया करता है। यूँ माज़रत फरमाएंगे कि मेरे बंदे मैंने दुनिया में तुम्हें थोड़ा रिस्क दिया था कोई बात नहीं, अच्छा तुझे अपनी नेमते देता हूं। तिहाजा अल्लाह तालाला उनको अपनी जननतें अता फरमाएंगे।

अल्लाह तालाला के हाँ ग़रीब लोगों की क़दर

जो दुनिया में ग़रीबी की जिंदगी गुजारेंगे वे पाँच सो साल पहले जन्मत में दाख़िल कर दिए जाएंगे और वहाँ एक दिन दुनिया के सतर्क हज़ार साल के बरबर होगा। एक साल कितना लखा होगा और पाँच सो साल का अरसा कितना होगा? (यह ईमान वालों की बात हो रही है) दुनिया में ईमान वाले ग़रीब लोग उन ईमान वाले अमीर लोगों से जिनको दुनिया में सुख और आसानियों की जिंदगी मिली, अल्लाह तालाला उनको पाँच सो साल पहले जन्मत अता फरमाएंगे और जो बंदा दुनिया में बेस्ट्री करेगा वह अपने अज़ को खो बेठेगा।

एक क़ीमती बात

एक बुरूर्फ़ फरमाया करते थे कि ऐ दोस्त। तुम ग़म आने के
पहले दिन वही किया करें जो गुप्त आने के तीसरे दिन किया करते हो। फर्ज़ करो घर में कोई मर गया हो तो तीसरे दिन लोग क्या करते हैं? दुआ करके अपने-अपने कामों पर चले जाते हैं कि लोग तो तीन दिन तक है तो जब तीसरे दिन सब बाला काम करना है तो वही काम इंसान पहले दिन ही क्यों नहीं कर ले ताकि सब का अज्ञात मिल जाए। यदि रखिए कि वेस्री से मुसीबतें नहीं दला करतीं। हाँ मुसीबतों पर मिलने बाला अज्ञात हो जाया करता है। उस मिलने बाले अज्ञ से इंसान महरूम हो जाया करता है।

आमिरों के पास दुर्गुप्त की बजह

कुछ लोगों को देखा कि जुरा सी कोई बात हो तो औरतें ताबीज़ लेने के लिए आमिरों के पास जाती हैं। जी जुरा ताबीज़ दे दो फ़ूलां के बारे में। वे समझती हैं कि इन आमिरों के पास जाकर हम काला इल्म करवाए और जादू करवा ताकि फ़ूलों का कारोबार न चले या उनकी औलाद की बंदिश हो वग़ैरह वग़ैरह।

सैयदद्वा सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्तु का फर्मान

हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्तु फर्माया करते थे कि जिस आदमी ने कोई मुसीबत आने पर बेस्री की बालें की या अपने कपड़ों को काला कर लिया, अल्लाह तजाला उसको इतने युगाह अता करेंगे कि जो उसकी ज़िंदगी के सारे साँसों के बराबर होंगे।

सैयदद्वा उमर रज़ियल्लाहु अन्तु का फर्मान

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्तु फर्माया करते थे कि जिस
आदमी ने मुसीबत के आने पर बेसब्री की बातें की लोगों के साथ अल्लाह की शिकायतें कीं तो अब अल्लाह तअला उसके आमलनामे में इतने गुनाह लिखवाएं जाएंगे जितना कि दरियाएं नील के पानी के कुतरे होंगे।

हज़रत उस्मान ग़ुर्नी रज़ियल्लाहु अन्हु का फरमान

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते थे कि जिसने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से भेजी हुई मुसीबत पर बेसब्री का इज़हार किया, कपड़ों को स्याह किया, शोर-शराब किया, अल्लाह तअला उसके आमलनामे में इतने गुनाह लिखवाएंगे जितने पूरी दुनिया के दिन रात शुमार किए जाएंगे। तो बेसब्री पर नेकी का अज्र भी जाए और उल्टा गुनाह आमलनामे में लिखे जाएंगे।

अल्लाह की मदद के लिए एक सुनहरी उसूल

मोहतरम जमात! अगर कोई आदमी आपकी मुखलिफ़त कर रहा है, दुश्मनी कर रहा है या हसद कर रहा है तो आप अपने मामले को अल्लाह के सुपुर्द कर दें। आमिलों के पास जाने की कोई ज़रूरत नहीं, कोई ताबीज़ ग़ड़ब़ड़ की ज़रूरत नहीं, अपने मौला से तार जोड़िए, उसी से मदद मांगिए, मामले को उसी के हवाले कर दीजिए फिर देखिए अल्लाह तअला आपकी कैसी मदद फरमाता है।

एक इलमी नुक्ता

यहाँ एक इलमी नुक्ता है, शायद सब लोग तो न समझ पाएं
पहली दलील

अब इस की दलील कुरआन पाक से सुनिए क्योंकि जब तक इस किताब से बात न हो महफिल का मजा भी तो नहीं आता।

सैय्यदना मूता अल्लाहसलाम की आलिदा जब आपको दरिया में डाल रही थीं तो पानी देखकर गुम मिला था। वाक़ई यह गुम की कैफ़ियत थी पानी में बेटे को डालने की वजह से उनके दिल में सदमा था। हुक्के इलाही तो पूरा कर रही थीं मगर माँ की ममता कोई और चीज़ होती है। वह तो वस में नहीं होती। तो बड़े सब्र के साथ अल्लाह तत्काल के हुक्के को मानते हुए वह अपने बेटे को ले जाकर पानी में डाल रही। थीं और यह दरिया का पानी उनके लिए गुम और मुसीबत का सबब बन रहा था।

قَوْمِي اِمْوَسَىْفَارَغَاءِ

उसका दिल उस वक़्त इतना परेशान था कि सारी रात परेशानी में गुज़ार दी। जब पानी सबब बना उनको परेशानी में मिलने का तो फिर अल्लाह तत्काला ने वह दिन भी दिखाया कि जब फिर उन को अल्लाह तत्काला ने उसी पानी में गुर्क़ कर दिया तो पानी गुम का सबब बना था और उसी पानी को बनी इस्लाइल की निजात का सबब बना दिया।
आदमी ने मुसीबत के आने पर बेस्त्री की बातें की लोगों के सामने अल्लाह की शिकायतें की तो अब अल्लाह तालाला उसके आमलानामे में इतने गुनाह लिखवाएं जाएंगे जितना कि दरियाे नील के पानी के कुले होंगे।

हज्जात उस्मान गुरी रज़ियल्लाहु अन्तु का फरमान

हज्जात उस्मान रज़ियल्लाहु अन्तु फरमाते थे कि जिसने अल्लाह रब्बुलइनाज़ात की तरफ से भंजी हुई मुसीबत पर बेस्त्री का इहार किया, कपड़ों को स्थान किया, शर-शरावा किया, अल्लाह तत्पाला उसके आमलानामे में इतने गुनाह लिखवाएं जितने पुरी दुनिया के दिन रात शुमार किए जाएंगे। तो बेस्त्री पर नेकी का अन्त भी जाए और उल्टा गुनाह आमलानामे में लिखे जाएंगे।

अल्लाह की मदद के लिए एक सुनहरी उसूल

मोहतम जमात! अगर कोई आदमी आपकी मुख्यलिप्त कर रहा है, दुश्मनी कर रहा है या हसद कर रहा है तो आप अपने मामले को अल्लाह के सुपुर्द कर दें। आमिरों के पास जाने की कोई जुरूलत नहीं, कोई तावीज गड़ों की जुरूलत नहीं, अपने मौला से तार जोड़ें, उसी से मदद मांगें, मामले को उसी के हवाले कर दीजिए फिर देखिए अल्लाह तत्पाला आपकी कौशी मदद फरमाता है।

एक इल्मी नुक्ता

यहाँ एक इल्मी नुक्ता है, शायद सब लोग तो न समझ पाएंगे।
आए तो इसान पहाड़ की तरह अपने दिल को बड़ा कर दे और फिर देखे कि रब्बे करीम किस तरह मेहरबानी फर्माते हैं।

हम बदला न लें

आमतौर पर हम किसी बच्चे पर उसकी ताक़त से ज्यादा बोझ नहीं डालते हालाँकि तो तरह की हमारे अंदर कमियाँ मौजूद हैं तो क्या सोचते हैं उस रब्बे करीम के बारे में जो अपने बंदों पर मेहरबान भी है, रहीम है, रहमान भी है, गुफ़ूर भी है, मफ़ूर करने वाला भी है। वह परवर्दिगार अपने बंदे पर उसकी ताक़त से ज्यादा बोझ कैसे डाल देंगे। इसलिए गुम और मुसीबत घोड़े बक्त के लिए आते हैं मगर बंदे के दर्जभ को बढ़ाने के लिए आते हैं। तो सब्र करते रहिए, दुनिया में बदला लेने की कोई ज़रूरत नहीं। हमारा बदला लेने वाला परवर्दिगार बहुत बड़ा है। हम बदला लें तो क्या ले सकते हैं और अगर परवर्दिगार ने बंदला लिया तो फिर परवर्दिगार का बदला तो दुनिया देखेगी।

कच्छरियों में मुक़दमेबाज़ी क्यों?

आज हमारी कच्छरियों क्यों भरी पड़ी हैं? यह मुक़दमे क्यों होते हैं? कछ बेचारे तो सारी जिंदगी बदले लेने में गुज़ार देते हैं। ख़ानदानों के ख़ानदान परेशान रहते हैं। यहाँ तक कि बच्चा पैदा होता है और जरा बड़ा होता है तो माँ बताना शुरू कर देती है कि बेटे तुम्हे बड़ा होकर फलों से बदला लेना है।

परेशानी दूर करने का आसान नुस्खा

दुनियादी बात समझाने का मक़सद क्या है कि औरतें बजाए
इससे कि भागतीं फिरें इन आमितों के पास और काले इलम वालों
के पास, जादू वालों के पास और अपने ईमान से भी हाय धो वैं, इससे बेहतर है कि जब कभी परेशानी आए तो अपने रब की
tरफ तवज्जोह कीजिए, नफ़्सें पढ़ लीजिए, रबके करीम के सामने
सर सज्जे में डालकर दुआएं कर लीजिए, फरियाद कर लीजिए।
आप मांगने तो परवर्दिगार अता फरमा देंगे। क्या नहीं देखते कि
एक बच्चा जो अपनी माँ से कुछ पैसे मांगता है और माँ उसे
कहती है कि हर बक्कु तुझे पैसे मांगने की आदत है, जा दफ़ा हो
में तुझे नहीं देती। वह बच्चा जिजिरत कर लेता है। फिर मांगता है,
फिर माँ पीछे हटती है। फिर वह बच्चा मांगता है यहाँ तक कि
माँ गुस्से में आकर ढपड़ भी लगा देती है। वह रोना शुरू कर
देता है फिर माँ के करीब आता है फिर मांगता है। फिर माँ देखती
है कि मैंने मारा भी नहीं, रो भी रहा है, फिर भी मेरे ही सीने से
लिपट रहा है, माँ का गुस्सा उसकी रहमत में बदल जाता है और
माँ उसके चहने से भी ज्यादा चीजें लेकर दे देती है। यही मामला
परवर्दिगार का है अगर वह कभी बदे के ऊपर कोई गम और
मुसीबत भेज देता है और बंद फिर भी उसके सामने सज्जे में पड़ा
रहता है, उसी के सामने फरियाद करता रहता है तो रब फरीम
फरमाते हैं कि यह बंदा खुशी में भी मेरा शुक्र अदा करता था
और मैंने गम के हालात भेज फिर भी मेरी चौखट पकड़ ली, फिर
भी मेरे सामने सज्जे में पड़ा रहा, यह मेरे सामने दामन फैलाए बैठा
है, इसने मुझसे तार जोड़ी हुई है, यह गम किसी को नहीं कहता,
इसकी आँखों से आँखु स रवां रहते हैं, तनहाइयों में मेरे सामने रोता
है। जब यह किसी और को कुछ नहीं बताता, मुझे ही बताता रहा है
तो याद रख में परवर्दिगार बड़ी शाम वाला है। तिहाज़ा परवर्दिगार
उसकी दुआओं को कूचूल कर लेते हैं और गुमों को हटाकर
खुशियाँ अता कर देते हैं।

इसीलिए सब्र करने वाले का हर आने वाला दिन उसके गुज़रे हुए दिन से बेहतर हुआ करता है और बेस्बी करने वाले का हर आने वाला दिन उसके गुज़रे हुए दिन से बुरा हुआ करता है।

सब्र खुदा तालाल के साथ होने का जरिया

यह बात पक्की है अपने दिलों पर लिख लीजिए, अल्लाह रब्बुलइलाज़ जो सब्र करने वालों से मुहब्बत है। कुरआन पाक में अल्लाह तालाला इशाद मुम्तजज़त हैं जैसे अल्लाह तालाला सब्र करने वालों के साथ है। वह तो सब्र करने वालों के साथ मुहब्बत कर रहे होते हैं। अल्लाह तालाला का साथ उसको नसीब होता है। जिसके साथ परवरिढ़गार होता हैं फिर कोई बंदा उसका बाल बांका नहीं कर सकता। अगर अपनी बात कहनी हो तो सिफ़ अल्लाह तालाला के साथ हों। उस परवरिढ़गार ने हालात भेजे हैं। जो भेजे वाला होता है, हालात वापस भी वही ले लिया करता है। हम उसके दर पर तो जाते नहीं और हम हर दर के ऊपर जा रहे होते हैं। दर-दर हाद फैला रहे होते हैं। शिकवे सुना रहे होते हैं। इस तरह हम अपनी परेशानियों में और इज़ाफ़ा कर रहे होते हैं। अल्लाह तालाला सब्र करने वालों के गुनाहों को पाफ़ फरमा देते हैं और उनको बड़ा अता फरमा देते हैं।

विध्वंश का अजीब बहाना

एक आदमी के बारे में लिखा है कि उसकी बीवी बेअज़ ती
थी, गुरुतियाँ कर बैठती थी। कभी कोई नुकसान कभी कोई नुकसान। गुस्सा तो उस आदमी को बहुत आता लेकिन सोचता कि अगर मैंने तलाक दे दी तो बेचारी परेशान हो जाएगी, फिर कौन इसे लेगा। वलो इसकी भी जिंदगी गुज़र जाएगी और मेरा भी वक़्त गुज़र जाएगा। लिहाज़ा वह उसकी गुरुतियाँ को माफ़ कर देता कि कोई बात नहीं अल्लाह की बंदी है। इस हाल में जिंदगी गुज़र दी यहाँ तक कि बफ़ात हो गई। मरने के बाद किसी ने उसे ख्याब में देखा तो पूछा कि सुनाइए आपके साथ क्या मामला बना? कहने लगा, मैं अल्लाह रब्बुलज़्ज़त के हुसूर पेश किया गया। अल्लाह रब्बुलज़्ज़त ने फरमाया, मेरे बंदे! तू अपनी बीवी को मेरी बंदी समझकर माफ़ किया करता था, जा आज मैंने तुझे अपना बंदा समझकर माफ़ कर दिया। तो देखा कि अल्लाह तआला कितने तरह मेहरबानी फरमा देते हैं। इसलिए ग़मों पर परेशान न हुआ करें। वे जिंदगी का हिस्सा हैं अगर खुशियाँ हमेशा नहीं रहतीं तो फिर गृह भी हमेशा नहीं रहा करते।

तंगी के बाद दो आसानियाँ

अल्लाह तआला फरमाते हैं:

"फ़ैसल से जुड़ने के सेवन"।

हर तंगी के बाद आसानी होती है और हर तंगी के बाद आसानी होती है।

इसका दो बार कहा हलाकि बात तो एक दफ़ा ही कह देना काफ़ी थी मगर रब्बे करीम ने दो बार जो बात को दोहराया तो इसकी कोई वजह होगी। लिहाज़ा मुफ़्तिरीन ने लिखा है कि इसकी वजह यह थी कि जब तंगी के ऊपर बंदा सब्र कर लेता है
तो अल्लाह रखुलइज़ज़त एक तंगी के बदले उसे दो आसानियाँ अता फर्माया करते हैं। तंगी एक होती है खुशियाँ दो मिल जाती हैं। तिहज्जा सब्र कीजिए और अपनी तंगी और परेशानी का बदला दुगना लीजिए।

परेशानी और खुशहाली में अल्लाह वालों की कैफियत

अल्लाह वाले तो ऐसे परेशानी के हाल में ज्यादा खुश होते हैं। वे कहते हैं—

तेरा गुम भी मुझको अज़ीज़ है के वह तेरी दी हुई चीज़ है

वे इसको नहीं देखते कि परेशानी आई, यह देखते हैं कि भेजने वाला कौन है। इसलिए दाऊद ताई रहू को अल्लाह ताआला ने इल्हाम फर्माया कि ऐं दाऊद। अगर तुझे किसी वक़्त खाने में कोई लड़ी हुई सबजी मिले तो दिल तंग न करना बल्कि इस बात को सोचना कि जब मैंने रिज़क तक्सीम किया तो ऐं मेरे बंदे! तू मुझे बाद था, मैंने तेरी तरफ रिज़क भेजा, जब भेजा मैंने है तो मैं तुझे इतना बदला और अब भी आता करता। इसलिए ऐसी बातों पर परेशान होने की जरूरत नहीं होती।

अल्लाह वालों के ऊपर कोई ऐसी परेशानी गुम और बला न आए तो वे तो कई बार घबराया करते हैं कि यह कोई हमारे ऊपर आज़माइश तो नहीं आ गई। वे डरते और कांपते हैं कि यह कोई इस्तिहान तो नहीं है बल्कि उनका तो यह हाल होता है कि अगर उनकी उम्मीद से बढ़कर आसानी कही मिलती है तो रोने
लगते हैं कि कहीं नेकियों का अंग दुनिया में ही तो नहीं मिल रहा और यही सहाबा का मिलाज था।

एक बार हज़रत उमर रज़िय़ल्लाहु अन्तु ने पानी मांगा, उनको भर्ता पेश किया गया। आँखों में आँसू आ गए और कहने लगे कि कहीं उमर की नेकियों का बदला उसको दुनिया में तो नहीं दिया जा रहा है और क्या इसे दिन यह न कह दिया जाएः

फ़िदेहिम नीलेकियों फ़ि हियातकु म दिन फ़ि हियातकु म फ़ि हियातकु म फ़ि हियातकु म फ़ि हियातकु म फ़ि हियातकु म कझ़ कझ़ कझ़ कझ़ कझ़ कझ़ कझ़ कझ़ कझ़ कझ़ कझ़ कझ़ कझ़ कझ़ कझ़ कझ़ कझ़ कझ़ कझ़ कझ़

हज़रत अबू हैराकर रज़िय़ल्लाहु अन्तु ने एक बार अपने गुलाम से कहा नज़रा साफ़ करने के लिए कोई चीज़ लाओ। वह एक क़ीमती कपड़ा लाया। हज़रत अबू हैराकर रज़िय़ल्लाहु अन्तु उसको देखकर रे पढ़े कि कहीं मेरे आवाज़ का बदला मुझे दुनिया ही में तो नहीं चुकाया जा रहा है। मालूम हुआ कि अल्लाह दलों को दुनिया में खुशियाँ मिलती हैं तो वे परिशंसा हो जाते हैं कि कहीं हमारे ऊपर आज्ञामाध्यम तो नहीं आ गई। और उनको अगर कोई गुम मिलता है तो वे खुश़ होते हैं। इसलिए कि अल्लाह ताआला का बादा है कि में जिस बदे को दुनिया में गुम अता करूँ उसे आख़िर तकी खुशियाँ दूर कर जिसे दुनिया की खुशियाँ मिल गयीं उसके बदले उसे आख़िर के गुम अता कर दिए जाएः

गुफाही का कपड़ा

फरमाया कि दो खुशियाँ और दो गुम कभी जमा नहीं करना। यह नहीं कि दुनिया में भी गुम मिलें और आख़िर में भी गुम मिलें, दुनिया की भी खुशियाँ मिलें और आख़िर की भी खुशियाँ मिलें। नहीं, एक जगह अगर गुम मिलें तो दूसरी जगह अल्लाह
एक सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा की सबक़ देने वाली दास्तान

एक सहाबिया का अजीब वाकिना लिखा है कि उनकी शादी हुई। अल्लाह ताआला ने उनको हुसून व जमाल भी अजीब दिया था और शादी भी हुई एक बड़े अमीर सहाबी से जिनके पास रिज्क की फराश्थी थी। हर तरह के ऐश व अराम के सामान थे। मियाँ-बीवी में खुब मुहब्बत थी और अच्छा वक्त गुज़र रहा था। यहाँ तक कि बीवी अपने शौकर की ख़िदमत भी करती और उन्हें ख़ुश भी रखती। दोनों मियाँ-बीवी ख़ुशी-ख़ुशी झ़ंदी गुज़ार रहे थे।

एक रात प्यास लगी। उसने बीवी से कहा मुझे पानी दो। बीवी उठी और पानी ले आई। जब पानी लेकर वापस आई तो मियाँ सो चुका था। वह पानी का प्याला लेकर खड़ी रहीं हटका कि जब ख़ाबिन्द की दोबारा आँख खुली तो देखा कि बीवी पानी लेकर खड़ी है। वह बड़े ख़ुश हुए। उन्होंने उठकर पानी पिया और बीवी से कहा कि मैं आज इतना ख़ुश हूँ कि तुम इतनी पानी का प्याला
लेकर मेरे इतिजार में खड़ी रहीं। आज तुम जो कहोगी मैं तुम्हारी
फरमाईश पूरी करसंग। जब खाविन्द ने यह कहा तो बीवी कहने
लगी क्या आप अपनी बात में पकड़े हैं कि जो कहुँगी पूरा करेंगे?
कहने लगे हाँ पूरा करके दिखाऊँगा। कहने लगी अच्छा आप मुझे
तलाक़ देकर फारिश कर दीजिए। अब जब तलाक़ की बात हुई
tो यह सहाबी बहुत परेशान हुए कि इतनी झूठसूरत और
झूठसूत्र, इतनी तफातार और खिदमतगार बीवी कह रही है कि
आप मुझे तलाक दे दीजिए। पूछने लगे बीबी क्या तुझ से मुझसे कोई
tकलीफ़ पहुँची है? कहने लगी बिल्लूल नहीं। बीवी क्या मैंने
आपकी बेकाबू की? हरिज़ नहीं। आपकी किसी उम्मीद को लोड़ा
है कोई बात आपकी पूरी नहीं की हो? नहीं ऐसी भी कोई बात
नहीं। बीवी! क्या आप मुझे झूठ पहुँचन? कहने लगी हरिज़ नहीं।
tो फिर मुझसे तलाक क्यों चाहती हो क्या आप मुझे पसंद नहीं
cरती हो? कहने लगी यह बात भी नहीं। पसंद भी बहुत करती
हूँ, मुहब्बत करती हूँ इसीलिए तो खिदमत करती हूँ। आपने कहा
था कि मैं आपकी बात को पूरा करसंग, लिहाज़ा आप मुझे तलाक
dेकर फारिश कर दीजिए। वह सहाबी परेशान हैं कि कोई भी दे
बैठे। कहने लगे अच्छा सुबह होगी तो हम नहीं सलाल्हाहु अल्लाह
वसलिम की खिदमत में जाएँगे और आपसे जाकर फैसला करता
लगें। वह कहने लगी बहुत अच्छा। लिहाज़ा मिर्यां-बीबी दोनों रात
dो सो गए।

सुबह हुई तो बीबी कहने लगी चलो जल्दी चलते हैं। लि�हाज़ा
dोनों मिर्यां-बीबी घर से बाहर निकले ही थे कि खाविन्द का किसी
वजह से पॉव्य अटका और यह नीचे गिरे और उनके जिसम से झूत
nिकलने लगा। बीबी ने फौजन अपना दुपुट्टा फाड़ा और खाविन्द
के ज़रूर पर पहुंची बांधी और उनके जिसम को सहारा दिया और
कहने लगी घर वापस चलते हैं। चाहे आपसे तलाक नहीं लेती
वह हैरान हुए कि जब तुमने तलाक का मुतालबा किया तो न मुझे
उस बकृत समझ में आया और अब कहती है कि तलाक नहीं
चाहिए तो न अब मुझे समझ में आ सका। कहने लगी घर तश्रीफ़
ले चलें, वहाँ जाकर मैं आपका बता दूंगी। जब घर जाकर बैठे तो
कहने लगे मुझे बताओ तो सही क्या बात है। कहने लगी आपने
कुछ दिन पहले नवी सल्ल्लाहु अल्लाह की हदीस सुनाई
थी कि जिस बदे से अल्लाह रब्बुलइज्ज़त मुहब्बत करते हैं उस बदे
के ऊपर इस तरह परेरशानियाँ आती हैं जिस तरह पानी ऊँचाई से
ठाला की तरफ़ जाया करता है। मैंने नवी सल्ल्लाहु अल्लाह
वस्लम का फर्मान सुना तो मैं दिल में सोचती रही कि मैंने
अपने घर में कोई परेरशानी नहीं देखी, कोई ग़म नहीं देखा, कोई
मुसीबत नहीं देखी तो मेरे दिल में ख्याल आया फिर मेरे आकार की
बात सच्ची है। ऐसा तो नहीं कि मेरे ख़ाबिन्द के ईमान में फ़र्क
हो, मेरे ख़ाबिन्द के आमाल में फ़र्क हो। मेरे ख़ाबिन्द से अगर
फ़रवरिसग़ार को मुहब्बत नहीं तो मैं उस बदे की क्या ख़िदमत
करूँगी। इसलिए जब आपने कहा कि मैं तुम्हारी बात पूरी कर्ना
तो मैंने कहा कि मैं इस बदे से तलाक चाहते हूँ जिससे मेरे
फ़रवरिसग़ार मुहब्बत नहीं करते। फिर जब हम हाज़र सल्ल्लाहु
अल्लाह की ख़िदमत में इल्म हसिल करने जा रहे थे, वह
अल्लाह का रास्ता था, आप मीरे और ख़ुद निकला तो मैं पौरन
समझ गई कि अल्लाह के रास्ते का ग़म पहुँचा, मुसीबत पहुँची,
तकलीफ़ पहुँची। यहीं अल्लाह तालालव की आपसे प्यार है और
अल्लाह तालालव ने आपको अपनी नाराजगी की बजह से खुशियाँ
फिक की यादि

सोचकर हैरान होते हैं कि इन हज़ारा की निगाह कहाँ पहुँचा करती थी। है कोई औरत जिसकी सोच आज ऐसी हो? कोई मर्द जिसकी सोच आज ऐसी हो? नहीं, हम ज़रा सी परेशानी होती है और उसी वक़्त किसी सही अँगीदा बंदों के घर का मामला देखकर कि किसी बड़े मुशरिक और बिदाली के पास पहुँचे हुए होंगे। ऐसे बंदों के पास पहुँचने जो खुद भी जाहिल होगा और दूसरे के ईमान का भी जनाजा निकालेगा। कई कहते हैं कि मुग़ल लाओ। उसको ज़िख़ा करके उसके खून से तवीज लिखते हैं। कई कहते हैं कि बकरे का खून लेकर आओ। ऐसे अजीब व ग़रीब हालात हैं कि मेरे दोस्त! कहने के काबिल नहीं। अल्लाह रब्बुलज़्ज़त हमारे ईमान की हिफ़ाज़त फरमाए और हमें ग़म के आलम में सब की तौफ़ीक अत्य फरमाए और ख़ुशी के आलम में शुक्र अदा करने की तौफ़ीक अत्य फरमाए। (आमीन सुम्मा आमीन)

(वाक्तर दुआया उन الحمد لله رب العالمين)
इस्लाम और मगरिबी

(परिचाली) समाज

अमरीका का सफर

फकीर ने अमरीका की कुल 22 रियासतों का सफर किया। ऐसा भी हुआ कि सुबह का प्रोग्राम एक रियासत में हुआ, जोहर का प्रोग्राम दूसरी रियासत में हुआ और रात का प्रोग्राम तीसरी रियासत में हुआ। यहाँ फैसलाबाद की जमात के दोस्तों ने मुतालबा किया कि वहाँ के हालात और बातें हमें भी बलताए ताकि ह्यालात का तबादला हो सके तो फकीर ने कह दिया था कि इशाअअलाह किसी एक महफिल में वहाँ की कुछ तफसीलात अर्ज कर दी जाएगी। इसलिए उन दोस्तों ने इस उन्मुक्त के लिए इस
मस्जिद को छुपा है। विहाज़ा आज मगरिबी समाज के मुख्तारिफ़ पहलुओं पर रोशनी डाली जाएगी।

नई टेक्नालोजी

नई टेक्नालोजी इस वक़्त दुनिया में राज कर रही है। दुनिया की सुपर पावर बनी हुई है बल्कि अब तो उन्होंने सुप्रीम पावर कहलाना शुरू कर दिया।

मिट्टी सोने के भाव

· मगरिब अब इंतनी टेक्नालोजी हासिल कर चुका है कि वह अपनी मिट्टी को आज सोने के भाव बेच रहा है। रेत को अंग्रेज़ी में सेलोकीन कहते हैं। इस सेलोकीन से इलेक्ट्रानिक के पुरूंए, एंटीग्रेंट की सहायता और माक्रो प्रोसेसर बनते हैं जो वजन के हिसाब से सोने से भी ज़्यादा क़ीमती होते हैं।

चाँद पर बैटी मक्खी की आँख का फोटो

मगरिब का दावा है कि हम जमीन पर बैठकर चाँद पर बैटी हुई मक्खी की आँख का फोटो उतार सकते हैं। यह बात बाकी ठीक है क्योंकि इस आज़ाद में यहाँ के अरुपयोग्य चीजों के देखा है। उससे पता चलता है कि उनकी आज टेक्नालोजी में जो प्रोज़ीशन हासिल है उनके लिए यह काम आतान हो चुका है। चाँद जो अपने दायरे में चलता है। उसकी प्रोजीशन तब्दील होने के लिए मसाइलेस (इंसेंशन) हैं जो चाँद की मङ्गलकी (धूरी की) हरकत को ज़हिर करती हैं। उसके छः हज़ार फैक्टर बदलते रहते हैं बगर इसके बाबज़ूद चाँद के मङ्गल के हर इंच को मापा जा रहा है।
रूस-अमरिका अमन समझौते का इज्जाहर

रूस और अमरिका के बीच समझौता हुआ। दोनों ने यह पूँजित किया कि इस समझौते को मनाया जाए। इस मकसद के लिए रूस ने एक ख़लाई (अंतरराष्ट्रीय) गाड़ी उड़ाई और एक अमरिका ने। ख़लाई में जाकर दोनों आमने-सामने आकर आपस में इकड़ी जुड़ गयीं। रूसी मशीन बंद हो गई और अमरिकी मशीन ने उसे चलाना शुरू कर दिया। उसने उसको चलाकर अमरिका में लाकर उतारा।

फिर दोबारा एक-एक गाड़ी उड़ाई। फिर वे इकड़ी हो गयीं। अब की बार अमरिकी मशीन बंद हो गई और रूसी मशीन ने उसे चलाने लगी। फक़ियां ने इन दोनों मशीनों को जुड़ा हुआ पड़े देखा है। फक़ीयां हैलान था कि हम लोगों को मोटर की शाफ़्रा पर पुली बाँचनी पड़े तो हयोंड़ों की जूत्तत होती है। कितनी महात्म बांटती होगी कि हवा में एक मशीन तैर रही है उसे बीचे बैठें आदमी कंट्रोल कर रहा है और वे मशीन ठीक एक दूसरे के सामने आकर जुड़ जाती हैं। फिर उनमें से एक बंद हो जाती है तो दूसरी का मर्कज़ सकळ (प्रेक्स्टिव प्लाइनट) बदल जाता है मगर वह इसको बैलेंस करती है और नई सुरत में उसको कंट्रोल करते हुए आपस लाकर अपने मुल्क में हिफाज़त के साथ उतार देती हैं। इंजीनियरिंग का बैकग्राउंड रखने वाले हज़ारों समझ रहे होंगे कि यह कितनी महात्म का काम है।

बफ़रले युनीवर्सिटी में कंप्यूटरों की तात्विक

इलेक्ट्रॉनिक्स की दुनिया में तलहका मचा हुआ है। हर आने
बाला दिन नई-नई खोजें लेकर आ रहा है। और ये सारी तब्दीलियाँ साठ के दशक के बाद हुईं। तनु 1960 ईं में बनले यूनिवर्सिटी कैलिफोर्निया में एक बड़ा कंप्यूटर था जबकि सत्र के दशक में इस यूनिवर्सिटी में सत्र हजार पी०सी० टोस्निल थे। जब आप सोचिए कि जब इतने लोग दिन रात स्क्रीन पर काम कर रहे हों और इंसान अपने दिमाग का इस्तेमाल कर रहे हों तो फिर मादृक की असलियत क्यों नहीं खुलेगी।

जैन्टेक्स इंजीनियरिंग की नई खोजें

जैन्टेक्स इंजीनियरिंग के अंदर इस वक्त ऐसी-ऐसी चीजें सामने आ रही हैं कि इंसान की आँखें खुली ही खुली रह जाती हैं। स्वीडन के अंदर एक पेड़ उगाया गया जिसकी तीन अलग-अलग शाखाएँ पर तीन अलग-अलग फल लगे हुए थे। यह कितना हैरतअंगेज बात है।

दरअसल जब भी कोई चीज परवरिश पाती है उसके खिलाफ का एक डी०एन०ए० जाख्मा हुआ करता है। डी०एन०ए० के अंदर आर०सी०जी०टी० डॉंडें से बनी हुई सीढ़ी होती है। जिसमें उसके नशोनुमा के खाल पेग्माम मौजूद होते हैं। मिसाल के तौर पर आदमी ही को लीजिए। सबकी दौ आँखें होती हैं, किसी की तीन या चार आँखें नहीं होतीं। सबके नाक और कान एक ही जगह पर होते हैं किसी और जगहें पर नहीं होते। सब के चेहरों का रख सामने की तस्फुत होता है। हर चीज जो अपनी-अपनी जगह पर अपनी-अपनी शक्ति में पैदा हो गई है उसको वही जाना चाहिए से कंट्रोल कर रहा होता है। इस कोड को आज इंसान ने समझना
काएनात को क़ाबू करने की तरफ़ इशारा

अल्लाह रब्बुलइज़ज़त ने चौथे सी साल पहले फरमाया दिया था कि «स्वर्ग के सितरों की एक ग्रुप» और हमारे तुम्हारे लिए मुज़ाफ्फर कर दिया वह ज्यादा है जिसे आसमान और ज़मीन के बीच में रखा है। इस फरमाये के मुताबिक इसान के अंदर काएनात को क़ाबू में करने की सलाहियां मौजूद हैं। वह अल्लाह का नाम है, अल्लाह का ख़लीफ़ा और अल्लाह रब्बुलइज़ज़त की सिफ़ात का मज़हर अत्यन्त है। वह अपनी सलाहियों को इस्तेमाल करेगा तो इन चीजों को समझना उसके लिए मुश्किल नहीं रहेगा।

पेट खोले बग़ैर आप्रेशन

मेडिकल की लाइन में आज नित नई रिसर्च सामने आ रही है। एक विलायत इज़ज़त आप्रेशन की नई टेक्नालॉजी है। अल्लाह के लिए आज किसी इसान के पेट को खोलना नहीं पड़ा बल्कि एक तरफ़ से इंजेक्शन की सूई की बराबर तार अंदर डालते हैं जिसमें एक कैमरा फिट होता है और दूसरी तरफ़ दर्शाता करके उसमें अपने औज़ार डालकर दूध की स्फीन पर अंदर का फोटो देख रहे होते हैं। इस तरह पेट के अंदर ही आप्रेशन करते हैं, पेट के अंदर ही उसके तंत्र लगते हैं और इस मरीज़ को आप्रेशन के कुछ मिनट के बाद ही घर जाने की इजाज़त दे देते हैं। वे आप्रेशन जो पहले छः घंटे तक जारी रहते थे और महीनों इस्लाम
बिस्तर पर रहा करता था, खून की कई-कई बोतलें दी जाती थीं। आज उनके करने का तरीका इतना बदल चुका है कि आप्रेशन के बाद वह आदमी हस्पताल में रहने के बजाए अपने घर चला जाता है।

बगैर आप्रेशन फेफड़े से गोली निकालना

सऊदी अरब में एक नौजवान अपने दोस्तों के साथ मिलकर शिकार करने के लिए जंगल में गया। उसके पास एयरप्पन भी थी। उसने भूले से एक छर्स अपने मुंह में डाल दिया। वह छर्स उसके गले के रास्ते हवा की नाली में चला गया और वहाँ से सीधा फेफड़ों में जा पहुँचा। वह शिकार से वापस आया तो उसने अपने घर में किसी को इस बारे में न बताया।

कुछ दिनों बाद नौजवान को खांसी और बुखार हो गया। करीब डाक्टरों से इलाज कराया तो मालूम हुआ कि उसके फेफड़े में धातु की बनी हुई कोई चीज़ है जिसकी वजह से वह ठीक नहीं हो रहा था।

उनको बताया गया कि जल्द में एक डाक्टर साहब आप्रेशन के बगैर वह छर्स निकाल देंगे। लिहाज़ा वह जल्द में उस डाक्टर साहब के पास चले गए। उसने एक बारिक सी तार ली और मुंह के रास्ते उस तार को डाक्टर ने अंदर दाखिल कर दिया। उस तार के सिरे पर एक बहुत ही छोटे से साइज़ का कैमरा लगा हुआ था। जो साथ पड़े हुए एक टीवी सेट में फेफड़े के अंदर से तस्वीर पेश कर रहा था।

डाक्टर साहब ने नाक के ज़रिए एक और तार उसके फेफड़े में
यूरोपियन लोगों का दावा

फ़स्कीर आपको मग़रबी समाज का तारीफ़ करवा रहा है ताकि जो लोग वहाँ नहीं गए उनके जुड़न में तस्वीर बन जाए कि फ़स्कीर किस सोसाइटी की बात कर रहा है। वहाँ पर निज़ाम बहुत ही मजबूत और ठोस बना दिया गया है। वह दावा करते हैं कि हमारा मुल्कCountry of justice इंसाफ वाला देश और Country of freedom आजादी वाला देश है। और वाकई वहाँ के लोगों को अपने कानून के मुताबिक इंसाफ़ दिलवाते हैं। इसलिए वहाँ के लोग मुतमिसन होते हैं। लोग दफ्तरों में काम करने की सीमा से जाते हैं और काम करके वापस आ जाते हैं।

शहबतपरस्ती का जोर

अगर आप यूरोप जाकर देखें तो उनकी बेरिमानी और जाती निंदगी की कुछ बड़ी बुराईयों के अलावा कुछ समाजिक खराबी नज़र नहीं आएगी। वे बुराईयाँ जिनका ताल्लूक नफ्तानियत के साथ है कि इस्माइल भैस्ता शहवत परस्त और नफ्स परस्त साबित हुआ है क्योंकि नफस चाहता है कि मुझे अपनी चाहें के मामले में पूरी इजाजत हो। लिहाज़ा औरत की बेपरवाही, उसके साथ नाजाएज़ ताल्लुकात, गाना-बजाना, शराब और इससे जुड़ी हुई कुछ
चीज़ें जिनकी धृति औरत हो वे ख़राबियाँ आपको वहाँ आम नज़र आएंगी क्योंकि उनका कानून उनको इजाज़त देता है।

मसूरिबी समाज के मसबत (पोज़िटिव) पहलू

इसके अलावा अगर आप उनकी इज्तिमाई जिंदगी में गौर करें तो हैरान करने की हद तक वहाँ इस्लामी उसूल व कायदों नज़र आएंगे। मसलन इसफ़ा के बारे में हज़रत अली रज़िय़ल्लाहु अन्हु का फर्मान है कि “तुम क़ुफ़ के साथ हुकूमत तो चला सकते हो मगर ज़ुल्म के साथ हुकूमत नहीं चला सकते।” और वहाँ पर हर बाद को इसफ़ा होता नज़र आता है। जिस मुकदमे की पैरवी करने वाला कोई नहीं होता उसकी पैरवी खुद हुकूमत करती है। अरे! यह अदल व इसफ़ा तो हमें खुलफ़ाए राशिदीन के दौर में नज़र आता था।

स्वीडन के वर्जीरे आज़म का इस्टीफ़ा

आप हैरान होंगे कि स्वीडन के वर्जीरे आज़म ने कहा कि अब मेरी उम्र ज़्यादा हो गई है। लिहाज़ा में समझता हूँ कि मैं अब क़ौम की उम्मीदों पर पूरा उतरने के काबिल नहीं रहा, मैं इतनी मेहनत नहीं कर पा रहा हूँ जितना करनी चाहिए थी लिहाज़ा आइंडा साल इस्टीफ़ा दे दूँगा। अब पूरी क़ौम कह रही है कि आप इस्टीफ़ा न दें। वह बहता है कि नहीं, मैं समझता हूँ कि मैं अपनी सीट के साथ इसफ़ा नहीं कर रहा। पूरा साल उसे फिट रहे कि
अपोजिशन लीडर की नालाक्की का अजीब वाक़िया

जब उसने इस्तीफा दे दिया तो नए वजीर आज़म के चुनाव का मसूदा खड़ा हो गया। अपोजिशन लीडर एक औरत थी। उसके नामजद था, क्योंकि वह सबसे ज्यादा वोट हासिल करने वाली औरत थी। उसकी जिंदगी की सारी बातें परखने के लिए पड़ताल की गई तब तक पता चले कि वह इस सीट पर बैठने के क्षमिल थी है या नहीं।

पड़ताल के दौरान एक बात सामने आई की अपोजिशन लीडर होने की है। उसे एक क्रेडिट कार्ड मिला हुआ था। वह एक बार अपने बच्चे को लेकर किसी स्टॉर पर गई और अपना जाती क्रेडिट कार्ड घर भूल गई। बच्चे ने जिंदगी की कि मुझे एक खिलौना लेकर दें। उसने तीन तो मार्क का खिलौना लेकर दिया। पाकिस्तानी करेंसी के मुताबिक तकरीबन घाई हज़ार रुपए बनते हैं। और जैसे ही वह घर आई उसने आते ही अपने जाती एकाउंट से उसने एसें उस एकाउंट में ट्रांसफर कर दिए। स्टॉर से घर आने तक तकरीबन दो केटे लगे होंगे।

यह कई साल पहले की बात थी। जबकि उसने ऐसे अदा भी कर दिए मगर पड़ताल करने वालों ने कहा कि कौम की अपोजिशन की लीडर थी। उसके अपनी सीट की वजह से कार्ड मिला था, यह तो सरकारी काम के लिए था। अगर यह तीन सी मार्क अपनी ज़रूरतों के लिए खर्च कर सकती है तो उसे कल वजीर आज़म बनाएगे तो यह तो मालूम नहीं कि क्या कुछ अपनी
जात के लिए इस्तेमाल करेगी। सिर्फ इस वजह से उसको
नाकाबिल करार दिया गया हालाँकि जब वह रकम वापस कर रही
थी। उस वक़्त पता था कि कल को मेरी यह वात किसी
को मालूम होगी या नहीं होगी।

पार्लियामेंट के नेत्ताओं की माज़रत

जब उसको नाकाबिल करार दिया गया तो फिर कोई आदमी
अपने आपको वज़ीर आज़म बनने के लिए पेश करने को तैयार
नहीं था। आप हैरान होगे कि आज के दौर में सह स्वीडन दुनिया
का अंकला मुल्क है जहाँ पर एक साल तक पार्लियामेंट में से हर
एक को दावत देते रहे कि कोई अपने आपको वज़ीर आज़म बनने
के लिए पेश करे मगर कोई भी पेश नहीं करता था। एक कहता
कि आप वज़ीर आज़म बन जाएं, दूसरा कहता कि मैं तो इस
काबिल नहीं हूँ। मैंने जब वह बात सुनी तो मुझे अपने बड़ों का
वक़्त याद आ गया कि जब उन पर ज़िम्मेदारी रखी जाती तो वे
फूर्माते थे कि मैं तो इस बोझ को उठाने के कबिल नहीं हूँ।

यूरोप में समाजी हक़क़ का ख्याल

वहाँ जाकर आपको इस्लाम के उसूल व ज़ाल्वे अमली शब्द
में नज़र आएगे। उन्होंने चाहे इसको इस्लाम का नाम नहीं दिया
हुआ मगर यह हक़क़ कस्त है कि उन्होंने यह चीज़ें इस्लाम से मांगी
हुई ली हैं। लिहाज़ा आप अगर वहाँ किसी आबादी में जाकर रहें
तो पड़ीसी के जो हक़ एक मुसलमान सोसाइटी में होने चाहिएं वे
हक़क़ आपको सौ पूरसद इस माहील के अंदर मिलेंगे। इसलिए
हाँ से जाने वाले लोगों को वह सोसाइटी बड़ी अच्छी लगती है। 

हाँ तक कि हमारे कुछ दोस्त वहाँ फकीर से सवाल पूछने लगे कि कुरआन पाक में जिस जनन का जिक्र किया गया है वहीं वह इसी सोसाइटी के बारे में तो नहीं कहा गया है। फकीर ने 

जवाब में कहा कि आप लोगों ने जनन को व्या समझा हुआ है।

पण्डिती समाज में चाहे आपकी कोई सिफारिश नहीं है और 

आपने किसी दफ्तर में फोन करना है या खुद जाना है तो हर बंदा 

आपसे पूछेगा (Can I help you?) क्या में आपकी मदद कर 

सकता हूँ? वहाँ आपकी फाइल के चलने के लिए पहिए, नहीं 

लगाने पड़ेगे बल्कि हर काम अपने काबड़े के मुलाकात होगा।

हाँ सरकारी महकमों में लोग इस तरह लगन से लाम करते 

हैं जिस तरह लोग प्राइवेट महकमों में काम करते हैं। कोई आदमी 

दफ्तर में बैठकर अपने घर के मामले के लिए टेलीफोन नहीं 

करेगा। कोई आदमी दफ्तर के पते पर अपने घर की डाक नहीं 

मंगवाएगा। काम का मतलब काम ही समझा जाएगा।

सोसाइटी में अगर लोगों को किसी चीज़ की जरूरत होती है तो यूं समझिए कि हकूमत बेतुलमात से वे चीज़ें दे देती हैं। वहाँ 

पर इस्सानी हकूक की इतनी पसंद है कि आज के मुसलमान 

मुल्कों के लोग भी अपने मुल्कों को छोड़कर वहाँ जा रहा रहना 

पसंद करते हैं।

वहाँ पर इससफ़ के हासिल करने के लिए पंचायत का सिस्टम 

है। उसका तरीक़ा यह है कि सोसाइटी में तज़स्थिकार लोगो को 

चुनकर उनकी पंचायत बिटा दी जाती है और कहा जाता है कि 

कि उसके सामने पेश होकर अपने मुकदमे ववान करें। वहाँ पर
जज को पुलिस रखने का इह्तियात होता है और हर मुकदमे का एक बजट होता है कि वह चाहे तो अपनी मरज़े के आदमी रखकर खुद उस मुकदमे की पूछताछ करवा सकता है ताकि इंसाफ वाले को इंसाफ मिले। तो वहाँ पर यह अजीब बात देखी कि वहाँ पर इस्लाम नज़र आता है मगर मुसलमान बहुत कम हैं जबकि वहाँ पर मुसलमान नज़र आते हैं और इस्लाम बहुत कम है। जिसकी बजह से वहाँ लोग गुटमड़न नज़र आते हैं। वे मेहनत करते हैं और उनको मेहनत का फल मिलता है। इसी बजह से वे आज दुनिया में रहबरी कर रहे हैं। आज पूरी दुनिया में उनका सिक्का चल रहा है। उसका का सिक्का आज पूरी दुनिया में रैफ़रेंस बना हुआ है। उनके सिक्के रैफ़रेंस की बिना पर दुनिया के तमाम मुल्क अपनी करेंसी तोलते हैं।

अंदरून व बाहरून मुल्क में सियासी पहचान

बाहर की दुनिया के साथ वे सियासत में अपनी नाहसफी को भी इंसाफ कहते फिरें तो वह उनकी अपनी मरज़े है। उनके सियासतवांतों का पूरी दुनिया में और अपने मुल्क में क्या रखा होता है, बहुत फर्क नज़र आता है। फिर भी अपने मुल्क की हद तक उन्होंने लोगों को मुतभन्न रखा हुआ है। जिसकी बजह से लोग काम भी करते हैं और कुर्बान रहते हुए एक दूसरे का ख्यात भी करते हैं।

पढ़ाई-लिखाई का खर्च

यूरोपी समाज पढ़ा-लिखा समाज है। वहाँ पर 99.9% तलीम
है क्योंकि वहाँ तालिम के शौके पर बहुत ज्यादा खर्च किया जाता है। इस तरह तक कि उनके लिए किंडर गार्डन के स्कूल बनने हुए हैं। वे हमारे यहाँ यूनिवर्सिटियों से भी कुछ मामलात में ज्यादा एडवांस होते हैं बल्कि जिसका चलन आर्थिक आय से आए आपको यूं सोचा कि मुल्क के एक-एक इंच को उन्होंने तर्कपीड़ी यापता बनाया हुआ है आपको पूरे मुल्क में बैठकजोड़ी का शिकार शायद ही कोई नजर आएगा।

रस की एक अजीब शिकायत

ये एकमुक्त्रण के वे इसको हैं जहाँ से बच्चे निकलते हैं तो फिर वे मुल्क अंदर काम करते हैं। रस ने आज से आठ-दो साल पहले यही तो शिकायत की थी कि मैं अमेरिका से तो निकट लूं कि यह क्या है मगर इसकी युनिवर्सिटियों और कालेजों से बढ़ा तंग है। हर दिन में वहाँ पर एक नई रिसर्च हो रही है क्योंकि वहाँ पर लाखों सलाहित वाले लोग बैठे रिसर्च कर रहे होते हैं। उनकी साइडी रिसर्चों ने मेरी नाक में दम कर रखा है।

बच्चों की तर्कियत

ये लोग अपनी ऑलाइड की तर्कियत का बहुत ज्यादा ख्याल रखते हैं। फूकीयर को एक बार पेरिस से न्युयॉर्क जाना था। जब फ्लाइट पर बैठा तो फूकीयर के साथ वाली कुर्सी पर एक नौजवान लड़की आकर बैठी तो उसने आते ही अपनी तहजीब के मुताबिक हैलो हाय किया। उसने कहा आप कहाँ से हैं? फूकीयर ने कहा शायद पाकिस्तानी हूँ। उसने भी बताया कि मैं अपने शौर्हर के पास
न्युयार्क जा रही हैं। फ़क़ीर के पास एक किताब थी। फ़क़ीर ने वह किताब ढंगा शुरू कर दी।

थोड़ी देर के बाद पारस्परिक ने खाना लगाया। फ़क़ीर ने खाने को मना कर दिया क्योंकि पता था कि वह खाना पैरिस में बनाया गया है। मालूम नहीं कि किस तरह पका हुआ है और कैसा नहीं। इहतियात इसी में होती है कि इसान के पास अपना कुछ हो जिससे वह सफर के अंदर अपना काम चला ले।

उस लड़की ने अपने सामने मेज पर खाना लगवाया लिया क्योंकि वह बिल्कुल साथ वाली सीट पर बैठी थी इसलिए फ़क़ीर को उसकी सब बातों का पता चल रहा था कि क्या हो रहा है। उसने बच्ची को गोद में बिठाया और चम्मच में चावल लेकर अपने मुंह में डाले। छोटी बच्ची ने आवाज दी कि मम! माँ! यानी वह वाह रही थी कि मुझे भी मिल। जब उस बच्ची ने कहा तब माँ ने चम्मच में थोड़े से चावल लिए और बच्ची के मुंह में डाले। जब बच्ची ने खा लिए तो माँ ने कहा, (Say thank you.) (कहो आपका शुक्रिया।) वह छोटी थी बच्ची माँ से कहती है, (Mom! thank you.) मम! शुक्रिया। फिर माँ ने खाना शुरू कर दिया। थोड़ी देर के बाद बच्ची ने फिर इशारा किया। अब उसने फिर चम्मच में चावल लेकर उसके मुंह में डाले और फिर कहा, (Say thank you.) (कहो आपका शुक्रिया।) वह एक-एक चम्मच बेटी को देती रही और हर चम्मच पर शुक्रिया का लक्ज़ कहत्वाती रही।

उसी बीच कुछ चावल माँ के कपड़ों पर फिर गए। बेटी ने देखा तो इशारा करके कहने लगी, मोम। माँ ने टिश्सू पेपर से उस
कपड़े को साफ़ किया और साफ़ करने के बाद अब माँ अपनी बेटी को कह रही है शुक्रिया। खाने के दौरान उस माँ ने अपनी बेटी से तकारीबन 36 बार शुक्रिया का लफ़्ज़ कहलावाया। अब बताए कि शुक्रिया अदा करने की यह आदत इस बच्ची की घट्टी में पड़ आएगी या नहीं।

मेरे दोस्तो! यह तालीम तो इस्लाम ने हमें दी थी। हदीस पाक में आया है:

«(तुम में रहे नहीं, तेरे लिए नहीं है)»

जो इस्माइल का शुक्रिया अदा नहीं करता वह अल्लाह तत्पाला का भी शुक्र अदा नहीं करता।

यद्यपि आज है कोई मां जो अपने बेटे को शुक्रिया अदा करने की आदत डाल दे। इसीलिए जब बच्चे बड़े हो जाते हैं तो कहते हैं कि माँ-बाप ने जितने जतन काटे हैं वे तो उन्होंने करना ही था। बड़ा भाई छोटे भाई के लिए कितनी कुर्बानियाँ दे दे, छोटा भाई बड़े भाई को कभी शुक्रिया का लफ़्ज़ नहीं कहेगा।

कायदे-क़ानून

फुकीर वाशिंगटन में कई मज़ीला इमात में टहरा हुआ था। उस इमात के करीब एक ग्राउंड था। वहाँ ठीक पौने सात बच्चे बच्चों की एक स्कूल चैन आती जबकि बच्चे उस ग्राउंड में साढ़े छः बजे आ जाते हैं। बच्चे क्योंकि हर जगह बच्चे ही होते हैं इसलिए वे पंद्रह मिनट पहले आकर अपने बस्ते फंकते और खेलना शुरू कर देते। कोई भाग रहा है, कोई दौड़ रहा है, कोई गिर रहा है, कोई गिरा रहा है।
ठीक पीने सात बजे वैन जाइवर आकर ब्रेक लगाता और ब्रेक लगाने के बाद हर्न देता है। उसका हर्न सुनकर फकीर घड़ी देखता तो पूरे पीने सात बजे का बक्का होता। फकीर खिड़की में से जाकर देखता। हर्न की आवाज़ सुनते ही उन बच्चों में मालूम नहीं कौनसा इस्तान जाग जाता है कि वे सब के सब अपने बस्ते लेते और गाड़ी के सामने सीधी लाइन बनाकर खड़े हो जाते। केरेक्स, उस्तादों और मॉ-बाप में से कोई पास न होता तभी वे उतने सभी हुए थे कि बिल्कुल सीधी लाइन बनाकर खड़े हो जाते। छोटे कुद का बच्चा सबसे पहले खड़ा होता। उसके बाद उसके बड़े कुद का फिर उससे बड़े कुद का यहाँ तक कि जो सबसे बड़ा और डील डॉल में लंबा-वोड़ा होता है वह सबसे आखिर में खड़ा होता है। जब जाइवर देखता कि सब लड़के एक लाइन में खड़े हो गए हैं तो वह घंटी बजाता है और कहता फस्ट यानी पहले बच्चे को सवार होने के लिए आवाज़ देता है। पहला बच्चा सवार होकर अपनी पसंद की सीट पर बैठ जाता है। जाइवर फिर कहता है, (Next) तो दूसरा बच्चा सीट पर बैठ जाता है। वह हर बार (Next, Next) कहता रहता और बच्चे एक-एक करके सीट पर बैठते चलते जाते। जब वे सीट बाई सीट बैठ जाते तो जाइवर दरबारा बंद करता और चला जाता।

फकीर काफ़ी देर सोचता रहा कि ऐसे कायदे-कानून वाले समाज को हाना कितना मुश्किल काम है। जबकि इसके मुकाबले में हमारे लोगों में से औसत से जुगा ऊपर चाले लोग हवाई जहाजों में सफर करते हैं। उनको बोर्डिंग पास मिल चुके हों चुके होते हैं, सीट नंबर लिखा हो चुका होता है, लांडक में बैठे हुए होते हैं।
इत्तर से ऐलान होता है कि तश्रीफ ले आए तो इत्तर दरवाज़े पर वह उदय मचा दिया जाता है कि औरते बेचारी पीछे खड़ी रहती है जबकि हर बंदर को मालूम होता है कि फ्लाइट वाले मुझे लिए बगैर फ्लाइट नहीं चलाएंगे। यहाँ तक की टाइलेट में भी जाकर दूसरे कि वह बंद किस्त गायब है? मगर इसके बावजूद हमारे अंदर इतना सब भी नहीं होता कि हम लेडीज़ को पहले सबार होने दें, कुछ मिनट जरा पीछे खड़े हो जाएं कि मेरे दूसरे मुसलमान भाई मुझे पहले चले जाएं। जब फ्लाइट युकाबला करता है तो हैरानी होती है।

बहरहाल यह यूरोपी समाज के पोजिटिव पहलू हैं। पोजिटिव पहलू चाहे किसी बड़े से बड़े दुश्मन के ही क्यों न हो वह मानने पड़ते हैं। इस सोसाइटी के कई निगेटिव पहलू भी हैं।

माँ-वाप की बदहाली

वहाँ पर सारी टेकनालोजी के बावजूद घरेलू जिंदगी सकृत से खाली है। अक्सर बच्चे अंदारह साल की उम्र का इंतजार करते हैं। अंदारह साल मुझसे के बाद अपने माँ-वाप अनुमिता कह देते हैं। अंदारह साल के बाद बच्चों और माँ-वाप के बीच तालुक ठीक रखने के लिए इस सोसाइटी में कोई कंट्रोल नहीं है। सारे साल में एक दिन मदर-डे मनाया जाता है। उस दिन बच्चे जहाँ
कहीं हैं वे माँ को ख़त लिख देते हैं या माँ को तोहफ़ा भेज देते हैं। वे तोहफ़ा भेजकर यह समझते हैं कि हमने माँ का हक़ अदा कर दिया है।

एक लड़की वाशिंगटन में रहती है। उसके माँ-बाप भी वाशिंगटन में रहते हैं। मगर वह कहती है कि पिछले सात साल से मुझे अपने माँ-बाप से मिलने या बात करने का मौका नहीं मिला। इसलिए अद्वार साल की उम्र के बाद बच्चों के अंदर जवानी का मूफ़्फ़िन होता है और वे जवानी के कामों में इतना मशहूर हो जाते हैं कि उनको दुनिया में किसी की परवाह नहीं होती। बूढ़े माँ-बाप को उस वक़्त अपने बच्चों की ख़िदमत की ज़रूरत होती है। यह इस समाज की सबसे कमज़ोर बात है। घर जितनी चीज़ों से भी भर जाए, इस्तान लो गोशठ का बना हुआ है, उसके दिल में ज़ुलाब भी हैं। इसलिए माँ-बाप को जो सकून औलाद से मिल सकता है भला वह लोहे और सोने-चाँदी की बनी हुई चीज़ों से कहाँ मिल सकता है।

हकूमत ने इस तरह के लावारिस बूढ़े माँ-बापों को ख़बर लेने के लिए बूढ़े लोगों के लिए घर बनाए हुए हैं। वहाँ पर बेहतरीन इतिज़ाम किये जाते हैं। मगर वहाँ पर सब बूढ़े होते हैं, कोई भी जवान या छोटा बच्चा नहीं होता जो उनका दिल बहलाए। लिहाज़ा बूढ़ों के घरों में कुछ अरसे रहने के बाद उनका दिल उक्ताना शुरू हो जाता है। यहाँ तक कि कुछ अरसे रहने के बाद उनका दिल उक्ताना शुरू हो जाता है। यहाँ तक कि वे कभी-कभी यह पसंद करते हैं कि हमें ज़ुहर का टीका लगा दिया जाए।
स्वीडन में तलाक़ की दर

स्वीडन इतना अमीर मुल्क है, उसके पास इतनी दौलत है कि उनका बजट नफर्तता बाला होता है जबकि हमारे मुल्क का बजट नफर्तता बाला होता है। हम सोचते हैं कि ये सब आएंगे कहां से और वे सोचते हैं कि ये सब लगाएंगे कहां पर। स्वीडन की एक कंपनी के डायरेक्टर ने मुझे बताया कि अगर पूरी कौम काम करना छोड़ दे और जिस तरह ऐसा व आराम में बक्सा गुजारते रहे हैं तो हक्कुमत उसको छः साल तक खिला सकती है। जिसके पास नौकरी नहीं होती उसको 2000 कोना हर महीने एलाउंस मिलता है। घर नहीं है तो सोशल सिक्योरिटी वाले घर लेकर देते हैं। बीमार हो जाए तो उसका इलाज़ करवाया जाता है। अब उनको रेती, कपड़ा और मकान का मसूल तो हल हो गया। इसके बाद इस्लाम की क्ष्याहिरें रह गयीं, शहवले रह गयीं। इस सिलसिले में वह सेक्स के लिहाज़ से आजाद मूल्य कहलाता है। कोन किसके साथ रहता है? क्यों रहता है? कब रहता है, क्यों रहता है? किसी को इससे कोई मतलब नहीं होता। लिहाज़ यह मसूल भी उनका हल हो गया। अब उनका जाहिरी तौर पर कोई मसूल दौड़ नहीं लेकिन यह एक कड़वी हकीकत है कि स्वीडन में खुदकशी करने की दर पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा है, वहाँ पर 70% औरतों को तलाक़ हो जाती है। इसलिए कि दिनांकी परे शानी होती है।

मियाँ-बीवी में मुहब्बत की कमी

पैशीस साल के साथ के बालूद मियाँ-बीवी में मुहब्बत पैदा
नहीं होती, बफ़्रादारी का ज़ब्जा पैदा नहीं होता। मामूली बात पर मियाँ कहता है (I don't care.) (मुझे कोई परवाह नहीं)। बीवी भी कहती है (I don't care.) (मुझे कोई परवाह नहीं)। अब मियाँ ने बेग समाहला और इधर का रास्ता लिया और बीवी ने बेग समाहला और उधर का रास्ता लिया। पैतीस साल इकट्ठा रहने के बावजूद बीवी अपना कमाल है और शोहर अपना कमाल है और रसोई के लिए खवाच दोनों पर बांट दिया जाता है। इससे अजीब बात यह कि रास्ते में जाते हुए अगर मियाँ के पास सिगरेट ख़त्म हो जाते हैं तो वह अपनी बीवी से उधार मांगता है जो बाद में वापस करना पड़ता है और अगर बीवी के पास सिगरेट ख़त्म हो जाते हैं तो वह मियाँ से उधार मांगती है, बाद में उसे भी वापस करनी पड़ती है। इस सोसाइटी में हमदर्द का तस्विर ही नहीं है।

बस कहते हैं कि इस हाथ ले उस हाथ दे क्या ख़ूब सौदा नकद है। इतनी टैक्नालॉजी के बावजूद उनके दिलों में वे मुहब्बतें, हमदर्दियाँ और वफ़ाएं पैदा नहीं होतीं जो आज बदामालियों के बावजूद हमारी सोसाइटी में मियाँ-बीवी के अंदर मौजूद हैं।

इस्लाम की बरकत

यह इस्लाम की बरकत है। अल्लाह तबाला ने इशाद फरमाया अगर आप दुनिया में कुछ है ख़र्च कर देते तो भी आप उनके दिलों में मुहब्बतें पैदा नहीं कर सकते वे (ولکن اللہ الف بنيهم) यह तो अल्लाह ने उनके दिलों में मुहब्बतें पैदा कर दी हैं। यह दीन इस्लाम की बरकत है कि आज इसने मसाइल होने के बावजूद, इतने प्रेयशर होने के बावजूद, इतने मसाइल
होने के बावजूद घर के लोगों के अंदर फिर भी मुहब्बत के मंजूर देखने में आते हैं। माँ-बाप और औलाद में मुहब्बत होती है। बेटा परदेस में जाता है तो बुड़ी माँ इतिज़ार में होती है, रातों को उठकर दुआएं मांग रही होती है। अल्लाह रखबुलइज्ज़त ने इशारात क्या हैं (देखे जो लोग ईमान लाएंगे और ने का आमाल करेंगे) अल्लाह रखबुलइज्ज़त उनके दिलों के अंदर मुहब्बतें पैदा कर देंगे। ये मुहब्बतें और हमदर्दी यूरोपी सोसाइटी में रहने वाले लोगों के लिए ख़ाब है। उनको ज़ाहिर में ये नेमते नहीं मिलती।

औलाद के बारे में तस्वीर

हमारे एक दोस्त कहने लगे कि मैं हवाई जहाज में सफर कर रहा था। मेरे बिल्कुल करीब एक जोड़ा बैठा हुआ था। पहले तो वे अपने ही कामों लगे रहे। कुछ देर के बाद फ़ारिग हुए तो उन्होंने मुझसे हैलो हाय कहा। मैंने उनसे पूछा (How many kids have you?) कि तुम्हारे कितने बच्चे हैं? वे दोनों मियाँ-बीयी जवाब देने लगे कि (We would like to have a dog.) कि हम बच्चों के बजाए घर में एक कुत्ता पालना पसंद करेंगे। वे कहते हैं कि मैं हेरान हुआ और उनसे पूछा, भई! आप कुत्ता पालना क्यों पसंद करेंगे? कहने लगे इसलिए कि वह बच्चों से ज्यादा वफ़ादार होता है। जब माँ-बाप का औलाद के बारे में यह तस्वीर हो तो औलाद का माँ-बाप के बारे में क्या तस्वीर होगा। इसलिए औलाद ज़रा बड़ी होती है तो माँ-बाप को सामने कह देती है—

You enjoyed your life and now let me enjoy
my life.

कि आपने अपनी ज़िंदगी के मजे लिए अब हमें अपनी ज़िंदगी के मजे लेने हैं। उनके दिलों में इतनी बेमुक़र्खाती नज़र आती है कि फूल बिल्कुल सफेद हो गए हैं।

एक बूढ़ी औरत की बदहाली

मेरे एक दोस्त कहने लगे कि मैं रेलगाड़ी में सफर कर रहा था। एक नवे साल से ज़्यादा उम्र की बूढ़ी औरत मुझे कहने लगी, क्या आप मुस्लिम हैं? मैंने कहा हीं, मैं मुस्लिम हूँ। कहने लगी कि मैंने सुना है कि मुस्लिमान वादे के बड़े पाबंद होते हैं। मैंने कहा, हाँ बड़े पाबंद होते हैं। कहने लगी, क्या आप मुझसे एक वादा कर सकते हैं? मैंने कहा, जी बताएं कि क्या वादा करूँ? कहने लगी, बस आप मुझसे वादा करें फिर आपको बताओ। मैंने कहा मुझे बताओ तो सही क्या वादा लेना है? कहने लगी, वादा यह लेना है कि आप अमरीका में जहां कहीं भी हों रोजाना पाँच मिनट के लिए मुझे कलेक्ट काल कर दिया करें। कलेक्ट कॉल ऐसे फोन को कहते हैं कि आप टेलीफोन से किसी आदमी को फोन करें मगर बिल आपकी बजाई उस बंदे को आएगा जिसकी टेलीफोन किया जा रहा है। गोया वह कह रही थी कि बिल में अदा करूँगी। मैंने पूछा क्यों, क्या आपके बच्चे नहीं हैं? कहने लगी, बच्चे तो हैं मगर उनके पास मुझे मिलने के लिए टाइम नहीं है। मेरे पास बहुत बड़ा घर है, मुझे इतनी पेंशन मिलती है कि मुझे खर्च की परवाह नहीं मगर मैं अपने बच्चों को याद करती हूँ और इतने बड़े घर में सारा दिन अकेली रहती हूँ।
क्षुद्र अच्छा है या माँ

अमरीका में एक रियासत में एक माँ ने अपने बेटे के खिलाफ मुकदमा किया। वह मुकदमा अब रोज़मरी की भी जीत बना और ख्याति में भी उसकी तपस्वी आई। माँ ने मुकदमा यह किया कि मेरे बेटे ने घर में कुत्ता पाला हुआ है और यह रोज़ाना तीन चार घंटे उसके साथ लगाता है। यह उसे नहलाता है, उसकी ज़रूरत पूरी करता है, उसको अपने साथ रखने के लिए भी ले जाता है, वह अपने कुत्ते को रोज़ाना असर भी कराता है, उसे खिलाता पिलाता भी है। मेरे भी उसी घर में दूसरे कमरे में रहती हूँ लेकिन यह मेरे कमरे में पाँच मिनट के लिए भी नहीं आता। इसलिए आदलत को चाहिए कि वह मेरे बेटे को पाबंद करे कि वह रोज़ाना एक बार मेरे कमरे में आया करे।

जब माँ ने मुकदमा किया तो बेटे ने भी मुकदमा लड़ने की तैयारी कर ली। माँ ने भी वकील बना लिया और बेटे ने भी
बकील बना लिया। जब दोनों के बकील जज साहब के सामने पेश हुए, तो जज साहब ने मुकदमे की सुनवाई के बाद फैलाला दिया कि अदालत आपको बेटे को आपके कमरे में पाँच मिनट के लिए आने पर मजबूर नहीं कर सकती क्योंकि मकानी कानून है कि जब औलाद 18 साल की उम्र को पहुँच जाए, उसको हक हासिल होता है कि वह अपने माँ-बाप को चाहे तो कुछ बक्ते दे या विलक्कुल अलैहिदगी अपना ले। रही बात कुछे की तो कुछे की उस पर ज़िम्मेदारियाँ हैं जिनको अदा करना उसकी ज़िम्मेदारी है। हाँ अगर माँ को कोई तकलीफ है तो उसको चाहिए कि वह हकूमत से राखा करे, वह उसे बूढ़ों के घर में ले जाएंगे और वहाँ जाकर उसकी देखभाल करेंगे। अब बताए कि जहाँ भी और बेटे का यह तालमुख होगा वहाँ जिंदगी सुकून से कैसे गुजरेगी।

जर्मनी में बेटी से बाप की बदसालूकी

हमारे एक प्रोफेसर हमें इंजीनियरिंग का एक मजमून पढ़ा रहे थे। कहने लगे कि मैंने जर्मनी से एक कोर्स किया। जिस आफ्सिस में काम करता था उस आफ्सिस में मेरे साथ चाले काउंटर पर एक लड़की बैठती थी। एक दिन वह देर से आफ्सिस में पहुँची। मैंने देखा कि परेशान सी लग रही है। मैंने उससे पूछा, क्या कोई मुश्किल पेश आई है? वह कहने लगी कि मैं अपने वाल्टिड के मकान में रहती थी। मेरे वाल्टिड मुझसे बहुत ज्यादा किराया वसूल करते हैं। कुछ दिनों से किसी आदमी ने उनकी ज्यादा किराया का आफ्सर कर दिया था। वह मुझसे कह रहे थे कि या तो तुम किराया बढ़ाओ या फिर मैं इसपर आदमी के साथ मामला तय कर
इस्लामी सोताईटी में बेटी का महत्व

एक मगरथी सोताईटी है जहां बाप और बेटी में यह मुहब्बत है और दूसरी तरफ इस्लाम की बरकतें देखिए कि हमारी नालायकियों और वाद-वादायलियों के बावजूद आज भी यहाँ बाप और बेटी में इतनी मुहब्बत हैं कि बाप अपनी बेटी के लिए अपने दिल को निकल कर तख्तारी में रखने के लिए तैयार हो जाए। बेटी देती! में जब कभी वे नज़र देखता हूँ जब कोई बेटी अपने घर से शादी के बक़्त रूढ़त हो रही होती है। बाप अपनी बेटी को सारी जिंदगी की कमाई तो पेश कर चुका होता है फिर उस मौक़े पर बाप की आँखों में आँसू भी आ रहे होते हैं, माँ भी रो रही होती है, भाई और बहनें भी रो रही होती हैं। वह मंजूर बताता है कि दिलों में मुहब्बत बाकी हैं। इतना प्यार दुनिया में किसी बेटी को कहां नसीब होगा जो आज इस्लाम की बरकत से एक बात अपनी बेटी को पेश कर रहा होता है। यहाँ बाप और बेटी में अल्लाह ने यह मुहब्बत रख दी है और यहाँ बाप और बेटी का यह ताल्लुक है। अब दोनों के बीच फर्क का आप खुद अंदाज़ा
कर सकते हैं—

इस तरह वाला सितारों की गुजराहों का अपने अफ़ाक़ की दुनिया में सफ़र कर न सका
जिसने सूरज की शुआओं को गिरतार किया
जिंदगी की शब्दे तारीक सहर कर न सका

सारी दुनिया को कुमक्कम से रोशन करने वाला इस्लाम आज अपने मन में अंधेरा लिए किता है। सारी दुनिया को रोशनियाँ देने वाल आज इस्लाम आज अंधर की बस्ती में अंधेरे के साथ जिंदगी गुजार रहा है।

जिस क़ुर्र तस्वीर खुशीद व कमर होती गई
जिंदगी तारीक से तारीक तर होती गई
काव्यनात भार ओ अंजुम देखने के शोक में
अपनी दुनिया से यह दुनिया बेख़बर होती गई

मुहब्बतें ही तो इस्लाम की जिंदगी है। जहाँ यह मुहब्बत व प्यार न हो तो वहाँ की इतनी टैक्नालॉजी किस काम की होगी। ये मुहब्बतें पैदा करने के लिए एक दिन इस्लाम के दामन में आना पड़ेगा।

माँ की अज़मत

आप खुद सोचिए कि वह माँ जिसने बेटे को जन्म दिया,
जिसने अपनी गोद में बच्चे की परवरिश की, जो बच्चे के लिए
रातों को जागती रही, जिसने बच्चे को इतनी कुर्बानियों के साथ
पालकर बढ़ा किया, वह माँ की ममता बच्चे के लिए कितना
उदास होती होगी। माँ के दिल में बच्चे की कितनी मुहब्बत होती है? उसको मापने के लिए आज तक कोई पैमाना नहीं बन सका। माँ की ममता यह गहरा समुद्र है जिसकी गहराईयों को कोई माप नहीं सकता। माँ की ममता वह हिमालय पहाड़ है जिसकी दुःखियों को आज तक कोई न पहचान सका। यह माँ ही जानती है कि औलाद के लिए उसका दिल कितना तड़प रहा होता है।

मगर इस सोसाइटी में जब यही माँ बूढ़ी होती है और बच्चा जवाब होता है तो बच्चे के पास फुसंग नहीं होती कि वह माँ की बात का जवाब दे सके।

फिक्र की घड़ी

ऐं एहतान फारानेश बेटे! तू अपनी उस माँ के साथ यह बर्ता करता है जिने तुझें जन्म दिया, जिसने तेरी परवरिश की और जिसने तेरा साथ बनकर जिंदगी गुजारी। आज वह तुझसे बात करने को तरसती है और तू कहता है कि मेरे पास फुसंग नहीं। अफ़्सोस है तेरी जवानी पर, अफ़्सोस है तेरी जिंदगी पर कि तू अपनी माँ के लिए अपने दिल में इतनी मुहब्बत नहीं रखता। अरे माँ तो वह माँ थी जो तुझे अपने हाथ से जूता पहनाती थी, आज तू उसके लिए जूते सीधे नहीं कर सकता। अरे बचपन में वह तुझे पहले खिलाती थी बाद में खुद खाती थी, पहले तुझे पिलाती थी और बाद में खुद पीती थी, पहले तुझे तुलाती थी बाद में खुद सोती थी। क्या उसकी वफाओं का आज यही सिला है कि तुझे अपनी जवानी का नशा अपनी माँ के कमरे में पाँच मिनट के लिए थी नहीं आने देता।
हदीस पाक में आया है कि जिसने अपनी मां या अपने बाप के बेहरे पर मुहब्बत और अक्रिदत की एक नज़र डाली, अल्लाह तः उसको एक हज और एक उमर का सवार अता फरमाते हैं। एक जगह तो माँ-बाप के बारे में यह तसब्बुर पेश किया जा रहा है और दूसरी जगह पर 18 साल के बाद माँ-बाप अपनी औलाद से कुछ उम्मीद नहीं रख सकते।

फिरंगियों (अंग्रेज़ी) से एक सवाल

फ़ुक़ीर ने यहाँ बड़ी-बड़ी महफ़िलों में कहा कि यह पढ़ी लिखी लोसाईटी मुझे एक सवाल का जवाब दे कि एक लड़की जो मैं सैंग थी, जो किसी और घर में पती बहन, जवान हुई, आज वह उस लड़के के साथ ‘आकर’ रहने लग गई, यहाँ का कानून उस लड़की के लिए तमाम हुकूक तसलीम करता है और वह माँ जिसने उसके पेट में उठाए रखा, जो सेहत के बावजूद मरीज़ बनकर जिंदगी गुज़ारती रही, उन नी महिलाओं में वह अपनी पत्नी का खाना भी नहीं खा सकती थी, पसंदीदा चीजों की महक उसे चुरी मालूम होती थी, उसको सेहत के बावजूद कमजोरी महसूस होती थी, वह अपने खून से तेरी नशीला व नुमा करती थी, वह तुझे अपनी गोद में डालकर तेरे बेहरे पर मुहब्बत की नज़र डाल दरी करती थी। यहाँ का कानून 18 साल के बाद उस माँ के लिए कोई हक तसलीम नहीं करता। इसकी कोई दलील नहीं बनती?

फ़ुक़ीर ने यह सवाल अलग-अलग महफ़िलों में पूछा मगर उनके पास इस सवाल का कोई जवाब नहीं था। फिर फ़ुक़ीर ने कहा कि हमारे मज़हब में देखिए, बाबबी के अपने हक हैं, माँ के
फिरियाँ का इस्लाम क़ुशूल करना

बल्कि यदि यह पॉलीशन है कि जब वे इस्लाम के बारे में पहले तो वे खुशी से इस्लाम क़ुशूल करने पर तैयार हो जाते हैं। किन्तु ही ऐसे लोग हैं जो मुसलमानों के निकाह होते हुए देखकर इस्लाम क़ुशूल कर लेते हैं, मुसलमानों की शादी-घुड़ विवाही में थार मुहब्बत देखकर इस्लाम क़ुशूल कर लेते हैं। यह पहलू हमारे पास सबसे ज्यादा मज़बूत है, जिसे एक दुनिया तलब करेगी और उन्हें मुहम्मद अरबी सल्लाल्हा हु अल्लाह वस्तुतः के दरवाजे पर आना होगा।

न कहीं जहाँ में अर्ना मिली जो अर्ना मिली तो कहाँ मिली
मेरे जुर्म ख़ाना ख़राब को तेरे अचूक बंदा नवाज़ में

पुरस्कृत ज़िंदगी का राज

अमरिका में मुझे एक कंपनी का डायरेक्टर मिला। वह पीएम था। कहने लगा मैं पाकिस्तान गया हूँ और मैंने वहाँ एक अर्ज बात देखी। मैंने कह बताओ वह कौन सी बात है? कहने लगा कि वहाँ के बारे में दो बातें करता हूँ कि पाकिस्तान एक ऐसा मुल्क है जहाँ फर्श है और उल्टा एक ही सड़क पर चलते हैं। मैंने कहा वाकई आप ठीक बात कर रहे हैं। वह कहने लगा मैं एक दूसरी बात भी करता हूँ। मैंने कहा वह क्या है? कहने लगा, मैंने
वहाँ ग्रीब लोगों को देखा कि उनके कपड़े फटे पुराने होते हैं। उनके चेहरों से अंदाज़ा होता था कि उन्हें खाना भी ठीक नहीं मिलता, उनके पास नहाने के लिए चीजें भी पूरी तरह नहीं, उनके पर का मैयार भी इतना अच्छा नहीं लेकिन में यह देखकर हैरान होता था कि उनके चेहरों पर सुकून होता था। खड़े होते थे तो बिलकुल सीधे खड़े होते थे। मैं जिन्हें लोगों से पूछता था वे सब के रात को मीठी नींद सोते थे। कहने लगा मुझे यह बताएँ कि इसकी क्या वजह है? मैंने कहा यह इस्लाम की बरकत है।

न दुनिया से न दौलत से न घर आबाद करने से
तसल्ली दिल को मिलती है सुख को याद करने से

अल्लाह का शुक्र है यह दीन की बरकत है कि आज हमारे
ग्रीब भी अपने घरों में आराम की नींद सोते हैं जब कि उन
मुल्कों के अमीर भी अपने घरों में आराम की नींद नहीं सो पाते।
यह हमारे पास एक पोजिटिव फैलू है।

मुहब्बत ही मुहब्बत होगी

मेरे अजीज दोस्तो! इन मुहब्बतों को सलामत रखिए। इन
हक्कूक का ख्याल कीजिए जो इस्लाम ने हम पर लागू किए हैं। यह
अल्लाह तालाला की रहमत है कि उसने हमें एक ऐसा सिस्टम
dिया है कि अगर हम उसके मुताबिक जिंदगी गुजारते हो, और बीन-बीप में मुहब्बत
होगी, भाई-भाई में मुहब्बत होगी, पड़ोसी-पड़ोसी में मुहब्बत होगी।
गोया अल्लाह रखें अज्ञात हमें एक ऐसा समाज देगे जहाँ हर
tरफ मुहब्बतें ही मुहब्बतें नज़र आएगी।
इस्लाम में ईसार की रोशन मिसाल

इस्लाम अपनी तारीख में ईसार व मुहब्बत के ऐसे-ऐसे चाक़बात वेश कर सकता है कि जिनके बारे में आज की दुनिया तत्काल भी नहीं कर सकती। क्या जैसे यरसूक का चाक़बात याद नहीं है कि एक साहब शहीद होने वाले हैं, तड़प रहे हैंे (العَطِش العُطٰش) प्यास! प्यास! पुकार रहे हैं। उनका चचाजाद भाई पानी लेकर जाता है।

दूसरी तरफ़ से आवाज़ आती है तो वह अपने होट को बंद कर लेता है और इशारा करता है कि मेरे बजाए मेरे भाई को पानी दिया जाए। उधर जाते हैं तो तीसरी तरफ़ से आवाज़ आती है तो वह भी होट बंद कर लेते हैं और तीसरी तरफ़ भेज देते हैं। जब तीसरी जगह जाते हो तो वह आदमी वफाद पा जाता है। फौरन लौटकर दूसरे के पास आते हैं, वह भी वफाद पा चुके हैं। फिर लौटकर जब पहले के पास आते हैं तो देखा कि वह भी वफाद पा चुके हैं। यूँ अपनी ज़िंदगी के आखिरी लम्हों में भी दूसरों को अपने से आगे करने की तालीम इस्लाम ने दी हैं। पूरी दुनिया अपनी टेकनालॉजी के बाक्जूद ये मिसालें कभी भी पेश नहीं कर सकती। हमें चाहिए कि हम ज़िंदगी को इस्लाम की तालीम तक मुनाफिक़ गुजारे ताकि कुफ़ की दुनिया के सामने इस्लाम की हक्किक़तें चुनौत सकें, इस्लाम की हक्कानियत उनके सामने आ जाए और वे सारे के सारे इस्लाम के दामन में दाख़िल हो जाएं। आज मुसलमानों की बेअमली की वजह से कुफ़फ़्राठ इस्लाम में दाख़िल होने से घबराते हैं।
एक मुसलमान सफ़ीर की बदहाली

फ़्लियर ने एक बात वाशिंगटन में बयान किया जिसमें वहाँ के आला तालीम वाले लोग आए हुए थे। वहाँ पर बयान के बाद एक साहब फ़्लियर के पास आए। वह एक मुसलमान मूल्य के एंबेसडर रहे थे, गले मिले और रोना शुरू कर दिया। फ़्लियर ने उनको तसल्ली दी। काफी देर के बाद तबियत ठीक हुई तो कहने लगे कि बात यह है कि मे स मुसलमान मूल्य का एंबेसडर बनकर वहाँ रहा लेकिन मेरी जिंदगी इस्लाम से इतनी दूर थी कि मेरे पर का माहौल अच्छा न था। मेरे दो बेटे हैं और उन दोनों ने गैर-穆स्लिम लड़कियों से शादी कर ली और एक मेरी बेटी ने भी एक गैर-μस्लिम लड़के से शादी कर ली।

अंग्रेज़ लड़कियों से शादी

ऐसा भी हुआ कि लोग यहाँ से गए तो मुहम्मद था मगर वहाँ जाकर अपने आपको महमद कहतवाना शुरू कर दिया। ऐसा भी हुआ कि यहाँ से गए बच्चों के नाम मुहम्मद और अहमद रखे हुए थे और वहाँ जाकर अंग्रेज़ लड़कियों से शादी कर ली और उनसे पैदा होने वाले बच्चों में से एक का नाम बिल है, दूसरे का नाम बॉब है और तीसरे का नाम बुश है।

मस्जिद के मीनार या रॉकेट लांचर

एक साहब लाहौर के रहने वाले थे। वह अमेरिका गए। वहाँ से लॉट्कर कई सालों के बाद वापस आए। उनके बच्चे वहाँ पले बढ़े। वह अपने बच्चों को लाहौर में गाड़ी में ले जा रहे थे। जब
दिनों तक आली हिजूरी रहौ के मज़ार के सामने से गुज़रने लगे तो वहाँ उनको मस्जिद के बड़े-बड़े सूर्य नज़र आए। वे बच्चे इस्लाम से हतने अंजान थे कि उन मीनारों को देखकर कहने लगे:

Dad, why these Rocket Lonchers have been fitted right in the center of the city?

अभ्या जान! शहर के बिल्कुल बीच में यह रॉकेट लांचर क्यों फिट कर दिए गए है?

यह वहाँ के मुसलमानों की ओलांड़ों का मामला था।

नमाज़ियों के लिए परेशानी

सनू 1960 ई 0 की दहाई में मुसलमानों के लिए अपनी पहचान बाकी रखना बहुत मुश्किल काम था यहाँ तक कि एक दबाव में इकड़े होते तो वहाँ पर शराब आम पी जाती थी और अगर किसी ने नमाज़ पढ़ना होती तो उसमें हिम्मत नहीं होती थी। तिहाड़ा चुपके से टॉयलेट जाने के बाहर वह उजुरू करता और घर के बिटर के अंदर जाकर छिपकर नमाज़ पढ़ता। फिर अपनी टाई और कपड़ों को ठीक करके बाहर निकलता कि लोग यह न कहें कि तुम यहाँ आकर भी ऐसे काम करते हो। यह मुसलमानों की दावतों का हाल था।

अमेरिका में इस्लामिक सेंटर का क्रयाम

फिर एक रद्दे अमल हुआ। लोगों ने चर्च किया और लेना शुरू कर दिये, अपनी ज़मीनें खरीदना शुरू कर दीं, इस्लामिक सेंटर बनाना शुरू कर दिये। तिहाड़ा सनू 1980 ई 0 की दहाई में तेजी
से इस्लामिक सेंटर बनना शुरू हो गया। उन्में सड़े स्कूल लगने लगे। इतवार के दिन दूरआन पाक की तालीम दी जाने लग गई। इसलिए इस्लामी सरगर्मियाँ शुरू हो गयी।

मुसलमान नौजवानों की सरगर्मियाँ

अब सन 1990 ईं की दहाई में वहाँ पर काफ़ी तब्दीली नज़र आ रही है। बाज़ शहरों में मुसलमानों ने अपने कालेज बना लिए बल्कि शिकायों शहर के अंदर मुसलमानों ने दो युनिवर्सिटियाँ बनातीं। उसका बहुत फायदा हुआ। फ़कीर ने एक बार क्षेत्र की नमाज शिकायों युनिवर्सिटियाँ में पढ़ी। वहाँ के तलबा को ‘सुनने नबवी और जबीद साईंस’ के उन्मलन पर विज्ञापन किया। अल्लाह का शुक्र है कि वहाँ पर कई तलबा बैठते हुए उनके बाद उनकी ज़िम्मियाँ में बहुत ज्यादा तब्दीली आई। उनकी हैरानी में आलने वाली कुर्बानियाँ देखीं। फ़कीर एक पहिज में गया। वहाँ जोहर की नमाज तकरीबन 150 नौजवान, बच्चे और बूढ़े नमाजी मौजूद थे। फ़कीर ने एक सहब से पूछा, क्या वह कोई ख़ास मीठा है कि अमरीका के माहील में 150 आदमी मौजूद हैं? कहने लगा, नहीं बल्कि वहाँ पर स्कूल और कालेज मुसलमानों के अपने हैं। हमारे बच्चे मुसलमान उस्तादों के हाथों में तालीम पाते हैं। और वे उनको मुसलमान वनाकर ही तालीम देते हैं। लिहाज़ा उन नौजवानों के चेहरों पर आप नूर देखें और वे पाँच वक़्त के नमाजी नज़र आएंग। लिहाज़ा फ़कीर ने देखा कि छोटे बच्चों के आलम में उन्होंने दांदी की सुनन्त पर अमल किया। कुछ ने अमाना बांधा हुआ था। उनमें से कुछ ने मिनकर यूथ समूह
बनाए हुआ है। वे आपस में कुरान का दर्श देते हैं। उन नौजवानों
की सरगमियों को देखकर दिल बाग-बाग हो गया। अल्लाहुमुबलिलाह
जब वे नौजवान बड़े होंगे तो वहाँ पर अपने बच्चे का सबूत पेश
करेंगे। न सिंफ शिकागो में ही बल्कि जारीया, अटलान्ता में भी
स्कूल बन चुके हैं। वाशिंगटन में भी अब एक इदारे की बुनियाद
रख दी गई है। कैलिफ़ोर्निया में भी एक यूनिवर्सिटी बन गई है।
जिससे आईंडा मुसलमान नस्ल मुसलमान बनकर आसानी से
जिंदगी गुजार सकेंगी।

अल्लाह का शुक्र है कि अब यह नौजवान वहाँ के मकामी
लोगों से इस्लाम के बारे में बात करते हैं। और एक-एक नौजवान
आठ-आठ दस-दस कौनवाओं के मुसलमान होने का जरिया बन
रहा है।

एक अंग्रेज़ी नौजवान का इस्लाम कुबूल करना

फ़कीर को एक नौजवान मिला और कहने लगा, मैं कल अपने
एक दोस्त को लाऊँगा वह कफीर माँ-आप का बेटा है। मैं उससे
कई दिन से इस्लाम के बारे में बात कर रहा था। अब उसने
कलिमा पढ़ना है। आप मुझे बता दीजिए कि आप कब कबत देंगे
लिंग वह आकर आपके हाथ पर मुसलमान हो उसके। फ़कीर की
आँखों से अंसू निकल आए। फ़कीर ने कहा, बच्चा! वह दिन में
आए या रात में, अगर कलिमा पढ़ना चाहता है तो फ़कीर उसके
लिए हर बक्त कुबूली देने के लिए तैयार है। मुझे खुशी हुई कि
वहाँ के बच्चे आज दीन के नुमाइदें बनकर जिंदगी गुजार रहे हैं।
फ़कीर के नज़दीक वहाँ पर मस्जिदें बनाने से ज़्यादा उनको स्कूलों,
कालिजों और युनिवर्सिटियों का कायम करना ज़्यादा ज़रूरी है।
इसलिए कि नमाज़़ तो स्कूल कालिज के किसी भी कमरे में पढ़ी जा सकती है। यह मस्जिद का कभी स्नान नहीं करेंगे। अगर उन्होंने वहाँ के मकानी स्कूलों और कालिजों में जाना है अप जो कुछ मस्जिद में बताएँगे, स्कूल बाले उस पर पानी फेर देंगे।
अल्लाह का शुक की वहाँ के हालात के मुताबिक ज़रूरत पूरी हो गई है।

एक क्रिमती उसूल

एक उसूल याद रखिए कि उस्ताद अरग काफ़ीर होगा तो वह शारिरिद कुरआन पढ़कर भी काफ़ीर बना देगा और अगर उस्ताद मुस्लिम होगा तो वह इज्ज़त पढ़कर भी शारिरिद को मुस्लिम मुनासिर है।

एक नौजवान का इस्लाम कुबूल करना

फ़कीर के एक दोस्त मेडिकल डॉक्टर थे। उनका एक बहुत समस्तदार बेटा था जो बहुत इबादत गुज़ार था। उसे रात साल उम्रे का शौक़ था। माँ को भी उम्रे के लिए ले जाता और उसरे घरवालों को भी। अफ़सर इस्लाम के बारे में पढ़ता रहता था मगर कुछ असरे के बाद वह दहरिया बन गया। उसके चलित जब उसे फ़कीर के पास लेकर आए तो कहने लगे, जी यह लड़का अब बिल्कूल दहरिया है, यह दीन इस्लाम को तो मानता ही नहीं।
फ़कीर ने उसे बिठाया और उससे पूछा, मामला क्या बना?
उसने कहा, मैं आपको सीधी और साफ़ बात बताता हूँ। मेरा
फ़क़ीर ने कहा कि आपके ज़हन में जो सवाल हैं पूछिए।

हमारे पास अंगली नमाज़ तक के लिए तीन घंटे हैं। हमारे दराविन ध्यान करना शुरू कर दी। फिर उसके बाद उसके बारे में सवाल पूछने शुरू कर दिए। अल्लाह का शुक्र है फ़क़ीर उसको जवाब देता रहा। साथ-साथ दुआ भी करता रहा और तकनीकों के लिए भी देता रहा। तीन घंटे बिताकर दिया हुआ था मगर अल्लाह रखना अंतरित ने ऐसी महसूस किया कि ठीक 50 मिनट बाद वह कहने लगा कि मुझे कलिमा पढ़कर दोबारा मुसलमान बना दीजिए।

अल्लाह का बार-बार शुक्र है, कमरे से निकलकर उसने कुछ किया और बाप के सामने खड़ा होकर नमाज़ पढ़ने लगा। उसके बाप की आँखों से जो आँसू रहा है उनकी केफ़ियत को फ़क़ीर कभी भी नहीं भूल सकता। उसको तो गोया नया बेटा मिल गया, उसके पर में नई खुशियाँ मिल गईं। फिर उसके दिल से जो दुआ निकल रही थी उन दुआओं का भला कोई आदमी क्या तस्वीर पेश कर सकता है।

तीन दिलचस्प सवाल

एक बार फ़क़ीर ने एक इस्लामिक सेंटर में लड़को का ज़बानी
इमिहान लेना था। वहाँ के सब तलबा ग्रेजुएट क्लासों के साइंस
बूडेट थे। फूकीर हर तलिब इल्म से सवालात पूछ रहा था। एक
तलिब इल्म के साथ उसका छोटा भाई भी आया हुआ था।
उसकी उम्र आठ-नौ साल थी। जब वह बच्चा फूकीर के सामने
आकर बैठा तो फूकीर ने दिल में सोचा कि इससे क्या सवाल पूछे
जाएं?

एक मेज़ करीब ही पड़ी हुई थी, फूकीर ने कहा,

Ok, please tell me, who made this table?

आप मुझे यह बताएं कि यह मेज़ किसने बनाई है? बच्चा
कहने लगा,

Sir, Allah gave man brain and man used that brain
and he made that table.

कि अल्लाह तआला ने इस्मान को दिमाग़ दिया, इस्मान ने
दिमाग़ को इस्तेमाल किया और उसने यह मेज़ बना दिया। जब
उसने दलील के साथ जवाब दिया तो फूकीर भी थोड़ा सा संभल
गया। उससे दूसरा सवाल पूछ,

You tell me why do you read Quran do you feel it
is maditory or it is intresting?

यानी आप कुरआन क्यों पढ़ते हैं, क्या आप समझते हैं कि
यह जरूरी है या यह बड़ा दिलचस्प है?

फूकीर अंडाज़ा लगाना चाहता था कि यह नारे बांधे का
कुरआन पढ़ता है या अपने शौक से पढ़ता है। जब फूकीर ने
उससे यह पूछा तो कहने लगा,
Sir, I feel it is both, it is manditory as well as it is very intresting.

उसने कहा कि मैं समझता हूँ कि ये दोनों चीजें हैं। यह ज़ुल्ली भी है और दिलचस्प भी बहुत ज्यादा है। फ़क़ीर तो उम्मीद नहीं करता था कि वह इतना अच्छा जवाब देगा।

अब फ़क़ीर ने तीसरा सवाल पूछा,

Ok, you tell me, what do you want to be in your life?

कि तुम अपनी ज़िंदगी में क्या बनना चाहते हो? उसने कहा,

Sir, I want to be th President of America.

कि मैं अमेरिका का सदर बनना चाहता हूँ।

जब उसने यह कहा तो फ़क़ीर ने अचानक उससे कहा, (Why?) कि तुम अमेरिका के सदर क्यों बनना चाहते हो? उसने कहा,

Sir, I will be th first Muslim President of America.

मैं अमेरिका का पहला मुसलमान सदर बनूँगा, सुखानअल्लाह।

फ़क़ीर उसके इस जवाब से बहुत ज्यादा खुश हुआ और हैरान हुआ कि अगर आज इन मुसलमान बच्चों में अल्लाह ताआला ने यह ज़ब्ज़ा पैदा कर दिया तो अजब नहीं कि एक ऐसा बक़ृत भी आ जाए कि जब दुनिया की सुपर पावर की कुर्सी पर एक मुसलमान बैठकर इस्लाम के क़ानून लागू कर रहा हो।

मेरे दोस्तो! वहाँ के नौजवान उम्मीद की एक किरण हैं। वहाँ
पर मुसलमान का संबलना और अपनी तहजीब व तमददुन को महफूज करके उसके मुताबिक जङिदगी गुजारना अच्छी उम्मीद है। हो सकता है कि ये लोग कल वहाँ के मकामी लोगों के लिए दीन की दावत का जरिया बन जाएं और अल्लाह रब्बुलइज्जत वहाँ के मकामी लोगों को दीन में दाखिल होने की तौफीक अता फरमा दें।

जेलों में इस्लाम की तबलीग़

अब वहाँ एक और तब्दीली आ रही है। वह यह कि हकूमत ने अब जेलों के अंदर मुसलमान उलमा के लिए जाकर तबलीग करने की इजाज़त दे दी है। पहले इजाज़त नहीं थी। अब इजाज़त दे दी गई है। इसकी वजह यह है कि वहाँ के मुजरिम लोगों की इस्लाम हकूमत खुद तो नहीं कर सकती। इसलिए हकूमत ने सोचा कि ये लोग अगर मुसलमान बन जाएं तो उनकी जङिदगी में तब्दीली आ जाएगी क्योंकि मुसलमान शरीफ शहरी होते हैं। लिहाज़ा हकूमत ने अपने फायदे के लिए वहाँ पर जेलों में इतिहार के दिन मुसलमान स्कालरों के लिए जाने और तबलीग़ दीन करने की इजाज़त दे दी है। इस तरह सैकड़ों कैदी मुसलमान हो रहे हैं।

इस्लाम की तासीर

अमेरिका में मेरे एक दोस्त आलिम हैं। हम उनके घर खाना खा रहे थे कि उन्होंने कहा, मैं यहाँ की जेलों में इतवार के दिन इस्लाम की तबलीग़ करने के लिए जाता हूं। फ़ूकीर ने उससे पूछा कि वहाँ के हालात सुनाए। कहने लगे कि जो भी मुसलमान होता है उसकी जङिदगी में बड़ी तब्दीली आती है।
वह कहने लगे, इन दिनों एक मुलिजिम जेल में आया हुआ है।
उसे एक साल की जेल मिली थी जिसमें से वह छः महीने गुज़ार
चुका है और छः महीने और गुज़ारने हैं। वह मुसलमान हुआ। मैंने
उसे नमाज़ सिखाई। एक दिन हम दोनों बैठे हुए थे कि मुझे कहने
लगा, मैं आप पर बहुत ज्यादा भरोसा करता हूँ। मैं आपको
बताउँगा कि इस्लाम लाने के बाद मेरी ज़िंदगी बहुत ज्यादा तब्दील
हो गई है। मैंने कहा वह तो सबकी होती है। कहने लगा, लेकिन
जितनी मेरी ज़िंदगी तब्दील हुई है उतनी और लोगों की शायद न
हुई हो। मैंने कहा, वह कैसे? वह कहने लगा, इस्लाम लाने से
पहले मैं बिन्दुल हैवान था और अब मैं इस्लाम बनकर जिंदगी
गुज़ार रहा हूँ। मैंने कहा, भई! तपस्वी से बताओ, क्या इशारों में:
बात कर रहे हो। कहने लगा, अभी तो मैं एक छोटे से जुर्म की
कड़ह से जेल में आया हूँ। एक साल की जेल मिली है, छः महीने
गुज़ार चुके हैं और छः महीने के बाद वापस चला जाऊँगा। लेकिन
आपको दिल की बात बताता हूँ कि इस्लाम लाने से पहले मुझे
लोगों को कल्ल करने में मज़ा आता था। जब किसी को तड़पते
और उसके जिस्म से खून के फूवारे छूटते देखता तो मैं मज़े लेता
था। मैं अब तक कई आदमियों को अपने हाथों से कल्ल कर
चुका हूँ गोया यह मेरा काम था। इस्लाम कबूल करने के बाद मेरा
दिल इतना बदला है कि अब अगर मैं पैदल चल रहा हूँ और मेरे
पाँच के नीचे अगर चींटीं भी आकर मर जाए तो मुझे उसका भी
अफसोस होता है।

अल्लाह का शुक्र है, अल्लाह का शुक्र है यूँ ज़िंदगियाँ बदल
रही हैं। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें उस इलाके में इस्लाम का झंडा
बुलंद होता हुआ देखने की तौफीक नसीव फरमाए।

स्वीडिश के नजूदीक मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मक़ाम

आज मगरिबी मुल्कों के लोग इस्लाम को तो पसंद करते हैं लेकिन जब हम मुसलमानों के दोपहर को देखते हैं तो वे कहते हैं कि हम ऐसे मुसलमान बनना नहीं चाहते। गोया आज का कमजोर मुसलमान उनके रास्ते की रक्षा कराने वाला है।

फॅक्ट्र सन् 1992 ईं में स्वीडन में था। उस दिन यहाँ की हकूमत ने एक सर्वेक्षण करवाया। उन्होंने दस हस्तियों के नाम लिखे। उस लिस्ट में डराविन, न्युटन, आइंस्टाइन, ईसा अलीहिसल्लाम और मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नामों के अलावा भी नाम थे। उन्होंने कहा कि हम सर्वेक्षण करना चाहते हैं कि स्वीडिश लोगों के नजूदीक सबसे अच्छी और महबूब हस्ती कौन सी है। हमारे सामने अखबारों में खबरें आती थीं। फॅक्ट्र खुद वे खबरें पढ़ता था। जिस दिन उन्होंने कंप्यूटर रिजल्ट निकाले और स्वीडिश लोगों की राय बताई। तो फॅक्ट्र अखबार में यह खबर देखकर हैरान हुआ कि 67% लोगों की राय दी कि हम मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सबसे ज्यादा पसंद करते हैं।

एक सच्चे आशिक का बाक़ी़ा

स्वीडन की बात है कि वहाँ नंगेश्वर और बेहयाई के माहौल में अल्लाह तख़ता ने एक आदमी को मुसलमान होने की तौफीक अता फरमाई। उसने हर काम सुन्नत के मुताबिक करने का इरादा
कर रखा था। जब भी उसे कोई नया मसूदता पेश आता तो वह उल्लमा किराम से राखा करके उस काम को सुन्नत का तरीका पूछता है। वहाँ उस महोल में वह खुददर का लिबास पहनता और शलवार के पाएंचे तख्नों से ऊपर रखता है।

एक दफा उसने कोई एक उदयीब की। उसने उस तकरीब में फकीर को भी दाबत दी हुई थी। उन दिनों वहाँ पाकिस्तान के एक और आलम भी रहते थे। उसने उनको भी दाबत दी हुई थी। उस आलम सहब ने उससे कहा, भाई। वह शलवार थोड़ी सी नींवे तक भी तो बांधी जा सकती है। जैसा ही इस आशिक सादिक ने उसके यह अत्याचार सुना तो उस वक्त जो उसको गुस्सा आया उसकी कैफियत का में ही जानता हूँ। उन्होंने गुस्से के तहजो में कहा:

You are Muslim by chance, but I am Muslim by choice.

कि आप तो इतिफ़ाक़ी तौर पर मुसलमान के घर में पैदा हुए थे मगर मैंने चुनकर इस्लाम कुबूल किया है। गोया जो इस्लाम छुड़ अपनी मर्जी से मुसलमान होता है उसके अंदर दीनी गैर और मान बहुत ज्वादा होता है।

एक स्वोंदिश नौजवान का इस्लाम कुबूल करना

फकीर एक बार लाहोर में था। वहाँ से मुझे बैठन मुक्क सफर पर जाना था। सफर पर रवाना होने से एक दिन पहले किसी आदमी ने टेलीफोन पर कहा कि जी में आपसे मिलना वाहता है। फकीर ने कहा कि मुझे कल बैठन मुक्क सफर पर जाना है।
इसलिए तैयारी करने में भरभरियत है। उसने कहा था की बैठना मुक्त से आपसे मिलने आया हूँ। जब उसने यह कहा तो फूकीर ने कहा है, ठीक है तस्रीफ लाए।

ढोड़ी देर के बाद वह एक टेस्सी में आया। उसके गाड़ी से उतरने और फिर चलकर आने, मिलने, बैठने और बातचीत करने के अंदाज़े ने फूकीर को हैरत में डाल दिया। वह इतना सूबसूरत और सुश अख़लाक़ इस्लाम था कि उस जैसा इस्लाम फूकीर ने पहले नहीं देखा था। जब तारसफ़ हुआ तो बताया कि मैं स्वीडन का रहने वाला हूँ। मैंने कुछ अर्थ सहले तो चीज़ा चीज़ा भी कोई मज़बूत होना चाहिए। लिहाज़ा मैंने दुनिया के 120 मज़हबों के बाये में पढ़ा। एक 120 मज़हबों के पढ़ाने के बाद मैंने फैसला किया कि इस्लाम ही दुनिया का सच्चा मज़हब है। लिहाज़ा मैंने इसे क़ुबूल कर लिया।

उसके बाद मेरे दिल में तमन्ना पैदा हुई कि पूरी दुनिया के बड़े-बड़े स्कॉलरों से मिलूँ ताकि पूरी रहमनुमाई हासिल कर सकूँ। लिहाज़ा मैं आपसे भी मुलाक़ात का शर्म हासिल करने के लिए हाज़र हुआ हूँ।

आस्ट्रेलिया में एक लड़की से बातचीत

फूकीर एक बार आस्ट्रेलिया (सिडनी) में था। एक ईसाई लड़की ने वक्त मांगा कि मैं आपसे इस्लाम के बारे में कुछ सवाल बूझना चाहती हूँ। फूकीर ने उसे एक घंटा दिया। वह पहले एक घंटे मुझसे जेसिस क्रिस्ट (हज़रत ईसा अल्लाहुस्सलाम) के उदाहरण जानने और उसके वापस आने के बारे में सवाल पूछती रही।
फिर उसने कहा कि दिन के बारे में पूछा। फिर जन्म और
dोस्ती के बारे में पूछा। यहां तक कि उसने इस्लाम के बारे में
बहुत ज्यादा तपस्सी लिए पूछी। जब उसको तसली हो गई तो मैंने
pूछा कि अब बताएं कोई सवाल पूछना है? कहने लगी अब मेरे
dिल में इस्लाम के बारे में और कोई सवाल नहीं है। मैं समझती
hूँ कि इस्लाम बहुत ही ज्यादा खूबसूरत महज है। जब उसने
खूबसूरत का लफज़ इस्तेमाल किया तो फ़कीर समझ शयद
अब यह इस्लाम खूबूल कर लेगी। तिहाज़ा फ़कीर ने उससे पूछा
kि क्या आप इस्लाम खूबूल करने के बारे में सोचते है? वह कहने
लगी कि आप मुझे बताएं कि ये सारे का सारा इस्लाम कुरआन में
मौजूद है? फ़कीर ने कहा है, वहीं तो बुनियादी जड़ है। कहने
लगी, kya आपके पास कुरआन है? फ़कीर ने कहा, हाँ, मेरे पास
कुरआन है। जब फ़कीर ने कुरआन मजीद दिखाया तो वह कहने
लगी कि आप ऐसा करें कि इसकी कई कापियाँ मुसलमान मुल्कों
में भिजवाएं और उन्हें कहें कि तुम्हें इस कुरआन के मुताबिक
अपनी ज़िंदगियों को तब्दील करने की ज़रूरत है।

अब बताएं कि मैं इसको क्या जवाब देता? मेरे दोस्तों! अगर
hum पक्के-सच्चे मुसलमान बन जाएं और इस्लाम को उन लोगों के
सामने पेश करें तो यह हो सकता है कि वे इस्लाम को कुबूल कर
tे और पूरी दुनिया में अल्लाह रब्बुलज़ज़त हमें इस्लाम का झंडा
बुलाया करने की तौफ़ीक नसीब फर्मा दे। आइए इसको ज़िंदगी
का मक़सद बना लीजिए।

हम इसकी इच्छिता अपनी ज़ात से करें। आज दिल में अहद
cर कर लीजिए कि हम आज के बाद अपने जिस्म पर इस्लाम का
कानून लागू करेंगे। अगर हमने अपने आपको बदलना शुरू कर दिया तो अल्लाह रब्बुलइज्ज़त हमारे उन आमाल की वरंदरत से डूंगिया के दूसरे इस्माईं को भी बदल देंगे।

इस्लाम से हर पस्त को वाला कर दे।

वहाँ ही इसके मुहम्मद से उजाला कर दे।

(वाह! दुनया के आदि अल्लाहेर रबबंलेरुल्लाहु)

* * *
तहज्जुद की पाबंदी

हमद اللہ وکفی وسلام علی عبادہ اللہ الذين اصطفائی اما بعد
فماعوذ باللہ من الشیطان الرجیم ۰ بسم اللہ الرحمن الرحیم ۰
والذين جاهدوا لیباً انشهد بهم سبناً واعان اللہ لمع المحسنين ۰ سبحن ریک
 رب العزة عما يصفون وسلام علی المرسلین و۰ و۰ و۰

इसानियत का मुकाम

इसान दुनिया में अल्लाह रब्बुलहाम्रज्जुल का नायब, उसका
ख्तीफा और उसकी सिफार का फज़हर है। यह अपने मुकाम और
मंडल तक पहुँचने के लिए मेहनत करें तो रास्ता हमवार कर दिया
जाता है और अगर मेहनत न करे तो यह अपने मुकाम से गिर
जाता है—

जिंदगी आमद बराए बंदगी
जिंदगी बे बंदगी शर्मदगी

बेअमली की बुनियादी बजह

अजीब बात तो यह है कि हम ज्ञानवतर नेकी की बातें अपने
बड़ों से सुनते आते हैं परंतु हम ध्यान नहीं देते, अमल के ज़िबे से
नहीं सुनते और मामला ऐसा बन जाता है कि जैसे कि हमने सुना
ही नहीं होता। हम सुनते हुए भी नहीं सुनते।
अगर अल्लाह तभी उनके साथ अपना इरादा फूसा लेता तो उन्हें सुनने की तोफ़ीक अटा फूसा देता।

अब्बाल तो सुनते ही नहीं और अगर सुनते भी हैं तो समझते नहीं।

फलस हैं जो सुनते नहीं और जो सुन लेते हैं वे बात को समझते नहीं। नतीजा क्या होता है कि अमल के लिए खड़े नहीं होते。

भगवं दिल न बदला

हर साल तकरीबन पच्चीस लाख आदमी हज़ पर जाते हैं। अगर वही बदलकर वापस आ जाएं तो इस दुनिया के अंदर इक्काब आ जाए। वे जाते हुए क्या कह रहे होते हैं? वे ऊपर चढ़ते हैं और नीचे उतरते हैं तो लब्बैक पढ़ रहे होते हैं। लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक, वे बैठते उठते लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक का नारा मारते हैं, वे सोते-जागते लब्बैक, लब्बैक पढ़ रहे होते हैं। वे अल्लाह रब्बुलक़ुल्लाह के पर का दीदार करने जा रहे होते हैं और वापसी पर वे अपने गुनाहों को बढ़ावा देकर आ रहे होते हैं।

जिनको इलाज़ ईनाम दिया जाता है कि जब वे हज से वापस लौटें तो चालीस दिन तक उनकी अपने घरों में भी युवाएं कुबूल होती हैं। जिनके बारे में नबी अकरम सल्ल्लाल्हु अल्ल्हि वसल्लम ने फरमाया, ऐ अल्लाह! तू हाज़ी की भी मुग़फ़िरत फूसा और
जिसकी मग्फितत की हाजी दुआ करे उसकी भी मग्फित फर्मा।
अब यह हाजी खुद बदलकर नहीं आया। कितने अफसोस और
गुम की बत है कि अल्लाह रब्बुलइज्ज़त के घर का दीदार करके
आए मगर दिल न बदला। जबकि हमारे पहले के बुजुर्ग हज के
तकर पर जाया करते थे और एक सफर में उनसे हजारों आदमी
इस्लाम क्षुब्लू कर लिया करते थे। आज हम हज पर जाकर
वापस आते हैं मगर खुद सही मायने में मुसलमान बनकर वापस
नहीं आते।

हमारी बदहाली

हमारी बदहाली और वे सर व सामानी का आलम यह है कि
इबादतों से लगाव बिल्कुल खत्म होता जा रहा है। कुछ मिनट
मुसलमै पर बैठना पड़ जाए तो एक मुसीबत नजर आती है। यहाँ
तक कि अगर किसी ऐसी जगह पर पहुंच जाएं जहाँ लोग कुरआन
पाक पढ़ रहे, हों तो कई कहते हैं कि कुरआन के ही पढ़ना पड़े।
और अगर एक पारा पढ़ भी ले और कोई दूसरा कह दे कि जी
एक पारा और पढ़ दें तो चेहरे पर ऐसे असरात होते हैं कि जैसे
पता नहीं कौनसी मुसीबत में पान्स गए हैं। इबादतों का शौक खत्म
होता जा रहा है। दुनिया के मज़ा के पीछे दौड़े बने फिरते हैं और
रहने मज़ा ने से नाबाक्किफ़ और ना आशाना होते चले जा रहे हैं।

पहले जुमाने और मौजूदा जुमाने का मुकाबला

एक वक़्त था कि जब तहज़ुद के छूटने पर लोग रोया करते
थे। फिर एक वक़्त ऐसा आया कि तकबीर ऊँचे के छूटने पर
रोया करते थे। लेकिन आज वह वक्त आ चुका है कि फर्ज़ की जमात भी हासिल नहीं। यहाँ तक कि नमाज़ भी अगर कुल्ह हो गई तो कोई इसाम उस पर गम करने बाला नज़र नहीं आता। आज का ज़ुमाना फिलने का ज़ुमाना है। फिलने सवारी पर सवार होकर आ रहे हैं और हमारी हालत यह है कि हम पहले से कमजोर होते चले जा रहे हैं।

तहज्जुद से महरूमी की वजह

कुछ लोग कहते हैं कि मसलफ़ियत और थकान की वजह से हम से तहज्जुद में उठा नहीं जाता। ठीक है, यह उनकी सोच है मगर किसी की सोच यह भी तो हो सकती है कि अल्लाह तात्कालिक तेरा चेहरा देखना पसंद नहीं करते।

तहज्जुद के वक्रता फरिश्तों

की तीन जमातों

जब रात का आंधिरा पहर होता है तो अल्लाह तात्कालिक फरिश्तों

की तीन जमातें बना देते हैं।

1. थपकियाँ देकर सुलाने वाले फरिश्ते

एक जमात को हुक्म देते हैं कि देखो, यह मेरे करीबी लोगों

के जागने का वक्त है, यह मेरे चाहने वालों के लिए मुझसे राज व

नियाज़ करने का वक्त है। तुम दुनिया में जाओ। फ़्लां-फ़्लां मेरे

नाफरमान बदे हैं, उन्होंने मुझे नाराज़ किया हुआ है, तुम उनके
मासन जाकर खड़े हो जाओ और धर्म किया दे दे कर उनको मुला दो तकि वे मोग रंगे और उसी आंख न खुले। मैं याहना ही नहीं कि वे इस मौके पर मेरे सामने खड़े हों। फिरते आते हैं और उन्हें को धर्म किया देकर मीठी मीठ मुला देते हैं।

लिहाजा आप देखें कि आगर अक्सर लोग इशाक के बाद गयी नाग शूर कर देते हैं। गयी मात्र मात्र जब तशम्मुद और कुर्नियत का बक्त शूर होता है तो मीए पढ़े होते हैं बल्कि मीए पढ़े हुए होते हैं। शादी ब्याह पर इसकी अक्सर मिलते आप देखें हैं कि इशाक के बाद खूब गहरा गहरी होती हैं कहते हैं। कि जी हम मारी रात जागते रहने लेकिन रात के आठवीं पहर में उनकी लोगों को देखें, सब मीए, मीए। पढ़े होते हैं। क्यों? इसलिए कि यह कुछ लोगों के उठने का बक्त है। अल्लाह तबबला ऐसे बवाल में उनको जागने नहीं देते। हम लोगे हैं कि हम नहीं जागते लेकिन हकीकत यह होती है कि ऊपर से यात्री ही नहीं हानी। बहाना यकायट और कारों का बनाते हैं।

अल्लाह तबबला ऐसे बक्त में उनका जागना भी पसंद नहीं करते क्योंकि वह ऐसी बिकान का बक्त होता है कि हमारे पहाड़ ने लिखा है कि जो औरतें बिकान के आठवीं पहर में उठकर अपने पर में जाहू देती है या लस्सी बनाती है तो जैसे कि रम्पूर है हमारे इलाकों का, उस कोई काम करने वाली औरत भी अल्लाह की रहमत से पहराम नहीं रहती। जब रहमत का यह हाल है ना ऐसे बक्त में जो भी जागे वह हिस्सा पाएगा। इसीलिए जागें ही नहीं दें। हम होता है कि सुना दो तकि फ़हरस्त में नाम ही न आए। हम उनकी कुछ नहीं देना चाहते।
2. पर मारकर जगाने वाले फरिश्ते

फिर फरिश्तों की एक दूसरी जमात को हुक्म होता है कि जाओ फला-फला बंदे मेरे पसीदा बने हैं, जाओ और उनके जगाओ ताकि वे मेरे सामने खड़े होकर इबादत करें, मुझ से राज़ व मियाज की बातें करें। वे मुझ से मांगे और में उनकी झोलियाँ भर दुंगा। लिहाज़ा कई लोगों को देखते हैं कि बावजूद इसके फि थके हुए होते हैं, तहजुद के वक़्त में ऐसे अचानक आँख खुल जाती है कि जैसे किसी ने उठा दिया हो। उनके अंदर यही फ़िट हो जाती है। जैसे कि आज हम में से हर एक के पेट की घड़ी होती है। कहते हैं कि यह पेट की घड़ी हमेशा ठीक टाईम पर अलाम बजा देती है और हर बदे की पता चल जाता है कि भूख लगी हुई है। तो जैसे हमारे पेट की घड़ी ठीक काम करती है अल्लाह वालों के दिल की घड़ी ठीक काम कर रही होती है। वे तहजुद के वक़्त अलाम बजा देती है। कितना ही सबे हुए क्यों न हों आँख़ परह में उनकी आँख खुल जाती है और वे अपने रब के आगे खड़े होकर अपने रब को प्रणाम करते हैं।

तीन घंटों की नींद तीन मिनट में

हमारे हज़रत मुशिद्दी अल्लम रहें फरमाने लगे कि एक दफ़ा में बहुत ही थका हुआ था। कई दिन से लगातार काम कर रहा था। मगरिब की नमाज़ का वक़्त कृिरि था, थकावट इतनी ग़ालिब थी कि में आज़िज़ आ गया और मैंने अपने दोस्तों से कहा कि बस अब सब लोग यहाँ से चले जाएं। वे कहने लगे हज़रत! नमाज़ में सिर्फ़ दस पंढ्र मिनट वाकी हैं। आप बाद में सो जाना। मैंने कहा
कि वस आप जाएं। मैंने उन सबको कमरे से बाहर निकाल दिया। फ़रमाते हैं कि मैंने कुंडी लगा दी और आकर बिस्तर पर सो गया। मैं सोता रहा, सोता रहा यहाँ तक कि मेरी नींद पूरी हो गई। मैंने झाड़ में देखा कि कोई कहने वाला कह रहा है, ‘हम ही सुलाते हैं और हम ही जगाते हैं। इस बात को सुनकर मेरी आँखें खुल गई। फ़रमाते हैं कि मेरी तबियत ताज़ा दम थी। मैंने कहा अच्छा उठकर बुजू करता हूँ और नमाज पढ़ता हूँ। जब मैं उठा और कुंडी खोली तो देखा कि जिन लोगों को बाहर निकाला था वह दरवाज़े पर ही खड़े थे। दरवाज़ा खोला, बाहर निकला तो वे कहने लगे हजरत! आपने सोने का इरादा छोड़ दिया? मैंने कहा नहीं, मेरी तो नींद पूरी हो गई। इस पर उन्होंने घड़ी देखी और कहने लगे कि अभी हमें कमरे से बाहर निकले हुए सिंधी तीन मिनट तक गुप्षे हैं। अल्लाह तअला अपने प्यारों को तीन मिनट में इतना सक्रून दे देता है कि जैसे उनको तीन घटे की नींद नसीब हो गई और हम सारी रात भी सोकर ताज़ा दम नहीं होते।

मुक़ूर्खिओं की करवट बदलने वाले फ़रिश्ते

फ़रिश्तों की एक तीसरी जमात होती है। अल्लाह तअला उनसे फ़रमाते हैं कि जाओ जो लोग मेरे करीबी लोगों में से हैं उनकी आकर करवट बदल दो। वे चाहेंगे तो उठकर नमाज़ पढ़ेंगे, तिलावत करेंगे और युद्धयात मांगेंगे और चाहेंगे तो लेते रहेंगे। मैं जिस तरह उनकी इबादत से राजी हूँ उसी तरह उनके सो जाने पर भी राजी हूँ। हेतु इबादत तात्कालिक इबादत शुरू कर लिया जाता है।
एक मिसाल से वज़हत

dेखें आप एक लकड़ी का काम करने वाले को घर लाएं और वह आकर आर्य से अपना काम शुरू करे और कुछ देर के बाद उसके औज़ार हुए हो जाएं तो वह क्या करता है? वह जुरा बैठकर तेज़ करता है। अब जब वह अपने औज़ारों को तेज़ कर रहा होता है तो कोई जुरा बैठकर उनको तेज़ करता है। अब जब वह अपने औज़ारों को तेज़ कर रहा होता है तो कोई आदमी उसका बक़्त नहीं कादता। कोई आदमी भी यह नहीं कहेगा कि आपने आघा घटा आरी तेज़ करने में लगाया हुम तो आपका टाइम काटेंगे। वह कहेगा कि भई! आरी को तेज़ करना इस काम में शामिल है। इसी तरह ये अल्लाह बाले होते हैं जो हर बक़्त अल्लाह की याद में और उसके दीन के काम करने में लगे होते हैं। जब ये सो जाते हैं तो उनका मकसद यह होता है कि बदन को आराम मिल जाए ताकि ताज़ा दम होकर दोबारा काम करें। यह उस वक़्त उस बदन की तरह होते हैं जो लकड़ी काटने के लिए औज़ारों को तेज़ कर रहा होता है। इसलिए उनके सोने पर भी अल्लाह तज़ा दम की तरह से उनको मज़दूरी अता कर दी जाती है कि ये मेरे वे बदन हैं जिनकी सोना भी अब मेरे नज़दीक इबादत का हुक्म इश्किया कर गया है।

नौजवानों की बदहाली

आज़ इबादत का शौक निकलता जा रहा है। लिहाज़ा नौजवाने में से आज मुश्किल से ही कोई नौजवान नज़र आएगा जिसके दिल में यह तड़प हो कि में जागूं और अपने रब को
एक मुग़लता और उसका जवाब

आम लोग तो हैं ही आम लोग इस वक़्त अहले इल्म हज़रत
को भी एक मुग़लता लग रहा है। आपस में बैठकर बातें करते हैं
कि जी हम मदरसों में माहौल में रहने वाले बुद्धि से बड़े गुनाहों
से तो मदरसे के माहौल में रहने की वजह से वैसे ही बच जाते हैं
और कहते हैं कि सारा दिन जो हम पढ़ने-पढ़ते हैं तो फिर रात
की इबादत का सवाब तो पढ़ने पढ़ने से मिल ही जाता है। जी
हाँ, क्या सहाबा किराम सारा दिन अकाउंटिंग करते थे इसीलिए
उनको रात को तहज़ुद पढ़ने की जरूरत पेश आती थी?
मुहम्मद्दिससैन और फ़ूज़ा सारा दिन कारोबार करते थे इसीलिए ईश्वर
के चुजू से फ़ुज़ की नमाज पढ़ने थे? अब नए पढ़ने पढ़ने वाले
तप्पीफ लाए हैं और कहते हैं कि जी पढ़ने पढ़ने में रात की
इबादत का अज़ ही मिल ही जाता है। जी हाँ, कितना हसीन और
खूबसूरत धोका है जो ईश्वर दे रहा है। उठने की तड़प ही नहीं
रही चुनावे तहज़ुद तो क्या गई फ़ुज़ की तक्ज़ीरे ऊला जाती है।
तक्ज़ीरे ऊला तो क्या गई फ़ुज़ की जमात वाली जाती है। कुर
दोस्तों ने खुद अपनी जज्बान से कहा कि कभी-कभी हमारी फ़ज़्ज़ की नमाज़ भी क़ज़ा हो जाती है। अब बताईए जब वे लोग जो दीन का इल्म रखने वाले हैं, अबिधा किराम के वारिसों में शामिल होने की तमन्ना करते हैं। जब इस दौर में उनकी कैफियत यह बन जाए तो फिर हैं सोचिए कि आप लोगों का क्या हाल होगा। इसलिए आजकल मस्जिदों के अंदर फ़ज़्ज़ की नमाज़ की हाजिरी धोख़ी है।

सलतनत के जज्बाल की अलामत

एक बक़्त वह था जब लोग तहज़ुमद में जागते थे और उनके घरों से कुरआन पाक पढ़ने की आवाज़ ऐसे आती थी जैसे शहद की मक़बराह के भनविनाने की आवाज़ें आया करती हैं। एक बक़्त था कि बुद्धदेव के ख़लीफ़ा की माँ आकर उसे कहती है कि बेटा! तुम्हारी सलतनत को जज्बाल आने बाला है। वह पूछते हैं, अपनी जान! आपको कैसे पता चला? उन्होंने कहा पहले माहिले की औरतें तहज़ुमद नमाज़ पढ़ने के लिए सी से भी ज्यादा आती थीं और आज रात सिर्फ सतर और तहज़ुमद की नमाज़ पढ़ने लिए आई हैं और आज वह कैफियत नहीं।

नूर पीर दा वेला

आजकल के जो नेक लोग हैं वह भी फज़्ज़ की नमाज़ः फज़्ज़ स्वतंत्र नींदों के बीच में पढ़ते हैं। सुन्नित तो यह है कि तहज़ुमद नींदों के बीच पढ़े मगर आजकल के नेक लोग भी फज़्ज़ की नमाज़ नींदों के बीच पढ़ते हैं। बस मुश्किल से ऊठे और फज़्ज़ पढ़कर सो गए। वे अवराद और वजाईफ़ जो फज़्ज़ के बाद पढ़े जाते थे उनकी
पाबंदी न रही जबकि हमारे मशाइख ने इस कदर उसकी पाबंदी करवाई है कि सुबह के बज़क़ का नाम ही ‘नूर पीर दा वेला’ पड़ गया। ओ खुदा के बदे! हमारे मशाइख इतना अवराह व वज़ाइफ़ का एहतिमाम करते थे और आज वह बज़क़ सोकर गुज़र जाता है और मामूली अल्लाह के हवाले हो जाते हैं।

नेक लोगों के क़ृत्य का दौर

इसलिए आज ख़ानक़ाहें आमल से ख़ाली होती चली जा रही हैं।

ज़ागरों के तसरफ़ में उक़ाबों के नश्मन

आज वे लोग जिन्होंने लोगों को रातों को जागने वाला बनाया था, लोगों के अंदर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़्त की मुहब्बत भरनी थी और लोगों को दुनिया से काटकर अल्लाह तआला से जोड़ना था, उन्हें अपने अंदर भी सहूलित पसंदी आ गई। दुकानदारी चल रही है, मुरीदीन आते हैं, तोहफ़े तहाएँ चल रहे हैं और मशाअल्लाह लाखों मुरीदीन के रहानी पेशवा हैं। सियासत से मुसलिम या न मिले रहानी पेशवा बने होते हैं। तो जब ख़ानक़ाहें का यह हाल है तो फिर अल्लाह! अल्लाह सीखने वालों का क्या हाल होगा।
इसलिए आज नेक लोगों की क़मी का दौर है। कहीं-कहीं कोई चिराग रिमजिम़त नज़र आता है।

क़ीमियाए अहमर से क़ीमती शहँसाहत

शैतान ने हर तरफ़ अंधेरा फैलाया हुआ है। ख़वाहिशाल नफ़सानी का ग़लवा ऐसा है कि बाहर भी अंधेरे हैं और अंदर भी
अंधेरे हैं। अब ऐसे में अगर कोई ऐसा शेख मिल जाए जो आपको सलूक सिखाने के लिए मेहनत करने वाला हो, इक्लास के साथ सलूक के रास्ते पर चलाने वाला हो तो बकौल हज़रत मुज़दिद अलफ़ेसानी रहो उसकी कीमियाए अहंतर से कम न समझना चाहिए। इसलिए कि जिस दौर में लोग कम हों, फिर उस दौर में जो भी होते हैं अल्लाह रखुलइज़ज़त उनकी कदर व कीमत को बढ़ा दिया करते हैं।

तीन रातों में नबी अकरम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारा त

अल्लाह तःअला बाबू जी अब्दुल्लाह रहो की क़ब्र पर करोड़ों दुआएं क़बुल होती हैं) बुज़ुर्ग थे। ऐसे मुस्तजाबुदद-दावात थे कि रहमतें नाज़िल फ़रमाए। वह बहुत ही मुस्तजाबुदद-दावात (जिनको जिस बदे के लिए दुआ कर देते थे कि अल्लाह तःअला उसे अपने महबूब सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारा नसीब फ़रमा, तीन रातों के अंदर उसकी ख़ुदी सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारा नसीब हो जाती थी। हमने अपनी ज़िंदगी में बहुत बार इसका तजरिया किया है। बहुत से दोस्तों के लिए दुआ करवाई और अल्लाह का शुक्र है कि हर बदे को अल्लाह तःअला ने तीन दिनों में या तीन रातों में नबी अकरम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीदार नसीब फ़रमा दिया।

ज़िक्रेके इलाही के फ़ायदे

हज़रत बाबू जी अब्दुल्लाह रहो फ़रमाया करते थे कि जो
ज़ाकिर शागिल आदमी होता है एक तो उसे मौत के बक़्त प्यास नहीं लगती और दूसरा अल्लाह रख्तुलक़ज़ज़ नबुद अशाब उस बैंड को माफ़ फरमा देते हैं तो वे दो बड़ी नेमतें हैं। अगर अभी मौत पर जाना चाहें और क़ब्र के अंदर आसानी का बक़्त गुज़राना चाहें तो इसके लिए ज़िक्र बिल्कुल तिरयक्क की तरह है। इसलिए कसरत के साथ ज़िक्र करें। ज़िक्र से अल्लाह ताज़ा बैंड के गुनाहों को माफ़ कर देते हैं और उसके अंदर कुछ इसारी पैदा कर देते हैं। जिसकी वजह से वह अपने रब की इबादत किया करता है।

भियाँ-बीवी के बक़्त की तक़सीम

एक वह बक़्त था कि हमारे पिछले बुजुर्ग इबादत में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिशें किया करते थे। भाई-भाई आपस में बढ़ने की कोशिशें कर रहे होते थे, भियाँ-बीवी ने बक़्त बांटे हुए थे। भियाँ सोचता कि में रात के पहले हिस्से में सो जाओ और रात के आदि-शामी हिस्से में घर के अंदर तहज़ुद पढ़ दूंगा। बीवी कहती है कि में रात के अव्यक्त हिस्से में नफ़्रत पढ़ लूं और बाकी हिस्से में सो जाओ। भियाँ-बीवी की ज़िंदगी ऐसी होती थी कि पूरे चौबीस घटे में घर का कोई न कोई आदमी इबादत में लगा होता था। अवक़ात की तकसीम कर रखी होती थी।

बाबुबू ज़िंदगी गुज़रने की तड़प

इसी तरह बाबुबू ज़िंदगी गुज़रने की तमन्ना होती थी। लिहाज़ा लड़े हज़रत मुज़दिद अलफ़सानी रह० की ज़ीलाद में से एक साहब के घर जाने का मौका मिला। उनके बच्चे घर के
ग्राउंड में फुटबॉल खेल रहे थे। नई आबादी थी, मस्जिद करीब नहीं थी। इसीलिए घर में ही जमात से नमाज अदा करना पड़ती थी। जब हमने मगरिब की नमाज के लिए अजान दी और सफ़ेद कुर्सी शुरू की तो हमने देखा कि वे बच्चे जो फुटबॉल खेल रहे थे, छोटे-बड़े सारे ही आए और आकर तफ बांधकर खड़े हो गए। मैंने घरवालों से पूछा कि इन बच्चों ने बुजू नहीं करना? उन्होंने कहा कि बुजू दिया है। इस आजिज़ के सोचा कि शायद उन्होंने सोचा होगा कि मेहमान आया हुआ है नमाज तो पढ़नी ही है इसलिए हम नहीं करते। लेकिन नमाज पढ़ने के बाद घरवाले ने बताया कि हमारे ब्रान्डन में ऊपर से फ़्लाइट यह अंदल संदर्भ आ रहा है कि कोई बच्चा भी जब वार-पाँच साल की उम्र से बड़ा हो जाता है तो हम उसको हर वक़्त बाबुजू रहने की तलकीन करते हैं। हमारे घर में आपकी किसी बात को भी जागते हुए होश की हालत में बेबुजू नहीं देखते। आज के दौर में भी ऐसे लोग हैं कि जिनको बाबुजू जिंदगी गुज़ारने की तहँ और तमन्ना होती है।

(कामा हैविल तौमोन)

फरमाया: तुम जिस हाल में जिंदगी गुज़ारने तुम्हें उसी हाल में जीत आएगी।

बाबुजू जिंदगी गुज़ारने वालों को अल्लाह ताआला बाबुजू मौत अता फरमाएगे।

एक बांदी का इबादत का जौक्क़ा

एक साहब कहते हैं कि मैं एक बांदी खरीदकर लाया। देखने
में वह कमजोर सी थी, बीमार सी लगती थी। सारा दिन उसने घर के काम किए और इशी की नमाज़ के बाद मुझसे पूछते लगी कि कोई और काम भी मेरे जिम्मे है? मैंने कहा जाओ आराम कर लो। उसने कुजूं किया और मुसलमान आने पर आ गई और मुसलमान आने पर आकर नफ़्स पढ़ते लगी। कहने लगे में लो गया। तहज़ुद के बवळत जब मेरी आँख़ खुली तो मैंने देखा कि वह उस बवळत अल्लाह तबाहा से हुआ मांग रही थी। मुनाज़ात कर रही थी और मुनाज़ात में वह कह रही थी कि ऐ अल्लाह! आपको मुझसे मुहब्बत रखने की कःसम! आप मेरी यह बात पूरी फ़रमाए बीजिए।
वह कहते हैं कि जब मैंने यह सुना कि ऐ अल्लाह आपको मुझसे मुहब्बत रखने की कःसम तो मैंने उसको टेका और कहा, ऐ लड़की! यह न कह कि ऐ अल्लाह! आपको जो मुझसे मुहब्बत रखने की कःसम बलिक्य यूं कह कि ऐ अल्लाह! मुझे आपसे मुहब्बत रखने की कःसम। फ़रमाते हैं कि जब उसने यह सुना तो वह नाराज़ होने लगी गई, बिगड़ गई और कहने लगी मेरे मालिक! बात यह है कि अगर अल्लाह रब्बुलहज़ुत को मुझसे मुहब्बत न होती तो यूं वह मुझको मसलने पर न विठाता और आपको सारी रात मीठी नींद न सुलाता। आपको जो मीठी नींद सुला दिया और मुझे मसलने पर विठाकर जगा दिया, मेरे साथ कोई ताल्लुक तो है कि मुझे जगाया हुआ है। सुक्षमअल्लाह! एक वह बवळत वह था कि तहज़ुद के बवळत अपने रब्ब से दूर अपने ताल्लुक के वास्ते दिया करते थे, ऐ अल्लाह! आपको मुझसे मुहब्बत रखने की कःसम, वाकई अल्लाह रब्बुलहज़ुत को उनसे मुहब्बत होती थी और उन लोगों को अल्लाह तबाहा से मुहब्बत होती थी।
रोजाना सत्तर तवाफ करने वाले बुजुर्ग

एक बुजुर्ग के हालात जिंदगी में लिखा है कि सत्तर साल की उम्र थी और सत्तर साल की उम्र में वह रोजाना सत्तर बार बेतुल्लाह का तवाफ किया करते थे। हर तवाफ के सात चक्कर होते हैं और सत्तर तवाफों के 490 चक्कर और हर तवाफ के दो रक्कात वाजिबतवाफ और वाजिबुलग़रज़ अदा करने पड़ते हैं। सत्तर तवाफ हों तो 140 रक्कात नपसँग। अब हम चालीस रक्कात नपसँग ही पढ़ कर देख लें कि हालत क्या बनती है। यह उनके आमाल में से एक अमल था कि 490 चक्कर लगाते और उसके ऊपर 140 रक्कात नपसँग पढ़ते और यह जिंदगी का एक मामूल था। बाकी मामूलात इतने आलावा हुआ करते थे।

हज़रत इमाम शाफूई रह० का शौक्क़े इबादत

इमाम शाफूई रह० फरमाते थे कि में मक्का मुकर्रमा से मदीना तैययबा गया। मुझे जाते हुए सवारी के ऊपर 16 दिन लगे और 16 दिनों में मेरे 16 कुर्�आन पूरे हो गए। उन की क्यों इतना इबादत का शौक होता था? आपको फल खाने का शौक है, जूस पीने का शौक है, आइसक्रीम खाने का शौक होता है। इसी तरह उन हज़रात की इबादत का शौक होता था। आपको अलग-अलग खाने खाकर मजा आता है। उनको मुख्तलिफ़ इबादतें करके मज़ा आता है।

एक अनमोल तमन्ना

एक बुजुर्ग से भोत के करीब पूछा गया, आपकी जिंदगी की
कोई आखिरी तमन्ना है तो बताएं। फरमाने लगे, मेरे दिल में एक ही तमन्ना है कि लम्भी सर्दियों की रात होती जिसे मैं अपने रब के हज़ूर उसे मनाने में गुज़ार देता, सुबहानअल्लाह।

सईद बिन जुबैर रहो को जौक़ इबादत

सईद बिन जुबैर रहो को जब हिज़ाज बिन युसूफ ने क़ल करना था तो पूछा कि तुम्हारी आखिरी तमन्ना क्या है? फरमाने लगे कि दो सक़ृत वफ़ाल पढ़ना चाहता हूँ। लिहाज़ा उन्होंने जल्दी-जल्दी नफ़ाल पढ़ लिए। हिज़ाज ने पूछा कि जल्दी कहे पढ़ लिए? फरमाया जो तो चाहता था कि लम्भा क़याम, रङम कहल मगर दिल में ख़िलाए आया कि दू यह सोचेगा कि मौत के झर की बज़ह से नमाज़ लम्बी कर ली। इसलिए मैंने जल्दी पढ़ लीं। अब ज़रा लोए इधर ज़ललाद उनका सर क़ल करने को तैयार है और उधर उनकी हालत यह है कि जी तो चाहता था कि दो सक़ृत लम्बी पढ़ लेता। इसकी क्या ज़ह थी? उनको अल्लाह तबाला ने नमाज़ के अंदर लूस़ अता फरमा दिया था। उनके लिए रातों का जागना कोई मुश्किल नहीं था।

तहज़ुद की नमाज़ और सौ रूपए

रातों को जागना कोई मुश्किल नहीं होता जब कि आदमी को पता हो कि मुझे इस पर तंख़ावह मिलेगी। एक आदमी जो बाज़ार के अंदर चौकीदारी करता है, पहरा देता है वह सारी रात जागता है। इसलिए कि महीने के बाद तीन हज़ार रूपए तंख़ावह मिलेगी। अब उस बदे को हर रात जागने पर तौ रूपए मिलने की उम्मीद
होती है और वह आँख भी नहीं झपकता। बैठता भी नहीं, चलता रहता है और पहरा देता रहता है। जागता भी रहता है और जागता भी रहता है। मेरे दोस्तो! हम तहज्जुद की नमाज़ में खड़े नहीं हो सकते कि जी नींद आई हुई है। मालूम हुआ कि हमारे नज़दीक तहज्जुद की कीमत सी रूपए के बराबर भी नहीं और कहते हैं, ओ जी आँख नहीं खुलती।

मन हरामी ते हुज्जतां देर

असल में अंदर चोर होता है और ऊपर से बहाने तराश रहे होते हैं। ठीक है हम झूठे बहाने बनाकर लोगों को राज़ी कर लें, लेकिन परवर्तिगार तो जानते हैं कि उद्धा इसलिए नहीं कि दिल के अंदर गुनाह बहुत ज्यादा हैं।

तहज्जुद से महल्मी की इलाज

हसन बसरी रह० के पास एक आदमी आया और कहने लगा, हज़रत! मुझे रात जागने की तौफ़ीक नहीं होती। फर्माया कि ऐ दोस्त! तू दिन के वक़्त में अपने आपको गुनाहों से महफू़ कर ले अल्लाह तब रात के आमाल की तौफ़ीक नसीब फर्मा देंगे। अगर हम दिन में गुनाहों से बच जाएं तो अल्लाह तब रात को तहज्जुद की तौफ़ीक अला फर्मा देंगे।

शक बाले लुक़मे की नहूँसत

हज़रत शाह गुलाम अली देहलवी रह० फर्माते हैं कि एक बार किसी के हाँ दावत खाई और कोई शक बाला लुक़मा मेरे मुँह में चला गया। शुक्र बाला लुक़मा था हराम नहीं, हराम तो बड़ा खुला
हुआ होता है। फरमाते हैं कि वह लुम्बा अंदर चला गया तो चालीस दिन के लिए मेरी तमाम कैफियतों को छीन लिया गया।

तहज्ज़ूड से महरूम की एक अजीब बजह

एक मुफ्ती साहब अपनी ज़ियादा से फरमाया करते थे कि उनका बैठक का ताल्लूक हजरत मोलाना अब्दुल्लाह बहलोती रहहो से था, यह बहुत बड़े आलिम और कुरूफ़ थे। यह वात मुफ्ती साहब खुद सुनाया करते थे कि मैं जब वैसे था तो कई बार हजरत की खिदमत में आना-जाना रहता था और उस दौर में हमारी तहज्ज़ूड के कुछ होने का साधन ही पैदा नहीं होता था। कहने लगे कि एक बार हम वापसी की इजाज़त लेने के लिए खिदमत में हाज़िर हुए और हजरत रहहो का दिल चाहता था कि हम एक दो दिन और रुक जाएं। वजह क्या थी कि शेख़ की मोहलत थोड़ी थी। उसके कुछ दिन बाद उनका इतिफाल होना था। तो अल्लाह तअला ने उनके दिल में झाला होगा कि यह आए हैं तो कुछ लेकर जाएं। शेख तो उसको देखकर कह रहे होंगे कि भई! जरा एक दो दिन ठहर जाओ, अल्लाह के बंदे! यह नेमत पा लो। मगर फरमान लगे हजरत! हमारे ऊपर दर्श व तदरीस का भूत सवार था और हम अपने मदरसों में वापस हो गए। फिर हजरत की वफात हो गई और उनकी वफात के बाद आज तक हमें तहज्ज़ूड में इस्तिक्कामत नसीब न हो सकी।

बयालिस साल तक तिलावत कुरआन पाक का मामूल

ये नेमतें घर बेंटे नहीं मिलतीं। ये मशाइख की सोहबत में आकर मिलती हैं, ये उनके पास रहने से मिलती हैं। आज के दौर
में भी ऐसे लोग मौजूद हैं। लिखाया मेरी मुलाकात एक आलिम से हुई, उनकी बैठक का तालुक़ हज़रत ख़्वाजा अबुलमालिक सिद्दीक़ी रहा जो हमारे पार की है उनके साथ था। आजूबन ने खुद वह बात सुनी, फर्माने लगे, हज़रत से बैठक किए हुए मुझे बयालिस साल गुज़र गए हैं, बयालिस साल में कुरआन पाक का एक पानी तिलायए करने वाले अमल में एक दिन भी नागा नहीं हुआ।

सत्राइस साल से अवाबीन की पाबंदी

कुछ अभी पहले एक दोस्त ने ख़्ला लिखा। वह जवान उम्र है, उसकी दाटी में मुश्किल से कोई बात सफ़ेद नज़र आएगा। लिखित है कि हज़रत! आल्लाह का मुक़ाम है सत्राइस साल से मेरी अवाबीन की नफ़्ल कभी कुछ नहीं हुई। आज के दौर में भी करने वाले कर रहे हैं। ऐसे लोग हैं जिनकी तहज़ुज़ की नमाज़ ग्यारह-ग्यारह साल से कभी कुछ नहीं हुई।

एक औरत का इबादत का शौक

पिछले दिनों हमारे एक दोस्त की वाळिदा की वफात हुई। उनकी वाळिदा की बैठक का तालुक़ हमारे पार व मुश्किल रहा के साथ था। फिर उनके बाद आजूबन से हुआ। अपनी वफात से पहले उन्होंने शायरे घर के बच्चे, बच्चियों, यदि और औरतों को चुलाया और उन्हें फर्मान दिए। मेरी जब शादी हुई उस वक़्त मेरी उम्र बीस साल थी और आज मेरी उम्र असी साल है। इस साठ साला शादी-शुदा ज़िंदगी में मेरी कभी भी कोई नमाज़ कुछ नहीं हुई।
दौरे हाजिर की मुसीबत

अगर ऐसी औरत आज जिंदगी गुजार रही हैं तो बताए ये औरतें जो बहाना करती हैं कि जी बच्चों की वजह से नमाज़ नहीं पढ़ सकतीं। लगता ऐसे है कि जितनी नमाज़े पढ़ने वाली होती हैं सबके बच्चे नहीं होते थे। ये नई आयी हैं कि अब इनको औलाद भिड़नी शुरू हुई है, पहले नहीं होती थीं। सब बहाने हैं कि जी मेहमान आ गए थे, नमाज़ कज़ा हो गई। मेहमान की रिआयत करते हैं परवरिदिगार और रहमान की रिआयत नहीं करते। आज इबादतों का शौक खत्म होता जा रहा है और यह मुसीबत है आज के दौर की।

इबादत का शौक कैसे पैदा होता है?

यह इबादतों का शौक कैसे आएगा? ख़बूज़ा, ख़बूज़े को देखकर रंग पकड़ता है। जो आदमी कपड़े वालों के पास बैठेगा उसे कपड़े के कारोबार का शौक पैदा होता है, जो कंप्युटर वालों के पास बैठेगा उसके ज़हन में यह काम करने का शौक पैदा होता है। जो आदमी बिजनेसमैन के पास बैठेगा उसके ज़हन में यह काम करने का शौक पैदा होता है और आदमी शब जिंदादर, इबादतगुज़ार लोगों की महफ़िल में बैठेगा तो उसके दिल में इबादत ज़ियादा करने का शौक पैदा हो जाता है।

शब बेदारी (रात को जागने) की बरकरारें

जो महाना इंतिमा रखते हैं उसका क्या मतलब है? इसका मतलब यह है कि हम सब कम से कम एक रात तो इकड़ा मिल
بہتے اور آللہ تاکہا کے ذوالادت میں اپنا چکر گنجارہ۔
مہیاں میں کم سے کم اک رات کو اسی حیوں جو آنے پر پیشہ بھی جا کر گنجا کے نکھن کر دے پر گنجارہ ہو تو اس رات کی تلاس کا حمایت مہاکیا کی رات کے ساتھ مہاکیا نشان نہیں ہو جاگے۔ آپ دیکھیے کہ اسکے
اکثر آپکو کھد آپنی جہاں میں آتے ہو محسوس ہوں گے۔
ہر جگہ جہاں میں اہم کرے دوستوں نے یہ معاہدہ پروگرام کرنا شروع کریں ہو، اسکی ترکیب محسوس ہو رہی ہے۔ کہاں لگے ہوں جو آپکی
بکاٹ ہے کہ اس ایک رات کی ترکیب سے مہیاں کی کہتی رات
میں آللہ تاکہا ہمارے تھیہ تھسج کی تعلیقیات اٹا فرمایا دے تے ہے。

شہب جہذادار نے کا اکائوں

یک بات جذبہ میں ریکھا، جو مسال میں سے بحث کی کوشش
کرنا۔ یک بائیک ہے جس میں اربوں یاروں کے مالک اکائوں پر
اکائوالے ہوئے ہے۔ ایک بائیک نے اکائوں خواتین اور اک یار
رپے جما کرنا دیکھا۔ اچھی باتاں، جب وہ لیست بناتے گے کہ اس
بائیک میں کس کیس کی بائیک کا اکائوں میں موجود ہے تب جاہیں
یاروں پتیاں کے نام لیست میں آرپ ایس اک یارر رپے واقع
کا نام بھی لیست میں آرپا۔ مالک کی اسی تارہ ہمارے بھی
یاروں کے اکائوں جہذاداروں کے چنلہ ہوئے ہے، مذکورہ کے دین جب
آللہ تاکہا ہمارے فرمائے کہ ہمیں رات کی جاگی ناں واقع
ہون؟ رویہ لیست میں جاہیں ہمارے ہم ہمارے بھی جاگی طیار ہیرا
آئی نمبر ہیں، مہیاں میں ایس اکائوں کے اک یارر ہم نے ہیں
اجاگی نہیں آرپا۔ بھی اکائوں میں ایس بحث ہوئی ہی ساتی
مگر ہم ہم نے شخصیہ کہ ہم آپنے راہ کی
इबादत के लिए आज रात अपना एकांत खुलवा रहे हैं। तिहाड़ा हम इस रात को जागेंगे और अपने जिस्म को अल्लाह की इबादत में जगाने का अज्ञात पाएँगे।

बगैर अज के जागने बाले लोग

यह जिस्म पालन नहीं दुनिया की ख़ातिर कितनी बार जागा होगा। कभी तो अल्लाह के लिए भी जागे। देखें ज़ूरा एयरपोर्ट पर, रेलगाड़ियों के स्टेशनों पर, बसों के स्टैंडों पर, कारखानों में और फैक्टरियों में लोग रातों को जाग रहे होते हैं। हर जगह लोग रातों को जाग रहे होते हैं। अगर लोग दुनिया की ख़ातिर जाग रहे होते हैं तो क्या ज़िंदगी में एक रात हम अल्लाह के लिए इबादत की नीति से नहीं जाग सकते। भ्रम जागेंगे हैं तो उनको अज नहीं मिलता लेकिन जब हम इबादत की नीति से जागेंगे तो अल्लाह रखुलड़ज़ूर से अज पाएँगे।

जागकर कौन से आमल किए जाएं?

हम इस रात में ज़ीक़ और शौक के साथ आएं और यहाँ पर इबादत में अपना चवड़ गुज़रें। नमाजें पढ़ें, सलाततस्वीह पढ़ें, ज़िंदगी की जो नमाजें क़ृत्रिम हुई वे पढ़ लें, कुरआन पाक की तिलावट कर लें, लम्बा मुराद़ कर लें, अल्लाह तालाला से तस्लीत की दुआ मांग लें, कोई काम तो करें। एक रात तो हमें सकृत और तसल्ली से इबादत करने की मिल जाए, तकि हमें अल्लाह वालों के साथ मुशाब्हित नसीब हो जाए और अल्लाह तालाला के यहाँ कुबूलियत मिल जाए कि मेरा यह बंदा मेरी याद
में और मेरी मुहब्बत में रात भर जागता रहा। अल्लाह तालाला के हाँ इसकी कुबूलित होगी।

ख़ाशियत इलाही की पहचान

जब एक आदमी को अल्लाह तालाला ख़ाशियत अटा फरमा देते हैं तो इसकी पहचान यह होती है कि वह आदमी गुनाहों से बच जाया करता है। याद रखना हर चीज़ की कोई दलील होती है अगर कोई पूछे कि इसकी ख़ाशियत इलाही हासिल है या नहीं तो इसकी दलील यह होगी कि उसने अपनी ज़िंदगी में गुनाहों को छोड़ दिया या नहीं। अगर गुनाहों को छोड़ दुका है तो फिर उसे ख़ाशियत की कैफ़ियत हासिल है। गुनाहों को छोड़ देना यह मोमिन की ज़िंदगी का मकसद है। इसलिए कि गुनाहों का मज़ा शुरू में शहद की तरह होता है मगर गुनाहों का अंजाम ज़हर की कड़वाहट की तरह हुआ करता है।

अज़ज़ील से शैतान बनने की पाँच बजूहात

अज़ज़ील जिसने इसने इबादत की कि चप्पे-चप्पे पर चढ़े किए और आकाश में शैतान बना, इबलीस बना। जानते हो उसको किस चीज़ ने इबलीस बनाया? ख़ुशी की बात है, ज़रा सुनने और समझने की बात है। उलमा ने किताबों में लिखा है कि पाँच बातों ने ताउसे मलाइका को इबलीस बना दिया, मरदूल बना दिया।

सबसे पहली बात यह कि गुनाह तो किया मगर गुनाह का इकरार न किया। यह शैतान की निशानी है। दूसरी बात यह कि गुनाह तो किया मगर गुनाह पर नदामत न हुई। उसके गुनाह पर
कुबूलियत तोबा की पौंच बजूहात

इसके मुकाबले में हजरत आदम अल्लाहिस्सलाम को देखिए।
उनके अंदर पौंच खसलते मौजूद थी।

पहली यह कि उन्होंने फौरन अपनी गलती को मान लिया
रक्खा जलमना अनकुशना कहा। दूसरी यह कि
गलती का इक्कार कर लेने के बाद अपनी गलती पर बहुत नादिम
भी हुए कि मुझसे कोशी हुई, भूल हो गई। तीसरी यह कि
उन्होंने अपने आपको मलामत भी की कि मैंने ऐसा क्यों किया?
फिर उसके बाद उन्होंने सच्ची तोबा भी की और आखिरी बात यह
कि वह अल्लाह तत्तत्ता की रहमत से कभी मायूस भी न हुए।
इसलिए अल्लाह तत्तत्ता ने उनकी तोबा को कुबूल माना लिया।

हमारी ज़िम्मेदारी

हमें चाहिए कि हम हजरत आदम अल्लाहिस्सलाम के नक़्शे
कदम पर चलें। एक तो गुनाहों का इक्कार करें और उस पर
नादिम हों। अपने नफ्स को भी मलामत करें, अल्लाह तत्तता के
हूँज़ूर तोबा भी करें और अल्लाह तआला की रहमत से मायुस भी न हों। उम्मीद लगाए रखें कि अल्लाह तआला हमारे गुनाहों को माफ़ फर्मा देंगे। हमें चाहिए कि अपने गुनाहों से तोबा करने की सच्ची नीति को लेकर बैठें कि रखे करीम। अब तक जिज्ञासु गुनाह कर चुके, हमारे गुनाहों को माफ़ फर्मा। दिल में नेकी का शौक लेकर बैठें कि परवरदिगार। हमें अपनी जिंदगी में इबादत और नेकी करने का लुफ्त व मज़ा नसीब फर्मा।

लज्ज़त आशानाई

जिस बंदे को अल्लाह तआला इबादत का शौक अंता फर्मा देते हैं तो अपनी मुहब्बत की शराब का एक कुत्ता उसके हलक में टपका देते हैं और फिर उस बंदे का इबादत में अपने आप दिल लग जाता है।

दो आलम से करती है बेगाना दिल को

'अज़ब चीज़ है लज्ज़ते आशानाई'

यह अजीब नेमत है। ये जो हज़रात मुसलम़न पर बैठकर सारी-सारी रात गुज़र दिया करते थे, यह नहीं कि उनको कोई मारे बांधे जागना पड़ता था नहीं वलिके वे लज्ज़तों की ख़ातिर जागते थे। उनको मज़ा आता था रात को जागने का। इतना मज़ा आता था कि रात के गुज़र जाने का भी उनको पता न चलता था।

एक मिसाल से वज़ाहत

देखिए, एक माँ ज्यादा काम करके थकी हुई है और सारी घर में कहती है कि मैं आज इतना थक गई हूं कि बस मैंने आज
पढ़ने ही सो जाना है। आज मुझे कोई दिस्तब्ब न करे क्योंकि मेरी नींद पूरी नहीं हुई, मेरा बदन थका हुआ है, मेरे बदन में दर्द है, मैं तो फौरन सो जाऊँगी। अगर उसने नीयत कर ली फौरन सो जाऊँगी और यह बाकी लेट थी गई और ठीक उसी बक्त दर्बाज़े पर गंटी बजी, उसका यह बेटा आया तो कई साल से परदेस गया हुआ था वह अथानक वापस आ गया। तो बताईए कि उस माँ की नींद रहेगी या उड़ जाएगी? वह उसके साथ मजे से बैठीं दो तीन घटे बातें कर रही होंगी। अगर सारे घरवाले पूछेंगे, अम्मी! आपकी नींद कहाँ गई? अम्मी! आपकी धकन कहाँ गई? तो कहेंगी, बस में बेटा आ गया, मेरी धकन दूर हो गई और बेटे को देखकर मेरी नींद उड़ गई। जैसे यह थकी हुई माँ अपने बेटे को देखती है, उसका चेहरा देखकर वह धकन भूल जाती है और उसकी नींद उड़ जाती है विल्कुल इसी तरह हमारे बुजुर्ग रात को जब मुस्लिम पर बैठकर अल्लाह की इबादत किया करते थे, अल्लाह ताalam के जमाल के जल्दे उनको दिखाई देते थे तो उनकी धकन दूर हो जाती थी। वे ताज्जा दम हो जाया करते थे। हमें इबादत थका देती है और उनको इबादत ताज्जा दम बना दिया करती थी। वे कुरआन पढ़कर ताज्जा दम, नपूर्ण पढ़कर ताज्जा दम और “लाइला हाइलाह” की जबर लगाकर ताज्जा दम हो जाते थे।

हमारे लिए दवा और उनके लिए गिज़ा

अगर भूख लगी हो तो पुलाव और कूस्दे खाने कितने अच्छे लगते हैं। इसलिए कि बंदे की गिज़ा होते हैं लेकिन दवा पीनी और खानी बड़ी मुश्किल होती है बल्कि कई बच्चे और औरतें तो बीमार रहना पसंद कर लेते हैं लेकिन दवा नहीं खाते क्योंकि
कढ़बी होती है। लेकिन गिज़ा खाना आसान। हमारे बुजुर्गों के
लिए इबादत गिज़ा की तरह थी और हमारे क्योंकि मिज़ाज़ बिगड़े
हुए हैं इसलिए ये दवा की तरह हैं। इसलिए हमने सोचा कि चलो
एक रात तो सबको दवा पिलाएं, काफ़्र पिलाएं।

मस्जिद में गधा

एक देहाती का गधा मस्जिद में आ गया। मौलाना साहब ने
देखा तो उसको एक डंडा लगाया। देहाती ने पूछा, मौलाना साहब!
इसको डंडा क्यों मार रहे हो? उन्होंने कहा, मस्जिद में जो घुस
आया। कहने लगा, क्या कभी वह जानवर है उसे पता नहीं था,
कभी मुझे भी आपने मस्जिद में देखा है? तो कई लोगों को नमस
यह सिखा रहा होगा कि इस दफा फूस गए आईंदा सही।

खुशी का सौदा है

यह खुशी का सौदा है। जी हाँ खुशी में औरतें चूड़ियाँ पहनती
हैं इसी तरह ये खुशी की चूड़ियाँ हैं जिसका दिल चाहे वह आए,
जिसको फायदा नजर आए वह आए और जिसको नींद में फायदा
नजर आए वह बेशक आराम से सो जाए। इसलिए कि आप यहाँ
कुछ लेने के लिए आए हैं देने के लिए नहीं।

बेहतर करते कब्र हज़रत हाजी इमदादउल्लाह मुहाजिर
मक्की रह० की कैफ़ियत

हज़रत हाजी इमदादउल्लाह मुहाजिर मक्की रह० फरमाते थे कि
जब कोई बंदा मुज़ते बेहतर होने के लिए आता है तो मुझे उससे
हूँ हैबत महसूस होती है कि जैसे बंदे को शेर से हैबत महसूस होती है, क्यों? इसलिए कि उसके आमाल के बारे में उससे भी पूरा जाएगा और मुझसे भी पूरा जाएगा कि शेर होने के नाते उसने हक अदा किया था या नहीं, उसने उसे ख़ैर की तरफ बुलाया था या नहीं?

जान बहुशी

अजीज़ दोस्तो! यह महीने में एक प्रोग्राम हम ने अपनी जान बचाने के लिए रखा है कि आपकी बातों का आप से हिसाब तो होगा ही सही लेकिन जिसके हाथ में आपने हाथ दिया है उससे भी पूरा जाएगा। यह मुसीबत पड़ी हुई है। अपना बोझ तो है ही सही, जिस-जिस बंदे ने हाथ में हाथ दिया, हर उस बंदे का बोझ सर के ऊपर है। 

फ़िल्सफ़िलन, दिनों रास्ते निहाल हैं।

कुशआन पाक की इस आयत से मशाइख ने यह मतलब लिखा है कि क़यामत के दिन शेर को अल्लाह तआला ज़मीरों में बांधकर खड़ा करेगे और उस वक़्त तक नहीं खोलेंगे जब तक वह यह साबित न कर देंगे कि हमने अपने तालुक़ वालों की इस्ताल के लिए अपनी तरफ़ से पूरा जोर लगाया था। इसलिए यह जो प्रोग्राम रखा है यह अपनी जान बचाने के लिए है। अब हमारी जिम्मेदारी पूरी हो गई। कोई यह न कह सके कि जी हमें तो वक़्त नहीं मिलता था। जी हमारे शेऱ मराफ़र रहते हैं और उनके पास वक़्त नहीं होता।

रूहानियत में ज़ाहिरी फ़ासलों की हैसियत

चलें यह एक रात इबादत में गुजारने के लिए है। जरा आप
इस मामूल में जुड़िए फिर देखें कि आपको दूर बैठे तबज्जेहात मिलती है या नहीं मिलती। बातिनी तवज्जेहात के लिए यह जाहिरी फासले कुछ हैसियत नहीं रखते। पूर्व व पश्चिम का फासला कोई हैसियत नहीं रखता। इसलिए आप हज़रात अगर इस्लाम की नीति से यहाँ आएंगे तो जिन हज़रात को इस आजिज़ ने यहाँ नुमाइदाब बनाया है वह आपको मुराक़ब़ा भी करवाएंगे, रात के आमाल में भी लगवाएंगे और ईशाअल्लाह आप झोलिया भरकर वापस जाएंगे।

जमाअती काम की फ़ूज़ीलत

एक मसुअला सुनिए कि अकेला बंदा नमाज़ पढ़े तो अल्लाह तआला की मर्ज़ी कि वह कुबूल करे या न करे। लेकिन फ़िक़्ह का मसुअला है जिस आदमी ने जमात के साथ नमाज़ पढ़ी अब अगर पूरी जमात के बंदों में से एक की नमाज़ भी कुबूल हो गई तो अल्लाह तआला उसकी नमाज़ को भी कुबूल फ़र्मा लेंगे। बिल्कुल इसी तरह जब इतने बंदे राते के आमाल करेंगे तो उन बंदों में से किसी एक की इबादत भी कुबूल हो गई तो जमात की ब्रजह से अल्लाह तआला सबका जागरा कुबूल फ़र्मा लेंगे।

पिछले रमज़ानुल मुबारक की धकावत

जब पिछली दफ़ा हमने रोज़े रखे, तराबीह पढ़ी, उस वक़्त हमें यकान महसूस होती थी। आज हमें याद नहीं कि रमज़ान शरीफ़ में जिस्म थका था। अगर पिछले रमज़ान की धकावत याद नहीं, वह ख़त्म हो गई लेकिन अज़ बाक़ी है तो इसी तरह अगर आज
की रात जागेंगे तो यह धकाव भी कल शाम तक भूल जाएगे और इस पर मिलने वाला अज आमालनामे में बाकी रहेगा।

नफ्स पर बोझ ढालिए नफ्स पर बोझ ढालिए

नफ्स ने अगर जाग-जाग कर गुनाह करवाए तो हम इसको जगा-जगा कर इबादत करें न करवाए। अच्छा है कि कभी हमारी आँखों में भी सुर्ख दोरे पड़े जैसे सहाबा किराम की आँखों में सुर्ख दोरे पड़े होते थे, आँखें नींद को तरसती थीं। हमारी आँखें भी नींद को तरसें। किसी के लिए? अल्लाह ताउला की इबादत के लिए। हम इबादत नहीं कर सकते जैसे इबादत करने का हक है तो अल्लाह जानिए। हम कुछ नीयत तो कर सकते हैं, कुछ कठिन तो बढ़ा सकते हैं। अल्लाह ताउला उसी कठिन बढ़ाने को क्षुब्ध फर्मा लेंगे और उसकी वरकतें आप महसूस करें।

शब्द बेदारी का प्रोग्राम रखने की बजह

यह जो रात को प्रोग्राम रखा सिर्फ इसलिए रखा कि हम चाहते हैं कि महीने की एक रात सब सालिक एक गजार मिल वैठें और अपने रात को याद करें। जो तो चाहता था कि दिन का वक़्त होता मगर आप लोगों में से किसी को मजबूरियाँ होती हैं, धर के काम होते हैं। आप लोग रहते हैं तो रात के बाद एक छुट्टी मिलती है यह भी पीछे साहब के पास जाना पड़ गया तो घर के काम कौन करेगा? तो शिकंज़े शिकायत नहीं होगी। हमने कहा वह दिन का वक़्त तुम अपने कामों में गुज़र लेना। हम आपको रात को यहाँ कुछ देर तक इबादत में पश्चिम रख लेते हैं। सीखने का मोक़ा मिल जाएगा। साल में और नहीं तो बारह रातें तो अल्लाह ताउला
की याद में जागकर गुज़र जाएं। अल्लाह ताज़ाला को ऐसा ही बंदा महबूब होता है जो दूसरे से ज्यादा भेंट नहीं कर रहा हो। आज के दौर में जो लोग हैं उन्हें कोई ताबिक वाले हालात नहीं मांगे जाएंगे या तबे ताबिक वाले हालात नहीं मांगे जाएंगे कि उस दौर के हालात तुम्हारे पास क्यों नहीं हैं? अहवाल क्यों नहीं? ऐसा नहीं बल्कि हम से आज के दौर के हालात तलब किए जाएंगे। इसलिए कि वैदा जो इस दौर में हुए हैं। तिहाज़ा आज के दौर के बारे में सवाल होगा। जो बंदा किसी कुदरत ज्यादा कोशिश करेगा अल्लाह ताज़ाला उसको तौफीक अता फरमाएंगे और कुबूलियत अता फरमाएंगे।

एक वक़िमा हदीस पाक में आया है, अल्लाह ताज़ाला दो बंदों को कुबूल फरमा लेते हैं और उनसे खूश होकर फरिश्तों में उनका जिक्र फरमाते हैं। एक जब कोई क़ाफ़िला थाका हुआ आए और रात के आँखों पहर में आकर तो जाए। एक आदमी उनमें से थका हुआ था, वह उठा उसने कुप्रू किया और मुसलम से खड़ा होकर इबादत करने लगा गया। अल्लाह ताज़ाला मुस्लिम कर फरिश्तों से फरमाते हैं कि देखो बाकी भी भक्त मदद भी यह भी थका हुआ था लेकिन इसको मेरी मुहब्बत ने जगाए रखा। यह खड़ा नफ़से पढ़ रहा है। ऐसा बंदा अल्लाह ताज़ाला को ज्यादा प्यारा होता है। और दूसरे वह नौजवान जिसको तहज़ुर था वह यौन खुली और उसने कुप्रू करके नमाज़ पढ़नी शुरू कर दी जबकि खुबसूरत बीवी घर में मौज़ुद थी। वह चाहता तो उसके साथ गुज़र सकता था लेकिन उसने अल्लाह ताज़ाला की इबादत को तरजीह दी। अल्लाह ताज़ाला खूश होकर उसको देखते हैं और फरिश्तों में उसका जिक्र फरमाते हैं। मालूम यह हुआ कि जो
आदमी अपनी नींद की, अपनी ख़ाहिशःक की कुर्बनी देकर अपने रब की इबादत करता है अल्लाह ताज़ा उसकी इबादत को कूबूल भी फर्माते हैं और मुद्दराकर उसका ज़िक्र फरिश्तों की महफ़िल में फर्मा देते हैं।

अल्लाह ख़ुलास़ज़त हमें अपने रातों को जागने वाले लोगों में शामिल फर्मा दे और हमारे गुनाहों को नेकियों से तब्दील फर्मा दे। (आमीन सुम्मा आमीन)

وَإِخْوَاهُ دَعْوَانَا إنِّي بِاللَّهِ رَبِّ الْعَلِيمِينَ
मज्जूबों की पुर असरार (राजा भरी) दुनिया

अल्लाह ﷺ और उसके निजाम को असवाब के तहत चलाया है। हर चीज के काम करने का तरीक़ा और उसके निजाम को असवाब के तहत चलाया है। अल्लाह ﷺ और उसके निजाम को असवाब के तहत चलाया है।

हर चीज के काम करने का तरीक़ा और उसके निजाम को असवाब के तहत चलाया है।

अल्लाह ﷺ और उसके निजाम को असवाब के तहत चलाया है।

हर चीज के काम करने का तरीक़ा और उसके निजाम को असवाब के तहत चलाया है।

अल्लाह ﷺ और उसके निजाम को असवाब के तहत चलाया है।

हर चीज के काम करने का तरीक़ा और उसके निजाम को असवाब के तहत चलाया है।
कुदरते इलाही का इज़हार

आमतौर पर ऐसा नहीं होता कि इस्लामी रात को सो जाए तो फसिक हो और सुबह को उठे तो कामिन हो। अगर अल्लाह तब ऐसा करता है तो वह उसकी कुदरत है। 

वह तू बीमा मध्यरात्रि रज़ोलल्हु अल्लाह को बगार शौर के भी बेटा दे दिया था। बाज़ अबिया किराम को ऐसी उम्र में अल्लाह मिली जब कि औतर बाक्श हो जाता है। हज़रत इब्राहीम अल्लाहसलाम की बीवी को बशारत मिली कि बेटा होगा:

«फ़सकत और दिख़िया, क्या अंधेरा है, मैं बुझी हूँ! इस अंधेरे में माँ हूँ!”

चेहरे पर हाय मारा और कहने लगी, ओहो! मैं बुझिया! इस 
हालत में माँ बनूंगी?»
मगर यह कुटरत का ज़ुमूर है।

आमतौर पर दुनिया का निज़ाम असबाब के मातहत चल रहा है लेकिन कभी-कभी असबाब का मात्राक अपनी कुटरत दिखाता है ताकि लोगों का ईमान सतामत रहे और वे असबाब को ही खुदा न समझ बैठें। गोरा अल्लाह रब्बुलहज्ज़त अपनी कुटरत का इज़हार फर्मा देते हैं कि हम निज़ाम बनाकर इसके पाबंद नहीं हो गए हैं बल्कि मर्ज़ी अब भी हमारी ही चलती है।

रुहानी असबाब

जिस तरह जाहिरी तौर पर मादूरी निज़ाम असबाब के तहत है उसी तरह रुहानियत का निज़ाम भी असबाब के तहत है। जिस तरह ईसाई मादूरी उल्लूम सीखता है उसी तरह उसे रुहानियत को भी सीखना पड़ेगा। शेख्से बैठते होना, उनसे ज़िक्र व मुराक़बा सीखना असबाब हैं। रहमतें तो अल्लाह तअला ही भेजते हैं मगर मुराक़बा में बैठना इसका सबब बन जाता है।

दो तरह के इंतज़ामात

दुनिया के गुल़शन के कारोबार को चलाने के लिए अल्लाह रब्बुलहज्ज़त की तरफ़ से दो तरह के इंतज़ामात हैं।

1. फरिश्तों के ज़रिए

कुछ तो फरिश्ते तय हैं जो दुनिया का निज़ाम संभाले हुए हैं। मसलन पानी के हर कुत्ते के साथ एक फरिश्ता है। तब तक वह
कुछ इस्लाम को भी इस ख़िदमत के काम पर तैनात हैं। जब कोई हाकिम मुल्क पर हकूमत करता है तो उस मुल्क में आमतौर पर तीन तक होते हैं। उनमें से एक तो आम लोगों का तब्दील होता है जिनको एक निज़ाम के तहत अपनी जिंदगी गुज़ारना पड़ती है। वे कारोबार करें या नौकरी करें या जो मर्जी करें। उन्हें बहसाहि इस निज़ाम के तहत अपनी जिंदगी गुज़ारनी है। दूसरा तब्दील हाकिम के नुमाइंदों का है जो हकूमती पालिसियाँ बनाते हैं, समझाते हैं और लोगों को उस क़ानून के तहत जिंदगी गुज़ारने का पाबंद बनाते हैं और तीसरा तब्दील फौज या पुलिस का होता है। यह महकमे मुल्क के कुछ क़ानून के लिए बनाए जाते हैं। फौज का शीर्ष मुल्क की
हिफाजत के लिए तैनात होता है जब कि पुलिस का शरीअत मुल्क में अमन व अमान कार्यम रखने के लिए बनाया जाता है।

खुदाई निज़ाम

खुदाई निज़ाम के भी तीन हिस्से हैं। एक आम लोग, जिनमें से कोई सरद होगा, कोई शक्त होगा। उन्हें दुनिया में अपनी जिंदगी गुजारकर आविर्भात के सफर पर रवाना होता है। इसके अलावा अल्लाह तहाला ने अपने बंदों के दो शोबे और बनाए हैं जो खुदाई काम पर तैनात होते हैं।

क़ुतुब इशार्द के फ़ौराज़

एक शोबे के बड़े को “क़ुतुब इशार्द” कहते हैं। इशार्द कहते हैं दावत को, तबलीग़ को, सुन्नत को ज़िंदा रखने को, दीन को ज़िंदा करने को। क़ुतुब इशार्द अल्लाह तहाला का वह बंदा होता है जिसको रहगानी तौर पर नबी अकरम सल्लाल्लाहु अल्लाह वस्तम का मुहताज़ बारिस होने की निस्तंब हासिल होती है। और दावत व तबलीग़ का जो काम नबी अकरम सल्लाल्लाहु अल्लाह वस्तम अपने दौर में करते थे। उनकी वकालत करते हुए गुमाइंगरी करते हुए और उनका वारिस होते हुए क़ुतुब इशार्द वही काम कर रहा होता है। गोरा क़ुतुब इशार्द लोगों के दिलों को अल्लाह तहाला की मुहब्बत से गम्भीर रहे होते हैं और शरीएट की बालादस्ती और हाफ़ियत आला के अहकामात की तामील करवाने के लिए क़ौशियाँ कर रहे होते हैं। फिर उनके तहत कई औलिया किया होता हैं जो उनसे फ़ूँज़ पाते हैं और आगे काम
कर रहे होते हैं। इसे दावत व इशाद का एक मुस्तफिक शोषा समझ लीजिए।

क़ुतुब मदर के फूराइज़

एक शोषा और होता है जिसका फौज की तरह रिआया के साथ कोई ताल्लुक नहीं होता। उनका ताल्लुक मुल्क की हिफज़त, सालमियत और अगनि व अमान से होता है। उस शोषे के बड़े को “क़ुतुब मदर” कहते हैं। उनके तहत आगे और कई ऑलियाएं किराम होते हैं। जिनके ज़िम्मे मुख्तालिफ काम लगे होते हैं। उनका ताल्लुक कामनात के निज़ाम के साथ होता है। जैसे फूरिस्तों की एमात निज़ामे कामनात को संभालने के लिए वनी, वे बूंदे भी निज़ाम को संभालने के लिए पैदा किए गए हैं।

जब किसी को फौजी बनाया जाता है तो उसे वर्दी पहना दी जाती है ताकि आम लोगों और उनमें फूर्क हो सके। इसी तरह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त जब किसी बूंदे को तकबीरी निज़ाम से मुख्तालिफ किसी काम पर तैनात करते हैं तो ज़्ज़हीरी तौर पर उस पर कुश देखोशी का आलम तारी फ़र्सा देते हैं। जिसकी वजह से आम दुनिया के लोगों से बातचीत के क़वित नज़र ही नहीं आते। वे लगने के साथ अपने काम में मगन होते हैं।

क़ुतुब इशाद की फूरिलत

यहाँ एक बात गौर के क़बिल है कि दावत व इशाद का रस्ता अफज़ल है। इसीलिए क़ुतुब मदर हमेशा क़ुतुब इशाद के मातहत होते हैं। एक ही बुद्धि में क़ुतुब इशाद भी होंगे और
कुतुब मदर भी होंगे मगर कुतुब मदर मातहत होंगे कुतुब इशाद के। वे अपने सब मामलों की रिपोर्ट कुतुब इशाद को बताएगे। क्योंकि कुतुब इशाद दातव व तबलीग, इशाउत दीन, शरीर तथा काम, मदरसाएं, मस्जिदों, मकबरों और रुहानियत का निजीम चलाते हैं इसलिए शरीर ता कुतुब इशाद को फ़ज़ीलत बताई है।

मजनून और मज़ूब में फर्क

जो लोग जाहिर में एक आम इस्लाम की तरह आतरंगद नजर नहीं आते और एक स्वास्थ्य हालत में रहते हैं, लोग उन्हें मजनून कहते हैं या मज़ूब। यानी मजनून को देखो तो वह अजीब व गुरीब हरकतें करता है, न खाने से बात न पीने से बात न ही दूसरी चीज़ों से ताल्लुक होता है। मज़ूब का लफ़्ज़ 'ज़ज़े' से निकला है। लिहाज़ा मज़ूब के अंदर एक स्वास्थ्य ज़ज़ा होता है मगर वह भी जाहिर में मजनून की तरह अजीब सी हरकतें करता है। मजनून और मज़ूब की ज़िंदगी आम लोगों से हटकर होती है। मगर मजनून बीमार होता है जब कि मज़ूब अल्लाह का बली होता है। दोनों जाहिर में एक जैसे लगने की वजह से सातिकी परेशान होकर उनके बारे में कमी-ज्यादता का शिकार हो जाते हैं। कुछ लोग तो मजनून को भी मज़ूब ही कह देते हैं। जो भी पागल व दीवाने देखा उसी को मज़ूब और ख़ुदा का वती समझ लिया। कुछ ऐसे होते हैं जो मज़ूब लोगों को भी मस्रीज़ समझ लेते हैं। सही राह अपनाने के लिए कुछ नुक़ते बयान किए जाते हैं ताकि आफ़ा अकीदा और अमल पिछले बुधुगों के अकीदे और अमल के मुताबिक हो जाए।
सबसे बड़ी निष्कासी तो यह है कि मज्झूब हमेशा बेचैन नज़र आएगा जब कि मज्झूब हमेशा मुहम्मद नज़र आएगा। यानी मज्झूब को किसी कल चैन नहीं होता, उसका दिमाग खराब होता है जिसकी वजह से वह हर वक़्त हिलता-जुलता रहता है। बेचैनी की वजह से वह कभी कोई हरकत करता है और कभी कोई। मज्झूब भी देखने में इसी तरह होता है मगर उसके आमाल में आपके बेचैनी नज़र नहीं आएगी। गोया मज्झूब पर बेचैनी गालिब होगी और मज्झूब पर इतिहास गालिब होगा।

मज्झूब बनने के लिए हाथ खड़ा करें

अगर कोई आदमी मज्झूब आदमी के पास जाए, उसकी ख़िदमत करे और मज्झूब उस पर मेहरबान हो जाए तो मज्झूब उसे उस दर्ज़े तक पहुँचा सकता है जहाँ पर वह खुद देखता है यानी ज्यादा से ज्यादा करेगा तो वह उसे अपनी तरह का मज्झूब बना देगा। अब वताओं भई! जिस-जिस ने मज्झूब बनाना हो वह हाथ खड़ा करें। हम में से तो कोई भी पसंद नहीं करेगा कि वह ऐसी ज़िंदगी गुजारे। हर बंदा पसंद करेगा कि शरीर तल में की इतिहास की जाए ताकि रोज़ महसूर शरा शरीफ पर अमल करे वाले बंदों में हमारा शुभार कर लिया जाए।

मज्झूब की किस्में

एक सवाल यह बैठा होता है कि ये मज्झूब बनते कैसे हैं? इसका जवाब यह है कि मज्झूब दो तरह के होते हैं। एक वहाँबी मज्झूब और कस्बी मज्झूब।
1. वहबी मज़ूब

अल्लाह रब्बुलइज़ात ने जब रोज़े मीसाक के तृतीय अंश ‘अल्लाह विराजिकुम’ इशाद फरमाया और अपने जमाल का जलवा दिखाया तो कुछ इश़क वाले ऐसे थे जो मस्त हो गए। वे जमाले इलाही के मुशाहिदे में ऐसे गुर्गुर हुए या उस तजल्ली का नक़श उनके दिल और दिमाग़ पर चूं बैठा कि अपने होश गुम कर बैठे। उनका वहबी मज़ूब है। वे माँ के पेट में भी मज़ूब, बच्चपन में भी मज़ूब, जवानी में भी मज़ूब, बुढ़ापे में भी मज़ूब रहते हैं यहाँ तक़ कि वे इसी हालत में दुनिया से मुज़ा जाते हैं।

2. कस्बी मज़ूब

कस्बी मज़ूब अमूमत दो तरह के होते हैं, एक तो वे जो शुरु में दावत व इशाद के सही रास्ते पर चलते हैं, सालिकी तरीक़ा बनते हैं मगर सुल्तानुल अज़कार के सबक पर रुक जाते हैं। उनके रथ व रेशे में जो अल्लाह! अल्लाह निकलती है वे इस हाल में नग़लूब हो जाते हैं।

दूसरे वे जो किसी मज़ूब के पास जाते हैं और राह व रस्म रखने या किसी ख़िदमत की वजह से मज़ूब किसी तरह उनकी तरफ मुलवज़ह हो जाता है। जिसकी प्रज़ह से वह भी मज़ूब बन जाते हैं।

हज़रत बाबूजी अबुद्दल्लाह रहो पर एक मज़ूब का बार

हज़रत बाबू जी अबुद्दल्लाह रहो ने फरमाया कि एक मज़ूब मुज़ा पर बहुत महर्बान था। एक बार वह मुज़ा मिला और कहने
मगा, 'ता इलाहा इल्लाल्लाह' पढ़ो। मैंने पढ़ा 'ता इलाहा इल्लाल्लाह मुहम्मदुर्‌सुल्लाल्लाह'। उसने हर चंद जोर लगाया कि मैं 'ता इलाहा इल्लाल्लाह' पढ़ूँ गए, अगर मैं हर बार 'ता इलाहा इल्लाल्लाह मुहम्मदुर्‌सुल्लाल्लाह' पढ़ता रह। फरमाने लगे अगर मैं वाक्फ़ न होता तो उसके कहाने पर सिर्फ 'ता इलाहा इल्लाल्लाह' पढ़ देता तो उसी वक़्त मज़ूब बन जाता।

एमबीबीएस डाक्टर अव्वाल कैसे बना?

हज़रत शह ज़ियार हुसैन शाह रहॊ से इस आजिज़ ने एक वाकिफ़ा ख़ुद सुना। उनके दौर में एक एमबीबीएस डाक्टर साहब का एक मज़ूब के पास उठना बैठना था। वह मज़ूब फ़ौत़ होने लगा तो उनको कोई चीज़ खाने को दे गया। उन्होंने वह चीज़

खाई तो वह भी मज़ूब बन गए। अब वह एमबीबीएस डाक्टर बगैर अज़राबाद के सिर्फ़ एक पाजामा पहनने लग गए। हालत वह थी कि पाजामा हाथ में लेकर चलते फिरते थे। वह डाक्टर साहब एक हकीम साहब के पास आते जाते थे।

हज़रत ने फरमाया कि एक बार हम भी हकीम साहब से मिलने गए तो ऊपर से वह डाक्तर साहब भी आ गए। हकीम साहब ने डाक्तर साहब को देखकर फरमाया कि मैं जुरा मसलूफ़ हूँ, मिलने वाले बैठ गए हैं। इसलिए धोड़ी देर तरफ़ीफ़ रखें। उन्होंने इशारा किया ठीक है। उसके बाद वह हमारे पास ही बैठ गए। मैं हैरान था कि जब मैं उनकी तरफ देखता तो इधर उधर देखने लगते और जब मैं इधर उधर देखता तो फौरन भेजा चेहरा देखना शुरू कर देते। धोड़ी देर के बाद उन्होंने हकीम साहब के काग़ज़ों में से एक काग़ज़ उठाया और क़लम लेकर कुछ लिखकर भी लगे.
और लिखने भी लगे। जब मैंने उनकी गुनगुनाहट पर थोड़ी सी तकज्जेह दी तो मुझे महसूस हुआ कि वह अरबी का बहुत ही अजीब अशुआर पढ़ रहे हैं। समझ में नहीं आती थी, मगर उसकी सुर ऐसी थी कि उससे मैंने पहचाना लिया कि मुझबंद इलाही के अशुआर गुनगुना रहे हैं हालाँकि एमबीबीएस डाक्टर को अरबी से क्या वाता? यह बेचारे तो इट-मिट पड़ते हैं।

थोड़ी देर के बाद वह डाक्टर साहब उठे और इशारा किया कि अब मैं जाता हूँ। हकीम साहब ने कहा डाक्टर साहब क्या बात है आप इसने दिन से हमारे पास नहीं आए? डाक्टर साहब कहने लगे, "अब हम दाल हो गए हैं।" यह कहकर डाक्टर साहब चले गए, बाद में हकीम साहब ने सैयाद ज़ुल्फीकर हुसैन शाह रह० से अर्ज किया, क्या आपको पता चला कि यह क्या कह गए हैं? हज़रत ने फरमाया कि मैं तो नहीं समझ सका। हकीम साहब कहने लगे कि यह कह गए हैं "अब हम दाल हो गए हैं।" मतलब यह है कि अब मैं अब्दाल बन गया हूँ। सही बताने के बजाए कि हम अब्दाल हो गए हैं, उसने अब को पहले कहा और दाल को बाद में। हज़रत रह० फरमाते हैं कि मुझे भी हैरानी हुई कि बाक़ी बात तो ऐसी ही कर गया है लेकिन हकीम साहब ने इशारा समझ लिया।

फिर उसके बाद उन्होंने एक लैंड मंगवाया जो हसूफ को बड़ा करके दिखाता है। उसकी मदद से देखा कि तो मैं हैरान रह गया कि जाहिर तो नज़र आता था कि उन्होंने ऐसे ही निशान से बना दिए हैं लेकिन जब उसे बड़ा करके देखा तो पता चला कि अरबी का शेर इतना खूबसूरत लिखा हुआ था कि ऐसा तो कोई कातिव भी नहीं लिख सकता।
मज्जूब की एक ख्रास कैफियत

मज्जूब लोग कुदरत की तरफ से इतिजामी उपूर से मुतालिक ख्रास कामों पर तैनात होते हैं। मगर उनसे अधोम न कोई काम भी शरीर के खिलाफ शर्म नहीं होता। उनसे कलम उठा लिया जाता है। उनमें कभी-कभी इतनी होश ज़ुकर होती है कि कभी-कभी बातचीत कर लेते हैं जैसे जानवरों में अक्क तो नहीं होती मगर उन्हें अपने मालिक की या गैर की पहचान ज़ुकर होती है। क्या चीज़ खानी है और क्या चीज़ नहीं खानी, उसकी भी उन्हें पहचान होती है। आमतौर पर उनकी होश नहीं होता।

कामिल मज्जूब की पहचान

सैयद गौस अली रहौ ने दो मज्जूबों को देखा, किसी ज़ौलिम ने उनकी पकड़कर उनकी रानी पर अंगारे रख दिए। उनमें से जो कामिल था वह तल गया और जो कामिल न था उसने अंगारे को हटा दिया। इसलिए मज्जूबों में जो जितना कामिल होगा वह उतना ही होश वह में होगा। बेहोश से मुराद यह है कि उसे दुनिया की होश नहीं होती। वस वह एक ख्रास हाल में मगन नज़र आते हैं।

मजनून लोगों का जन्म में दाखिला

मजनून से भी मज्जूब की तरह शरीर का कलम उठा लिया जाता है। अल्लाह तबाला कुफ़ात के दिन मजनून लोगों को अपनी रहमत से जन्म में भेज देगे। उल्लम ने इसकी वजह लिखी है क्योंकि उसकी शक्त इसानों वाली होती है। इसलिए इसानियत
के एहतिराम की बजह से अल्लाह ताक़ला उनको जहन्नम के 
बजाए जन्तत अता फरमा देगे।
मेरे दोस्तो! अल्लाह ताक़ला एहतिराम इस्लामीत की बजह से 
कुछ बंदों को जहन्नम से घरा लेंगे तो जो लोग शरीरांत पर चलने 
की कोशश करेंगे तो अल्लाह ताक़ला उन पर अपनी मेहरबानी 
क्यों नहीं फरमाएँगे।

मज़ूबों के हैदराबांगेज़

वाकिफ़ आता
मज़ूब लोगों के वाकिफ़ आता भी बड़े अजीब व गरीब होते हैं।
उनको पढ़कर इस्लाम ईरान रह जाता है।

मज़ूब की दुआ के समरात
हकीम सनाई रहौ के वालिद महद्दूम साहब को एक मज़ूब 
ने कहा कि अल्लाह ताक़ला तुझे बेटा देगा जो मर्द होगा।
तिहाज़ा कुछ अरसे के बाद हकीम सनाई पैदा हुए। हकीम सनाई 
रहौ लड़कपन में अपने एक दोस्त उम्मान ख़ेरबाबी के साथ 
मिलकर खेला करते थे। एक दिन उन दोनों को एक मज़ूब 
कहने लगा काक (रोटी) और शोरवा लाओ। दोनों ने कहा 
अच्छा। उनके पास ऐसे नहीं थे इसलिए एक ने अपनी कोई 
चीज बेचकर रोटी ख़रीदी और दूसरे ने अपनी कोई चीज़ बेचकर 
शोरवा ख़रीदा और दोनों चीज़े मज़ूब के पास लाए। उसके 
ख़ाकर उन दोनों को दुआ दी। वे दोनों अपने बक्त के बड़े
नामवर लोग बने। उस्मान ख़ाराबादी से अल्लाह तालाला ने रूहानियत का काम लिया और हकीम सनाई रह० अपने वक्त के हकीम भी थे और शायर भी यहाँ तक कि अल्लाह इकबाल रह० ने भी उनके अश्व'आर में तज्ज्ञीन लिखी।

इन्हे अरबी रह० की एक मजूब से मुलाक़ात

इन्हे अरबी रह० ने एक मजूब को देखा कि वह जाहिर में नमाज भी पढ़ रहा था। उन्होंने उससे पूछा, मियाः क्या कर रहे हो? वह कहने लगा, मुझे तो पता ही नहीं, वही मुझे उठाता है और वही मुझे विठाता है। इन्हे अरबी ने अपनी किताब में इसको नक़्ल किया है।

ख़ाजा ऩिज़ामुद्दीन औलिया रह० की एक मजूब से मुलाक़ात

ख़ाजा ऩिज़ामुद्दीन रह० को जब सैलाफ़ुत मिली तो वह हज़रत ख़ाजा रसन रह० के मज़ार पर चालीस दिन तक मौतक़फ़ रहे। इसी दौरान उन्होंने फूलों की एक बेल देखी जो ताज़ी-ताज़ी लगाई गई थी। वह बेल कुछ दिनों में बढ़ी हो गई। एक दिन जब देखा कि फूल भी लग चुके हैं तो दुआ मांगी, रब्बे करीम! इन्हे दिनों में तो एक बेल पर भी फूल लग गए, मैं तेरी इबादत में यहाँ बैठा हूँ, ऐ अल्लाह! मेरे अंदर भी तक्ते के फूल लगा दे। उनकी दुआ ऐसी कुछ हुई कि चालीस दिन मुक़मल करके जव निकले तो रातें में एक मजूब से मुलाक़ात हुई। उसने तबज़ह दी और आपका मामला ही कुछ और बन गया।
नस्ल दर नस्ल बादशाहत

सुबक्तगीन गुजरनी के बादशाह सुलतान महमूद गुजरनवी के बालिद थे। वह फौज में एक आम सिपाही थे। उनके घर में एक अल्लाह वाले आए। वह अल्लाह वाले की मेहमान नवाजी करते, मस्जिद जाते तो उनके अदब की वजह से कुछ कदम पीछे चलते। अल्लाह ताज़ाला ने ऐसा निज़ाम बना दिया कि वह सिपाही से जरूरत बने, फिर वक़्त के बादशाह बन गए। जितने कदम उस बुधुर्ग से पीछे चलते थे अल्लाह ताज़ाला ने उनकी उतनी ही नस्लों में बादशाहत चला दी।

मज़ूब ने हाथी को गिरा दिया

एक बार सुबक्तगीन के हाथी किसी रास्ते पर जा रहे थे। एक मज़ूब हाथी के क्ष्रीव से गुजरने लगा। रास्ता धौड़ा होने की वजह से वह मज़ूब दीवार और हाथी के दरवाज़ा आ गया। मज़ूब ने हाथी को भस्म हाथ लगा दिया और कहा पीछे हट। इतना बड़ा हाथी वहीं गिर गया।

चाँद को प्याले में छिपाना

हज़रत शाह बलीउल्लाह मुहम्मद देहलवी शहीद के बालिद शाह अबुर्णाम नवलंबंद निस्तल रखते थे मगर अपने आपको छिपाते थे। एक बार सोचा कि मैं जाहिर में मुजाहिदीन वाला लिबास क्यों न पहने लो। तिहाजा मुजाहिदीन वाली वर्दी पहनकर फिरते रहते। एक बार एक मज़ूब ने देख लिया तो कहने लगे, देखो! यह चाँद को प्याले के नीचे छिपाए फिरता है।
एक मज्जूब्बा का पद्धति करने का वाकिया

ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज़दवानी रहू इमाम मालिक रहू की औलाद में से थे और हमारे सिल्सिला-ए-आलिया नक़्शबंदिया के बड़े जुजूर्ग थे। उनका घर बुखारा से अटूबुरा हिलोमीटर के फोटो पर गुज़दवानी में था। एक बार कहीं जा रहे थे कि एक मज्जूबा ने देख लिया। उसके जिसं पर पूरे कपड़े भी नहीं थे। जैसे ही उन्हें देखा उसी बक्का उसने एक तन्दूर में छलांग लगा दी हालाँकि जबने के बाद उसने अंगारे बौजूड़े थे। जब ख्वाजा अब्दुल खालिक गुज़दवानी रहू चले तो गए तो वह तन्दूर से बाहर निकली। लोगों ने पूछा कि तो बैठे तो नंगी पिटती रहती है और उनके देखकर तूने तन्दूर में छलांग लगा दी। वह कहने लगी हैं वही मुहत्त के बाद एक भर नज़र आया। भर से पर्व करने की लक्म है दंगरों और जानवरों से तो पर्व करने की लक्म नहीं दिया गया।

बकरियों की हिस्साज करने वाले भेड़िए

हज़रत अक़रब्स धानवी रहू के नाना ने एक मज्जूब को देखा कि भेड़िए उसकी बकरियों की हिस्साज पर तैयार हैं। उन्होंने पूछा मियाँ! भेड़िए जो जानवरों की खा जाती हैं, तेरी बकरियों को क्यों नहीं खाते? उसने जवाब दिया कि मे अपने मीला का काम करने पर लगा हुआ हूँ तो उसके भेड़ियों मेरी बकरियों की हिस्साज में लगे हुए हैं।

ख्वाजा बाक़ी बिल्लाह रहू को एक मज्जूब की नसीहत

ख्वाजा बाक़ी बिल्लाह रहू को एक मज्जूब मिला। हज़रत
रहॉ को उन दिनों इल्म हासिल करने का शीक्षा था। पास से जुड़े तो एक मज़ूब ने एक शेर पढ़ा। कहने लगा—

तर्जुमा : तुझे सफ्य कंज़ व हदाया पढ़ने से ख़ुदा नहीं मिलेगा।

दिल के सिपारे को पढ़ ले कि इससे बेहतर कोई किताब नहीं है।

जबकि मज़ूब को पता न था कि वह कौन है।

तपस्सीरे दिल

हज़रत मुश्तिद आलम रहॉ फरमाते थे कि मैं दर्शे कुरआन के वक़्त कुरआन मज़ीद की तपस्सीर करता था तो बाज़ उल्लम हज़रत सिद्दीकी रहॉ से आकर पूछते थे कि हाफिज़ु गुलाम हवीब साहब कौनसी तपस्सीर पढ़ते हैं? हज़रत सिद्दीकी फरमाते कि वह तपस्सीरे दिल पढ़ते हैं जिसकी बजह से अल्लाह तज़ाला उन पर उल्लम व मआरिफ़ की बारिश बरसाते हैं।

दो मज़ूबों की इतिज़ामी कामों पर तैनाती

कुछ मज़ूब ऐसे भी होते हैं जो इतिज़ामी कामों पर तैनात होते हैं। हज़रत शाह अबुदुल अजीज़ साहब रहॉ के पास एक आदमी आया। उसने नहा हज़रत! आज़ाद तो हलाल बहुत ही ढ़ीले हो गए हैं, कोई नुम्बर व नक़्क और कानून नहीं है, सब लोग मन-मर्जी करते फिरते हैं। हज़रत रहॉ ने फरमाया, हाँ भाई जो बंडा इतिज़ामी कामों पर तैनात हुआ है वह तबियत के तिलाज़ से बहुत ही दीला है। उसने पूछा हज़रत वह कौन है? हज़रत रहॉ ने फरमाया, वह जामा महिज़द के सामने ख़बूजे बेच रहा है। वह आदमी गया तो देखा कि एक सदा सा आदमी बैठा हुआ ख़बूजे बेच रहा है। उसने कहा कि मुझे ख़बूजे ख़रीदने हैं। वह कहने
लगा ख़रीद ले। उस आदमी ने कहा चखने के बाद ख़रीदेंगा। वह कहने लगा चख लो। अब उसने एक ख़रीदा काफी, चखा और कहने लगा कि यह तो मुझे पसंद नहीं है, दूसरा काफी, कहा पसंद नहीं है। यहां तक कि सारे ख़रीदे काटकर चखे और कहा मुझे तो कोई भी ख़रीदा पसंद नहीं आया। उसने कहा अच्छा अगर कोई पसंद नहीं आया तो चले जाओ। वह कहने लगा बिल्कुल ठीक, निज़ाम भी ऐसा ही है। कुछ दिन गुज़रे तो निज़ाम ऐसा ठीक हुआ कि हुक़काम सज्जा हो गई। वह फिर कहने लगा निज़ाम बहुत सज्जा हो चुका है। हज़रत ने फरमाया, मियां आज़कल बड़ा सज्जा बंदा आया हुआ है। उसने पूछा हज़रत! वह कौन है? हों वह जो फूलँ जगह मशक़ख़ से पानी पिलाता है। इसने कहा अच्छा जाकर देखता हूं। गर्म का मीठास था। वह आदमी गया तो देखा कि एक आदमी दोपहर के बक़्र पानी पिलाने के लिए खड़ा है। उसने कहा जी पानी पिला दें। उसने पियाला भरकर पानी दे दिया। अब इस आदमी ने पियाले में पानी को देखा तो कहने लगा कि यह पानी ठीक नहीं है और यह कहकर उसने पानी उंडेल दिया और कहा कि पियाले में और पानी डाल दो। वह कहने लगा पहले इस पानी के बैसे अदा कररी जो फेंका है फिर दूसरे की बात करना। वह दिल ही दिल में कहने लगा वाक़ई बात ठीक है कि आज़कल निज़ाम ऐसा ही है।

औरंगजेब आलमगीर रह० को तड़क

व ताज मिलने का वाक़िया

अगर हज़रत अकबर धानवी रह० जैसे मुहिमक आतिम और फ़कीह कोई वाक़िया लिखते हैं तो वह हमारे लिए सनद होता है।
यह अपनी किताब में एक वाकिफा लिखते हैं कि दाराशिकोह और ओरंगजेब आलमगीर रह० दोनों भाई थे। उनमें आपस में तख्ता की कशमश थी। उन दोनों में से हर एक की यही खारिज थी कि तख्ता व ताज मुझे मिले। दाराशिकोह चाहता था कि मेरा हक्क बनता है, लिहाजा बादशाहत मुझे मिलनी चाहिए जबकि ओरंगजेब आलमगीर रह० नशाइख की सोहबत पा चुके थे। इसलिए वह चाहते थे कि अगर मुझे सलामत मिल जाए तो मैं बिदायत का ख़ालमा करके शरीर बाहर उठाओँगा।

दाराशिकोह की किसी ने बताया कि फूला जगह पर एक बुजुर्ग रहते हैं जिनकी दुआ कुबूल होती है, उनसे हुआ कहावा। जब वह यहाँ गए तो उन बुजुर्ग ने खड़े होकर मुसाफ़ा किया और बैठने के लिए अपना मुसल्ला पेश किया। दाराशिकोह ने अदब की बजह से कहा, नहीं तो, मैं इस काबिल कहाँ कि इस जगह बैठ लूं। अगर उन्होंने बुजुर्ग की सोहबत उठाई होती तो समझते कि कॉफ़े कि हुकम का दर्जा अदब से ज्यादा होता है। उन बुजुर्ग ने फिर कहा यहाँ बैठ जाओ। मगर उसने दूसरी बार भी यही कहा, हज़रत! मैं इस काबिल कहाँ। उन्होंने दूसरी बार इसार किया कि बैठिए। लेकिन कहाँ लगा, जी नहीं आप ही बैठिए। जब वे बैठ गए तो दाराशिकोह भी उनके सामने बैठा। उनकी आपस में बातचीत होती रही। फिर जब उन्होंने लगा तो कहा, हज़रत! दुआ फ़र्माये कि अल्लाह तज़ाक़त मुझे तख्ता व ताज अता फ़र्माये। बुजुर्ग फ़र्माने के बाद, वह ने मुसल्ला पेश किया था, आप खुद ही नहीं बैठे तो क्या करें अब यक्त गुज़र युक्त है। उसे बहुत ज्यादा अफसोस हुआ। अब उसने सोचा कि
कहीं औरंगजेब आलमगीर रहो को पता न चल जाए। लिहाजा उसने इस बात को ढ़ियाए रखा।

अल्लाह तअला की शान देखिए कि कुछ अरसे के बाद औरंगजेब आलमगीर रहो को भी किसी ने बता दिया कि फला जगह पर एक अल्लाह के मक्कूल बुजुर्ग रहते हैं, आप उनके पास जाएं। औरंगजेब आलमगीर रहो तो वैसे ही अल्लाह वालों के सोहबत पाए और साहिबें निस्लत थे। वह भी वहाँ पहुँच गए। जब वहाँ पहुँचे तो उन बुजुर्ग ने खड़े होकर उनका इस्तिक्बाल किया और कहा, जी आइए तश्शीफ लाईए और बैठिए। उन्होंने अदब की वजह से कहा, हजारत! मैं इस काबिल कहाँ? उन्होंने फरमाए, नहीं, नहीं बैठो। जब दोबारा कहा बैठो तो वह मुसल्ले पर बैठ गए। वातचीत होती रही। जब उठने लगे तो उन्होंने कहा, मेरा दिल चाहता है कि शरीफ व सुन्नत को कायम करने के लिए काम करूँ, इसलिए दुआ फरमाएं कि अल्लाह तअला मुझे तख्ता व ताज अता फरमा दें। वह बुजुर्ग फरमाने लगे, भई तख्ता तो हम तुझे पहले ही दे चुके हैं। जब उन्होंने तख्ता का नाम लिया तो पहचान गए कि अल्लाह वालों की जबान से निकला हुआ एक-एक बोल मायने रखता है इसलिए कहने लगे कि हजारत तख्ता तो मिल गया और क्या ताज नहीं मिलेगा? फरमाएं कि ताज का निजाम तो आपको बुजूँ करवाने वाले के पास है।

औरंगजेब आलमगीर रहो को फौरन याद आया कि हाँ शहजाता होने की वजह से महल में मेरा एक हादिम है, वह वाकई नेक आदमी है, मिटा हुआ है और वही मुझे बुजूँ करवाता है। मुझे तो पता ही न था। लिहाजा वापस आकर सोच में पड़
गए कि मैं उनसे अपने सर पर ताज कैसे रखवाएं। क्योंकि सोहबत पाए हुए थे इसलिए समझ गए कि बे माँके कहना तो अदब के खिलाफ होगा।

वह अमामा तो बांधते ही थे। अगली दफ्ता जब बुजूरू किया तो अपने दोनों हाथों जान बूझकर मसूफ कर लिया और उन्हें कहा कि यह अमामा मेरे सर पर रख दीजिए। वह कहने लगे मैं इस काबिल कहाँ कि मेरे हाथ आपके सर तक पहुँचे। वह फर्माने लगे, नहीं, नहीं अमामा रख दीजिए। थोड़ी देर तक उन्होंने इंकार किया लेकिन ओरंजेज़ब आलमगीर रहौ जिद्दु द करते रहे। आखिर में उन्होंने अमामा उठाकर ओरंजेज़ब आलमगीर रहौ के सर पर रख दिया। और उस बुजूर को बुरा भता कहना शुरू की दिया कि उसने मेरा राज खोल दिया। इस तरह का नियाम अल्लाह तलब ने अपने बंदों के सुपुर्द किया होता है। उनके पहचानना मुश्किल होता है। उनका पता भी नहीं चलता। बातनी फ़िरासत और वसीरत रखने वाले तो उनको पहचानते हैं हर बंदा नहीं पहचानता।

सरापा तसलीम व रज़ा

इस बारे में आखिरी सवाल यह पैदा होता है कि जब उनके जिससे इस किस्म के काम तय होते हैं तो पता क्या हमें उन्हीं के पीछे भागना चाहिए ताकि सारे काम होते रहें। इसका जवाब यह है कि ‘नहीं।’ क्योंकि वह हर काम में हुक्मे इलाही के पारंद होते हैं। बाल बरबार भी कोई काम अपनी पर्दे के मुताबिक नहीं करते। सरापा तसलीम व रज़ा होते हैं बल्कि मजजूब को क्या उन्हें
हज़रत मौलाना याकूब साहब नानोतवी रह०
में तसलीम व रज़ा

हज़रत मौलाना याकूब साहब नानोतवी रह० से किसी ने कहा, हज़रत! अंग्रेज की हिन्दुस्तान पर पकड़ मजबूत होती जा रही है। क्या ये औरिया कुछ भी नहीं कर सकते? मौलाना याकूब साहब ने फराघया, मियाँ! एक तस्वीर धूमाने की बात है मगर क्या करें ऊपर से ऐसा करने की इजाज़त नहीं है।

ख़ाज़ा मुहिद्दीन अंतार रह० में तसलीम व रज़ा

जब सातवीं सदी हिज़री में तातारी फितना उठा उस वक़्त "तज़ीरतुल औलिया" के मुसलमान ख़ाज़ा मुहिद्दीन अंतार रह० जिंदा थे। उन्हें पता चला कि तातारी लश्कर उनके शहर की तरफ़ आ रहा है। जिस वक़्त इतिला मिली उस वक़्त वह प्याले में कुछ पी रहे थे। उन्होंने उस प्याले की दूसरी तरफ़ घुमा दिया। जब प्याले की घुमाया तो लश्कर रास्ता भूल गया। पूरे का चूहा लश्कर किसी और सिमट में चला गया। एक साल इसी तरह गुज़र गया।

एक साल बाद दोबारा पता चला कि तातारी लश्कर उस शहर की तरफ़ आ रहा है। उन्होंने फिर इरादा किया कि मैं कुछ करूं मगर इलाहम हुआ कि प्याले! मजें तो हमारी चलती है, ये कुझा व
कब्र के फैसले हैं जो आपको तसलीम करना पड़ेगे। इसलिए ख़ामोश होकर बैठ गए कि ऐ अल्लाह! जब तेरी रजा बूँझी है, जब तेरी कुज्जा व कब्र के फैसले ऐसे ही हैं तो हम कट जाएंगे। फिर यह नतीजा निकला कि वह तातारी लश्कर आया, उन्होंने शहर फ़तेह किया और लोगों का क़ल्ले आम किया। ख़वाजा फौरौद्रीन अत्तार रह० भी उन्हीं शहीद होने वाले में से थे।

मौलाना ताजमहमूढ़ अमरोही रह० में तसलीम व रज़ा

जब रेशमी रुमाल की तहरीक चल रही थी। उस वक़्त ओलिया किराम में अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ बड़ा गुस्सा था। मौलाना ताज महमूढ़ अमरोही रह० एक मौक़े पर बात करते हुए बड़े जलाल में आ गए और फरसाने लगे कि जी तो पूँ चाहता है कि एडवर्ड के महल में मुस्कर अपने हाथों से उसका गला दबा दूँ मगर क्या करूँ मुझे ऊपर से ऐसा करने की इजाज़त नहीं है।

ख़वाजा अबूलमालिक सिद्दीकी रह०
में तसलीम व रज़ा

ख़वाजा अबूलमालिक सिद्दीकी रह० एक महफ़िल में फरसाने लगे कि अगर में एक तवज्ज़ह करूँ तो पूँ रोज़े को तड़पाकर रख दूँ मगर क्या करूँ मुझे ऊपर से ऐसा करने की इजाज़त नहीं है।

ख़वाजा उबैदुल्लाह अहरार रह० में तसलीम व रज़ा

एक बार ख़वाजा उबैदुल्लाह अहरार रह० के सामने बताया
असल करने वाला

मेरे दोस्तो! जब मर्जी मौला की चलनी है तो मज्झूबों के पीछे भागने के बजाए क्यों न हम अपने मौला की मर्जी को अपने हक़ में करने की कोशिश कर ले। यदि तभी कि जब हम अपने रब को मनाने की कोशिश करेंगे तो अल्लाह तआला अपने कारिन्दों में से किसी कारिन्दे को हमें पैश पहुंचाने के लिए मुतवज्जेह फरमा देंगे। जाहिर में तो उस कारिन्दे के जरिए काम होता हुआ नज़र आएगा मगर हकीकत में मर्जी उसी की चलेगी—

हुसन का इतिज़ाम होता है
इश्क का खूँही नाम होता है

जलवे दिखाने का इतिज़ाम तो खुद हुसन ने किया होता है और नाम इश्क का लगा देते हैं। अल्लाह तआला हमें भी अपनी जान के जमाल का मुशाहिदा करने की तौफीक नसीब फरमा दे और रोज़े महशार हमें अपने पंदीदा बंदों में शामिल फरमा दे।

(वाह! दुहावों अन हमद लाल हरब उल्लुम्लीन)

* * *
राम व हथा

الحمد لله وکفی وسلام علی عباده الذين اصطفائل اما بعد
فاعوذ بالله من الشيطان الرجيم 0 بسم الله الرحمن الرحيم 0
لقد كان لكم في رسول الله اسوة حسنة. وقائلا رسول الله صلى الله عليه وسلم
الحياء شعبة من الأئمة أو كما قال عليه الصلاة والسلام. سبحن ربك رب
العزة عما يصفون 0 وسلام على المرسلين 0 والحمد لله رب العالمين 0

सीरते तैय्यबा के मुख़्त़लिफ़ पहलू

रब्बीउल अवल के मुबारक महीने में नबी अकरम سلال्लहु
अलैहि واسلام की सीरते तैय्यबा के बारे में महफिलें की जाती
हैं। किसी महफिल में बिलादत वासआदत की बात होती है, किसी
महफिल में इश्क सल्लल्लहु अलैहि واسلام के उनवान पर
बात होती है, किसी महफिल में इतिवाब सुनन्त की बात होती है,
किसी महफिल में उम्मत के बड़े और इश्के رسول سلال्लल्लहु
अलैहि واسلام के उनवान पर बातचीत होती है। इस तरह सीरत
तैय्यबा को उजागर करने के अलग-अलग अंदाज हैं।

عباراتنا شنی و حسک ایند و کل شيء الى ذات الجمال يشير

इवारत मुख़्त़लिफ़, मज़ौून सबका एक होता है और ये सब
चीज़ें एक ही हस्ती के हुसन व جمال की तरफ इशारा करती हैं।
हया ईमान का शोबा

नवी अकरम सल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक हदीस मुबारक की तिलावत की गई। इशाद फरमाना था "शुक्र को ईमान का शोबा है।"

मोमिन हवादार होता है, उसकी जिंदगी पाकीजा होती है, अफीफ जिंदगी होती है, पाकदामनी वाली जिंदगी होती है। इसी वजह से अल्लाह रब्बुलहज्जुत की उस पर ख़ास रहमतें नाजील होती हैं। गोया नवी अकरम सल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हया की इतनी तालीम दी कि उसे ईमान का शोबा कुरार दे दिया।

नवी अकरम सल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम की शर्म व हया का आलम

हज़ुरत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि में जब कभी नवी अकरम सल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक आँखों को देखती थीं तो मुझे आपकी आँखों में वह हया नज़र आती थी। वह मेरे सोच प्रति कुंवारी लड़कियों में भी नहीं हुआ करती थी।

गैरत का मक़ाम

हदीस पाक में आया है:

"لا إيمان لمن لا غيرة لله"

उसका ईमान ही नहीं जिसके आंदर गैरत नहीं।

गोया मोमिन ग़यूर होता है। ग़यूर का क्या मतलब? ग़यूर का मतलब यह है कि वह वेह्याई और फहश कामों से दूर रहता
ब्रह्माता फकीर-५

है। ऐसा इस्लाम गुनाहों से पाक ऐसी ज़िंदगी गुजारता है कि बैठ उसका ओढ़ना बिश्वीना बन जाती है। इसलिए हमीं ये आया है कि ईसाः तललानु अलाहि वस्लाम ने ईशाद फरमाया व (الله اكبر) कि आदम अलेहिस्सलाम की जितनी औळाड है वह उम्रों से सबसे ज्यादा ग़ैरतमंद हैं (وَاللهِ اكبر) और अल्लाह तालाला मुझसे भी ज्यादा ग़ैरत वाला है। इसलिए अल्लाह तालाला ग़ैरत वाली जिंदगी को पसंद फ़रमाते हैं।

इस्लामी शरीअत का हस्त

इस चीज को शरीअत ने पसंद किया कि इस्लाम पाकदानी की ज़िंदगी गुजारे और अक्राकी गुनाहों से बचें। इस्लाम ने इस्फ़ुल्त व पाकदानी का ऐसा सबक़ दिया है कि दुनिया के किसी मज़बूत ने ऐसा सबक़ नहीं दिया। अल्लाह तालाला ने ईशाद फरमाया:

(قول للمؤمنين بغضِّا من أبيصرهم)

ईस्लाम वालों से कह दीजिए कि वे अपनी निगाहों को नीचा रखें।

शरीअत इस्लामी का यह हस्त है कि मर्द को अपनी ज़म्म तालीम दी और औरत को अपनी ज़म्म तालीम दी ताकि वे दोनों गुनाहों से बच सकें। औरत से कहा कि तुम शरीए ज़ुरहर के बीच अपने घर से न निकलो और अगर निकलना भी हो तो अपने जिस्त को पर्दें में छिपाओ। इसके अलावा हुक्म दिया कि रास्तों के बीच में चलने के बजाए किनारों पर चलो। तुम्हारे चलना भी इस
अंदाज़ का हो कि कोई पहचान न सके कि तुम्हारी जवानी की उपर है। अगर किसी तकरीब में भी आना-जाना पड़े तो ऐसी खुशबू इस्तेमाल न करें जो फैलने वाली हो। हदीस पाक में आया है कि औरत के लिए बेहतरीन खुशबू वह है जिसका रंग ज्यादा हो मगर फैलती कम हो। इसके अलावा फरमाया कि ऐसा लिबास मत पहनकर निकलो जिसको देखकर गैर-महरम लोगों की निगाहें तुम पर पड़ें।

वेपर्दा औरत का अंजाम

वेपर्दा बाहर निकलने वाली औरत को सख़्ती से मना किया गया है।`रब वासी क़सीम बुत्रुबुत्रु क़सीम` वे औरतें जो पर्दा होकर अपने से घरों से बाहर निकलेंगी अल्लाह ताआला रोज़े महज़ उनका यह हज़ुर फरमाएंगे कि उनको नंगा करके जहन्नम में धक्का दिलवा देंगे। वह किस लिए? इसलिए कि उसने हया की चादर को खुद उतार दिया था।

यमन से मदीना तक शर्म व हया का आलम

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम में हया वाली सिक्के ऐसी कृत-कृतकर भर दी थी कि उनकी निगाहें गैर की तरफ उठती ही नहीं थीं। इसलिए हज़ुरत उमर बिन ख़त्ताब रज़िय़त्ताल्लाहु अल्लू के दौर में एक औरत यमन से चली और मदीना आकर आई। उसने महीनों का सफर किया, वह रात को भी कहीं ठहरती होगी, उसके पास मल भी था, उसे जान और अपनी इज़ज़त व नामूस का भी ख़तरा था। हज़ुरत उमर रज़िय़त्ताल्लाहु
अह्ं को पता चला तो आपने उन्हें बुलवाया। पहले यह पूछा कि अकेले क्यों आई हो? उसके कोई उम्र पेश किया। फिर आपने एक सवाल पूछा कि तुम जवान उम्र औरत हो, तुमने अकेले सफर किया, आबादियों से भी गुजरी, बिरानों से भी गुजरी, तुम्हें जान व माल व इज्जत व आबरु का भी खतरा था। यह बताओ तुमने यमन से मदिना तक के लोगों को किस हाल में पाया? उसने जवाब दिया कि ऐ अमीरुल मोमिन! मैं यमन से चली और मदिना तक पहुँची और मैंने रास्ते के सब लोगों को ऐसे पाया कि जैसा ये सब के सब एक मां-बाप की औलाद होते हैं। उन सबकी निगाहें इतनी पाकीज़ थीं कि जवान उम्र औरत सैकड़ों मील का सफर करती थी और उसे अपनी इज्जत व आबरु का कोई खतरा नहीं हुआ करता था।

बातिन पर मेहनत करने की ज़रूरत

यह दीने इस्लाम का हुस्न है कि वह इस्तान के अंदर से शहदों, ख्यातियों और शेतानियत को निकालकर रख देता है। जब कोई बंदा यह देखे कि मेरी निगाह पाक नहीं है, मेरे दिल में तूफान उठते हैं, मेरे दिल में तमन्नाएं जन्म लेती हैं और गुलाब ख्यातियाँ परेशान किए रखते हैं तो यह समझ ले कि अपनी भातिन पर माई है और मेरा भातिन बहुत विगड़ा हुआ है। हमारी निगाह की नापाकी और नामुसलमानी इस बात की दलील होती है कि हमें अपने बातिन पर मेहनत करने की ज़रूरत है। जिस बंदे ने अपने बातिन पर मेहनत की अलाला तत्अला ने उसे पाकीज़ जिंदगी अता की।
आजकल की तबियतों की हालत

आजकल के नौजवान अक्सर इस मामले में परेशान रहते हैं। उसकी दो चुनियादी रजहें हैं। एक तो वे पर्दी सर्दी जा रही है और दूसरा यह कि वे अपने ऊपर मेहनत नहीं करते इसलिए आग की तरह होते हैं। हजारों अक्सर धारी रहते ने लिखा है कि आम आदमी का नफस ऐसा होता है जैसे मानव ही तीनों होती है कि आग उसमें पहले ही भरी होती है लिंग। रा द्रव्य की तरह होती है, रण लगी और आग जली। आजकल की तबियतों का हाल ऐसा ही है। खावासत और ज्ञान के ऊपर ही भरी होती है। वस गुना का मोक्ता भिलां और इंसान के अंदर से यह मान्यता हो जाती हो। यह चीज़ हमारे लिए खारिज है इसलिए हमें अपने ऊपर मेहनत करनी है ताकि हमारी निगाह की नामुसलमानी हो जाए। सच्ची वात अर्ज करते कि आजकल हमारी निगाहें शिकारी कुत्तों की तरह दूसरों पर पड़ रही होती हैं। निघर भी निगाहें उठती हैं इस सिरे होती हैं।

बातिनी बीमारियों की अलामत

पाकिस्तान में निगाहें सैकड़ों में से कोई एक होती होंगी। इस बारे में उन का कोई फर्क नहीं। आज जनवान की निगाह भी वैसी और बुढ़ों की निगाह भी वैसी बनी हुई है। पढ़े-लिखे की निगाह और अनपढ़ की निगाह में कोई फर्क नहीं है। जब बातिन पर मेहनत नहीं की होती तो फिर नमाज़ पढ़ने के बाद बाहर निकलने लगे। जब कदम देख फासले पर निगाहें फिर इतने-उधर दूर जा देंगी। यह चीज़ बातिनी बीमारियों की निशानी होती है। और इसी के
इलाज के लिए मशाइख की सोहबत में आना होता है। जैसे इस्लाम
को टीबी की बीमारी हो जाए या दिल की तो वह हस्पताल में
डाक्टर की तरफ रूजू करता है। इसी तरह यह यातिनी बीमारी
इत्यादी की निशानी है कि हमारा कोई स्थानी सह्य बहुत बड़ा रहा
है और हमें अब किसी न किसी स्थानी इलाज करने वाले की
ज़रूरत है। जब इस्लाम कमिटी के पास आकर अपनी निगाह की
नामुस्लमानी दूर करवाने की कोशिश करता है तो अल्लाह तो
उन हज़ारों की सोहबत में आने पर इस्लाम को फ़ाकीज़ा जिंदगी
अता फ़रमा देते हैं और उसकी निगाह मुस्लिम बन जाती है।

जब से कह भी दिया ला इलाहा तो क्या हासिल
दिल और निगाह मुस्लिम नहीं तो कुछ भी नहीं

मोमिन की मिसाल

गौर कीजिए कि अगर आदमी के लिए फाँसी का हुक्म हो
चुका हो और वह काल कोठ्री में बंद हो तो क्या वह इसे तनहाई
में गुनाहों के बारे में सोचेगा? जिस आदमी को यक़ीन हो कि कल
मुझे फाँसी मिलनी है, तनहाई और अंधेरे के बावजूद उसका ज़हन
गुनाह की तरफ नहीं जाएगा। उसके दिल पर गुम सबार होगा।
उसकी पता है कि मेरे लिए आज मौत का फ़ैसला हो चुका है।
मोमिन की मिसाल बिन्दुकुल इसी तरह होती है कि उसे अपनी
मौत का यक़ीन होता है कि आनी हे मगर उसे पता नहीं होता कि
वह कब आनी है। इसलिए इसकी मिसाल काल कोठ्री के उस
मुजलिम की तरह होती है। इसलिए फ़रमाया सबज़ी मानदेखीन
अनाम (الدرب المساجد الموجم) कि दुनिया मोमिन के लिए कैदीहोने की तरह है। उसको नहीं
पता होता कि किस बुद्धि मौत आएगी और इस्लाम का दरवाज़ा
खटखटा दे। हमें क्या पता है कि हम यहाँ बैठे हैं और मौत चलते-चलते हमारे पर की दहलीज़ पर आ चुकी हो।

मौत कब आएगी?

नवी अकरम सल्ल्लाल्हु अलैहि वसल्लाम ने अपने यारों से पूछा, मौत के बारे में क्या जानते हों? किसी ने अर्ज किया, ऐसे अल्लाह के रसूल सल्ल्लाल्हु अलैहि वसल्लाम! सुबह क्या होती है तो मुझे यकीन नहीं होता कि रत्न भी आएगी या नहीं आएगी? दूसरे ने कहा, ऐ अल्लाह के नवी! मैं चार रक्षात की नीयत बांधता हूँ तो मुझे यकीन नहीं होता कि मैं पूरी भी कर सकूंगा या नहीं। नवी अकरम सल्ल्लाल्हु अलैहि वसल्लाम ने इर्षाद फ़ौरमाया, मेरा यह हाल है कि जैसे नमाज़ी नमाज़ पढ़ रहा हो और उसने एक तरफ सलाम फेर दिया हो उसे यह भी नहीं पता होता कि अब में दूसरी तरफ सलाम फेर भी भड़कूंगा या नहीं। यानी ज़िज़दी के बारे में इतना भी यकीन नहीं। जिन हज़ारात के दिलों में यह ध्यान पैदा हो जाता है फिर अल्लाह ताआला उनकी ज़िज़दी सुन्नत और शरीर के मुताबिक बना दिया करते हैं।

इमाम आज़म अबू हानीफा रह० में शर्म व हया

हम अपने असलाफ की ज़िज़दियों को देखें तो यह चीज़ हमें उनमें अजीब व ग़रीब नज़र आती हैं। इमाम आज़म अबु हानीफा रह० एक बार ताश्रीफ़ ले जा रहे थे। एक जगह एक आदमी हमाम से नहाकर निकला तो उसने ऐसा तहबद बांधा हुआ था कि उसके घुटनों के ऊपर था। यानी जिस्म का वह हिस्सा जो पर्दे के लिए छिपना ज़रूरी है वह नंगा था तो आपने अपनी आँखों को
बंद कर लिया। वह आदमी करीब आया और कहने लगा, ऐ
नौसान! आप कब से अंधे हो गए? आपने फर्माया, जब से तुझे
से हया रुक्सत हुई तब से मैं अंधा हो गया हूँ।

एक औरत की पाकदामनी से क़ृतसाली ख़त्म

हजरत शेख अबुदुल्ला मुहम्मद रहॉ एक अजीब
वात लिखते हैं कि जिस इसान की जिंदगी पाकदामनी की जिंदगी
होगी अल्लाह तबाला उस इसान की दुआओं को भी रद्द नहीं
फर्माया करते। उसके बाद उन्होंने एक बाकीआ नकल किया।
फर्माते हैं कि देहली में एक दफ़ा कहत था। बारिश नहीं थी
थी। लोग परेशान, जानबर परेशान, चर्चींदे परिवत्र परेशान, न सबज़ा
था न पानी था, हर तरफ हुआ ही हुआ नज़र आती थी। इस
परेशानी के आलम में लोग उम्मत की ख़िदमत में आए कि अप
हमारे लिए कोई दुआ कीजिए। उन्होंने नमाज़ इतिस्का के लिए
शहर के सभी लोगों को बुलाया। छोटे-बड़े, मर्द व औरत सब इकड़े
हुए। उन्होंने नमाज़ अदा की और अल्लाह तबाला से रो-रो कर
दुआएं मांगते दिन गुज़र गया मगर क़बूलियत के कोई आसार
ज़ाहिर नहीं हो रहे थे।

जब असूर का वक़्त हुआ तो देखा कि एक सवारी पर कोई
सवार है और एक नौजवान आदमी उस सवारी की नकेल
फ़क़ड़कर जा रहा है। वह करीब से गुज़र तो रुका। उसने आकर
पूछ कि लोग क्यों जमा हैं? बताया गया कि यह लोग अल्लाह
तबाला से उसकी रहमत की दुआ मांग रहे हैं मगर क़बूलियत के
कोई आसार ज़ाहिर नहीं हो रहे हैं। वह कहने लगा, अच्छा में
दुआ मांगता हूँ। वह आदमी सवारी के तरफ़ गया और वहाँ जाकर
पता नहीं उसने क्या बात कही कि थांड़ी देश के बाद आसमान पर वापस आ गए और सब ने देखा कि छम-छम वारिश वर्सने लगी। सब हैरान थे। जिन उल्मा को उस लड़के की बात का पता था वह उसके पीछे गए कि हम पूछे कि इस बात में क्या राज़ था? जब उसमें जाकर पूछा कि अल्लाह तुम्हारे को यह रहमत कैसे आई? तो वह कहने लगा कि इस सवारी पर मेरी पाँ सवार थी। उन्होंने पारसी जिंदगी गुज़ारी, पाकशामी वानी जिंदगी गुज़ारी, यह अफ़सना जिंदगी गुज़ारने वाली अगर नहीं। जब मुझे पता चला कि आप की दुआ कुबूल नहीं हो रही है तो मैं उनके पास आया और उनकी चादर का कोना पकड़कर दुआ मांगी कि ऐं अल्लाह! में उस पाँ का बेटा हूँ जिसमें पाकशामी की जिंदगी गुज़ारी। ऐं अल्लाह! अगर आप की यह अपने कुबूल है तो आप रहमत की वारिश अता फरमा दीजिए। अभी दुआ मांगी ही थी कि परवर्दिगार ने रहमत की वारिश अता फरमा ढी, सुहाना अल्लाह।

शर्म व हया से कारोबारी परेशानी का ख़ात्मा

अज़क़ल अससर लोगों को रिज़क की परेशानी होती है। इस तीसरा वंदा यह कहेगा कि या तो जिन का असर है या कारे हिल्म का असर है। रहते हैं कि पता नहीं किसी ने बांधा हुआ है। अज़ीज़ व गरीब जिंदगियाँ हैं। यह नहीं डेरेते कि यह हमारे आमाल शरीरत व सुन्नत के मुलाजिम हैं या ख़िलाफ़ हैं। हमःक़ृत यह है कि हमारी व आमालियाँ ने हमें बांधा हुआ होता है। हमारी व आमालियाँ की वजह से रिज़क बंधा हुआ होता है और अल्लाह तुम्हारे ने इस्मान को परेशान किया हुआ होता है। इसलिए अपने आमाल को संवारकर जिंदगियाँ को पारीज़ा बनाने
की जुलूस तैयार है ताकि अल्लाह ताज़ा की हमारी उपर रहस्य आए और हमारी जिंदगियों में बहार पैदा कर दें। यह चीज कब आएगी? जब हमारी जिंदगियों में हया होगी और हमारी निगाहें नज़र रखेंगी।

ईमान का मज़ा हासिल करने का तरीक़ा

हमें चाहिए कि हम जब रातों पर चल रहे हों तो अपने निगाहों को नीचे रखें। हदीस पाये में आया है कि जो बंदा अपने निगाहों को गैर-महरम से महफ़ूज़ कर लेता है अल्लाह ताज़ा उसके बदले उसको ईमान की हलावत अता फरमा देते हैं। बाज़ू हदीसों में फरमाया कि अल्लाह ताज़ा उसके बदले उसको इबादतों में लङ्घन अता फरमा देते हैं। अब आज नमाज का मुहर क्यों हासिल नहीं? सब्ज़े के अदर जमा क्यों नहीं आता? तिलावत कुरान में मजा क्यों नसीब नहीं होता। इसलिए कि निगाहें पाक नहीं होतीं।

क़ब्रूलियतेदुआ का लम्बा

एक जगह पर अजीब बात लिखी हुई थी कि जब आदमी किसी गुनाह पर ताक़त रखता है मगर अल्लाह ताज़ा के डर की वजह से वह गुनाह नहीं करता, उस लम्बे वह जो भी दुआ मांगता है अल्लाह ताज़ा उस दुआ को क़ब्रूलियतेदुआ लेते हैं। तज़ूरिबे बात है, आप इसे आज़मा कर देख लीज़िए कि आप कहीं जा रहे हों, जो बाह्यता है कि निगाहें उठाकर देखें कि सामने कौन है मगर आप अपने नफ़स के क़िलाफ़ करते हुए निगाहें को नीचा करते हैं तो उस वक़्त आप अल्लाह ताज़ा से जो भी दुआ मांगेंगे, अपनी
जिना के क़रीब भी न जाओ

इस्लाम ने हमें न मिर्फ़ जिना करने से मना किया है वल्लिदू इन नमाम वालों से मना किया जो इमान को जिना की तरफ से जाती है। फरामाया (لا انقرار) तुम जिना के क़रीब भी न जाओ। इसलिए कि यह गम्भीर ही अल्लाह का नापास है।

वदकारी की वजह से उम्र में कमी

हदीस पाक में आया है कि जो आदमी वदकारी की जिनगी गुज़रता है अल्लाह तबाहा उसकी उम्र को कम कर दिया करते है। उस की कम करने का क्रम मतलब इसके दो मतलब है। एक मतलब तो यह है साह लाना की उम्र थी और ऐसी बीमारी आई कि वह प्रचार में भर गया। यूं उम्र कम कर दी गई और दूसरा मतलब मुहरिम सीन ने यह लिखा है कि आदमी की साह सान की उम्र थी मगर अल्लाह तबाहा ने ऐसी बीमारियों में पंसा कर दिया कि उसकी जिनगी सेक्लन्द जिनगी के बजाय बीमारी बाली जिनगी होती है और उसके लिए परशा का सवाल यह जाना कमी है।

आप देखेंगे कि यह चीज़ आजकल आम नज़र आती है कि अफरा नालिम सान की उम्र के बुढ़े नज़र आएगे। ऐसे लोग नज़र आएगे जिनकी उम्र नालिम सान की भी नहीं होती। कहते हैं कि क्या कैसे खड़े होते हैं तो आख़िर के अंगेर आ जाता है कि कोई काम नहीं कर सकते।
सहावा किराम रज़ियल्लाहु अन्नु
में शर्म व हया का आलम

हवीस पाक में आया है कि हज़रत साद बिन अबि वकास
रज़ियल्लाहु अन्नु ने एक जगह पर जिहाद के लिए कदम बढ़या।
अगे दुश्मन थे। उन्होंने सोचा कि हम इनको किस तरह इसका
दीन के रास्ते से हटाएं। लिहाजा उन्होंने अपनी औरतों से कहा
बेपर्दा होकर गलियों में रिकल आएं ताकि इनकी निगाहें
इधर-उधर उठें। इस तरह उनके साथ अल्लाह तज़ाला की जो
मदद है वह ख़ुल्त हो जाएगी। जब हज़रत साद बिन अबि वकास
रज़ियल्लाहु अन्नु ने देखा तो उन्होंने बुलंद आवाज़ से ऐलान
किया:

"फ़िक्लुल्लुमन्नु फ़स्सुद्दिम नुरुल्लुमुहम्मदुद्दिम".

ईसान वालों से कह दीजिए कि अपनी निगाहों की नीचा रखें।

यह ऐलान सुनकर पूरे लश्कर के लोगों ने अपनी निगाहों को
इस तरह नीचे कर लिया कि किसी की निगाह किसी गैर औज़
पर न पड़ी। यह तो लश्कर के लोग जब लॉटकर आए तो
उनसे किसी ने पूछा कि यह तो बताइए कि वहाँ के मकानों की
ऊँचाई कैसी थी? फरमाने लगे कि जब अमीर लश्कर ने नज़रें
शुकाने का हुक्का दिया तो हमने मकानों की ऊँचाई की तरफ
ध्यान ही न दिया, सुहानअल्लाह।

जल्दी बंद होने वाला दरवाज़ा

अल्लाह तज़ाला ने ईसान की आँखों पर जो पर्दा बनाया है वह
दो आज्ञा की दोहरी हिराजत

इस्लाम के जिसके दो आज्ञा ऐसे हैं कि जिनको अल्लाह ताबला ने दोहरी हिराजत (Double protection) दी हुई है। एक ज़ुबान, देखिए कि उसके चारों तरफ दो दीवारें हैं। एक दाँतों की दीवार और एक होंटों की दीवार। इसको दो दीवारों में इस्तिलाह बंद किया है कि ज़ुबान की दो दीवारों को खोलने से पहले ज़रा तोल तो कि तुम कौन सी बात कर रहे हो? इस ज़ुबान से ऐसे-ऐसे कल्पिए निकल सकते है कि जो काफ़ी को भी मौमिन बना और सकते है और ग़लत हों तो मौमिन को भी कुफ़ा की खड़ों में दाखिल कर देते हैं।

दूसरे इस्लाम के जिसके जो पेश़ीदा आज्ञा हैं उनके ऊपर हमेशा दो कपड़े होते हैं। बाज़ूओं पर एक कपड़ा, पेट पर एक कपड़ा, टांगों पर एक कपड़ा लेकिन पेश़ीदा आज्ञा पर हमेशा दो कपड़े। एक ऊपर कूम्ब़ और दूसरे नीचे अज़ारबंद। दो कपड़ों में छिपाने की सुन्नत इसलिए बनाई गई है कि ऐसे मौमिन! ज़ुब़ा कपड़ा हटाने से पहले याद रखना कि तू कितने बड़े गुनह को कर
रहा है, अल्लाह की अज्ञात से दर जाना, इस गुंजाह से बच जाना, ऐसा न हो कि तेरे लिए यह दुनिया व आक्षरत में ज़िल्लत व रसवाई का सबब बन जाए।

रैव्यदना उस्मान रज़िय्यल्लाह्व अन्हु में शर्म व हया

नबी अकरम सल्ल्लाहु अलेहि वसल्लम ने अपने यारों को ऐसी हया सिखाई कि उस्मान गृही से अल्लाह के पारिश्वे भी हया करते थे। अल्लाह तज़ाला ने उनको ऐसी पाकिजज़ ज़िंदगी अता की हुई थी।

शर्म व हया पर अल्लाह की मदद के करिश्मे

अल्लाह तज़ाला हयादार इस्नान की ज़िंदगी में बरकत देते हैं। उसको परेशानियों से भी महफ़ूज़ फूरमा लेते हैं और अल्लाह तज़ाला खुद उसके मुहाफ़िज़ बन जाते हैं। ऐसे नेक इस्नान को ज़िंदगी में अगर कोई परेशानी आए तो अल्लाह तज़ाला खुद उसकी परेशानियों का हल निकाल लिया करते हैं।

देखिए, इस दुनिया के अंदर कुछ वाकिअआत ऐसे भी हुए कि लोगों ने कुछ बेगुनाह लोगों पर इलज़ाम लगाए तो अल्लाह तज़ाला का गैरी निज़ाम हरकत में आ गया। अल्लाह तज़ाला की तरफ से उनकी कैसी पुष्त पनाह की गई और उन्हें कैसे निजात दी गई। इसके वाकिअआत हम सुनते रहते हैं। इस यह आजिज़ कुछ वाकिजआत आपकी ख़िदमत में पेश कर देता है।

बीबी मरयम की पाकदामनी की गवाही

बीबी मरयम रज़िय्यल्लाह्व अन्हा अल्लाह तज़ाला की एक नेक
बंदी गुज़्ती है। अभी पैदा भी नहीं हुई, माँ के पेट में हैं, उनकी माँ उनके लिए दुआ कर रही है:

"है अल्लाह! भेरे पेट में जो भी है मैं उसे तेरे लिए वक़्फ़ कर दिया, तू उसे कुरूल फर्मा ले।"

इसलिए अल्लाह ताआला ने फरमाया:

"फ़तफ़ू है रब्बा बफ़ियल इस्मा इतिहादिया इस्मा क़िल्ला हिया।"

हजरत ज़क़रिया अल्लाहुस्सलाम उनके ख़ालू थे, वह उनके सरप्रत्स बने।

हजरत मरायम रज़िय़ाल्लाहु अन्हा मस्जिद के अंदर ऐतिहाफ़ की हालत में रहतीं और तारा दिन ज़िक़र व इबादत में लगी रहतीं। अल्लाह ताआला की तरफ़ से ऐसी रहमत होती है कि उसके लिए बेमौसम फल भेजे गए। लोगों के अंदर उनकी इबादत व तक़र्क़ की धाक बैठे हुई थी। लोग बहुत हज़रत करते थे।

उनके साथ एक वक़िफ़ ने इस वक़िफ़ को तक़सील से बचाने का विचार किया है और एक पूरा का नाम भी सूरा मरायम रखा। फ़रमाया:

"हो उरुआ क़फ़्रै के अलंक़ महिम युज्विन ही तुलेमा मुज़फ़्फिरिया।"

उन्होंने मुसल के लिए अपने मक़ान मशराक़ी सिम्ट को अपने लिए मज़बूस कर लिया। (मक़ान मशरा का) से मुफ़सिरिया लिखा है कि इताइयों ने पूरब की इसलिए किल्ला बनाया कि वह पूरब की तरफ़ गयी। जब वह पूरब की तरफ़ गयी। (फ़तफ़ू क़िल्ला हिया) उन्होंने अपने ईद-ग़िरद पर्दा तान लिया तकि तन्हाई हो जाए और
लेखक अल्लाह ताला फरमाते हैं कि इसने में हमने उसकी तरफ़ अपने स्वतंत्र अपील को भेजा और वह एक भरपूर इस्तान की शक्ति में उस के पास पहुँचे। जब तनाव में मरयम रज़ियाल्लाहु अन्हा के सामने एक भरपूर इस्तान आया तो उस वक़्त वह बसबस गया। वह आज के वक़्त की कोई बिगाड़ हुई बेगम नहीं थी कि एक गैर आदमी को तनाव में देखकर मुस्करा देतीं। वह अल्लाह पाक की नेक बंदी थी। लिहाज़ा उसके चेहरे पर घबराहट के आसार नज़र आए।

में कुछ से अल्लाह रख्मुल्लाहु की पनाह मांगती हूँ कि तुझ से मेरी हितफ़ाज़त फरमाए, तेरे चेहरे से तो तक्का ज़जिह होता है।

उस वक़्त हज़रत जिब्राइल अलैहिससलाम ने पहचान लिया कि बीवी मरयम घबरा गई इसलिए उन्होने फौरन अल्लाह ताला का पैग़ाम पहुँचाया दिया कि "अंसार रसूल रबक" में तेरे रब का भेजा हुआ नुमाईदा हूँ। लाहब लक ज़माक़ा ताकि तुझे सुयारा बेटा दे।

अब इस बात को सुनकर मरयम रज़ियाल्लाहु अन्हा की परेराष्ट्रीनी बजाए कम होने के उल्टा और ज़ादा बढ़ गई। मरयम सोचने लगी कि मैं पहले तो इससे अल्लाह की पनाह मांग रही थी बगैर जो इसने बात कह दी उसने तो मुझे और ज़ादा परेराष्ट्रन कर दिया। लिहाज़ा कहने लगी अन्य रख्तौल को गल्म मेरे बेटा कैसे हो सकता है? नुमाईदा बेटा ना दुआ ना हुआ और न मैंने कोई बुझाई का काम किया। मरयम जानती थी कि बेटा होने के लिए दो सबब हुआ करते हैं, या निक़ाह के ज़रिये या गुनाह के ज़रिये। व्यौर उनकी ज़िंदगी में दोनों काम
हां, ये इसलिए मरयम कहने लगी कि जब सबक बौज़ूद नहीं तो थे बेटे कैसे पैदा होगा? अल्लाह तात्ला ने इशाद फरमाया फल के लिए ऐसा ही है कि न तेरा निकाह हुआ और न तुम्हें गुमाग निकले। ‘कज़लिका’ के तपस्या के साथ अल्लाह तात्ला ने मरयम रज़ियाल्लाहु अन्हा की पाकदामनी पर मुहर लगा दी। अल्लाह तात्ला हर एक को ऐसी बेटी अता फरमाए जिसकी पाकदामनी पर ऐसी मुहर लगी हुई हो। आगे फरमाया है कि ४५ फारुक है। तेरे परवरदिगार ने कहा कि मेरे लिए आसान है। मरयम! यह बेटा तुझे परवरदिगार ने देना है किसी जुलूसः वाली सरकार नहीं देना, इसलिए तुझे घबराने की कोई जूझत नहीं।

उसी वक़्त मरयम रज़ियाल्लाहु अन्हा को धमाल के आसार महसूस होने शुरू हो गए। उस वक़्त मरयम परेशान हो गयी। वह खज़ूर के एक पेड़ के साथ जाकर बैठ गयी। जिराइत तो चले गए। मगर बीबी मरयम गुमजुदा हैं, परेशान हैं, सिंदगी का गुज़रा ज़माना सामने है। वह दिल ही दिल में कहने लगी, ऐ अल्लाह! मैं तो तेरी इबादत करते हुए उस गुज़रने वाली बंदी हूँ, मैं अपनी उम्र अतिकाफ़ में गुज़री, लोगों में मेरी नकी और तक्के के चर्चे हैं। मगर इस हाल में बैठी हुई हूँ कि जब लोगों के सामने यह बात जाहिर होगी तो मैं उनको क्या चेहरा दिखाऊँगी, मेरी सारी इबादत पर पानी फिर जाएगा, लोगों में बदनामी होगी, मेरी सिंदगी कैसे गुज़री और यह मामला कैसा पेश आया?

मरयम रज़ियाल्लाहु अन्हा उस पेड़ के साथ ऐसे बैठी जैसे कोई हारा हुआ जरूरत हुआ करता है। उस वक़्त इस्तिन घबराहट थी कि दिल रहा था कि इस जिंदगी से तो मर जाना बेहतर है।
लिहाज़ा कहने लगी:

लैक लिह्न नही बड़ा नही नसिबा न्यासी।

ऐ काश! मैं तो इससे पहले मर चुकी होती और भूली बिसरी बीज़ बन चुकी होती।

मालूम हुआ कि जो अफ़ीफ़ा औरतें होती हैं उन्हें अपनी बदनामी और बेहत्तात से हमेशा घर लगा करता है। वह अल्लाह की पनाह मांगती हैं, वे मर जाने को पसंद करती हैं मगर कोई ऐसा काम नहीं करती। जब वीरी मरयम ने ऐसी बात कही तो उनको फिर नीचे से एक आवाज़ आई। जब मुफ़्तिसीरन्ने लिखा है कि यह दोबारा जिराईल आल्हिस्सलाम ने दोबारा कलाम किया था और बाज़़ ने कहा कि अल्लाह तज़ाला ने कलाम फरमाया। बहरहाल उनको फरमाया गया «लातुर्सी» मरयम! तो परेशान न हो, वे रब की बातें हैं। जब उससे तुझे यह निशानी दी तो वह परवरदीगार तेरी पासबानी भी करेगा। फरमाया, यह जो तुहमें अपने करीब पेड़ नज़र आ रहा है उस पर हमने खजूरें लगा दी है, तुम खजूर के इस पेड़ को हिलाओः

«हुह्री यही बज़हुज़ुल मिसाल तस्विफ़ुल उलिकुल रुत्या ज़निया।»

तुम्हारे ऊपर तर खजूर गिरेगी, उनको खा लेना और तुम्हारे नीचे पानी जारी कर दिया गया है उसको पी लेना। उसके बाद जब तुम्हारे हाँ बच्चे की विलादत हो तो उस बच्चे जबीन पर नधुज़त के नूर की फिरने पूर्वते देखकर उस बच्चे की जबीन को बोसे देना। उससे तुम्हारे दिल को तस्ली हो जाएगी। मरयम! अगर लोग तुम्हारे पूर्वते कि यह क्या ममला है तो कहना अज़ी
जब कँौम ने तानों के नश्ते चलाए तो उस वक्त मरझम रोज़ेल्लाहु अन्हा पर गुम तारी हुआ। मरझम बहुत परेशान हुईं और फ़ाज़ारनबी से बच्चे की तरफ इशारा किया। कहना यह चाहती थी कि मेरा सर मत खाओ, पूछना है तो इस बच्चे से पूछो यह कैसे पैदा हुआ? क़़ौम ने बच्चे की तरफ देखा और कहा कि गोद में पड़ा छोटा सा बच्चा कैसे बाल सकता है? मगर अल्लाह ताज़ाला ने अपनी एक पाकदामन बंदी के लिए निज़ाम को वदल कर रख दिया। फ़र्माया, मेरे प्यारे ईसा! बच्चे इत्तम में बोला नहीं करते मगर आज तेरी माँ पर बोहतान लगाया जा रहा है, मैं अपने निज़ाम को बदलता हूं, अब तुझे बोलना होगा और अपनी माँ की सफाई की
گاوہی دہنزی ہوگئی۔ اس لیے حضرت ایسآ اللہ علیہ السلام بہت کہا ہے

اے یہ کہہ ہوئی نبی و جعلہ مبارکا ابن میا
کہتہ ہوئے بالصلہ ما دمت حیا۔

سُبْحَانَ اِنَّا اللَّهَ! اِنَّا اللَّهِ رَبِّکَ اِنَّا رَبِّکَ مَعُونَهُ ہے
حضرت جوہرہ اللہ علیہ السلام کی
جوہی سے علیہ اپنی بہتری بندی کی گاوہی ہوئی اور اس فرماء دی علیہ
تھا لیا نے ہر دویر اور ہر ججنتی میں علیہ پاکدامان بندی کی،
ماسوم بچوں کی ججختانہ سے پاکدامانی کی گاوہی دیسی ہوئی۔

حضرت یوسُفُ اللہ علیہ السلام کی
پاکدامانی کی گاوہی

حضرت یوسُفُ اللہ علیہ السلام کا واقعہ بھی آئے جانئے ہے
کہ ان کی پاکدامانی کی گاوہی بھی ایک کھوٹے بچے نے دی ہی۔
تو جب کوئی انسان گناہوں سے بچتہ ہے، پاکدامانی کی جیدی
گیزانہ ہے تو علیہ تھا لیا علیہ اسی تھا رہا فرمائے
ہے، عہ دی ہوئے بچوں اور عہدین کو بدل دیا ہوا ہے۔
علیہ تھا لیا مناسب کی یہ کہ چھوڑکر مناسب کی کودرہ کا جھڑکار
کر دیتے ہیں کہ میں مناسب کی کودرہ کا جھڑکار یہ بھی کر سکتا ہوئی۔

اَمْمِعْلَ مَوْنِینِین هُجُرَتُ خُلْدِیْجا رَجِیْیَلْلَاهُ
انها کی داستانے و فسا

نابی اکرم سلّالّاه مَوْنِینِین کی پہلی شادی
حضرت خلذیجہ رجییلّاه کی انها سے کے ساتھ ہوئی۔ یہ وہ ظریف ۔
द्धि जिनको अल्लाह तज्ज्ञता ने बड़ा शर्फ अता फरमाया था। जब निकाह होना था तो उन्होंने तिजारत के लिए नवी अकरम सल्लाल्हु अल्लाह वस्लम को भेजा। नवी अकरम सल्लाल्हु अल्लाह वस्लम तिजारत पर गए। उन्होंने अपने गुलाम मैसरा को आपके साथ भेजा कि पता करो कि सफूर के हालात कैसे हैं?
अल्लाह तज्ज्ञता ने आपको दो गुना फायदा अता फरमाया। मैसरा ने आकर बड़ी अच्छी अच्छी बातें सुनायीं। हजरत ख़ादीजा रज़ियल्लाहु अन्ना का दिल बहुत खुश हुआ कि जिस इंसान की अमानत और सदाक़त इतनी अच्छी है, वही जिंदगी का अच्छा साथी बन सकता है। लिहाज़ा आपने नवी अकरम सल्लाल्हु अल्लाह वस्लम को बहुत से तोहफ़े बग़रह दिये और आख़िर आपके चचा की तरफ चेतामंत्र भेजा कि अगर आप मेरे रिश्ते के लिए आना चाहते हैं तो मेरे भाई उमर से या मेरे वातिल से बात कीजिए। लिहाज़ा आपके चचा ने उनकी बात कही और आख़िर निकाह हुआ। निकाह में बीस ऊँट महर रखे गए और दो ऊँटों को जिक्र किया गया था।

यह वह औरत थी जिनको अल्लाह तज्ज्ञता ने बड़ा ऐसा बड़ा कि जब अल्लाह तज्ज्ञता का कुरआन नाज़ील हुआ, नवी अकरम सल्लाल्हु अल्लाह वस्लम ने जिब्राइल अलेहिस्लाम से सुना तो उसके बाद आपने सब से पहले अपनी मोहतम बीबी को यह बात सुनाई। इसलिए नबुवत की ज़बान से सबसे पहले कुरआन सुनने का शर्फ एक औरत को हासिल हुआ। इस उम्मत के मर्दों पर औरतों में से इस औरत को यह फज़ीलत हासिल है जिसको अल्लाह के महबूब की मुबारक ज़बान से सबसे पहले कुरआन सुनने का शर्फ हासिल हुआ और इस उम्मत में से इस
औरत को ऐतिहासिक हसिल हुआ कि उसने अपनी आँखों से मुहम्द बिन अदुल्लाह को मुहम्दुर्सूल्लाह सल्ल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लाम बनाते सबसे पहले देखा।

जब आप किसी वजह गुरुज़दा होते और फरमाते हैं कि जब वह फरिश्ता आता है तो मुझे अपनी जान का ख़ोफ होता है। आप फरमातीं थीं हार्मिज़ नहीं, अल्लाह तब आपको जाए नहीं। अल्लाह तब आपकी मदद करेंगे। लिहाज़ा वह नबी अकरम सल्ल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लाम की तसल्ली देती थी। हिजरत से तीन साल पहले 65 की उम्र में आपकी वफ़ात हुई।

सैय्यदा आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा की हज़ूर अकरम सल्ल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लाम से शादी मुबारक

हज़रत ख़दीज़ा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात के बाद नबी अकरम सल्ल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लाम गुफ़्गीन रहा करते थे। तसल्ली देने वाला जो ज़िंदगी का साथी था वह भी चला गया। उन दिनों में नबी अकरम में सल्ल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लाम के गुफ़ की बांटने वाला कोई नहीं था। हज़रत पाक में आया है कि आपको ख़बाब के अंदर एक शक्ल दिखाई गई। फरमातया, मेरे महबूब आप गुरुज़दा रहते हैं, हमने आपके लिए ज़िंदगी का साथी का चुनाव कर दिया है। नबी अकरम सल्ल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लाम जाने। आपने एक औरत को पैग़म्बर बेचा ना कि मैंने इस तरह की एक बालकी देखी है, जिसके साथ परवर्तिका की तरफ से इशारा है कि यह तुम्हारे लिए ज़िंदगी की दूसरी साथी बनेगी। उन्होंने जवाब दिया कि यह तो
अबु बक्र की बेटी है जिसका नाम आएशा है। सिहाज़ा अल्लाह तुअला ने उनको नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेिहि वसल्लम के निकाह में दे दिया।

आएशा रज़िय़ल्लाहु अन्हा की ख़सूसियत

आएशा रज़िय़ल्लाहु अन्हा आपकी वह बच्ची हैं जो कुँवारे के में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेिहि वसल्लम के निकाह में आयीं। बच्ची जिनकी अज्ञान अज्ञान कुंवारेपत हैं वे सब की सब ऐसी थीं जिनकी पहले शादी हो चुकी थी या उनके तलाक हो चुकी थी या उनके ख़ुर्दङ्ग वफात पा चुके थे और बाद में उनका नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेिहि वसल्लम के साथ दोबारा निकाह हुआ बत्तक अगर में कुँब खुदे न गुलत न होगा कि आएशा रज़िय़ल्लाहु अन्हा वह हस्ती हैं कि जिन्होंने जब बलूग्र की ज़िदगी को शुरू किया तो उनकी निमाहों ने सबसे पहले नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेिहि वसल्लम के मुबारक बेहरे को देखा।

उम्मे अबुदल्लाह आएशा रज़िय़ल्लाहु अन्हा

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेिहि वसल्लम को आएशा रज़िय़ल्लाहु अन्हा से इतनी मुख्तत थी कि आपने उनकी कुँमियत अबुदल्लाह विन ज़ुवैर के नाम पर उम्मे अबुदल्लाह रदी। अबुदल्लाह रज़िय़ल्लाहु अन्हु उनके भांजे थे जो हज़रत अस्सूमा रज़िय़ल्लाहु अन्हा के बेटे थे। अबुदल्लाह विन ज़ुवैर रज़िय़ल्लाहु अन्हुमा को एक दफ़ा गोद में लेकर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेिहि वसल्लम की ख़़िदात में आयीं और अर्ज़ किया ऐं अल्लाह के नबी! आप इनको शफ़ूक से दीजिए। नबी अकरम सल्लल्लाहु
अल्लाह वसल्लम ने उनको प्यार भी फरमाया और दुआ भी दी और फरमाया, आपि! तुम्हें मैं अबुल्लाह की कुल्नित देता हूँ मगर नवी अकरम सल्लल्लाहु अल्लाह वसल्लम ने उनको प्यार का भी एक नाम 'हुमेरा' दिया हुआ था।

हज्रुर अकरम सल्लल्लाहु अल्लाह वसल्लम को आएगा रजियर्लाहु अन्हा से मुहब्बत

एक दफा आएगा रजियर्लाहु अन्हा तशरीफ फरमा थीं। आपने इशाद फरमाया, आएगा! मुझे तुम से इतना प्यार है, मुझे तुम इतनी अच्छी लगती हो जैसे मकबन और खज़ूर को मिलाकर खाया जाए, जितनी लज़ुज़त उसमें होती है मुझे तुम उतनी मरगूब हो। हजरियर्लाहु आएगा रजियर्लाहु अन्हा ने पौरण सवाल दिया, ऐ अल्लाह के नबी! मुझे आप शहद और मकबन को मिलाकर खाने की तरह मरगूब हैं। अल्लाह के महबूब मुस्करा दिए कि मैंने तो मकबन और खज़ूर की मिसाल दी थी लेकिन तुने कैसी अक़लमंदी की बात कही।

हज्रुर आएगा का इलम व तज़क़े में मकबरा

हजरियर्लाहु अंत में रह रहो इमाम आजम अबू हनीफ़ा रहो के उल्टादें में से हैं। वह फरमाते हैं कि अल्लाह ताआला ने इलम, तज़क़े और हुस्न व जमाल में उनको तमाम पाकिज़ा बीवियों से ज़ियादा रुचा अता किया था। बल्कि ज़हरी रहो ने तो यहीं तक कह दिया कि अगर हज़ूर की सारी पाकिज़ा बीवियों के इलम को जमा कर लिया जाए तो आएगा रजियर्लाहु अन्हा का इलम फिर भी उनके इलम से बढ़ जाएगा।
हज़रत आएशा का फ़िक़्ह में मुक़ाम

आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने 2210 हदीसें रिवायत की हैं। आप फ़िक़्ह बनीं। सहाबा किराम में चालीस फ़ुज़़ा था जिनका ज़्यादा रुत्ब समझा जाता था। फिर उन चालीस में से भी चौदह ऐसे थे जिनका और भी ज़्यादा रुत्ब समझा जाता था, उनमें हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा का नाम भी आता है।

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ से उम्महातुल मोमिनिन को इश्क़ियार

एक वक़्त ऐसा भी आया कि जब ख़ाफ़ीज़ा बीवियों को इश्क़ियार दिया गया कि तुम चाहो तो ऐसी ज़िंदगी इश्क़ियार करो, तुम्हें इतना माल व दौलत दे दिया जाता है मगर तुम अपनी ज़िंदगी गुज़ारना चाहो तो अल्लाह के महबूब के साथ ज़िंदगी गुज़ारे। नवी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तमाम बीवियों को इश्क़ियार दे दिया था मगर हमेशा से कहा तुम्हें अपने माँ-बाप से मश्तुरा कर लेना। महबूब के दिल में यह वात थी कि कम उभर है ऐसा न हो कोई और फैसला कर ले। इसलिए माँ-बाप की क्षति लगा दी। आपको पता था कि गुलाम की बेटी है वह तो अच्छा ही मश्तुरा देगा।

सैय्यदा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की पाकदामनी की गवाही

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की ज़िंदगी में भी एक
अजीब वाक्य शेष आया। अल्लाह रख्मान इज़ाक मात्र की भी अजीब मशीयत होती है। नबी अकरम सल्ल्लाल्हु अलैहि वस्तू सल्लम गजवा बनी मुतलक में तश्रीफ़ु से गए। जब आप वहाँ से वापस आते लगे तो कफ़िले ने चलना था। कफ़िले के लोग जैस-जैसे तेज़ होते चलते रहते थे। सैकड़ों बलिक हजारों उँचे होते थे। चलते हुए भी घंटों लगा करते थे। हज़रत आक्सा रज़ियल्लाहु अल्लाह ने सोचा कि कफ़िले ने माना है पता नहीं कितना बक़ृत लग जाए, क्यों न हो कृज़ाए हाज़रत से फ़रियाँ हो जाएं। कृज़ाए हाज़रत के लिए खेतियों में जाया करते थे। लिहाज़ा आप ज़रा दूर चली गयीं तकि फ़रागत हासिल कर सकें। जब फ़रागत हासिल करके वापस आयीं तो आप ने होवज में बैठना था जिसको सवारी के ऊपर रखा जाता था।

इतने में आपने अद्भुत किया कि मैंने गले में एक हार पहला हुआ था वह कहीं हटकर गिर गया है। सोचा कि अभी तो रवान होने में बक़ृत होगा, मैं जाकर हार देख लेती हूँ। आप हार छूटने वापस तश्रीफ़ु ले गयीं। पीछे सहाबा किराम ने सोचा कि आप तश्रीफ़ु तो ले आयी थी, लिहाज़ा होवज में बैठे गयीं।

इसलिए चार-पौंच आदमीयों ने होवज को उठाकर ऊँचा पर रख दिया। आपकी उम्र कम थी और वज़न भी कम था, चार-पौंच आदमी उठाने वाले तो उनको पता भी न चला कि आप अंदर बैठी हुई है या कि नहीं।

अब कफ़िले के लोग तो वहाँ से चले गए। जब वापस आयीं तो आपने देखा कि वह जगह तो ख़ाली है और कफ़िला जा चुका है। आपको इस्तीफ़ा था कि जब नबी अकरम सल्ल्लाल्हु अलैहि वस्तू सल्लम को पता चलेगा तो किसी न किसी को भेजेंगे, इसलिए
अप वहाँ बैठ गयीं। धोंडी देर के बाद नींद गालिब आ गई।
लिहाज़ा अपने ऊपर चालर ती और तो गयीं।

नयी अकरम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लाम की आदत मुबारक श्री कि सहाबा में से किसी एक सहाबी को हुकम दिया जाता कि जब सारा क़ाफ़िला चला जाए तो अगर रात का वक़्त हो तो सबह के वक़्त वहाँ आकर देखें कि कहीं कोई चीज़ पीछे पड़ी तो नहीं रह गई। लिहाज़ा एक बड़ी सहाबी हज़रत सफ़वान बिन गवाल रज़िय़ाल्लाहु अन्लु जो पक़की उम्र के थे, उनको नयी अकरम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लाम ने इस काम पर तैनात फरमाया था। वह जब उस जगह पर आए तो किसी को उस जगह पर लेता था। कुछ आए तो उन्होंने पहचान लिया कि यह तो नयी अकरम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लाम की मोहतम बीवी हैं। उन्होंने ऊँची आवाज़ में ‘इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इल्लहि रज़िक़र’ पढ़ा। उनकी आवाज़ मुक़र आपकी आँखें खुल गईं। आपने जो चालर अपने ऊपर ली हुई थी उससे अपने आपको पूरी तरह ढांप लिया। उन्होंने आपके लिए ऊँट को बिठाया, आप ऊपर बैठ गयीं, उन्होंने मुहार पकड़ी और चल पड़े। वह तक कि उस क़ाफ़िले के पास पहुँच तो क़ाफ़िले में जो मुनाफ़िक़ मौजूद थे उन्होंने देखा तो कहने लगे कि इसमें तो कुछ न कुछ वात होगी। वे तो पहले ही ऐसे धौले की तलाश में थे जिससे मुसलमानों को परेशान कर सकें और नयी अकरम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लाम को तक़लीफ़ पहुँचा सकें। लिहाज़ा उन्हें बातें करने का मौका मिल गया।

लिहाज़ा जब मदीना पहुँचे तो नयी अकरम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लाम को इस वात का पता चला। आपको बड़ा सदमा हुआ।
लोगों में यह बात आम होना शुरू हो गई। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रसाती हैं कि में आकर एक महीने तक बीमार रही और कमज़ोर भी हो गई। एक दिन में एक सहबिया उमर मस्तह रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ कूजाए हाज़त के लिए रात को बाहर निकली। वह एक जगह पर कूदम उठाने लगीं तो उनको ठोकर लगी। उन्होंने अपने बेटे के बारे में बद्रुआ कर दी। बेवकू फ़ता, तुम अपने बेटे के लिए बद्रुआ क्यों कर रही हो? वह कहने लगी तुम्हें पता नहीं कि वह हुम्हरे बारें में क्या बातें कर रहा है?
मैंने पूछा कि क्या बात कह रहा है? उस बक़्ति उन्होंने सारी तपस्वीत बता दी कि आपके बारे में इस बक़्ति सारे शहर में यह बातें हो रही हैं। फ़रसाती हैं कि जब मैं ने ये बातें सुनीं तो मेरे दिल पर बड़ा सदमा हुआ। मैं घर आई और नवी अकरम सल्लल्लाहु अल्लाह वसल्लाम का इतिज़ार करने लगी। आप जब मलिज़द से तहरीफ़ लाए तो मैं आपके सामने आई और सलाम किया। अपने मेरे सलाम का जवाब दिया मगर चेहरा दूसरी तरफ़ कर लिया। मैं दूसरी तरफ़ से आई मगर नवी अकरम सल्लल्लाहु अल्लाह वसल्लाम ने अपनी निगाहें दूसरी तरफ़ कर लीं। आपकी खामोश निगाहें मुझे बहुत सारी बातें सिखा दीं कि इस बक़्त महबूब की तबियत पर बोझ है और आप कोई बात नहीं करना चाहते।
मैंने सोचा कि चलो मैं अपने माँ-बाप के घर चली जाती हूँ ताकि सही हलाल का पता चल सके। मैंने इज़ाज़त बाहरी, अल्लाह के महबूब ने इशारे से फ़रमा दिया कि हाँ चली जाओ। फ़रसाती हैं कि जब मैं वहाँ पहुँची तो मेरी मालिदा ने दरवाज़ा खोला। मैंने देखा कि मेरी मालिदा की आँखें रो-रो कर सुख हो चुकी हैं, परेशान चेहरे के साथ खड़ी हैं। मैंने पूछा, अम्मी! क्या हुआ?
बालिवा ख़ामोश हैं। आँखों से आँसू टपकना शुरू हो गए। मैंने पूछा अम्मी! मेरे अब्बू किसकर हैं? उन्होंने इशारा कर दिया। मैंने देखा कि चारपाई पर बैठे अल्लाह का कुरआन पढ़ रहे हैं। एक-एक आयत पर आँखों से आँसू टप-टप गिरते हैं। अल्लाह के हज़ूर में दुआएं याँग रहें हैं। फरसाती हैं कि मैंने जब ग़म का माहौल देखा तो मेरी तबियत और ख़ादा परेशान हो गई। मैंने सोचा कि मैं क्या करूं? जिन पर मुझे मान था, जो मेरी जिंदगी के रहनवाले थे वह भी आज मुझसे नाराज़ हैं, मां-बाप भी आज जुदा हैं, मेरे आज कहाँ जाऊँ? दिल में ख़ाब आया कि क्यों न हो कि मैं अपने परवरदिगार की तरफ मुतवजजेह हूँ। इसलिए फरसाती हैं कि मैंने वुझू किया और घर के एक कोने की तरफ जाने लगी। माँ ने पूछा आएशा! किद्वर जा रही हो? उनको दर लग गया था कि बेटी गमजदा है, ऐसा न हो कोई बेटी कोई संगीन फेसला कर ले। फरसाती हैं कि उस वक़्त मैंने अम्मी को कहा, अम्मी! मैं अपने रब के हज़ूर दुआएं करने जा रही हूँ। मौत दूँ कहना चाहती थी कि अम्मी! हाईकोर्ट तो नाराज़ हो गए, अब मैं सुप्रीम कोर्ट का दरवाज़ा खटखटाने जा रही हूँ। फरसाती हैं कि मैंने मस्सला बिखाया और सज्ज हो रहा रखकर दुआएं मांगनी शुरू की। इससे मेरी दोस्तों के दरवाजे पर लुट-लूट आया। अब मैं सुप्रीम कोर्ट का दरवाज़ा खटखटाने जा रही हूँ। फरसाती हैं कि मैंने मस्सला बिखाया और सज्ज हो रहा रखकर दुआएं मांगनी शुरू की। इससे मेरी दोस्तों के दरवाजे पर लुट-लूट आया। अब मैं सुप्रीम कोर्ट का दरवाज़ा खटखटाने जा रही हूँ। फरसाती हैं कि मैंने मस्सला बिखाया और सज्ज हो रहा रखकर दुआएं मांगनी शुरू की। इससे मेरी दोस्तों के दरवाजे पर लुट-लूट आया। अब मैं सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाने जा रही हूँ।
फरियाद करती है कि मेरे बारे में भी इसी तरह की बातें की जा रही हैं, परवरदिगार! तू हमेशा की मदद फर्सता। मेरे आकार ने भी इस वक़्त मेरे साथ बात करना छोड़ दी, अल्लाह! तेरे सिवा कोई ज़ात जो दुखी दिलों को तसल्ली दें सके, जो ग़मज़दा दिलों को इलिमान दे सके। रो-रो दुआएं कर रही हैं।

उधर दुआएं मांगी जा रही हैं और इधर आकार ने मस्जिद नबवी में पज़ीस मशावरत काम की हुई है। हज़रत अबु बक्र रज़िय़ल्लाहु अन्हु तो घर में थे। बाकी सहाबा जमा थे। मुहाद्दसीन ने उसका अजीब मज़र लिखा, फरमाते हैं कि नबवी अकरम सल्ल्लाहु अल्लाहि वसल्लम भी ग़मज़दा बैठे थे, सहाबा किराम के चेहरों पर उदासी थी। उन्होंने अपने महबूब के चेहरे पर ग़मज़दा देखा जिसकी वजह से उनकी तबियत भी अजीब बन चुकी थी। लिहाज़ा कुछ सहाबा किराम सिसकिय़ां ले-ले कर रो रहे थे। नबवी अकरम सल्ल्लाहु अल्लाहि वसल्लम ने अपने यारों से पूछा, इस मामले में तुम क्या मशुवरा देते हो? सबसे पहले हज़रत उमर रज़िय़ल्लाहु अन्हु से पूछा, उमर! तुम इस मामले में क्या कहते हो? हज़रत उमर रज़िय़ल्लाहु अन्हु ने आगे बढ़कर कहा, ऐ अल्लाह के नमो! अल्लाह तः आला ने आपकी इज़ज़त और शरफ़ुंत ब़ख़्शी, आपके बदन पर कोई मक्क़ी भी नहीं बैठती। जब अल्लाह तः आला ने आपको इतना पाकीज़ा बनाया है कि उस पर एक गंदी मक्क़ी को बैठने की इज़ज़त नहीं तो आपकी जीवन साथी ऐसी कैसे हो सकती हैं जिसके अंदर गुँताहों की गलती हो। इसलिए मुझे तो यह चीज़ ठीक नज़र नहीं आती। नबवी अकरम सल्ल्लाहु अल्लाहि वसल्लम ने हज़रत उस्मान रज़िय़ल्लाहु अन्हु से पूछा, उस्मान! तुम बताओ क्या मामला हो सकता है? हज़रत उस्मान ने
नबुक्त की सोहबत का हकू अदा कर दिया। अर्जु किया, ऐ अल्लाह के नवी! अल्लाह तजाला ने आपको ऐसा बनाया कि बादल आपके तर पर साया किए रखता है, आपका साया जुमीन पर नहीं पड़ता कि ऐसा न हो कि किसी का कृदम आपके साद पर पड़ जाए, जब अल्लाह तजाला ने आपके अदब का इतना तिहाज़ू फरमाया कि किसी ग्रंथ के कृदम आपके साए पर नहीं पड़ सकते हो यह ऐसे मुमकिन हो सकता है कि किसी को आपकी मोहतरम बीवी पर कुदरत हासिल हो जाए। तिहाज़ू यह चीज़ तो हमारे वहम व गुमान से भी बााँहर है। उनकी बात सुनकर नवी अकरम सल्लल्लाहु अल्लाही वसल्लाम खामोश हो गए। उसके बाद नवी अकरम सल्लल्लाहु अल्लाही वसल्लाम ने हजरत अली रज़ियल्लाहु अन्नु से पृथू, अली! तुम बताओ कंया मामला हो सकता है? हजरत अली ने अर्जु किया, ऐ अल्लाह के नवी! एक बार आपके जूते के साथ गंदगी लगी हुई थी, आप चाहते थे कि पहले मंगर अल्लाह तजाला ने जिन्दाईल अल्लाहिसलाम को भेजा था और आपको इतिला दे दी थी कि आपके जूते के साथ गंदगी लगी हुई है। जब जूते पर गंदगी लगी हुई थी तो आपको बता दिया गया था अगर आपके घरवालों के साथ कोई ऐसा मामला होता तो आपको क्यों न बता दिया जाता। इसलिए यह बात मुझे ठीक नज़र नहीं आती। नवी अकरम सल्लल्लाहु अल्लाही वसल्लाम फिर खामोश हो गए। आपकी गुमानी को देखकर हजरत अली दोबारा बोले और कहने लगे, ऐ अल्लाह के नवी! अगर आपकी तब्यत बहुत ज्यादा गुमजुदा है तो आप चाहें तो तलाक दे दें। आपके लिए बीवियों की कौन सी क्रमी है, अल्लाह तजाला आपको कोई और जीवन साथी अता फरमा देंगे। उनकी यह बात
सुनकर हज़रत उमर रज़िय्यल्लाहु अल्लाह तड़पे और खड़े हो गए। उन्होंने उस वक़्त नबी अकरम सल्ल्ल्लाहु अल्लाह बस्ती में से पूछा, ऐं अल्लाह के नबी आप यह इशाद फस्माईए कि यह निकाह अपने अपनी मुर्ज़ी से किया था या आपको इशारे से बताया गया था? यह आपको पसंद थी या किसी और की पसंद थी? नबी अकरम सल्ल्ल्लाहु अल्लाह बस्ती में उंगली से ऊपर की तरफ इशारा किया कि यह तो मेरे रब की तरफ से इशारा था। हज़रत उमर फरमाने लगे, ऐं अल्लाह के नबी! अब आप मुझे छोड़ दीजिए और उन मुनाफ़िकों को छोड़ दीजिए, मेरी तलवार जाने और मुनाफ़िकों की गदन का जाने, वे ऐसी तौहीनी की बात कैसे कर सकते हैं? रब्बे करीम की पसंद पर वे ऐसी बातें कर रहे हैं, यह नहीं हो सकता। नबी अकरम सल्ल्ल्लाहु अल्लाह बस्ती में उस वक़्त हज़रत उमर की ध्यान की निगाहें से देखा, गोया कह रहे हों कि उमर! अल्लाह तेरा निगहबान हो, तूने मेरे गुम को हल्का कर दिया। नबी अकरम सल्ल्ल्लाहु अल्लाह बस्ती की तबियत को इलिमान आ गया। आप उठे और मज्जिस बख्शस्त हो गई।

आप सल्ल्ल्लाहु अल्लाह बस्ती में हज़रत अबू बक़्कर रज़िय्यल्लाहु अल्लाह के घर की तरफ जाते हैं कि मेरी हुमेरा किस हाल में है? नबी अकरम सल्ल्ल्लाहु अल्लाह बस्ती दस्तक देते हैं। हज़रत अबू बक़्कर रज़िय्यल्लाहु अल्लाह की बीवी ने दरबाज़ा खोला। नबी अकरम सल्ल्ल्लाहु अल्लाह बस्ती का उनका रो-रो कर बुरा हाल हो चुका है। जब अबू साइद के अकबर की तरफ देखा तो उनकी आँखें भी रो-रो कर तुर्क्कें हो चुकीं हैं और सूझ चुकी थीं। आपने पूरा हुमेरा नज़र नहीं आ रही, हुमेरा कहाँ हैं? उन्होंने कोने की तरफ इशारा किया। उस वक़्त हज़रत आएशा रज़िय्यल्लाहु
अन्हा सअदे में दुआएं मांग रही थी। बाद में फरमाती है कि महबूब सल्लाल्हु अलैहि वसल्लम जब ताहरफु लाए वे तो मेरे दिल में बात आई थी कि मैं उसी बक्त आका के कुदमों में विपर पाठ जाओ और जी भरकर रो लूँ कि मेरे साथ वह क्या मामला पेश आ रहा है मगर मेरे दिल ने कहा आएशा। तूने अपने रब के सामने अपनी फरियाद बयान कर ली है, अब अपने रब से ही मांग ले, तेरा रब तेरा निगाहबान होगा। लिहाजा नबी अकरम सल्लाल्हु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, हुमेश! आपकी आवाज सुनते ही हुमेश ने सज्जा पूरा किया और आकर चारापाई पर बैठ गयी। नबी अकरम सल्लाल्हु अलैहि वसल्लम करीब बैठ गए। अपने व्याय से समझाया कि अगर तुझसे कोई ऐसी गृही हो गई है तो अपने रब से मापी मांग ले। र्मे करीम गुराहों को माफ करने वाला है। फरमाती है कि उस वक़्त तो मैं सब के साथ बैठी थी। आपकी यह बात सुनकर मेरे ज़िद के बांध दूं गए, मेरी आँखों से आँसू आना शुरू हो गए। मैं रोती रही मगर ज्ञानोश थी। रोते हुए मैंने कहा, मैं वही बात कहूँगी जो यूसफ अलैहिसल्लम के वालिद ने कही थी। "अंसा इस्कोबीश ईज़हरी ई लेखी" में अपना गुम और शिक्षा अपने रब से कहती हैं। फरमाती हैं मैंने वे अल्फाज कहे और महबूब सल्लाल्हु अलैहि वसल्लम के चेहरे अनवर की तरफ़ देखा। आपकी पेशानी पर पलंदीवाद पसीने के कुदरे देख और आपके अंदर वह हसीन कपकपी देखी जो ‘वही’ के नज़रिल होने के वक़्त हुआ करती थी। महबूब सल्लाल्हु अलैहि वसल्लम के ऊपर गुनौती सी तारी हो गई। अपने अपने ऊपर चादर कर ली। फरमाती है कि मैं आराम से बैठी थी। मेरे दिल में ख्याल था कि अल्लाह तबाहला उनको इल्फ़ा कर देंगे या नींद में कोई ख्याब दिखा
देंगे और वजाहत फर्मा देंगे। मगर मेरे बाप और मेरी माँ पर कुछ लम्हे बड़े अजीब थे। मैंने अपने बालिक को देखा कि तड़प रहे थे कि 'वही' नाज़िल हो रही है, पता नहीं मेरी बेटी की किस्मत का क्या पैसला होता है। बालिक की आँखों में भी आँसू और बालिका की आँखों में भी आँसू। फर्माती हैं कि मैं आराम से बैठी थी। धौड़ी देर बाद मेरे आकर ने चेहरा अनवर से कपड़ा हटाया तो आप सल्लाल्हु अल्लाह वस्त्र का चेहरा अनवर कपड़े से ऐसे बाहर निकला जैसे बादल हटता है तो चौदहवीं का चाँद नज़र आता है। फर्माने लगीं, मैंने चेहरा अनवर पर बशाशत देखीं, मैं समझ गई कि अल्लाह तआला ने रहमत फर्मा दी।

नबी अकरम सल्लाल्हु अल्लाह वस्त्र का इशाद फर्मा, आएशा! मुबारक हो, अल्लाह का कलाम आया है। अल्लाह तआला ने इशाद फर्माया है:

 алхифат للخليبين والخليبين للخليبين والطبيين للطبيين والطبيين للطبيين اولئك مبراً معاً يقولون.

अल्लाह तआला ने तेरी बराबर ताज़िल फर्मा दी। फर्माती हैं कि उस बक़्त मेरी बालिका फर्माने लगीं, आएशा! उठ और नबी अकरम सल्लाल्हु अल्लाह वस्त्र का शुक्रिया आदा फर्मा। फर्माने लगीं, मेरी तबजेह रब की तरफ़ गई। फर्माने लगीं, मैं अपने रब का शुक्रिया अदा करती हूँ जिसने महबूब की हमेशा की फरिख़ा को कुमूल फर्मा लिया। उनकी पाकंडामानी की गवाही में कुरान पाक की अहारह आयतेन ताज़िल फर्मा दी गईं। यही नहीं उनकी बराबर ताज़िल फर्मा दी गई बल्कि आगे फर्मा दिया कि तुहे इतना अरता जो परेराशन रहना पड़ा उसके बदले में (لىهم)
जब पाकदादम इस्लाम की ज़िंदगी में परशारी आती है तो फिर अल्लाह ताआला इस उनकी पुष्टपनाही फर्मा दिया करते हैं। आज भी जो इस्लाम नेकोकारी की ज़िंदगी और परहेज़गारी की ज़िंदगी बसर करेगा अल्लाह ताआला की मदद व नुसरत उसके साथ होगी। महबूब सल्लल्लाहु अल्लाहि वसल्लम की तालीमात किन्नी अच्छी है कि अपने इस बात से मना फर्माया कि कोई भी ऐसा काम किया जाए जो हया के तकाज़ों के खिलाफ हो। अपने एक-एक सहाय को हया का ऐसा नमूना बना दिया था कि उनकी निराहर, उनका दिल शाक्कर और उनकी ज़िंदगी गुनाहों से शाक्कर होती थी। अल्लाह ताआला हमें भी उनकी पाकदादमी वाली ज़िंदगियों का नमूना अत्ता फर्मा दे और हमें भी हया और गैरत वाली ज़िंदगी गुनाहों की ताप्फ़ीक अत्ता फर्मा दे।

इस्लाम में बेटी का महक़ाम

महबूब सल्लल्लाहु अल्लाहि वसल्लम की बेटी के बारे में ऐसी तालीमात हैं कि अपने फर्माया कि बाप अगर वर आए, बेटे भी हों और बेटी भी तो अगर कोई चीज़ लाया है तो उसको चाहिए कि अपनी बेटी को चीज़ पहले दे। इसलिए कि वह चार दीवारी में रहती है और वह बाप के रहम की ज्यादा हक्कार है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अल्लाहि वसल्लम की आदते मुबारका

नबी अकरम सल्लल्लाहु अल्लाहि वसल्लम की आदत मुबारक
री कि जब सफ़र से वापस तरीफ़ लाते तो आप अपने घर जाने से पहले हज़रत फ़ातिमा रज़िय़ल्लाहु अन्ना के घर जाया करते थे आप जब अपने घर वापस तरीफ़ फ़रमा होते और हज़रत फ़ातिमा आती थीं तो आप अपनी बेटी को देखकर खड़े हो जाते थे और उनको बिठाकर फिर आप बैठा करते थे।

इस्लाम में बहन का महत्व

नबी अकरम सल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बहन की इज़ाक करने की भी तालीम दी। तहज़ा शीमा जो हलीमा साइदिया रज़िय़ल्लाहु अन्ना की बेटी थीं, नबी अकरम सल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम को बचपन में साथ उठाकर ले जाया करती थीं, उनके बारे में आया है कि जब क़बीला साज़द पर फ़तेह हासिल की गई तो उनको भी गिरफ़्तार करके लाया गया। उन्होंने सहाबा से कहा, तुम मुझे गिरफ़्तार करते हो, मैं तुम्हारे नबी की बहन हूं, मैं उन्हें गांव में खिलाया है, मैं उनके लिए पानी भरकर लाया करती थी, मैं उनका प्यार किया करती थी। सहाबा ने आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! आज एक ऐसी औरत गिरफ़्तार हुई है जो वह कहती है कि मैं तुम्हारे नबी की बहन हूँ। नबी अकरम सल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा, उनका नाम शीमा तो नहीं? बताया गया उनका नाम शीमा है। नबी अकरम सल्ल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चादर बिछाई, उनको उस पर बिठाया और फ़रमा, शीमा! मुझे वह बक़्त याद है कि जब मुझे प्यास लगती थी तो तु मेरे लिए पानी भरकर लाया करती थी, तु मेरी दूध शरीक बहन है, तुझे गिरफ़्तार करके लाया गया है, तेरे क़बीले के जितने लोग भी गिरफ़्तार हुए हैं, मैं तेरी बज़ह से आज उन सबको आज़ाद कर
दिया और तभी इश्कियार दिया कि तुम उनको लेकर वापस चली जाओ।

इस्लाम में बालिका का मकाम

जब कभी हतीमा साआदिया रजिय्यल्लाहु अन्हा नबी अकरम सल्ल्लाहु अलैहि वसल्लाम से मिलने के लिए तत्त्रीफ़ लातीं तो

नबी अकरम सल्ल्लाहु अलैहि वसल्लाम उनके लिए अपनी चादर

को खुद बिखाले थे और उसके ऊपर अपनी रज़ाई माँ को बिठाया

करते थे। आपने माँ की इज्ज़त बताई, बहन की इज्ज़त बताई,

बेटी की इज्ज़त बताई। इन करीब की औरतों की इज्ज़त करने

का हुक्म इसलिए दिया ताकि पाक्दानी की ज़िंदगी नसीब हो।

चाँद देखना सुन्नत है

पहली रात का चाँद देखना सुन्नत है। नबी अकरम सल्ल्लाहु

अलैहि वसल्लाम चाँद देखा करते थे और उम्मत को भी हुक्म दिया

कि पहली रात का चाँद देखा करें। इसलिए हमें चाहिए कि हम

चाँद देखें। उस वक़्त यह दुआ भी पढ़ी जाती है :

اللهم اهله علينا باليمن والايمان والسلامة والسلام

والتو phúc لما تحب وترضى ربى وربك الله.

सैयदा फ़तिमा रज़िय्यल्लाहु अन्हा में शर्म व हया

अल्लाह तज़ाला ने हज़रत फ़तिमा रज़िय्ल्लाहु अन्हा को

अजीब हया अता फरमा दी थी। एक दफ़ा चाँद की पहली तारीख़

थी। नबी अकरम सल्ल्लाहु अलैहि वसल्लाम के यहाँ आपकी बेटी
हजरत फतिमा तस्रीफ लायी थीं। पूछा, फतिमा! क्या तुमने चाँद देखा है? अर्ज किया ऐ अल्लाह के नबी! मैंने चाँद नहीं देखा। फरमाया, बेटी! तुमने क्यों नहीं देखा? वह खामोश हो गयी। नबी अकरम सल्लल्लाहु अल्लाह वसल्लम ने दोबारा पूछा, इसकी क्या वजह थी? हजरत फतिमा ने जवाब दिया, ऐ अब्बा जान\! मेरे दिल में क्या आया कि आज पहली का चाँद है, सब लोग चाँद की तरफ़ देख रहे होंगे, अगर मैं भी देखूंगी तो मेरी निगाहें और गोर-महरम मद्द की निगाहें चाँद के ऊपर इकड़ी होंगी। मैंने इस बात को फिर बहुत गई ज्यादा हुए। इसलिए मैंने आज चाँद नहीं देखा। सुदरान अल्लाह! अल्लाह तबला हमें भी ऐसी वेटियाँ अता करे जिनमें ऐसी गई हो और अल्लाह तबला हमें भी ऐसी जिंदगी अता फरमाए कि हमारी जिंदगी से गुनाह निकल जाए।

तीन दिन का फाक़ा

हजरत फतिमा रजियमलल्हु अन्हा को नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेिह वसल्लम से बहुत ज्यादा मुहब्बत थी। एक बार नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेिह वसल्लम घर में मौजूद थे। हजरत फतिमा तस्रीफ लायी। आका ने आप से पूछा कि कैसे आई हो? आपने अपने दुकान का पल्लू खोला। उसके अंदर आयी रोटी थी। आपने वह रोटी नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेिह वसल्लम की खिदमत में पेश की और कहा अब्बा जान! मैं आपके लिए अपनी तरफ़ से तोहफ़ा लाई हूँ। पूछा, फतिमा! क्या वात बनी? अर्ज किया, ऐ अल्लाह के नबी हम कई दिनों से भूखे थे, हजरत अली ने कुछ काम किया और आटा लेकर आए। मैंने रोटियाँ पकायी,
एक हसन ने खाई, एक हुसैन ने खाई, एक अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने खाली। एक रोटी मागने वाले को दे दी और एक रोटी मेरे लिए बची थी। अब्बा जान जब मैं रोटी खा रही थी तो दिल में ब्याल आया, फातिमा! तुम बेटी रोटी खा रही हो, पता नहीं कि तुम्हारे अब्बा हुजूर को कुछ खाने को मिला या नहीं मिला, इसलिए मैंने बाकी आधी रोटी कपड़े में लपेटी और आपके खिदमत में ले आई हूँ। अब्बा हुजूर मैं आपको यह हदीया पेश कर रही हूँ; इसको कुबूल फर्मा लीजिए। नबी अकरम सल्ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फर्माया, फातिमा। मुझे क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्जे में मेरी जान है, आज तीन दिन गुज़र गए तेरे बाप के पेट में खाने का कोई तुकमा नहीं गया।

परेशानियाँ ख़त्म करने की तरक्कीब

आजकल नौजवान ज्यादातर कहते हैं कि हमारी ज़िंदगी की परेशानियाँ ख़त्म नहीं होतीं। कहते हैं कि एक परेशानी ख़त्म नहीं होती कि दूसरी आ जाती है, दूसरी ख़त्म नहीं होती तीसरी आ ऊपर से आ जाती है। आमतौर पर इनको वजह हमारे अपने गुनाह और तक़दीर की कमी होती है। जब ज़िंदगियों में तक़दीर और पहहज़ूगरी आएँगे तो अल्लाह तब आ से बरकरार नाज़ुल होंगे। इशादि बारी तबाहा है:

वल अहलुल्लाह आयूं और तेरे ले जन्म निकालें; कि अगर तेरी देवी, देवी इस्माल लाते और तक़दीर इश्तियार
करते तो हम ज़ुल्फ़ बिल ज़ुल्फ़ उनके लिए उत्साहमत से और ज़मीन से बरकरार देख देते।
सहाबा किराम के रिज़्क में बरकत

सुनिए और दिल कानों से सुनिए कि सहाबा किराम की जिंदगियों में तक़ब़ा था इसलिए अल्लाह तबाला ने उनको रिज़्क की इतनी ज्यादती आता कर दी थी। सहाबा किराम के दौर में जब कोई ज़कात लेकर निकलता तो पूरे मदीने में ज़कात का मुस्तहिंक नजर नहीं आता था क्योंकि सहाबा किराम के घरों में माल व दौलत के ढेर लगे होते थे। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्दु कहते हैं कि ये पास बैतुलमाल से जो हिस्सा आता था उसमें तो ने के इतने बड़े-बड़े दले आते थे कि उन्हें तक़ब़ी की खुलाड़ी से तोड़ा करता था।

तक़ब़ी की बरकतें

फिर क्रयामत के क़रीब एक वक़्त आए गा, जब इमाम मेहदी रज़ियल्लाहु अन्दु तश्रीफ़ लाएंगे। उस वक़्त ज़मीन से अल्लाह तबाला की नाफ़समानियाँ क्रयामत हो जाएंगी, जब नेक लोग होंगे। हदीस पाक में आया है कि लोगों के तक़ब़ी की बज़ह से अल्लाह तबाला की इतनी बरकतें होंगी कि एक गाय का दूध पूरे-पूरे खानदान के लिए काफ़ी हो जाए। हम जितना तक़ब़ इक्कियाऱ करेंगे उसने ही हमारी सेहत बरकत, वक़्त में बक़़त और कामों में बरकत होगी। आज गुनाहों की बज़ह से बरकतें रुक चुकी हैं। न माल में बरकत न सेहत में बरकत और न वक़्त में बरकत है। फिर हम रोते हैं कि किसी ने कुछ बांध दिया है। किसी ने कुछ कर दिया है, हमारे ऊपर आसेब का असर हो गया। उलटी तीर्थी रहों पर चल निकलते हैं। अमलियात वालों के पास
बुधवार की तारीख़ 5

जाते हैं जिसकी बजह से अक्कीदें भी खराब कर बैठते हैं।

अल्लाह ताज़ाला हमारी हिफाज़त फरमाए और नबी अकरम
सल्ल्ल्लाहु अलेहि वसल्लाम की तालीमात पर अमल करने की
तौफीक नसीब फरमा दे और ने आमाल को सबब बनाकर
अल्लाह ताज़ाला हमारी ज़िज़दगी में बरकत अता फरमा दे, अब तक
हमने जितने भी गुनाह किए, छोटे या बड़े, तनहाई में किए या
महफ़िल में किए, दिन में किए या रात में किए अल्लाह ताज़ाला
हमारे तमाम गुनाहों को माफ़ फरमा दे और आइंदा हमें पाकीज़ा
निगाहें अता फरमा दे और निगाहें की ना मुसलमानी से महफ़ूज़
फरमा दे।

(आमीन सम्पा आमीन)

जूँवाहर दुयाना अन अबदुल्लाह رضِّب العلمين
तीन बड़ी नेमतें

हर इस्मान को अल्लाह ताआला की तरफ से बेशुमार नेमतें मिली हैं।

फर्माने इलाही है, अगर तुम अल्लाह रखबूतबुज्जत की नेमतों को शुमार करना चाहो तो तुम उन्हें शुमार नहीं कर सकते। इन बेशुमार नेमतों में कुछ नेमतें बड़ी नमायां हैं। उनकी तात्दाता तीन है।

पहली बड़ी नेमत

पहली बड़ी नेमत अक़्र है।
अकृल की लफ़्ज़ी तहक़ीक़

हदीस में आता है ‘(ولى خلق الله العقل)’ अल्लाह ताज़ाला ने सबसे पहले अकृल को पैदा किया। यह एक नेमत है कि अल्लाह ताज़ाला जिसको भी अला फरमा दे। अकृल के लफ़्ज़ ‘عقول’ से बना है। ऊँटनी को जो नकल डाली जाती है उसको अकृक़ल कहते हैं। वह ऊँटनी को काख में रखती है, इधर-उधर भागने नहीं देती। इसी तरह जब इस्लाम की अकृल सलीम हो तो वह उसको शरीरत की हदों के अंदर रखती है इधर उधर भागने नहीं देती।

जनन्त में अकृल के मुताबिक़ दो दर्जे

हज़रत आशा रजियरलः अन्हा ने एक दफ़ा नबी अक़रम सल्लालः अलैहि वसल्लाम से पूछा कि ‘ऐ अल्लाह के नबी! भोग क़दमान के दिन जो नुक़ाम व दर्ज आगे वह किस हिसाब से पाएगे? नबी अलैहिसल्लातु वसल्लाम ने फरमाया कि अकृल के मुताबिक़। वह बड़ी हेरान हुईं, कहने लगी, ऐ अल्लाह के नबी! क्या अमल के मुताबिक़ नहीं पाएगे? तो नबी अकरम सल्लालः अलैहि वसल्लाम ने फरमाया कि वह अमल भी उतना ही करेगे जिनकी अल्लाह ताज़ाला ने उन्हें अकृल दी हुई होगी।

इस अकृल की दो किस्में हैं। एक को अकृले मजाद कहते हैं और दूसरी को अकृले मजाश कहते हैं।

अकृले मजाश

यह अकृले मजाश दुनिया के नुक़ताए नज़र की अकृल होती है। यह हर चीज़ में दुनिया को तलाश करेगी यहाँ तक कि उनके
फरमाया नहीं सुनो तो सही कि क्या कह रहा है? उन्होंने कहा,
हज़रत! संतरे बेच रहा है कि मेरे पास अच्छे संगतरे हैं, तुम ख़ूबीद लो। उन्होंने कहा फिर सुनो वह कह रहा है चौंगे संगतरे। कहा, हाँ हज़रत! बेचने की सिफ्त बयान कर रहा है कि अच्छे संगतरे। फ़रमाया, नहीं। ज़रा ग़ौर से सुनो वह कह रहा है चौंगे संगतरे। जो वंगों के संग लग गए वह तर गए। सुबहाल्लाह! यह अक़िल मआद होती है कि दुनिया की बात उनके सामने पेश हो उसमें से भी आविर्त का नुक्ता निकाल लेते हैं।

अक़िल मआद दुनिया को भी दीन बना लेती है। अल्लाह वालों को अक़िल मआद नसीब होती है। इसलिए उनकी तकज़ज़ह हर बक़्त अल्लाह ताज़ला की तरफ़ होती है। हर चीज़ उसे अल्लाह तलाज़ला की याद दिलाती है। सुना है कि जुलेखा ने हर चीज़ का नाम यूसुफ़ रख लिया था। मोमन का भी यही हाल है कि हर चीज़ उसे अल्लाह ताज़ला की याद दिलाती है।

चाँद तारों में तू मुर्जारों में तू है पीछाबादा
किस ने तेरी हक़ीकत को पाया
और एक शायर कहता है—
जग में आकर इधर उधर देखा
तू ही आया नज़र जिधर देखा
जान से हो गए बदन ख़ाली
जिस तरफ़ तूने आँख पर देखा

दूसरी बड़ी जेमत
दूसरी बड़ी जेमत इल्म है, अल्लाह ताज़ला जिसको अला फ़रमा
अभी आप हज़रत शैखुल हदीस दामत बरकातुल हम जाहिरी और इल्मे बातिनी के आपस में लाज़म होने पर बातचीत सुन रहे थे। एक किताबी इल्म होता है और एक सोहवती इल्म होता है। किताबी इल्म तो कागज के पन्नों पर लिखा हुआ मिल जाएगा जबकि सोहवती इल्म सीनों से सीनों में मुक्तिकल होता है। जैसे जाहिरी इल्म किताबों से कुलम और कागज के जरिए एक दूसरे के पास आता रहा है। यह इल्म हज़रत सिद्दीक अकबर रज़ियल्लाहु अन्हू ने नवजअ अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पाया। इसीलिए तो नवजअ अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया:

"हमा सब्बिलाह लिन सदूर आ अवदु हमनी लिन बक के मीने में दान दिया है।"

और उनकी बीवी फ़रमाया कहीं कि अबू बक रज़ियल्लाहु अन्हू को लोगों पर फ़ज़ीलत उनकी नमाज और रोज़े की कसर की वजह से नहीं थी बलिक उस सोज़ व गुम की वजह से थी जो अल्लाह ने उनके दिल में आता कर दिया था। जैसे लोग अपने ख़ानवानी शज़रे रखते हैं कि हम हसनी व हसनी सैयध हैं। अल्लाह का शुक्र है कि हमारे पास शज़रे मौजूद हैं कि सैयदना अबू बक रज़ियल्लाहु अन्हू से आगे यह नेमत आगे कहाँ पहुँची और फिर उससे आगे कहाँ पहुँची। और अल्लाह का शुक्र है कि हमारे मशाइख ने यह नेमत अपने रब की रहमत और फज़ल से हम जैसे आजिज़ और नालाक़ महलिया तक पहुँचा दी। यह निस्बत कयामत तक चलती रहेगी।
इमाम मेहदी और सिलसिला नक़्शबंदिया

इमाम रब्बानी मुज़हिद अलफ़ेसानी रह० अपने मक्ख़बात में लिखते हैं कि इमामे मेहदी जब तक्शीफ लाएंगे तो उनका सीना भी निक्स्वत नक़्शबंदिया के नूर से भरा होगा। और यह भी फर्माते हैं कि मुझे आलमें कश़फ़ में अल्लाह तज़ाला ने नक़्शबंदी तरकीत के साथ निस्वत रखने वाले कुँयामत तक जितने भी लोग आने थे उन सबकी जियारत करवा दी है।

तालिब इल्लम के एक-एक क़दम की फ़िज़ीलत

ताहम अल्लाह तज़ाला के यहाँ इल्लम की बड़ी फ़िज़ीलत है। हवास पाक में आता है कि जब कोई तालिब इल्लम अपने उस्ताद के पास चलकर जाता है तो अल्लाह तज़ाला उसके हर क़दम पर उसकी एक साल की इबादत का सब्बाब अता फर्माते हैं। जन्नत में उसके लिए हर क़दम के बदले एक शहर आवाद किया जाता है और ज़मीन के जिन दुकड़ों पर उसके क़दम लगाते हैं ज़मीन के वे दुकड़े उसके लिए इस्तिमाफ़ करते हैं।

इल्लम की फ़िज़ीलत

इमाम गुज़ली रह० ने भी एक रिवायत नक़्ल की है कि तालिब इल्लम जब चलता है तो अल्लाह तज़ाला के फ़रिश्ते बरकत के हासिल करने के लिए उसके पांव के नीचे पर बिखाते हैं। अल्लाह तज़ाला के यहाँ उसकी बहुत क़दर है। इसलिए फर्माया कि जो आदमी इल्लम की तलब में निकला उसके बदन पर जो गुवार पड़ती है और ज़हन्नम का धुंवा या ज़हन्नम की आग वे दोनों एक जगह कभी इक़ड़े नहीं हो सकते।
सैयदना सुलेमान अलैहिस्सलाम और इल्म

अल्लाह तअला ने हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम को इशारा दिया था कि आप चाहें तो आपको हम इल्म दें या आपको शाक्ति अता कर दें या आप कहें तो हम आपको माल अता कर दें। उन्होंने अल्लाह तअला से इल्म मांगा। अल्लाह तअला ने इल्म की बरकत से मुल्क और माल उनको खुद अता फरमाए।

एक हज़ार रहमतें

बल्कि उल्मा ने किताबों में लिखा है कि रोजाना अल्लाह तअला की एक हज़ार रहमतें नापिल होती हैं जिनमें से नी तो निन्नानवं उल्मा और लिखक को दी जाती हैं और बाकी आम लोगों में बात दी जाती हैं। इसलिए हदीस पाक में आता है तुम आलिम बनो या तालिब इल्म बनो या उनकी बातें सुनने वाले बनो या उनसे मुहम्मद करने वाले बनो कोई और चीज़ मत बनना।

इल्म और मक़ामे इल्लिय़ीन

इल्म के तीन हर्फ हैं। ऐन से इल्लिय़ीन कि जब अल्लाह रब्बुलइज़्ज़्ज़ के पास जाएगा तो उसकी बरकत से अल्लाह तअला उसको मक़ामे इल्लिय़ीन अता फरमाएगे।

इल्म और मुहब्बते इलाही

और इल्म की वजह से इस्लाम की तबियत में लताफ़त पैदा हो जाती है। तो इल्म में लताफ़त आ जाती है, कलाफ़त खल्म हो जाती है और जितना इल्म होगा अल्लाह तअला की मारिफ़त का उतना
हिस्सा होगा। फिर उसके अंदर अल्लाह तजाला की मुहब्बत ज्यादा होती है। इस्लाम यह चीज़ है कि जिससे इंसान के अंदर लताफ़त घैदा होती हो, अल्लाह तजाला की मुहब्बत हो और जब वह दुनिया से जाए तो अल्लाह तजाला उसकी मक़मे इलिययीन अता फ़रमाएँ।

आलिम के इकराम का फल

एक रिवायत में आता है कि जब कोई आदमी किसी आलिम की सहारा देता है, बीमार है, बुझापा है, कमज़ोर है, वधक हुए हैं, जब कोई आदमी किसी आलिम की सहारा देता है तो अल्लाह तजाला हर क़ृदम के बदले एक गुलाम आज़ाद करने का सवाल अता फ़रमाते हैं और अगर कोई आदमी मुहब्बत व अक़ीदत की वजह से किसी आलिम के साथ या सर को चुमता है तो अल्लाह तजाला हर बाल के बदले में उसकी नेकी और अज अता फ़रमाते हैं।

आलिम का साथ नवी अकरम सल्लाल्लाहु अलैहि

वस्ल्लम का साथ

'तबिहुल गज़िलीन' में एक रिवायत यह भी नक़ल की गई। फ़ूकीह अबुल्लैस समरकंदी रह० ने नक़ल किया है कि नवी सल्लाल्लाहु अलैहि वस्ल्लम ने इशारा किया जिससे आलिम की जियारत की उसने मेरी जियारत की, जिससे आलिम से मुताफ़ा किया उसने मुझसे मुसाफ़ा किया। और जिसने आलिम के साथ उठना बैठना किया उसने मेरे साथ उठना बैठना किया और जिसने दुनिया में मेरे साथ उठना बैठना किया अल्लाह तजाला जननत में भी उसको मेरा साथी बना देंगे।
कुवामत के दिन उलमा का इकाराम

इसीलिए एक रिवाज में आता है कि कुवामत के दिन उसके मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अलैहि वस्ल्लाम के झड़े के नीचे जमा होने तो उम्मत के जितने भी लोग प्यासे होंगे। उन प्यासों को फैलने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वस्ल्लाम के हुक्म पर होजे कौसर से प्यासे भर-भर कर पिलाएँगे लेकिन जो इस उम्मत के उलमा होंगे, उन उलमा को अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वस्ल्लाम अपने हाथों से होजे कौसर का जाम पिलाएँगे। ये वारिस हैं अंबिया किरम अलैहिमस्लाम के।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वस्ल्लाम की दावत

साई तवक्कुल शाह अंबालवी रहू बड़े बुरूर थे। अल्लाह तआला ने उनको जाहिर में भी बहुत दिया था। यह दुनिया अल्लाह वालों के कृदमों में आती है। लोग हसद करते है कि ऐसा क्यों है। वे इससे रुख़ फेर लेते हैं लेकिन यह फीर भी पीछे आती है। उनका दस्तरख्वान बड़ा पैला हुआ था और ऐलान था कि जो आदमी गृही हो, नावाह हो, मुसाफिर हो, लाचार हो वह उनके दस्तरख्वान पर आकर खाना खाए। तैनातों लोग रोज़ खाना खाते थे। खानकाह चल रही थी। लोगों के मजे थे। लोग आते खाना खाते। बहुत अरसे उनका यही मामूल रहा।

एक बार उनकी ख्वाब में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वस्ल्लाम की ज़ियारत नसीब हुई तो बड़ी खुशी हुई। मगर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वस्ल्लाम ने इरादा फर्माया, तवक्कुल शाह! तुम अल्लाह तआला की दावत तो रोज़ाना करते हो और
हमारी दावत तुम्हें कभी नहीं की। आँख खुली तो बड़े परेशान हुए। कई दिन तक अल्लाह ताज़ा ले हुए रोते रहे, मांगते रहे, कि परवरादिगार! इसका क्या मतलब है? आखिर अल्लाह ताज़ा ले ने दिल में बात डाली कि मैं जो यह दरसार्जान खोल रखा है यह अल्लाह ताज़ा ले की मस्तक के लिए, अल्लाह के वाते कि अल्लाह! तेरे बदे हैं, ग़रीब हैं और कोई बेरोज़गार है, तेरी निस्तव से लोग आते हैं, खाते हैं लेकिन नबी अकरम सल्लाल्लहु अल्लाह के वस्त्रिस तो आलिम, हाफिज़ और कारी हैं। मैं ने उनकी कभी दावत नहीं की इसलिए मुझे माफ़ कर दी गई है। लिहाज़ा उन्होंने पूरे शहर के उल्लास, हाफिज़ और कारियों की दावत की। गोया यह दावत नबी अकरम सल्लाल्लहु अल्लाह की हो गई।

इल्म का मफ़्र्हूम

जो आलिम अपने इल्म पर अमल न करे तो उस बेअमल के लिए ये बशार्त नहीं हैं। इल्म पर अमल होना मज़बूर है। इस आजिज़ को मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहब रहो की जियारत नसीब हुई और उनकी सोहबत में बैठने का शर्फ़ हासिल हुआ। एक बार उन्होंने तलबा से पूछा कि बताओ इल्म का क्या मफ़्र्हूम है? किसी ने कहा जानना, किसी ने कहा मानना, किसी ने कुछ कहा, किसी ने कुछ कहा। हज़रत ख़ामोश रहे। आखिर एक तलीब ने अर्ज किया, हज़रत आप ही बता दीजिए। आप ने इशाअद फर्माया, इल्म वह नूर है कि जिसके हासिल होने के बाद उस पर अमल किए बगैर चैन नहीं आता। अगर यह कौशिक तो इल्म है वरना तो बाले जान है। इसलिए जो बेअमल आदमी होगा और आलिम भी
अपने आपकी कहलाएगा तो क्यामात के दिन इसकी पूछताछ होगी।

बुरे उलमा के पेट की बदबू

एक रिवायत में आता है कि जहन्नम के परिस्तर अल्लाह तअला से शिक्षा देने के लिए ऐसे अल्लाह! दो चीज़ों की बदबू ने बहुत परेशान किया हुआ है एक काफ़िरों के जिसमें से जो बदबू आ रही है और दूसरे बुरे उलमा के पेट से जो बू आ रही है उसने हमें परेशान कर रखा है।

ख़ूंजीर के गले में मोती

इन सीरीन रहो के सामने किसी ने ख़ाब बयान किया कि मैं ख़ूंजीर के गले में मोती डाल रहा हूँ। आपने फरमाया कि नालायकों को इल्म मत सिखाया करो, नाकदरों को यह चीज़ न दिया करो। यह क्षति करने वाली चीज़ है।

इमाम बुख़ारी रहो और इल्म की क़ूदर

इमाम बुख़ारी रहो के हाँ इल्म की क़ूदर थी। जो आज अल्लाह तअला ने उनको यह इज़ूरत अता फरमाई, यह शर्फ़ अता फरमाया। वक़्त के हाकिम ने कहा था कि घर आकर मेरे बच्चों को पढ़ाओ। उन्होंने फरमाया कि यह इल्म की तौहीन है और मेरे इल्म की तौहीन नहीं कर सकता। उसने कहा, शहर छोड़ न उड़ा दें। फरमाया, शहर तो छोड़ दूर गए मगर कभी इल्म की तौहीन नहीं करसंग। देखा अल्लाह तअला ने आज उनको क्या इज़ूरत अता फरमाई।
चमेली के फूल से मिसाल

एक आदमी ने इने सीरीज रहौ से आकर ख्वाब बयान किया कि हज़रत! मैंने देखा है कि एक कबूतर है और वह चमेली के फूल खा रहा है। उन्होंने फरमाया कि इसकी यह ताबीर है कि कुछ उलमा जलदी मीठ आ जाएगी। तहजा अगले कुछ दिनों के अंदर अंदर बीस बड़े बड़े उलमा इस दुनिया से रुक्तत हो गए।
तो ख्वाब में चमेली के फूल को देखना इस ताबीर उलमा हुआ करते हैं। इसलिए कि इल्म वालों की अपनी शान होती है। उनके दिल में अल्लाह तआला का यकीन होना चाहिए, मुहब्बत होनी चाहिए, तबक़त होना चाहिए।

आलिम और जाहिल में फर्क

फर्क़ा ने मसूदज़ा लिखा कि अगर आलिम और जाहिल दोनों एक बक़्त में गिरफ़्तार हो जाएं और एक आदमी को कुदस्त ऐसा इक्तियार दे कि वह दोनों में से एक को आज़ाद कराए तो जाहिल को आज़ाद कराया ले। इसलिए कि आलिम के अंदर दीन की ख़त्तर तकलीफ़ सहन करने का ज्ञान मलका होता है, अल्लाह पर ज्ञान भरोसा है। वह उन तकलीफ़ों में भी रहेगा तो ज्ञान से कोई ऐसी वात नहीं निकालेगा। हो सकता है कि जाहिल मुज़ीबों की वजह से कुछ का कोई ऐसा क़लमा ज्ञान से निकाल बैठे तो जाहिल को निकलताकर आलिम को रहने दो।

मगर दूसरा मसूदज़ा यह लिखा है कि अगर हमाम में या किसी जगह एक आलिम नहा रहा था और दूसरे हमाम में जाहिल नहा रहा था और किसी ने कपड़े चुरा लिए। अब दोनों के बदन
उलमा उम्मत का आईना

हसन रशीद उलमा का बड़ा क्रियान्त था। एक दफ़ा उलमा ने बताया कि हज़रत शकीरुल्लाह रहौ ने हसन रशीद की नसीहत की, फरमाने लगे कि देखो दरिया का पानी साफ़ होता है तो नहीं में साफ़ पानी आया करता है और जब दरियाओं का पानी गंदा होता है तो फिर नहीं में गंदा पानी आया करता है। इसी तरह उलमा के दिलों के अंदर अगर दीन की ठंड हो गई तो आम लोगों के दिलों में भी यही चीज़ मुस्तकिल हो गई और अगर उलमा के दिलों में दुनिया बसेगी तो आम लोगों से मिला करने से कोई फायदा नहीं।

बुरे उलमा और सही उलमा का किरदार

इमाम मालिक रहौ से पूछा गया कि हज़रत! इस उम्मत की तबाही जब भी आएगी वह किस वजह से आएगी? तो फरमाया उलमा की वजह से। फिर पूछा कि हज़रत! इस उम्मत की दूबती किस्ती को सहारा कौन देगा? तो फरमाया, उलमा। उसने कहा कि हज़रत! यह क्या, दुबोगे भी उलमा और तैराएंगे भी उलमा।
फर्माया कि जो भुरे उलमा हों, वे हुबने का सबब बनेंगे और जो उलमाए हक्क होंगे वे किश्ती के तौर पर का सबब बन जाएंगे।

गुमराही के रास्ते

तो इसलिए आलिम वही है जो अपने इल्म पर अमल करता है। इस इल्म के जरिए इस्मान को हक्क का रास्ता मिलता है। अल्लाह ताज़ाला ने कुरआन पाँच में फर्माया:

फिरो्मा يسلو الاعمي والبصرولا الظلمت ولا النور.

इसमाम गुजाली रहो फर्माते हैं कि 'आम' से जानिल मुराद हैं और 'बसीर' से आलिम मुराद है। उनसे किसी ने सवाल किया कि अगर यह मुराद लें तो (ولٰى الظلمت ولا النور) का लफ़ज़ तो जमा का लाही गया है और नूर का लफ़ज़ वाहिद लाही गया है और नूर का लफ़ज़ एक बार लाही गया है। उन्होंने फर्माया कि इसलिए कि गुमराही के रास्ते तो कई होते हैं और हक्क का रास्ता हमेशा एक हुआ करता है।

इल्म और अंबिया अल्लाहुस्सलाम

इसी इल्म के वजह से अल्लाह ताज़ाला ने अंबिया किराम अल्लाहुस्सलाम को शरफ अता किया। देखिए हज़रत आदम अल्लाहुस्सलाम मस्जिद मलाइका बने। अल्लाह ताज़ाला ने उनको अस्मा का इल्म दिया था (فرعلم آدم الاسما كلهها) तो उनको अल्लाह ताज़ाला ने इल्मुल-अस्मा, इल्मुल-अशिया दे दिया था जिसकी वजह से मस्जिद मलाइका बना दिया गया था यह फज़ीलत उनको किस लिए मिली? इल्म की वजह से मिली थी।
हज़रत सुलेमान अल्लाहसलाम को जो अल्लाह ताआला ने मलिका बिलकिस के ऊपर गुलबा अता किया था उसकी बुनियाद क्या चीज़ बनी? उनको अल्लाह ताआला ने परिन्योग की बोली समझने का इलाम अता किया था।

फ़ियाहियाहुहुआ اللاتين سُنَّة الطَّارِق.

दाऊद अल्लाहसलाम को सलतनत क्यों मिली थी? इसलिए कि अल्लाह ताआला ने उनको एक फून दे दिया था। फ़ूलम्स स्वाता

लिहिसो के और इसके उनको अता कर दिया था जिन्हें बनाने का इलम कि वे कड़ियों को एक तरीक़ा के साथ जोड़ते चले जाते थे।

हज़रत युसुफ अल्लाहसलाम को जो जेल से निजात मिली थी वह उनके इलम की बजह से थी कि अल्लाह ताआला ने उनको ख़याबों की ताबीर का इलम दिया था। यह भी एक इलम है। दो बंदों ने ख़याब देखा था। उन्होंने ताबीर की थी और उनमें से एक उनकी रिहाई का सबब बन गया।

फ़ूलम्स से मिन ताओल इहादियत.

तक्वीमी उल्लम में हज़रत ख़िज़्ज़र अल्लाहसलाम की फ़ज़ीलत

बल्कि एक ग़ैर नबी बली एक नवी के उस्ताद बनने का शर्श पा गए। इलमे शरीरत में नहीं बलिक तक्वीमी उल्लम में। कुछ तशरीई उल्लम है जिन्हें हम शरीरत कहते हैं और एक इस निज़म के कार्यकार को लिए अल्लाह ताआला की सरकारी जमात होती है। फ़रिश्तों की और बंदों की जो काम कर रही होती है।

जैसे आप तो जहाँ मज़म में बैठे हैं और एक ख़िदमत की जमात लगी हुई है। कोई टोटी पका रहा है और कोई पानी लारहा है।
यदि बात यह है कि अगर दिल में यह रहा कि चाय न मिली तो क्या बनेगा तो अल्लाह तजाला आपको चाय तो दे देंगे। मगर बातिन की नेमत से अल्लाह तजाला आपको महसूम करके भेज देंगे। अपने मकसद को ठीक रखें। अगर सोना था तो तो घर में बिस्तर बड़े नरम थे, अगर खाना था तो घर में बीवी के हाथों का पका खाना बड़ा अच्छा था, घर में चाय बहुत अच्छी मिलती थी, हर सहस्त्र घर में थी मगर यहाँ तो आए किसी और मकसद के लिए आए थे। और यह है अल्लाह तजाला की रजा। अब ख़िदमत की जमात दिन व रात लगी हुई है ख़िदमत करने में। अगर कुछ कमी कोताही हो जाए तो माफ करें बल्कि उनके लिए अल्लाह तजाला से दुआ करें क्योंकि वे अपने रात व दिन लगाकर आपके लिए यहाँ इतिमान से बैठना आसान बना रहे हैं। शैतान कई दफा गल्ली करवा देता है।

इसलिए मकसद सामने रहे। हम चाय के लिए नहीं चाव के लिए आए हैं। चाव किसे कहते हैं, मुहब्बत को। तो यहाँ चाय के लिए नहीं आए चाव के लिए आए हैं। अल्लाह तजाला अपना चाव नसीब फर्मा दे, अपनी मुहब्बत अता फर्मा दे।

एक बली को अल्लाह तजाला ने एक नबी के उस्ताद होने का शर्क अता किया। वह बली कौन थी? हज़रत ख़िज़ूर अलेहिस्सलाम। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम को उनके पास भेजा गया।

फ़िर फर्ज़ कर। उन्हें इल्मेल्लुद्दीनी अता किया था।

दो बुद्धों में मुहब्बत इलाही

हमारे हज़रत ख़वाजा फज़ल अली क़ूरेशी रहो की ख़़ानकाह
एक रिवाज में आता है कि रोज़ उल्लाल अल्लाह र्खुलदृज्जज्जत 
अपने महबूब को कर्माओं के आशा में लीजिए तो नदी के अकरम सल्लाल्हु अल्हि 
सल्लम पूरी उम्मत को बुला लेंगे। जब पूरी उम्मत को बुलाएगे 
तो अल्लाह तआला पूछेगे, ऐ मेरे महबूब मैंने तो कहा था कि
अप उल्मा को बुलाएं और आपने पूरी उम्मत को बुला लिया। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अर्ज़ करेंगे, ऐ अल्लाह! आपने मेरी उम्मत के हर फर्ड़ के इल्म की गवाही खुद दी हुई है। पूछो, मेरे महबूब! वह कैसे? तो आप कुरआन पाक की आयत पढ़ेंगे:

कि जिस बदि ने ‘ला इलाहा इल्लाल्लाह’ कहा होगा। यह कहने वाले कौन होते हैं यह ऊलुल इल्म होते हैं। ‘ला इलाहा इल्लाल्लाह’ की बसकत से अल्लाह ताआला अपने महबूब की पूरी उम्मत को उल्मा में शामिल कर लेंगे।

तीसरी बड़ी नेमत

इल्म हो मगर अदब न हो तो रंग नहीं बढ़ता, सीना रोशन नहीं होता। इसण ज़रबा-यजरिसू की गदनिंग करता रहता है और उसको पता नहीं होता कि शैतान मुझको मुक्के मार रहा होता है। उसको नहीं पता होता कि शैतान मुझको कहाँ-कहाँ भटका रहा है। वह अपनी ख्यातियों पर अमल करता है और ख्यातिहाश को भी दीन का रंग देने की कोशिश करता है।

हज़रत अक़्बाद धान्वी रह० का इशाद

इसलिए हज़रत अक़्बाद धान्वी रह० ने फरामाया कि आलिम का शैतान भी आलिम और मुस्तस का शैतान भी मुस्तस होता है बड़ी तावालें सिखाता है। जाहिल गुनाह करेगा तो एहसासे नदामत के साथ करेगा लेकिन आलिम गुनाह करेगा तो किसी तावील के
हज़रत मुज़हिद अलफ़सानी रहॊ और अदब

अगर किसी इस्मान के अंदर इल्म की कमी होगी तो वह अदब से पूरी हो जाएगी मगर अदब की कमी इल्म की वजह से पूरी नहीं हुआ करती। अल्लाह तालाब बेअदबी माफ़ नहीं फरमाते, बड़े गृह्यूर हैं। अदब का अल्लाह तालाब इतना लिहाज़ फरमाते हैं।

इमाम ख़ामीन मुज़हिद अलफ़सानी रहॊ फरमाते हैं कि मैं बेठा हुआ था हदीसें लिख रहा था। क़ृत्तम नहीं चल रहा था तो मैं अपने हाथ के अनुमूल से क़ृत्तम को जुरा सही किया तो स्वाही लग गई। इसी हाल में मुझे तकाज़ा महसूस हुआ बैतुलख़ला जाने का।

जब मैं वहाँ बैठने लगा तो बैठते ही मेरी नज़र अनुमूल पर पड़ी तो मैंने स्वाही देखी, दिल में ख्याल आया कि अगर तकाज़े से फरिंग हुआ तो हाय धोए गे और पानी की वजह से यह स्वाही जो मैं लिखने में इस्तेमाल करता हूँ इस गद पानी में शामिल हो जाएगी जो अदब के खिलाफ नहीं। मैंने तकाज़े को दबाया और बैतुलख़ला से बाहर आया और आकर मैंने स्वाही को साफ़ जगह पर धोया।
असे ही मैंने धोया उसी वक्त इलाम हुआ कि अहमद सरहंदी!
हमने जहांम की आग को तेरे ऊपर हरम कर दिया तो इल्म भी हो और अदब भी हो तो सोने पर सुहागा हुआ करता है।

क़िब्ला रुख बैठने की फ़जीलत

मैंने एक किताब में वाकिया पढ़ा है कि एक दोस्त फरमाते थे कि वे दो तालिब इल्म थे और दोनों कुरआन पाक याद करने वाले थे। एक की बैठक ऐसी थी कि जिसका रुख किबले की तरफ था और दूसरे की पीठ किबले की तरफ थी। वह फरमाते हैं कि जिसका रुख किबले की तरफ होता था वह दूसरे से एक साल पहले हाफिज़ बन गया। इसलिए हमारे बड़े भी अपने रुख को किबले की तरफ रखने की पाबंदी फरमाया करते थे। हर जगह मुमकिन नहीं होता लेकिन जहाँ मुमकिन हो इसान कोशिश करे।

अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी रह० का अदब

मुफती-ए-हिंद हजरत मोलाना मुफती किफायतुल्लाह रह० ने एक बार पढ़ने वालों से पूछा कि बताओ अनवर शाह, ‘अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी रह०’ कैसे बने। अब जिसको तफसीर के साथ ज्यादा लगाव था उसने कहा कि बड़े मुफतिर थे, जिसे हदीस के साथ ज्यादा लगाव था उसने कहा मुहदिस थे, जिनको अशुआर के साथ ज्यादा दिलचस्पी थी उसने कहा कि उनका कलाम बड़ा आला था। हजरत ख़ामोश रहे। तबबा ने कहा हजरत! आप ही बता दीजिए। उन्होंने फरमाया, मैं क्या बताऊँॉ,

वह सबक खुद उनसे पूछा गया कि हजरत! आप अनवर शाह
कश्मीरी रहू कैसे बने? तो उन्होंने जवाब दिया कि अल्लाह तालावा ने मुख्य इल्म के और किताब के अदब की वजह से अल्लाहा अनवर शाह कश्मीरी बना दिया और अदब किनारे
फर्माते थे कि अगर हदीस पाक की किताब पढ़ी है और पढ़ रहे हैं और हाशिया पढ़ रहे तो हाशिया का रूप बदल कर और खुद बेठकर हाशिए को नहीं बदलते थे बल्कि उठकर दूसरी तरफ आते और फिर हाशियों का भुताला किया करते थे और फर्माते थे कि वे कभी किसी किताब को चेतना हाथ भी नहीं लगाया। हदीस की किताब को बी बेवजू हाथ भी नहीं लागाया और फर्माते थे कि मैं किताबों के रखने में भी ख्याल करता था। कभी मैंने कुरआन पाक के ऊपर तपस्या नहीं रखी, तपस्या के ऊपर हदीस की किताब नहीं रखी, हदीस की किताब के ऊपर फ़िक्र की किताब को नहीं रखा, फ़िक्र की किताब के ऊपर तारीख की किताब नहीं रखी। मैं किताबों के रखने में भी उनके दर्जा का ख्याल रखता था। इस अदब की वजह से परवरदिगार ने कुबूलियत अता फर्माई।

जादूगर और अदब

हज़रत मुसा अलेहिस्लाम के मुकाबले में सतर हज़ार जादूगर थे। अल्लाह तालावा ने उनको ईमान लाने की तौफीक अता कर दी। कुछ लम्बे पहले कफ़िर थे और कुछ लम्बे बाद सम्पर्क में गिर गए और मोहिन बन गए, क्या वजह थी? उसकी वजह यह थी कि उनके अंदर अदब था। एक तो वक़्त ने नबी साथ मुशाबहत थी और दूसरी वजह किताबों में लिखा है कि मुकाबले से पहले
उन्होंने आपस में मशुमत किया था कि क्या करें? उनमें से एक अंदा जादूगर था। उसने कहा भाई देखो दो सूरतें हैं या तो हमारे मुक़ाबले पर जो है वह वाक़ई सच्चा है और अल्लाह का नभी है या फिर हमारी तरह जादूगर है। लिहाज़ा में तुम्हें मशुम देता हूँ कि तुम इसका अदब करे। अगर अदब करेंगे और वह जादूगर हुआ और हम जीत गए तो हमें नुकसान कोई नहीं और अगर वह हम पर ग़ुलिब आ गया तो हमने क्योंकि उसका अदब किया होगा इसलिए उसका अदब हमारे लिए फायदे और नफ़े का सबब बन जाएगा। उन्होंने पूछा कि हम उसका अदब क्या करें? उस अंदे ने मशुमत दिया (उसके बालिंर में अल्लाह तहाला ने रोशनी दे दी होगी) और कहा कि अदब यह है कि तुम मुक़ाबला करने से पहले पूछ लेना कि जनाब आप डालना चाहते हैं अपनी किसी चीज़ को या हम डालकर दिखाएं। यह जो हम पूछते यह हमारा पूछना इल्ला और अदब बन जाएगा और इस अदब की वजह से हमें यह नफ़ा मिलेगा और वाक़ई जब उन्होंने कहा वाक़ई अल्लाह तहाला ने मेरहांनी फर्मा दी कि अल्लाह तहाला ने इस अदब की वजह से ईमान की दौलत नसीब फर्मा दी।

हमारे सज्जों की कैफियत

अब यहाँ एक नुक्ता है कि उन जादूगरों ने एक सज्जा किया था और उस एक सज्जे से वे अल्लाह तहाला के इतने करीब हो गए थे कि उनके ईमान की बशारत खुशखबरियाँ अल्लाह तहाला ने कुरान में दीं। ऐ मिलन! तू दिन में चालीस सज्जे करता है
तो तुझे अल्लाह ताआला का कुर्ब क्यों हासिल नहीं होता। मालूम हुआ कि हमारे संदे की यह कैसियत नहीं है। उनका एक सज्दा हमारी जिंदगी के इन सज्दों से ज्यादा बेहतर था इसलिए वे ज्यादा कुर्ब का मुकाम पा गए। तो सज्दा करें इस मुहब्बत के साथ कि सज्दे में भी मजा आए और कैसियत यह ही कि ईलही सज्दा लाया रहा इस अल्लाह! मेरा जिस्म, मेरी जान, मेरी रह तुझे सज्दे कर रही है। ऐसे सज्दे का मजा आता है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अदब

उलमा ने तफसीर में एक नुक्ता लिखा है। तलबा के लिए समझना आसान है। फरमाते हैं कि जब मूसा अलेहिस्सलाम की कौम ने कहा था कि आज हम मारे गए, पकड़े गए तो मूसा अलेहिस्सलाम ने जल्दी में जवाब दिया था कि (Fs मुल्ला मुहम्मद रब्बी सहिदेन) अल्लाह ख़बुलइज्ज़ूत मेरे साथ है और वह रहनुमाई फरमाएगा।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रहनुमाई में सैयदना सिद्दीक के अकबर रज़ियल्लाहु अन्दु घरा रहे थे कि कहीं कफिर नबी अलेहिस्सलातु वसल्लम को देख न ले और तकलीफ़ न पहुँचाएं। अपनी घराहट नहीं थी, महबूब के लिए घराहट थी तो महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क्या फरमाया था (Fs मुल्ला मुहम्मद) मुम्ना। अब यहाँ मुक्तिसरीन ने एक नुक्ता लिखा है कि मूसा अलेहिस्सलाम की ज़बान से निकल गया था (Fs मुल्ला मुहम्मद रब्बी) उन्होंने ‘महा’ का लफ़्ज़ पहले कह दिया और ‘रब्बी’ का लफ़्ज़ बाद में कहा था जबकि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने (Fs मुल्ला मुहम्मद) में “अल्लाह” लफ़्ज़ पहले लिया था “मानना” का लफ़्ज़ बाद में लिया। इसलिए अल्लाह ताआला ने मूसा अलेहिस्सलाम की
एक अजीब वाक्य

एक किताब में इस आजिज ने एक अजीब वाक्य पढ़ा। एक ख़त्रीव ख़ुश नवीस कहते थे जो कुरान पाक लिखा करते थे। उन्होंने अपना मुशाहिदा बयान किया है कि मैं जब भी कुरान पाक लिखा करता था तो हर दफ्त लिखने के लिए जब में क़़लम उठाता तो कोई न कोई मक्क़ी क़लम के साथ आकर स्थानी चूसने के लिए बैठती। वह कहते हैं कि मैंने साठ कुरान पाक शुरू से लेकर आख़िर तक लिखा है लेकिन एक बात मेरे मुशाहिदे में आई कि कुरान पाक की हर आयत पर स्थानी में से मक्क़ी ने हिस्सा लिया लेकिन जब में वह हमें लिखता था "क्या तफसिल यानि कि "यहूद या मसूद के करीब भी न जाओ!" जब मैं इसके लिए स्थानी लेता था तो साठ कुरान पाक लिखते हुए कभी मक्क़ी ने उसमें से हिस्सा न लिया। अल्लाह इब्नुलक़ुलान के इस हुकम का एक मक्क़ी जैसे जानदार में भी इतना अदब वालों की वह हुकम इशान को हो रहा है लेकिन इसको लिखने के
लिए जो स्वाभी ली जा रही है, मक्की भी उस स्वाभी को चूसना पसंद नहीं करती।

अदब हासिल करने का तरीक़ा

इस्लाम अदब अपने आप नहीं सीख सकता बल्कि किसी की सोहबत में आकर, किसी के पास बैठकर, किसी की डांट खाकर और तर्कलग्न पाकर फिर इस्लाम को यह हासिल होता है। आप जो इल्तिमा में तश्शीफ़ लाए तो इसलिए नहीं आए कि आपकी तारीफ़ की जाएं बल्कि इसलिए आए कि आपकी इस्लाम की जाय।

इस्लाम का लिए मुहब्बत प्यार भी होता है और डांट-डपट भी होती है। और इससे इस्लाम को अदब मिलता है। तो अल्लाह तअला से जहाँ और दुआँ मांगे तो वहाँ यह भी दुआ मांगिए। अज़ीज़ बाबा है कि आज के दौर में यह हुआ मांगने वाले भी कम हैं कि ऐ सल्लाह! अबे अदब सिखाए और अदब अता फरमा। नबी अकरमﷺ अल्लाहु अल्लाम फरमाते हैं:

ऍदबिन रबिई फाहीसन ताइदी

मेरे रब ने मुझे अदब सिखाया और बेहतरीन अदब सिखाया।

हमारे मशाइख़ ने फ़रमाया:

एदबुललिफ़ास्स मेह्नतः अदब सिखाया और इद्रलुल्फ़ का आदाब

ऐ दोस्तो! अपने तुफ़स को अदब सिखाओ इसलिए कि इसके मिलने रास्ते में वे सब आदाब ही हैं।

ख़शियाते इलाही किसे कहते हैं?

जब ये तीन चीज़ें मिल जाएं, अक्ल सलीम भी, इले नाफ़े भी
और अयात भी तो फिर उनका मजबूत उम्रुः तक इलाही कहलाता है। इसलिए कुरान पाश की जो आयत पढ़ी है:

(किसी ने पूछा कि अल्लाह तब बुद्धि से उसका मजबूत इलाही कहलाता है।)

इसमें ख़शियत से बुराद यही है। ख़शियत दिल की एक दैवित का नाम है जिसकी वजह से इस्तान अल्लाह तालाल से मुहत्त में आयात करता है और उसके दिल में हर वक्त ख़ाल रहता है कि मैंने कुशमत के दिन अपने रब को जवाब दिया है, मैं अपने रब से मुलाक़ात करनी है और मुलाक़ात का दिन जब उसे यद होता है तो फिर वह कोई छोटा दिन भी अल्लाह तालाल के हक्कों के ख़िलाफ़ कर नहीं सकता।

माइयते इलाही

देखें एक होता है किसी चीज़ का पता होना, इत्म होना और एक होता है उस चीज़ का इस्तेहजार होना यानी वह चीज़ तबियत में हाज़र होना। यह जो इस्तेहजार है यह हर वक्त नहीं रहता। उसकी मिसाल यूँ समझ लीजिए कि एक आदमी अगर डॉक्टर के पास बैठा काम कर रहा है और दर में दर्द है तो हर बंदा कहेगा कि जी दवाई लेने लो और अगर वहीं बंदा उलमा की महफ़िल में बैठा है कि जी मेरे सर में दर्द हो रहा है तो आप कहेंगे जी दम करवा लो। यहाँ दम का ख़ाल आया और वहाँ गोली का ख़ाल आया। जैसा माहील था सोच वैसी ही ग़लिब आ जाती है। किसी चीज़ का ध्यान होना यह एक अजीब चीज़ है। अब किस्मे को नहीं पता कि अल्लाह तालाल ने फरमाया कि जहाँ तीन होते हैं तो चीज़ अल्लाह तालाल होता है और जहाँ चार होते हैं वहाँ वह
पाँचवाँ होता है वह तुम्हारे साथ होता है तुम जहाँ कहीं होते हो। तो इस्लाम एतिबार से हर बदे को इसका पता होगा लेकिन इसका इस्तेहजार किसी किसी को हासिल होगा। तो मालूम हुआ कि इल्म कोई और चीज़ है उसका हर वक़्त इस्तेहजार रहना और चीज़ है। यहाँ जो ज़िक्र के लिए आते हैं वे इसलिए कि हमें इस इल्म का इस्तेहजार हासिल हो जाए। अल्लाह ताज़ाता की इस माइय्यत का इस्तेहजार हासिल हो जाए। हर वक़्त हमारी यह कैफ़ियत रहे। और जो तनाहाई में बैठकर ज़िक्र करवाते हैं और जबे लगवाते हैं उसकी बुनियादी बजह यही है।

मरयम रज़िय्यल्लाहु अन्हा और माइय्यते इलाही

एक दलील सुन लीजिए। हज़रत ज़ुक्रिया अल्लाहिस्लाम अल्लाह ताज़ाता के पेवम्बार हैं। आप ताबूलेग के लिए चले गए। पीछे बैठे मरयम रज़िय्यल्लाहु अन्हा अकेली थीं। वक़्त ज़्यादा लग गया, आपके दिल में क्या आया कि कहीं खाने की चीज़ें कम न हो गई हों। इसलिए वापस तश्रीफ़ लाए और जल्दी से मेहराब में दाख़िल हुए।

जब दाख़िल हुए तो देखा कि मरयम के पास तो बेमौसम के फल पड़े हैं। हैरान हो गए क्योंकि आलमे असबाब में मेहनत करते आए थे, लोगों से मिलते आए थे तो सोच भी असबाब के मुताबिक़ थी। पूछ़ते आये कि 
लक हंदा मरयम तुझे ये फल कहाँ से मिल गए? मरयम क्योंकि तब लिए की हालत में थी और अल्लाह ताज़ाता के साथ तार जुड़ी हुई थी, तबज़ह अल्लाह ताज़ाता की तरफ थी। मरयम ने फ़ौरन जवाब दिया कि कहने लगी यह अल्लाह की
तरफ से है हानि! अब जब उसने यह बात की तो हजरत ज़कीया अल्लाहूस्लाम की तकज़ेह इस तरफ हुई तो आपके दिल में बात आई ऐ अल्लाह! आप मरयम के बेमौसम फल दे सकते हैं तो इस बुद्धापे मे क्या मुझे आप बेटा अता नहीं फर्मा सकते।

हां तो दुआ करें रब नहीं है जो परलयक दे।

उन्होंने दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! मुझे बेटा अता फर्मा लिहाज़ा अल्लाह तताला ने फरियाएँ के ज़रिए से ख़ुशख़बरी दे दी कि अल्लाह तताला ने आपको बेटा अता फर्मा दिया। हजरत ज़कीया अल्लाहूस्लाम का ध्यान असाबाब की तरफ गया और यह कोई बुरी चीज़ नहीं। इंसान की तबियत पर असाबाब का, महाल का असर होता है।

अंबिया किराम पर असाबाब का असर

हजरत मूसा अल्लाहूस्लाम वक्त के नबी हैं लेकिन साँप को देखा तो ख़ौफ तारी हो गया। वह मक़ामें नबुव्वत के ख़िलाफ़ नहीं हुआ करती बल्कि तबई चीज़ें होती हैं। वक्त के नबी हैं और जा रहे हैं और दुआएँ मांग रहे हैं घरब नज़ीरी अब यह कोई मक़ामें तबक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं है। यह एक तबई चीज़ है, फितरी चीज़ है। इसलिए कि शुएब अल्लाहूस्लाम ने उनको तसल्ली दी। इसलिए कि नज़रीत असाबाब के असर होते हैं। हम आलमें असाबाब में जिंदगी गुज़ारते हैं इसलिए हम पर भी असर होते हैं।
मौलाना इलवास साहब रहौ का इशारद

इसलिए मौलाना इलवास साहब रहौ ने फरमाया तुम एक छोटा मेहनत अगर मख्शुक पर करो तो एक मन मेहनत अपने और अल्लाह तआला के ताल्लुक पर किया करो और जब कभी बाहर चलता लगा जाते थे तो ढाप आकर ऐतिकाफ में बैठा करते थे। वह ऐतिकाफ क्या चीज़ थी? उसी ऐतिकाफ के लिए हम खानकाहों में बिखाते हैं। इससे तबजह अल्लाह की तरफ बनती है।

मर्यम रज़ियल्लाहु अन्हा पर असबाब का असर

वह मर्यम जो तन्हाई में बैठी और जिनका ताल्लुक अल्लाह तआला के साथ कमला था। अब उसी मर्यम ने जब घर में जिज्ञासु गुज़री शुरू कर दी तो उनका अपना क्या हाल बना कि जब मुस्लिम के लिए पूरा की तरफ गयीं तो जिब्रिल अल्ल्हस्लाम पहुँच गए अल्लाह तआला के तुष्क से। अल्लाह तआला फरमाते हैं «फ़र्ज़लाहु बिस्तावरा» हमने उसे भरपूर जवान की शक्ल में भेजा। अब जब हज़ारत बीबी मर्यम ने देखा कि एक खार-मर्द है तो फ़ौरान डर गयीं और कहने लगीं कि «फ़िलाहु बल्लाल हुदा मिलकर निकलई» में रहमान की पनाह मांगती हूँ जब जिब्रिल अल्ल्हस्लाम ने देखा कि डर गई है तो उन्होंने कहा «फ़िलाहु बल्लाल हुदा मिलकर निकलई» ताकि आपके रब का भेजा हुआ नुमाइदा हूँ। तो प्रिया रेसा बेटा, नेक बेटा मिले। अब मर्यम और परेशान हो गई कि इसका आना एक मसीह थी, इसका अगली बात कहना उससे बड़ी मुश्तिब है कि मैं अपनी शादी-शुदा नहीं मेंबा बेटा कैसे हो
अल्लाह से लौटा लो
अब यह रब की तरफ़ सृष्ट ने लिए वक्त क्यों निकाल लेते हैं।
इत्ती को तो हम मामूल तथा तख्तलिया कहते हैं और इसी के लिए वक्त भागते हैं कि रोजाना कुछ वक्त फारिग कर लो। नबी
अल्लाहु वस्त्रलाम फ़रारते ले

ci से ली रुकें
कि मेरा
अल्लाह के साथ एक वक्त होता है कि जब कोई नम्बर भरिल
और मलाइका को वहाँ पर दंगतल की इजाजत नहीं होती तो वह
अल्लाह तऊला के साथ ऐसा वक्त गुज़ारा करते थे। हम भी
ऐसा वक्त गुज़ारें, अल्लाह तऊला के साथ तार जोड़कर बैठा करें,
पुनर्वत से याद किया करें। अरे जाहिल याद करता है, जिहालत
की बाते करके। उसकी जिहालत की बाते अल्लाह तऊला को
पसंद आती है और हजरत मूसा अल्लाहु वस्त्रलाम को हक्क होता है
कि आपने उसकी तार क्यों काटी?

तू बुराए वस्त करदन आमदी
ने बुराए फस्त करदन आमदी

अगर जाहिल का तख्तलिए (तन्हाई) में बैठकर अल्लाह से लो
लगाना इतना पसंद आया, अगर कोई साहिब इथा बैठकर अल्लाह
से लो लगाएगा तो अल्लाह तऊला को कितना पसंद आएगा। तो
हम दिन का कुछ वक्त अपने लिए फारिग कर लें। तहज़ुद का
वक्त बेहतरीन वक्त है। जब दुनिया सोई हुई होती है उस वक्त
उठें और नफ़्स पढ़कर अल्लाह तऊला से लो लगाकर बैठें। फिर
बैठे बैठे दिल की कैफियत क्या बनेगी कि

कि दुनिया को अपना होश न दुनिया का होश
बैठा हूं मस्त हो के तुम्हारे जमाल में

तारों से पृथ्वी लो मेरी कवदें जिंदगी
रातों को जागता हूं तुम्हारे ख़याल में
फिर देखना अल्लाह रब्बुलैस्लात की तरफ से कैसी रहमतें आती हैं फिर इसके इलाही मिलेगा। मुहब्बत की शराब पिलाई जाएगी, फिर दिल के अंदर सोज पैदा कर दिया जाएगा और यह सोज आपको तड़पा देगा। शायर ने कहा था—

लुट्फ मय तुझसे क्या कहूँ ऐ ज़हिल।
हाय कंबर्द तुने थी ही नहीं

tो में इसको बदलता हूँ

लुट्फ मय तुझ से क्या कहूँ ऐ दोस्त।
हाय बे इलम तुने थी ही नहीं

कभी मय का लुफ्त पा लेते तो फिर देखते बात क्या बनती है। यह दिलों को ऐसा तड़पाती है जैसे अंदर कोई अलाम अल्लाह तभाला ने फिट कर दिया हो, अपने आप आँख खुलती है।

दो नंबर मजनूँ

और आज पूछें कि जी मामूलात करते हैं तो जवाब मिलता है कि जी वक़्त नहीं मिलता। यह तो ऐसा ही है कि मजनूँ साहब से पूछें कि लेला को याद करते हो तो यह कहे कि वक़्त नहीं मिलता। अजीब बात है कि मजनूँ को लेला को याद करने का वक़्त नहीं मिलता। आज वैसे तो हर चीज़ तो थी ही नंबर दो, मजनूँ भी नंबर दो हो गए। कई वैसे तो सालिक हैं लेकिन मामूलात के लिए वक़्त नहीं मिलता और फिर कहते हैं कि जी हज़रत जी असर नहीं होता, इसने साल से बैठत हैं। इसके कुछ तकाज़े हैं उन्हें पूरा कर दीजिए फिर देखिए अल्लाह तभाला दिलों की हालत को बदलते कैसे हैं।
श्रीशिवते इलाही अल्लाह ताआला ते मुलाक़ात का ध्यान रहना है

तो श्रीशिवते इलाही पुक दिन के वेळ का नाम है जिसकी वजह से हमारा हर वक़्त यह महसूस करता है कि मेरे अपने रव के सामने खड़ा हूँ, मुझे रुयामा के दिन अपने रव के सामने पैश होना है। मुझे अपने रव और जनाब देना है। इसलिए कुरआन पाक में जो श्रीशिवत की नारेमा को गई है वह क्या थी? फरमावा यह नमाज़ भागा है विशाल उन लोगों के जिन लोगों के दिलों में श्रीशिवत होती है और श्रीशिवत किन लोगों के दिलों में होती है? 

असलाफ़ (बुजुर्गों) में रुवशियते (खूफ़े) इलाही

हमारे पितू असलाफ़ में श्रीशिवते इलाही ऐसी थी, सुकका-अन्नाहत।

मौलाना हुसैन अली और श्रीशिवते इलाही

हमारे सिनिसिना मक्काबदिया के एक बुजुर्ग गुरु हैं हज़रत मौलाना हुसैन अली कौफज़ा चाले। हज़रत यज़ा सिगनुर्टिन रह६ में डिनाफ़ मई हानैं वंद्य हज़रत यज़ा सिगनुर्टिन उनवं
आख़िरत का जहेंज़

देखें, एक माँ जिस दिन बेटी को जन्म देती है तो उस दिन से
सोचना शुरू कर देती है कि मुझे बेटी के लिए जहेज़ बनाना है, एक दिन इसकी शादी करनी है। और कुछ और तो सारी जिंदगी जहेज़ बनाती है क्योंकि अगर बेटी जहेज़ के बगैर शोहर के पास चली गई तो शोहर के पास उसको इज्जत नहीं मिलेगी। ऐ! यहाँ तेरी बेटी खिलौनों में खेल रही है और तू इस बेटी का जहेज़ तैयार करती फिर रही है। और तू सोचती है कि जब बड़ी होकर शादी होगी, शोहर के पास बगैर जहेज़ के जाएगी तो उसे इज्जत नहीं मिलेगी। अपने बारे में क्यों नहीं सोचती, तेरे बाल सफ़ेद हो गए, कम्र में तेरी टांगे पहुँच गयीं तू भी अपने रब के सामने जाना है।

जन्मता एवं व्यक्ति का अनुसरण कह रहा है कि एक-एक करके अल्लाह के हुजूर में पेश कर दिए जाओगे अगर अल्लाह ताआला ने पूछ लिया मेरी बंदी मेरे पास नेकियों का आमलनामा और जहेज़ लाई या नहीं? सोचिए कि वहाँ फिर हमारा क्या बनेगा? अपने लिए नेकियों का जहेज़ बनाओ। यह दुनिया का जहेज़ न भी हो तो क्या फर्क पड़ता है। बिला बजह की बनी हुई चीज़ें होती हैं लेकिन अगर अल्लाह ताआला को सामने नेकियों का ज्ञान न हुआ तो फिर इसान बे सर व सामने खाली हाथ खड़ा होगा फिर कहेगा:

काश! कि मैं नबियों के साथ चला होता और फ़िलाकों को दोस्त न बनाया होता। इसलिए खुश्शू अपने दिलों में बांधे लिए तख्तलियों को लाजिम कर लीजिए, जिसको लाजिम कर लीजिए, अपने मशाइँख की सोहबत को लाजिम कर लीजिए क्योंकि मशाइँख की सोहबत से अदब मिलता है, इल्म मिलता है, एक
चुनकप्पना होता है जो सीनों से सीनों में मुताकिल होता है और दिलों को रोशन कर देता है। फिर इस्लाम के लिए अल्लाह तभी न आसन होता है।

सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर में खुदा का ख़ौफ

हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियाल्लाहु अन्नू जिनके बारे में नबी अकरम सल्ल्लाहु अल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़स्माया कि वे नन्दने सबके एहसानों को बदला दे दिया लेकिन अबू बक़र के एहसानों को बदला अल्लाह देगा। ऐसी जिंदगी थी। उनके बारे में आता है कि वह दुआ पांगें थे कि ऐ काश! मैं किसी मौमिन के बदन का बाल होता, ऐ काश! मुझे मेरी माँ ने जन्मा ही न होता, ऐ काश! मैं कोई घास का तिनका होता। किस लिए कहते थे? इसलिए कि कहीं क्यामत के दिन मुझे अल्लाह तभी के सामने खड़ा न होना पड़ जाए। इससे इस्ते थे कि अल्लाह तभी के सामने कैसे खड़ा हूँगा। उनके अंदर खुदा का ख़ौफ था।

हज़रत उमर रज़ियाल्लाहु अन्नू में खुदा का ख़ौफ

हज़रत उमर रज़ियाल्लाहु अन्नू के दिल के अंदर खुदा का ख़ौफ इतना था कि हज़रत हुज़फ़ा रज़ियाल्लाहु अन्नू से पूछ रहे हैं कि मैं अपने मुनाफ़िकों के नाम, नहीं पूछता लेकिन इतना बता दो कि कहीं उमर का नाम तो उसमें शामिल नहीं। और जब वफ़ात होने लगी तो वफ़ात के दक्त बता कहा, अल्लाहु अकबर! अजीब बात कही। वफ़ात के कुरैब एक सहाबी को बुलाया और एक वसीयत फ़रसाई कि जब मेरी रह निकल जाए तो मुझे दफ़न करने में जल्दी करना। उसने पूछा, अमीरुल मोमिनन्न! जल्दी करेंगे मगर
मोलाना अहमद अली लाहोरी रहो

में अल्लाह का ख़ोफ़
भी डर रहा है। मैंने कहा, ऐ अल्लाह! मैं आपकी शान और बुलंदी मुकाम से अब भी डर रहा हूँ। फरमाया, अब दरने का वक्त खत्म हो गया, हम तुझे बशार्त देते हैं कि तुम्हें जिस कब्रिस्तान में दफ्न किया गया है, तुम्हारी वर्तमान से उस कब्रिस्तान के सब मुर्दों को हमने माफ़ फर्मा दिया। यह होता है दरने वालों का मुकाम। अल्लाह ताआला से ख़ौफ़ खाने वालों का मुकाम है।

एक उहदिस में अल्लाह का ख़ौफ़

एक मुहदिस हदीस का दर्शन दे रहे थे। उनका रंग पीला हो रहा था। चेहरे पर ख़ौफ़ था, बड़ी मुश्किल से दर्शन खत्म किया। किसी ने पूछा, हज़रत! मैं आपकी कैफियत देख रहा था, क्या आज आपको कोई तकलीफ़ थी? फरमाया, नहीं। उसने कहा, हज़रत! चेहरे पर ख़ौफ़ के कुछ अंशों से असर किया था। फरमाया, तुमने नहीं देखा? उसने पूछा, क्या? फरमाया, मेरे ऊपर उस वक्त बादल आ गया था और मैं डर गया था कि कहीं ऐसा न हो कि मेरे ऊपर पत्थरों की बारिश बरसी जाए। पहली उम्मेदों पर भी इसी तरह बादल आते और वह उनको नहीं समझते थे और उन पर पत्थरों की बारिश कर दी जाती थी, अल्लाहु अकबर।

फ़िक्र की घड़ी

हम अगर इल्म हासिल करेंगे और काम नहीं करेंगे तो अल्लाह ताआला दीन का काम किसी और से ले लेंगे। वह मक्का से आता है, मक्का से ले लेता है, मच्छर से ले लेता है और जिससे
चाहे वह अपने दिन का काम ले लेता है।

कुरआन पाक की एक आयत याद रहे। परवरदिगार फरमाते हैं:

"यह तत्त्व नहीं है कि हमें आदर करें और उसके आदर के आदर का अनुरोध नहीं है। हमें आदर करें।"

अगर पीठ परें और हटें, दीन वाले काम से तो अल्लाह ताब्या बदल परें किसी कौम से और वह कौम फिर हमारे जैसी नहीं होगी बल्कि अल्लाह ताब्या की फरमांबरदारी करने वाली होगी। तो हमें अपने फर्ज़ मंसबी को पूरा करना है। ऐसा न हो कि कुरान के दिन हम से पूरा जाए कि तुमने क्या काम किया और हम उसका जवाब न दे सकें। कहने को आलिम हो और जिंदगी उसकी ऐसी हो जैसे किसी ज़लिम की होती है। उसको हलाल और हराम की तमीज़ न हो। वह अपने रब की पूजा करने के बजाए अपने नफ़स की पूजा करता फिर रहा हो। यह कैसे हो सकता है। इसलिए जब इलाम रंग लाता है तो इस्नान के अंदर फिर अल्लाह का ख़ौफ़ पैदा होता है। यह अल्लाह ताब्या से मांगने की चीज़ है। अल्लाह ताब्या से मांगिए कि अल्लाह ताब्या हम को भी अपना ख़ौफ़ अता फरमा दे।

कुरआन मजीद के आइने में हमारी तस्वीर

अगर हम ज़रा कुरआन के आइने में अपनी शक्ति देखें तो कुरआन पाक की एक आयत में अपनी तस्वीर नज़र आती है। और वह यह आयत है कि अल्लाह ताब्या फरमाते हैं ह़े! बुक्रबुक्र अल्लाह मेलाबांद और अल्लाह ताब्या मिसाल बयान करता हैँ एक बदौ की जो मुलाम था ही। लायल्यूलूलू वह लिंग की चीज़ पर
उसको कुदरत नहीं थी (उहो! कुल उले मोला) अपने मौला पर बोझ बना हुआ था। यिचिक जाता था कोई ढेर खबर न लाता था। कहीं ऐसा न हो कि कह दिया जाए तुम्हारी जिंदगी ऐसी थी। यह न कहीं कह दिया कि तुम्हारा काम तो उस औरत की तरह (काली नष्ट गोल्ला मन बढ़ा, देखा) कि वह औरत जो सारी जिंदगी सूत को पालती रही और आखिर पर काते हुए सूत को अपने हाथ से तोड़ डाला। आठ साल चटाईयों पर बैठकर पढ़ते रहे और जब बाहर निकले तो बाहर ही निकल गए। फिर कहीं ऐसा न हो। इसलिए अपने दिल में इस बात को बिठा लेने जिसे कि अल्लाह तात्ताल के हां मत्ते भी ज्ञान है लेकिन मर्त्य नापने के लिए मेहनत करने की जरूरत है सिर्फ इसे ज्ञानी की बात हो तो क्यामंत के दिन शैतान की बद्धाश हम से पहले हो जाएगी। इसलिए कि वह हम से बड़ा आलिम है। मालूम हुआ कि नहीं सिर्फ अल्फाज़ व हर्मों की बात नहीं कुछ और भी जीत है। उसी का सोजे हम कहते हैं, मुहब्बत इत्यादी कहते हैं। जब हम के साथ मुहब्बत इत्यादी मिल जाती है तो अमल आ जाते हैं। फिर इत्यादी की जिंदगी में अल्लाह तात्ताल के साथ खुशू फैला होता है। फिर वह आमाल करता है डरते हुए। एक-एक नमाज़ ऐसी पढ़ता है जिस पर उसके विषये गुणाहों की बद्धाश के बाद है। फिर अल्लाह तात्ताल उस बाद को कबूल कर लेते हैं। अल्लाह तात्ताल उस बाद को दुनिया में भी कबूलित अता फ़ायमा देते हैं और आखिर में भी।

चटाईयों की इज्जत

हो आलिम और तजकिरा करे कि मेरे लिए रिज्ज़ की तंगी है।
हजरत! दुआ करो मैं माली मुखियाल में फंसा हुआ हूँ, कर्ज़ी में जकड़ा हुआ हूँ। अरे अल्लाह तआला से तवक्कुल कहाँ गया?
अल्लाह तआला से यकीन कहाँ गया? एक आलिम आकर कहने तरह कि हजरत! आप बताएं कि मैं कोई कारोबार न कर लूँ। मैंने कहा आलिम होकर यह बात करता है कि मैं कोई कारोबार क्यों न कर लूँ। मैंने कहा अगर आठ साल लगाने के बाद फिर हमा यह सोचें कि मैं कारोबार न कर लूँ तो फिर उसने इल्म की क्षा कृपा की। इससे तो फिर पर जाना बेहतर था क्यों कही लगाया था इन चटाईयों पर, उन चटाईयों की इज़जत तो रख लेते।

असलाफ़ का अल्लाह पर तवक्कुल

हमारे बुजुर्गों को खाने को नहीं मिलता था। भागकर पाक़े काट लेते थे। अंग्रेज़ उनके कूदमों में माल व दौलत डालते थे, ठोकरों लगाते थे दुनियादार आकर माल फैसे पेश करते थे मगर वे ठुकरा दिया करते थे। एक-एक लाख रुपए का खेल आया करता था। चापस भेज दिया करते थे। उनको अपने रब पर तवक्कुल हुआ करता था कि परवरदिगार खिलाएगा और फिर परवरदिगार ने उनको रिह्ज़ अता किया। अल्लाह तआला हमें भी रिह्ज़ अता करेंगे।

इल्म का तक़ाज़ा

लिखाहँ इल्म का यह तक़ाज़ा है कि हम अल्लाह तआला के साथ अपना यकीन अच्छा कर लें, परवरदिगार के पास हर चीज़ के खजाने हैं: फ़िर तो हम जो तालीम नहीं जानते, उसे भी लें।
इसलिए मैं अपने मोहतम उलमा से कहा करता हूँ कि आप इमामत की मलामत न बनाया करता; अगर इमामत को इमामत बनाएंगे फिर अल्लाह ताजाला दुनिया में आपको इमाम बनकर रहने की तौफ़ीक अता फृस्माएंगे अगर अमल होगा और खू़श होगा तो दुनिया आकर कदम पकड़ेंगी और आपके हाथ को चूमा करेगी। इल्म की बजह से अल्लाह ताजाला आपको इज़्ज़तें देंगे लेकिन जब खुद ही अमल नहीं करेंगे तो फिर हम क्यों शिकायत करते हैं कि इल्म के बाद हम फ़ूँक परेशानी में मुस्ताज़ हैं। अल्लाह ताजाला हमें अपने आपको इस संग में रंगने की तौफ़ीक अता फृस्माएं, आमीन।

अल्लाह के बंदों की तलाश

मेरे दोस्तों! यह आजज़ दर-ब-दर की ठोकरें इसलिए खाता फिरता है कि अल्लाह ताजाला ने अपने एक मक़बूल बंदे के ज़रिए इस आजज़ के सर पर एक बोझ रखवा दिया। यह आजज़ इस क़ीमतिल नहीं, अब भी नहीं, न उस ब़ुख़त था मगर काम भी अपने हज़रत के हुक्म से शुरु किया। हज़रत पूँछ करते थे कि उम में अब तक कितने लोग सिलसिले में दखिल हुए? मुझे जिझक हुआ करती थीं मगर हज़रत बुला बुलाकर पृँछते थे। किस लिए? इसलिए, उनके पता था कि बोझ रख दिया है। अब उसने मेरी तो हई नेमत को क़ह़ल वहाँ पहुँचाना है। हम तो एक डाकिया बनकर इस नेमत को दूर दूर तक पहुँचाते फिरते हैं। यह भी अल्लाह ताजाला की रहमत है, हम चाहते हैं कि यह नेमत दूर-दूर तक सीनों में पैदा हो। हर बंदा इस निस्कट को हासिल करने वाला बन जाए मगर क्या करें वर्तन नापक नज़र आता है तो दूध भरने को
किसी का दिल नहीं करता। जब दिल साफ़ नज़र नहीं आता फिर तबजेहात कहाँ तक असर करेगी। कुछ ख़ुद भी मेहनत कीजिए, अपनी नीति ठीक कर लीजिए फिर तबजेहात के असर में होगी।

हाले दिल जिसमें कहता कोई ऐसा न मिला उल्लेख के बदले तो मिले अल्लाह का बंदा न मिला

कहाँ हैं वे बदले जिनके दिल में ख़ौफ़े खुदा हो, जिनका अमल सुन्नत नववी के मुताबिक हों, जो रब को तनहाईयों में याद करते हों, अपने सर की झुकाते हों, अपने मौला को मनाते हैं ऐसे बदले अगर हों तो निसबत तो है ही उनके लिए। फिर देखिए अल्लाह तज़ाला ऐसे बदले को दुनिया और आदर्शत में कैसी सज़ादतें अता फर्माते हैं। अल्लाह तज़ाला हमें इस निःस्वत के नूर से मुनबार फर्माए और कुमामत के दिन अल्लाह तज़ाला हमें अपने मशाइख के सामने रुस्ता और शर्मन्दा न फर्माए, हमारे लिए कुमामत के दिन ख़ैर के फ़ैसले फर्माए और नबी अकरम सल्लाल्लाहु अल्लाहिन वस्तू के सामने हम कहीं रुस्तवा का संबंध न बन जाए।

इसलिए दुआ करें कि परवरदिगार हमारी यहाँ आना बैठना अदबुल फर्मा ले और यहाँ से वापस जाते हुए ज़िंदगियों के रूख का तब्दील फर्मा दे। (आमीन सुम्पा आमीन)

* * *

राहुल दुवाना अनु हमद लल्ल रब्बुर रहमतुर रज़ियम
हुकूकुल इबाद

दीन इस्लाम एक कामिल जिंदगी बुजाने के तरीके का दूसरा नाम है। लिहाज़ा दीन पर अमल करने वाले लोगों की जिंदगी हमेशा मुताबिजिन होती है। कभी ज्ञातव्य से हटकर एतिदाल की राह में अल्लाह तबाला ने बढ़र रखी है। लिहाज़ा नबी अकरम सल्लल्लाहु अल्लाहि वसल्लाम ने इर्षाद फरमाया:

एक इमर इमर आरस्ता है।

मियाना रबी (वर्मियानी चाल) वेहतरीन हिमात में अमल है।

दो किस्म के हुकूकुल

इस्नान पर दो तरह की ज़िम्मेदारियाँ आती हैं। एक तो अल्लाह तबाला के हुकूकुल अदा करना दूसरा उसके बंदों के हुकूकुल अदा
करना। जो आदमी दोनों किस्म के हकूक अदा करें वही दूसरों के लिए मॉडल (नमूना) हो सकता है। अल्लाह के महबूब ने अपनी ज़िंदगी में दोनों किस्म के हकूक अदा करके दिखाए। लिहाज़ा आपकी मस्जिद की ज़िंदगी देख लीजिए और आपके घर के रहन-सहन को भी देख लीजिए। पूरे-पूरे हकूक नबी अकरम सल्लल्लाहु अल्लाहिये वस्ल्लम ने अदा करके दिखाए।

बे भी मरीज़ ये भी मरीज़

आज के दौर में देखा गया है कि कुछ लोग इबादत पर बहुत ध्यान देते हैं मगर यह ख्याल नहीं करते हमारी बात से लोगों का दिल जलता है, हमारे अमल से लोगों को तकलीफ होती है, हम बात करते हैं तो लोगों के दिलों पर छूटी फेर रहे होते हैं। हम दूसरों को दुःख-दर्दरह होते हैं, हम मुसलमान भाई को दूसरों के सामने ज़लील कर रहे होते हैं। कई ऐसे हैं कि खुश अख़्बारी के बड़े नारे लगाते हैं कि आदमी को ऐसा अच्छा करना चाहिए और ऐसा अच्छा होना चाहिए मगर नमाज़ की पुर्वत नहीं, तिलावत के लिए बक़ृत नहीं। बे भी मरीज़ और ये भी मरीज़। एक ने हुकूकुल्लाह का लिहाज़ न किया तो दूसरे ने हुकूकुल इबाद का लिहाज़ न किया। ये लोग अगर अच्छे होते तो दोनों हुकूक का ख्याल करते। इसलिए अल्लाह तआला से वह दुआ मांगनी चाहिए कि वह हमें अल्लाह के हुकूक और बंदों के हुकूक दोनों अदा करने की तोफ़ीक़ नसीब फर्मा दे।

रोज़े महशार अल्लाह तआला का ऐलान

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अनीस रहो फर्माते हैं कि रोज़े महशार
बनी इसाईल को तंबीह

बनी इसाईल में सात साल तक कुछ रहा यहाँ तक कि लोगों

ने मुदार और बच्चे भी खा लिए। पहाड़ों पर जाते और

गिड़गिड़कर इतिहास करते लेकिन दुआ कुबूल न होती। आख़िर

हज़रत मृता अलैहिसलाम पर ‘वही’ नामिल हुई कि उन्हें कह दे

कि वे इबादत करते हुए खुशक कोड़े की तरह भी हो जाएं तो

भी में उनकी दुआ कुबूल नहीं करेगा जब तक कि लोगों के हक

वापस न करेंगे।

दो इसानों में इख़्लाफ़

समाज में रहते हुए इसानों से गुल्ली हो सकती है। रसोई में

बर्तन धोते हुए बर्तन एक दूसरे से टकरा भी सकते हैं, दो आदमी

बड़े तज़्रीबिकार खाने हैं फिर भी उन दोनों की गाड़ियों का

एक्सरिडेट हो सकती है। तो अगर तज़्रीबिकार और माहिर खाने

से एक्सरिडेट हो सकता है तो दो अच्छे इसानों का आपस में

इख़्लाफ़ करना भी मुमकिन है। मगर होना यह चाहिए कि ऐसी

सूरत में माफ़ करने और दस्तगूज़ का मामला किया जाए। हदीस

पाक में आया है कि जो आदमी दुनिया में दूसरों की गुल्लियों को

जलदी माफ़ कर देता है अल्लाह तज़ाला भी क्यामत के दिन उस

इसान की गुल्लियों को जलदी माफ़ फर्मा देंगे।
सीना-बे-कीना का मतलब

कोशिश किया करें कि दूसरों की गुलियों को माफ कर दिया करें। बात दिल से ही निकाल दिया करें। इसलिए कि दिल से रजिश दूर कर देने से इसान के सीने में कीना नहीं रहता। जो रजिशे बाकी रह जाती हैं तो वही तो कीना बन जाती हैं। दीन की नज़र में कीना बहुत बुरी चीज़ है। सीना-बे-कीना ऐसा सीना है जिसमें किसी के खिलाफ़ नफरत न हो, किसी के खिलाफ़ दिल में गुज़ब व ग़ेज़ न हो। मोहिनी के बारे में दिल में कीना नहीं रखना चाहिए। अल्लाह तबाला से सीना-बे-कीना मांगा करें। अगर किसी से तकलीफ़ भी पहुँचे तो दिल से उसको माफ़ कर देना यह नबी सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम के आद्राक हैं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम भी माफ़ फूरंदा दिया करते थे बल्कि उपमत के औलिया अल्लाह ने तो माफ़ी की ऐसी ऐसी मिसालें कायम कर दीं कि इसान हैरान हो जाता है।

एक आशिक़े रसूल का बाक़िआ

एक बुज़ुर्ग हज़ेर सफ़र पर गए। एक जगह से गुज़र रहे थे। उनके गुलाम में एक खेला था। उसमें कुछ पैसे, थे। एक चोर उनके गुलाम से वह खेला छींककर भाग गया। काफ़ी दूर निकलकर उसकी आँखों की रोशनी अचानक खुल हो गई। उस चोर ने रोना शुरू कर दिया। लोगों ने पूछा भाई क्या हुआ? कहने लगा, मैंने एक आदमी का खेला छीना है। वह कोई बड़ा अल्लाह का करीबी बंदा लगता है। बड़ा आच्छा बंदा लगता है। मेरी आँखों की रोशनी चली गई। खुदा के लिए मुझे उसके पास पहुँचाओ ताकि मैं उससे
माफी मांग सकूँ। लोगों ने पूछा कि बताओ यह किस्सा कहाँ पेश आया? कहने लगा फलाँ नाइ की दुकान के करीब पेश आया। लोग उसको उस दुकान के पास लेकर गए और नाई से पूछे बताओ कि इस तरह का आदमी यहाँ से गुज़रा है? आप उसे जानते हो? उसने कहा मुझे उसका घर तो पता नहीं, हाँ नमाज़ों के लिए वह आते जाते हैं। अगली नमाज़ के लिए फिर आएगे। ये लोग इंतज़ार में बैठ गए। वह बुजुर्ग अपने बक्त पर तश्रीफ़ लाए। लोग उस चोर को उनके पास ले गए तो उस चोर ने जाकर उनके हाथ पकड़ लिए, पाँव पकड़ लिए था युद्ध मुक्तानी हुई। गुनाह हुआ, मैं नादिम हूँ, शरिफ़द्वां, मेरी आँखों की पीठ छिन गई। आप अपने पैसे बांटे है और मुझे माफ़ कर दीजिए ताकि अल्लाह ताआला मेरी आँखें ठीक कर दे। वह बुजुर्ग कहते हैं कि मैंने तो लुढ़के पहले ही माफ़ कर दिया है। यह बात सुनकर चोर बड़ा हैरान हुआ। कहने लगा इससे मैं तो आपका बैला छिनकर भागा और आप कहते हैं कि माफी मांगने से पहले ही मुझे माफ़ फ़र्मा दिया। वह फ़र्माने लगे हाँ मेरे दिल में कोई बात आ गई थी। फ़र्माने फ़र्माने एक हदीस पढ़ी जिसमें नबी अकरम सल्लाल्लाहू अल्लाहः वसल्लाम ने फ़र्माया कि क़स्मात के दिन जब मेरी उम्मत का हिसाब युद्ध किया जाएगा तो मैं उस बक्त तक मीराज़ के करीब मौजूद रहूँगा जब तक कि मेरे आँखों दिग्गज का फ़ैसला नहीं हो जाता। मेरे दिल में यह बात आई कि अगर मैंने इस चोर को माफ़ नहीं किया तो क़स्मात के दिन यह मुक्तिमा पेश होगा और जितनी देर मेरे मुक़दमे का फ़ैसला होने मेरी अल्लाह के नबी को उतनी देर जत्रत से बाहर रहना पड़ेगा। इसलिए मैंने माफ़ कर दिया कि न तो
युक्तमा पेश होगा, न ही मेरे महबूब को जन्मत में जाने में देर लगेगी। वह जल्दी जन्मत में तशरीफ ले जायेगे।

शुक्रिया अदा करने की अहमियत

अगर कोई भला करे तो उसका शुक्रिया अदा किया करें। आज के दौर में मालूम नहीं हम मुसलमानों को क्या हो गया। हम किसी का शुक्रिया तो अदा करते ही नहीं कुछ को छोड़कर हालाँकि हमें फरमाया गया:

कहें ले निश्चर नास ले निश्चर ले
जो इंसानों का शुक्र अदा नहीं करता वह अपने अल्लाह का भी शुक्र अदा नहीं करता।

हमें तो तालीम इत्तिमाद गई थी मगर हम इस तरफ ध्यान ही नहीं करते। बंदों के हक पर भी पूरा ध्यान रखा जाए ताकि इंसान एक सही जिंदगी गुजारने वाला बने।

गुस्सा पीने की फ़ूफ़ीलत

अगर कभी किसी से तकलीफ़ पहुँचे तो हूँ समझ्जे कि उसने कोई कर दी। चलो मैं माफ़ करता हूँ। इसके बदले में अल्लाह तालाम भूँझे माफ़ करो। अगर कभी किसी की बात पर गुस्सा आए तो गुस्से के घूंट को पी लिया करें। यह कब्ज़ा पहुँच होता है मगर एक हरीस पाक में आया है कि जिस बदने ने अपने गुस्से के घूंट को पिया जबकि वह गुस्से को पूरा करने की हालत में था यानी उसके पास ऐसे वसाइल थे कि वह चाहता तो गुस्सा उतार सकता था, उसका बदला ते सकता था मगर उसने अल्लाह
के लिए उस गुस्से के घूंट को पी लिया। अल्लाह तख्ता क्या मानते के दिन हर हर घूंट के बदले में उस कदम को अपना मुआहिदा अता फर्मा देंगे। वह परवरदिगार के जल्दे देखेगा। अप्र देख लीजिए कि कीन सा सौंदर्य अच्छा है। दुनिया में गुस्से दिखा देना या अल्लाह तख्ता के हुसून व जस्मान का दीदार करना?

अक्कल की ज़क़्कात

भीमन जब इन बातों की सामने रखता है तो फिर उसके अंदर हिम्म पैदा हो जाता है। हिम्म कहते हैं दूसरा नादानी से कोई बात कर भी ले तो बंदा उसे माफ कर दे। हज़रत अबु बक रज़िय्लल्लहु अन्दु फूँफ़ाते थे कि नादानों की बात उस पर तहम्मुल मिजाजी से इसान की अक्कल की ज़क़्कात अदा हुआ करती है। लिखे पढ़े अक्कलमंड लोगों को चाहिए कि छोटी-छोटी बातों के ऊपर दिलों में रोग न पाल लिया करें। दूसरे की गृहत को माफ कर देना और तकलीफ़ वास्तव कर लेना इसान की अक्कल की ज़क़्कात है। अगर अल्लाह तख्ता ने अक्कलमंड बनाया है तो अक्कल की ज़क़्कात भी तो दिया करें। मगर आज देखा गया है कि आदमी खुद तो चाहता है कि तेरे बड़े-बड़े कुएं न को माफ कर दिया जाए मगर दूसरों की छोटी-छोटी गृहत को भी माफ करने के लिए तैयार नहीं होता।

इसानों की दो किस्में

इसान दो किस्म के होते हैं। कुछ शहद की मकड़ी की तरह होते हैं और कुछ गंधी मकड़ी की तरह होते हैं। शहद की मकड़ी तो शहद बनाती है लगर गंधी मकड़ी गंधी पर बैटी होती है। उन
दोनों के अंदर एक बुनियादी फूर्ति है। गांधी मक्कत के दिनाख्त में
गंगा की बूढ़ मिटी है। यह गांधी चीज़ों की तलाश में होती है।
जहाँ गंगा देखी वहाँ बेठी। जिस पर भी बैठी तो जहाँ पर
जूझ होगा, पीप होगी, यह वहाँ बेठी। लिहाजा गांधी मक्कत की
सोच गांधी, उसकी तलाश गांधी, उसकी परंपरा गांधी। वह हर गांधी
चीज़ के आसपास ही चुम्मती फिरती है। वहीं उसका डेरा और
बसेया होता है जबकि शहद की मक्कत के दिनाख्त में खुशाबू रची
होती है। वह बुढ़ती है तो फूल को, वह बैठती है तो फूल का, पर,
वह अगर चूसती है तो फूलों के जूस को, शहद की मक्कत चमन
को दूंढ़ैंगी, मुलिस्तान को दूंढ़ैंगी, फल और फूलों को दूंढ़ैंगी।
उसकी सोच अच्छी होती है और यह हर बक्कू अच्छी और
खुशाबूदार चीज़ों की तलाश में रहती है।

इस मिसाल को सामने रखकर सोचें तो इस्लामी की भी दो
किस्में होती हैं। कुछ लोग शहद की मक्कत की तरह होते हैं।
उनके अपने अंदर भी ख़ैर होती है और वे दूसरे के अंदर भी ख़ैर
को तलाश करते हैं, वे दूसरे को ख़ैर की तरफ बुलाते हैं, वे दूसरे
पर नज़र डालते हैं तो उन्हें दूसरों में ख़ैर नज़र आती है। उनकी
नज़र में दुनिया के सब लोग अच्छे होते हैं। इसलिए कि उनके
अपने अंदर अच्छाई होती है। और कुछ ऐसे लोग होते हैं कि
जिनकी अपनी सोच गंगा होती है। उनके अपने अंदर ख़बास
भरी होती है। वे वहाँ बैठते हैं जहाँ उन्हें गंदे लोगों की महफिल
नज़र आए। वे ऐसे लोगों से दोस्ती करते हैं जो बुढ़े होते हैं, वे
ऐसे लोगों के पास अपना आना जाना रखते हैं जिनमें बुराई
ग़लिब होती है। वे अगर किसी बंदे पर नज़र डालेंगे तो उनकी
निगाह बुराईयों को दूंढ़ैंगी। उनकी वंदे की अच्छाई नज़र नहीं
अती। उनको बदे की बुरायाँ नज़र आती हैं, इसीलिए वह कहते हैं कि आज तो कोई भी अच्छा नहीं है न वे उल्लम से राजी होंगे न वे पीरों से राजी होंगे, न वे हाकिमों से राजी होंगे, न माँ-बाप से राजी होंगे, दुनिया में वे किसी से राजी ही नहीं होते बल्कि कई तो ऐसे मनहृत होते हैं जो अपने परवर्तिय पर भी ऐतिहास रखते फिरते हैं। कहते हैं कि अल्लाह ताजाला ने हमारी दुआएं नहीं सुनीं और हमारी दुआएं कुबूल नहीं कीं। ऐसा बदा और मक्का की तरह होता है। यह जहाँ बैठें बुरी बातें करें, जब भी सुनेंगा बुरी बातें सुनेंगा, जहाँ उसकी निगाह पड़ेगी यह बुराई की तफ़ा ध्यान करेंगा। लिहाज़ा उसके दिमाग में हर बक्का बुराई कैली रहेगी। अल्लाह ताजाला से दुआ करनी चाहिए कि वह हमें शहद की मक्का की तरह अच्छा इसान बना दे ताकि हम अच्छा की तलाश में रहें।

कमीने आदमी की मिसाल

कमीने आदमी से कभी दोस्ती नहीं करनी चाहिए कि उसकी मिसाल कोयले की तरह होती है। कोयला अगर ठंडा हो तो हाथों को काता करता है और अगर गर्म हो तो हाथों को जला देता है। न ठंडा अच्छा न गर्म अच्छा। इसी तरह कमीने आदमी की दोस्ती भी बुरी और कमीने आदमी की दुश्मनी भी बुरी। ऐसे इसान से हमेशा अपने को दूर रखने की जुर्मत है। अच्छे लोगों से तालुक रखने चाहिए। अगर समाज में रहना है तो दूसरों का अदब एहतियाम भी सीखें। इसान दूसरों के साथ अच्छे तालुकात बनाकर रखें। देखें दीवार का हर पत्थर अपनी कीमत रखता है अगरचे वह कितना छोटा क्यों न हो। इसी तरह पत्थर का हर
आदमी अपनी एक हैसियत और कीमत रखता है। वह चाहें बढ़ा हो या चाहें छोटा हो तो हमें दूसरों की भी कुदर करनी चाहिए और उनकी कुदर व कीमत का एहसास रखना चाहिए।

मियाँ से बीवी के शिकवे

आम्तौर पर देखा मियाँ-बीवी जिंदगी गुजार रहे हैं तो बीवी अपने शौर्ह से नाराज नज़र आएगी, कहेगी, मैंने तेरे घर में देखा ही क्या है, मैं तो डोले में आई थी और चारपाई के जरिए तेरे घर से कड़िस्तान चली जाओगी और तेरे घर में मुझे मसीबतें ही देखनी थीं, मुझे तुमने क्या दिया? अगर कुछ करते भी हो तो अपने बच्चों के लिए करते हो, मेरे लिए क्या करते हो? अब यह बेचारी हर बार अपने शौर्ह से शिकवे करती रहेगी। उसे शौर्ह में कोई अच्छाई नज़र नहीं आएगी।

मगरमच्छ के आँसू

किसी दिन उसको खबर मिल जाए कि एक्सडेंट से शौर्ह की बंधन हो गई। अब वही बैठी रो रही होगी। दूसरी ओरतें रोंगों कुछ महीने यह रोएगी कई साल। पाँच साल गुजरने के बावजूद भी याद करके बैठी होगी कि मेरा शौर्ह बड़ा अच्छा था। खुदा की बंदी! अपने शौर्ह को जीते जागते जिंदगी में क्यों न बताया कि तुम अच्छे बदने हो, आज मरने के पाँच साल बाद क्यों रो रही हो, मगरमच्छ के आँसू क्यों बहा रही हो? काश! उसकी कुदर व कीमत का एहसास तुम्हें उसकी जिंदगी में हो जाता। तेरी अपनी जिंदगी भी जीन्त बनती और तेरे शौर्ह की जिंदगी भी जीन्त बनती।
इंसान की कुदर

मगर हम जीते बंदों की कुदर नहीं करते, मरने के बाद कुदर आती है। पंजाबी में कहते हैं कि बंद की कुदर आती है “मर गया या टर गया” जो आदमी चला जाए, जुदा हो जाए तब उसकी कुदर आती है या आदमी मर जाए तब उसकी कुदर आती है। हमें चाहिए कि हम जीते जाने बंदों की कुदर करना सीखें।

अपने पास घर में जितने लोग हैं उनमें ख़ेर है, उनमें नेकी है। हम उनकी कुदर अपने दिल में पैदा करें। ऐसा न हो कि हम नाकुदरी करने वाले बन जाएं।

एक अजीब वाक़िआ

मौलाना रोम रह० ने एक अजीब वाक़िआ लिखा है कि एक अत्तर ने एक तोती पाली हुई थी। उसकी दुकान पर जब ग्राहक आते तो उसकी तोती सलाम करती, जैसे मेना सलाम करती है और आने वाले से पूछती कि तेरा क्या हाल है? लिहाज़ा लोग दूर दूर से आते कि हमने इत्तूर तो लेना ही है, किसी और से लेने के बजाए फला दुकान पर चलते हैं, थोड़ी देर तोती से बातें भी करते, मज़ा भी लेंगे और ख़ुशबू भी ख़शीद लायेंगे। लिहाजा उस अत्तर की दुकान पर ग्राहकों का रश ज्यादा होने लगा। उसके पास दूर दूर से आते। कई दफ़ा बच्चे माँ से जिज्ञासा करके कहते कि वहाँ चलो तो वे बच्चे को लेकर वहाँ आते। इस तरह अत्तर का काम ख़बूब चल रहा था।

एक दिन उस अत्तर ने अपनी दुकान तो बंद कर दी धर उस तोती को पिंज़े में बंद करना भूल गया। रात को तोती बैठी
हुई थी। कहीं से उसने बिल्ली की आयाज सुनी। जब मियाक़े की आयाज सुनी तो तोती पर डर ग़ालिब हो गया। वह फड़फड़ाई, कभी इधर गिरी, कभी ऊधर गिरी। हर तरफ शीशे की चीजों और शीशे का सामन रखा हुआ था। शीशियाँ एक दूसरे पर गिरीं तो शीर पैदा होने से तोती और धबराई। उड़ी तो इधर-ऊधर टकराई तो और शीशियाँ गिरीं तो काफ़ी नुक्सान हुआ। सुबह के बक़्त जब अत्तार ने देखा कि उसकी दुकान का बहुत सा सामान ज़ाए हो गया तो उसे बड़ा अफसोस हुआ। उसने तोती को पकड़कर उसके सर पर इतने जूते मारे कि उसके सर के कुछ बाल उतर गए और वह गज़ी हो गई।

अब तोती को महसूस हुआ कि इतने तो मुझे बहुत भारा तो तोती चुप हो गई। अत्तार ने अपनी आदत के मुताबिक काम शुरू कर दिया। लेकिन अब एक फर्क था कि जब कोई ग्राहक आता बुता चाहता कि यह तोती बात करे मगर तोती बातचीत न करती। बड़ा जोर लगाया, बड़ी कोशिश की कि किसी तरह यह तोती बात करे ताकि लोग आएं और यह उनका दिल लुभाए। मगर तोती बात ही नहीं करती थी। जब कलाम ही न किया तो कुछ महीनों के बाद लोगों ने आना छोड़ दिया। आहिस्ता-आहिस्ता ग्राहक कम हो गए यहाँ तक कि कारोबार बिल्कुल ठप्प हो गया। अब उसकी एहतास हुआ कि ओ हो मुझे इसकी क़दर न हो। बैठे तो ज़रा सी बात पर इसको मारा यहाँ तक कि उसके सर के बाल भी उख़ड़ गए और यह गज़ी हो गई, इसने बोलना छोड़ दिया, मेरा तो कारोबार ही ठप्प हो गया। अब अत्तार नफ़्स पड़ता, दुआएं मांगता कि ऐ अल्लाह! तोती को बुला दे, तोती को बुला दे
मगर तोती बोलती नहीं थी। अब पछताए क्या होत है जब चिढ़िया चुंग गई खेल।

इस मिसाल को अपनी जिंदगी में देखिए। कहीं शौर्य अपनी बेटी को लंब करते फिरते हैं। जब वह ज़रा नाराज होती है तो दिल को कुछ होता है। अल्लाह करे कि बोल पड़े। कई औरतें हैं जो अपने शौर्यों को नाराज करती हैं। जब वह बोलना बंद कर देता है तो फिर रोती फिरती हैं। ताबीज़ लेती फिरती हैं, हज़रत! ताबीज़ दें हमारा शौर्य हमारे साथ ठीक नहीं है। भाई इस तोती की भले-कुदर क्यों न की। ख़ैर यह तो बीच में बात आ गई।

तो मौलाना रोम रहूँ पुराते हैं कि वह आदमी बड़ी दुअआं संगता मगर तोती बात ही नहीं करती। इसी तरह वक़्त गुज़रता रहा। अब उसने सबकुः सीखा कि मुझे इस तोती की भले-कुदर करने वाए है और इस सज्ज से आज मेरार कारोबार ठप्प हो गया।

एक दिन एक फ़क़ीर आया। जिसके सर पर बात न थी। तोती ने फ़क़ीर को देखा तो फौरन बोल उठी। कहने लगी आपने भी अपने मलिक के शीशों को तोड़ा था? तो वह तोती अपने ही पर अंदाज़ करने लगी कि मैंने क्योंकि अपने मलिक के शीशों को तोड़ा और मुझे गंजा बना दिया गया तो यह जो सामने गंजा फ़क़ीर है शायद उसने भी अपने मलिक के शीशों को तोड़ा होगा।

मौलाना रोम रहूँ पुराते हैं इससे एक सबक और मिला कि हर अदमी को दूसरे को अपने ऊपर क्यास करता है। जो अपने दिल में बात होती है वह समझता है कि शायद कि दूसरे के दिल में भी यही बात है और अक्सर आप देखेंगे कि यही चीज़़ झगड़े का सबब बन जाती है।
ग़रीब कौन है?

फिर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, बताओ कि ग़रीब कौन है? सहाबा किराम ने कहा ऐं अल्लाह के नबी! जिसके पास माल न हो। फरमाया नहीं। अर्ज किया, ऐ अल्लाह के नबी! आप बता दीजिए। फरमाया, ग़रीब वह है जिसने दुनिया में नेकियाँ तो बहुत ज्यादा की हों मगर किसी को बुरा कहा, किसी को ज्योतिल कहा, किसी को कमीना कहा, किसी का हक़ दबा लिया, कृयामत के दिन वह ऐसे हाल में खड़ा होगा कि हक़ बाले उससे हक़ मांगेंगे, अल्लाह तब उनके हक़ के बदले नेकियाँ दिलवाते रहेंगे, दिलवाते रहेंगे यहाँ तक कि नेकियाँ खल्स हो जाएंगी लेकिन हक़ लेने वाले अभी भी खड़े होंगे। रे कहेंगे कि हमें भी हक़ दिलवाएं। अल्लाह तब उन हक़ बालों के गुनाहों को लेकर उस बंदे के सर पर डालना शुरू कर देंगे यहाँ तक कि गुनाहों का पहाड़ उसके सर पर होगा। फरमाया, ग़रीब तो वह है कि जिसने नेकियाँ तो बहुत कमाया! मगर बंदों के हक़ का ख्यात न करने की वजह से कृयामत के दिन नेकियाँ देनी पड़ गईं और लोगों के गुनाह अपने सर पर लेने पड़ गए। फरमाया हक़ीक़त में तो गरीब यह इसान है।
गृहीब कौन है?

फिर नबी अकर्ष सल्लल्लाहु अल्लाहे वस्त्राम ने फर्माया, वितासी कि गृहीब कौन है? सहाय दिराम ने कहा ऐ अल्लाह के नबी! जिसके पास मात न हो। फर्माया नहीं। अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! आप बता दीजिए। फर्माया, गृहीब यह है जिसके दुनिया में नेकियाँ तो बहुत ज्यादा की हों मगर किसी को बुरा बहा, किसी को ज्यादा बहा, किसी को कमीना कहा, किसी का हक़ दबा लिया, क्यामर के दिन वह ऐसे हाल में खड़ा होगा कि हक़ बाले उससे हक़ मांगें, अल्लाह तत्काल उनके हक़ के बदले नेकियाँ दिलवाते रहेंगे, दिलवाते रहेंगे यहाँ तक कि नेकियाँ खत्म हो जाएंगी लेकिन हक़ लेने बाले अभी भी खड़े होंगे। वे कहेंगे कि हमें भी हक़ दिलवाएं। अल्लाह तत्काल उन हक़ बालों के गुनाहों को लेकर उस बालों के भर पर डालना शुरू कर देंगे यहाँ तक कि गुनाहों का यहाँ उसके भर पर होगा। फर्माया, गृहीब तो यह है कि जिसने नेकियाँ तो बहुत कमायीं मगर बालों के हक़ का ख्याल न करने की वजह से क्यामर के दिन नेकियाँ देंगे यही और लोगों के गुनाह अपने भर पर लेने पड़ गए। फर्माया हक़ीकत में तो गृहीब यह इसान है।
ज़बान की बेअहतियाती

मोहतरम जमात! आज किसी को उल्टी-सीधी बात कह देना आसान है मगर कल कुँयामत के दिन उसका जवाब देना मुश्किल काम है। कुँयामत के दिन अल्लाह तआला इतने जलाल में होंगे कि अल्लाह के अंबिया किराम भी दिखाकर होंगे, उस दिन नफसा-नफसी का आलम होगा तो अगर ऐसे बक़र में अगर हम से पूछ लिया गया कि बताओ तुमने फ़िरा को तुमने कितना क्यों कहा था? फ़िरा को ज़ुलील क्यों कहा था? फ़िरा को बेईमान क्यों कहा था? तो सोचिए तो सही कि अल्लाह तआला की अदालत में हमें उन बातों की सफाई देनी कितनी मुश्किल होगी? आज ज़बान से ये बोल निकालने आसान है मगर कल को उनका जवाब देना बड़ा मुश्किल काम है।

मीत के बाद इंसान के पाँच हिस्से

उल्लम्या ने लिखा है कि मीत के बाद इंसान के पाँच हिस्से बन जाते हैं, एक तो रूह जिसको मलकुल मीत लेकर चला जाता है, दूसरे इंसान का जिसम कि उसे कीड़े खा जाते हैं, तीसरे उसका माल यह उसके वारिस ले जाते हैं, चौथे उसकी हड़ताल कि जिनको मिट्टी खा जाती है और पाँचवें उसकी नेकियाँ जिनको उसके हकदार ले जाते हैं। इसलिए हसरत है उस इंसान पर कि क्यामत के दिन नेकियों के अंबार लाएगा मगर अपनी आहतियात न करने की वजह से नेकियों दे बेठेगा और गुनाहों के पहाड़ सर पर लेने पड़ जाएगे।

हसद का वबाल

हदीस पाक में आया है:
हस्सदः याकल हस्सनत ह्या याकल हस्सद नामक की नेकियाँ के खा जाती है।

मतलब जो नेकियाँ हम कर चुके होते हैं अगर हम किसी के साथ हस्सद करेंगे तो उसकी वजह से हमारी की हुई नेकियाँ ऐसे बवाद हो जाएंगी जिस तरह आग तक़दियों को खा जाया करती है।

ग़ीवत का व्याल

इसी तरह जब कोई इंसान किसी की ग़ीवत करता है तो जिसकी ग़ीवत हो रही हो उसके गुनाह धुल रहे होते हैं और उसके सर पर वह गुनाह चढ़ रहे होते हैं। तो हम हकीकत में अपने किसी मुख़ालिफ़ की ग़ीवत करके उसको अपनी नेकियाँ दे रहे होते हैं। इसलिए ग़ीवत बहुत ख़तरनाक होती है।

भला चाहना एक पसंदीदा सिपूत

एक बार का वाक्या है कि हजारत सुलेमान अलःहस्सतलाम अपने लियक के साथ कहीं जा रहे थे। रास्ते में कुछ चीटियाँ चल रही थीं। उनमें से एक चीटी ने दूसरों से कहा:

"क्या इतनी हल्को दम लेकर हमें आसान करेंगे?"

ऐ चीटियों! तुम अपने भितां में घुस जाओ कहीं सुलेमान अलःहस्सतलाम का लियक अपनी वेध्यानी में तुम्हें रोंदता हुआ न गुजर जाए। लिहाज़ा अल्लाह तालाबा को यह बात इतनी पसंद आई कि इस वाक्य का जिक्र अपने कुरआन पाक में भी किया
और चीटी के नाम पर एक सूरत का नाम ‘नम्त’ रखा। ऐ शेर परवरदिगार! अगर एक चीटी दूसरी चीटियों का भला चाहती है तो आप उससे इतना खुश होते हैं कि इस वाक्य को अपने कलाम पाक का हिस्सा बना लेते हैं तो अगर कोई इंसान दूसरे इंसान की ख़ैरक़ाब़ी करेगा तो रब्बे करीम आप उससे किस कुदर राजी होंगे। सिहाज़ा हमें चाहिए कि हम अपने मुसलमान भाईयों की ख़ैरक़ाब़ी करें।

मुसलमानों के हक़्क

एक बुजुर्ग फ़रमाया करते थे कि हर मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर तीन हक रहे हैं। पहला हक यह है कि फायदा न दे सको तो नुकसान भी न दो, दूसरी बात कही कि अगर किसी मुसलमान को ख़ैर न दे सको तो उसको रंज भी न दिया करो। अच्छा तो हमें चाहिए कि हम दूसरे को ख़ैरियाँ तक़रीब दें, ख़ैरियाँ बांटने वाले ही और ख़ैरियाँ बांटना हमारी किस्मत में नहीं तो कम से कम दूसरों रंज तो न पाएँगे करें। आजकल हालत यही है कि ख़ैरी तो हमने क्या देनी, हम तो दूसरे को रंज पाएँगे रहे होते हैं, किसी न किसी को जुबान से कड़वी बात करते रहते हैं। तीसरी बात कि अगर हम उसकी तारीफ़ न कर सको तो फिर उसकी बुराई न किया करो। यह मुसलमान का हक है। हक़ को बनता है कि हम दूसरों की तारीफ़ें करते रहा करें। इस बात को सामने रखते हुए कि यह मेरे महबूब का उम्मीद है, यह मेरे मालिक का बंदा है। हम इस बात को सोच कर उनकी तारीफ़ें करते रहा करें और अगर जुबान से तारीफ़ नहीं निकले तो कम से कम किसी की ग़ीतत तो न किया करें।
दिल जलाने की बातें

आजकल औरतें अकसर यह कहती हैं मैंने ऐसी बात की कि अब तो फलां औरत जलती रहेगी। यह जलाने वाला लफज आजकल की बालचीत में आम होता जा रहा है। ऐं बहन! तू उसे नहीं जला रही होती बल्कि इस बात करने की वजह से तो खुद जहन्नम की आग में अपने जलने का बंदोबस्त कर रही होती है।

कुरआन पाक में आता है ۲۳:۷٣ "یوبل لکل همزة لجز" हर ऐब जो के लिए और ऐब गो के। यह दो अलग-अलग ख़ामियाँ हैं। ऐबों ऐब तलाश करने वाले को “ऐब जो” कहते हैं और जब ऐब का पता चल जाए तो ऐबों में बातें करने वाले को “ऐब गो” कहते हैं। ऐब जोई भी गुनाह है, ऐब गोई भी गुनाह है।

परवरदिगार आलम ने इस जगह दोनों के बारे में फरमाया कि उसके लिए बर्दवी हैं जो ऐबों के ऐबों को तलाश करता फिरे, या ऐबों के ऐबों को आगे बढ़ाता फिरे। क्योंकि ऐबों की गलियाँ और ख़ामियाँ दो दुनिया और आगे पहुँचाने से ऐबों के दिलों को तकलीफ होती है।

लिहाज़ा आल्लाह ताआला ने फरमाया, ऐब बंदा जो ऐब जो और ऐब गो होगा क्यामत के दिन अल्लाह तआला फरिश्तों को हुक्म देंगे कि इसको जहन्नम के अंदर आग के बने हुए सत्तूनों के साथ बांध दिया जाए ताकि यह हिल न सके और फिर जहन्नम की आग को हुक्म होगा कि उसकी तप्तें उसकी तरफ बढ़ें। उसकी तप्तें उसकी तरफ बढ़ेंगी और वह इसके दिल को जलाएंगी। फरमाया "فَنَّار اللَّهُ السَّوْفِيَّةُ إِلَى طَلَعِ عَلَى الْأَفْسَدَةِ" जहन्नम की आग उस बदे के दिल को जलाएंगी जिस तरह शैलिंग की आग होती है कि उसकी अगर लोहे के ऊपर
कहीं रख दें तो उस जगह को जलाकर मुराद न कर देती है बिलकुल
इसी तरह जहन्नम की खास आग होती है जो इस आम आग से
भी ज्यादा गर्म होगी और अल्लाह ताआला इस आग से जहन्नमी
के दिल को जलाएगे और कहा जाएगा कि ऐ। मेरी बही। तू दुनिया
में अपने भुंड से ऐसी बातें निकालती थी। कहती थी कि मैंने फलां
औरत को जलाया है, मैंने फलां को खूब सड़ाया है, मैंने ऐसी बात
की कि वह सड़ती रहेगी। आज देख उसका अज, आज देख उसका
हशूर, तेरे दिल के ऊपर जहन्नम की आग का कब्जा है।
आज यह तुझ पर मुसल्लत है, यह तेरे दिल को जलाएगी। तुम
लोगों के दिलों को जलाया, अल्लाह ताआला कल जहन्नम के अंदर
तेरे दिल को जलाएगे। अब सीदा तो खुद हम देखेंगे कि कौन सा
अच्छा है। या तो दुनिया में दूसरों की गृहितियों को माफ करें ताकि
अल्लाह ताआला क्रयामत के दिन हमें माफ कर दे या फिर दुनिया
में लोगों को जलाते फिरें। कल क्रयामत के दिन हमारा जिम्मा
जल ही रहा होगा, फिर हमारा दिल भी जलेगा और वहाँ पर कोई
फरियाद सुनने वाला भी नहीं होगा।

अब तो घबरा के यह कहते हैं कि मर जाएगे।
पर के भी चैन न पाया तो किद्धर जाएगे

अब पछताए क्या होते

सोचिए तो सही जब वहाँ के सवून के साथ रसियों और
जंगीशे से बंधे हुए होंगे और दिल जल रहा होगा फिर यह औरत
चीख़ेगी, चिल्ला गरे मगर उसके रोने का माफी न होगा। “अब
पछताए क्या होते हैं जब चिड़िया चुप गई खेत!” इन गुनाहों की
माफी जिंदगी में पांगने की ज़रूरत थी, जब जिंदगी में न मांगी तो
क्रयामत के दिन रोने से क्या फायदा। जहाँभी रोते रहेंगे परवरदिगार को तरस नहीं आएगा।

दुनिया की शर्मिन्दगी आसान है

लिहाज़ा हमें चाहिए कि हम जीते जाते अपने झगड़ों को समेट लिया करें। दुनिया में माफ़ी मांगनी आसान है, दुनिया में हो आँसू बहा लेने आसान हैं, किसी के पाँव पकड़ लेने आसान हैं, किसी से माफ़ी मांगने के लिए दो बातें कह लेनी आसान हैं, किसी एक बद़े के सामने शर्मिन्दगी सहन करना आसान है लेकिन अगर हम ने इन झगड़ों को ने समेटा और इसी तरह उनको लेकर कब्र में बतले गए तो आगे फिर मामला मुश्किल होगा। क्रयामत के दिन अदालत में यह मुक़दमे खोले जाएगे, वहाँ कोई एक देखने वाला नहीं होगा बल्कि सारी इंसानियत देखेगी। अविभाजित भी देखेंगे, औलिया भी देखेंगे, आम लोग भी देखेंगे, परवरदिगार भी देखेंगे। जब सब के सामने कच्चा चिंता खुलेगा तो फिर सीधिए कि उस वक़्त कितनी नदामत होगी। अल्लाह तलाला हमें समझ दे। हम अपनी ग़ज़ब़ी में इस किस्म के मामले ख़ुद समेट लें।

ख़ैऱख़ाही का फायदा

हदीस पाक में आया है कि जो आदमी दूसरों का मला चाहेगा अल्लाह तलाला उसका मला चाहेगा। मिसाल के तौर पर एक आदमी दूसरों की ख़िदमत में लगा रहता है तो अल्लाह तलाला उस बद़े के कामों को संवारने में लगे रहते हैं। यह इंसान दूसरों की मदद कर रहा है तो अल्लाह तलाला उसकी मदद फरमा रहे हैं। हरआन पाक में फरमाया गया:
जो आदमी दूसरे इस्लामी की नफ़ा रसानी के लिए जिंदगी गुज़ारते हैं उनको नफ़ा पहुँचाते हैं; अल्लाह तःताला उनको ज़मीन में जमा देते हैं। जो ख़़्रब़िक़ाह लोग होते हैं अल्लाह तःताला उनको अनुबूलित देते हैं।

अल्लाह वालों से प्यार का मामला

क्या देखते नहीं कि अल्लाह वालों के साथ क्या मामला होता है, उनके दिलों में अल्लाह की मुहझ्वत ऐसी होती है कि वह अल्लाह की मज़ख़ूम से मुहझ्वत करते हैं और फिर मज़ख़ूम उनके ऊपर कुर्बान हुई जाती है। जिस तरह किसी शान के ऊपर परवाने जान फ़िदा करने को तैयार होते हैं उसी तरह अल्लाह वालों पर सलक्कीन अपनी जानें कुर्बान करने को तैयार होते हैं। ये अल्लाह तःताला पर कुर्बान, मज़ख़ूम, मज़ख़ूम ख़ुदा उन पर कुर्बान, यह अल्लाह से मुहझ्वत करते हैं। लोग उनसे मुहझ्वत करते हैं, ये अल्लाह के बाहर वाले बनते हैं, अल्लाह तःताला लोगों को उनका बाहर वाला बना देता है। ये अल्लाह तःताला की इबादत के लिए अपनी जिंदगी बसर करते हैं, लोग इनकी ख़िदमत के लिए जिंदगी बसर करते हैं। अल्लाह वालों को अल्लाह तःताला वह मुक़ाम अता फ़रमा देते हैं कि वे लोगों की ख़़ऱख़ब़री करते हैं, अल्लाह तःताला फिर उनकी ख़ऱख़ब़री करबा देते हैं। इसीलिए कई ऐसे लोग भी होंगे जिनको अल्लाह तःताला महज़बुल-अलम बना देते हैं। जहाँ जाते हैं मुहझ्वत मिलती हैं, उलफ़त मिलती हैं, जहाँ जाते हैं उनको कुर्बान की तरफ़ से लोगों के दिलों का प्यार मिलता है। वजह
क्या है? उनके दिल में अल्लाह ताजा की मुहब्बत इस तरह रच-बस रही होती है कि अल्लाह ताजाला अपने बंदों के दिलों में उनका यार रख देते हैं।

दलील

उसकी दलील हदीस पाक में है कि जब बंदा नफ्तों के जरिए अपने अल्लाह का करीबी बंदा बन जाता है (ъ-сутръ аль-अбу) बंदा नफ्तों के जरिए मेरा इतना कुर्ब पा लेता है (ъ-हतти аль-ахир)। यहाँ तक कि मैं उससे मुहब्बत करता हूँ, जब मैं उससे मुहब्बत करता हूँ तो (ъ-dept-сул-м) अल्लाह ताजाला जिब्राईल अल्लाहिस्सलाम को बुलाते हैं और फरवाते हैं, जिब्राईल! मैं फला बद्दे से मुहब्बत करता हूँ। जिब्राईल अल्लाहिस्सलाम आसमान के फरिष्टों में ऐलान कर देते हैं कि ऐ फरिष्टो! अल्लाह ताजाला फला बद्दे से मुहब्बत करते हैं। लिहाज़ा सारे फरिष्टे उस बद्दे से मुहब्बत करने लग जाते हैं। फर जिब्राईल अल्लाहिस्सलाम ज़मीन पर आते हैं और एक जगह खड़े होकर ज़मीन में ऐलान करते हैं, ऐ लोगो! अल्लाह ताजाला फला बद्दे से मुहब्बत करते हैं:

यह हदीस पाक के अल्फाज हैं कि अल्लाह ताजाला उस बद्दे के लिए दुनिया में कुबूलियत रख देते हैं।

यह जहाँ जाता है मुक़ूल बनता है, वह जहाँ जाता है लोग उस से मुहब्बत करते हैं, यार करते हैं, वह दुश्मनों में चला जाए तो वह दोस्त बन जाए, वह गरीबों में चला जाए लोग अपने बन जाए, वह ज़मान में चला जाए वहाँ ज़मान का समान बन जाए। सुक्का अल्लाह
जिसके दिल में अल्लाह की मुहब्बत होती है अल्लाह तालाब उसको जिंदगी में भी यूँ मुहब्बतें आता प्रसमा देते हैं।

मुहब्बते इलाही में कमी का वबाल

आज क्योंकि दिलों में मुहब्बते इलाही की कमी है इसलिए आज का एक आम इंसान यूँ समझता है कि फ़लों मुज़से नफरत करता है, बहु समझती है कि सास मुज़से नफरत करती है, सास समझती है कि बहू मुज़से नफरत करती है, लड़की समझती है कि फ़ला मेरी कज़ुन मुज़से नफरत करती है, फ़लां मेरी नन्द मुज़से नफरत करती है, फ़लां मेरी खाला जाद मेरे ऊपर आमल करती है। ये सब इस किस्म की बातें हैं। हरकीक्त यह है कि अपने दिल में मुहब्बत इलाही की कमी होती है। जिसकी वजह से उसके अंदर यह ख़ाल होता है कि लोग मुझे अच्छा नहीं समझते, लोग मेरी ग़ीबत करते होंगे, फ़लां ने फ़लां को बिग़ाड़ा होगा, फ़लां मेरा बुरा चाहने बाला है, उसको सब बुराई चाहने बाले नज़र आते हैं। काश! हम अपनी सोच को बदल लें, अपने दिल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत को भर लें। फिर अल्लाह तालाब मुल्क के दिल में हमारी मुहब्बतों को भर देते हैं और जिंदगी कितनी अच्छी गुज़रती—

फ़ुसर्ते जिंदगी कम मुहब्बतों के लिए लाते हैं कहाँ से वक्त लोग नफरतों के लिए

नफरत हों तो कुफ़फ़ार से

मालूम नहीं कि लोग इस मुज़सर सी जिंदगी में नफरत के लिए कहाँ से वक्त निकाल लेते हैं। फ़लां से नफरत, फ़लां से
दिल की पुकार

आज की औरतें अक्सर कहती हैं कि जी क्या करें हमारे लिए दुआ करें, अल्लाह तअला तो हमारी सुनता ही नहीं। मेरी बहन! अल्लाह तअला सुनते तो सब की हैं मुगर बात यह है कि अल्लाह तअला दिल की पुकार को सुनते हैं, तू जबान से पुकारती है। इसलिए तेरी पुकार वहाँ पहुँचती नहीं। अगर तेरा दिल कलाम करता तो रब तो दिल की बातें सुनते हैं। तेरा दिल खामीश, तेरा दिल पत्थर, तेरा दिल स्वाह, फिर तेरी जबान से निकली हुई बातें वहाँ तक कैसे पहुँचेंगी। यदि रखे कि परवरदिगार सब की सुनते हैं मगर लोगों के दिल गूँगे होते हैं, उनके दिल बातें नहीं करते, अगर तेरा दिल गूँगा न होता, तेरा दिल अल्लाह से बातें करता तो तुम्हें कभी शिक्षा न होता कि परवरदिगार तो मेरी सुनते नहीं। ये जिनके दिल अपने अल्लाह से बातें करते हैं, अपने अल्लाह की याद में रहते हैं, उनके शिक्षाओं की कोई जुरूत नहीं होती, उनके दिल से दुआएं निकलती हैं, फिर परवरदिगार कुशल कर लेते हैं। तू रब का शिक्षा क्यों करती है, अपने दिल के गूँगे होने का
शिक्षा क्यों नहीं करती? यह पत्थर बन गया है, बेजान बन गया, आज इसके अंदर वह कैफियत नहीं जो होनी चाहिए थी—

हम इलजाम उनको देते हैं खुसूर अपना निकल आया

हम अपने अंदर भी तो झांककर देखें कि हमारे दिल की हालत क्या बनी हुई है। यह हमारे गुनाह है जिनकी वजह से जुलमतें होती हैं, दिलों के अंदर सख्ती आ जाती है।

अपनी सीरत को ख़ूबसूरत बनाएं

आज की ओरेंजन जितना बक्कर रोज़ाना अपने ज़ाहिरी जिस्म को ख़ूबसूरत बनाने के लिए लगाती है, काश! कि इससे आधा बक्कर अपने बालिन को ख़ूबसौरत बनाने के लिए ख़र्च कर देतीं तो मेरे अंदाजे से जहन्नम से बचकर जन्म की हकदार बन जातीं। अपने ज़ाहिर को ख़ूबसूरत बनाने के लिए हर बक्कर सौंदर्य फिर रही होती है मगर अपने बालिन की शकल क्या है? जिसको परवर्दिगार देखता है उसकी तरफ गौर नहीं होता।

वह सरापा जिस पर बंदों की नज़रें पड़नी हैं, मेरी बहन तू उसे इतना संवारती फिरती है जबकि तेरे दिल पर तेरे रब की निगाहें पड़ती हैं, तुझे संवारने की फिक्र नहीं। जिस घर के अंदर तेरे दुनिया के मेहमान आते हैं तुने उसको नगीन की तरह चमका रखा है और तेरे दिल में तेरा परवर्दिगार मेहमान बनकर आता है और तुझे इस घर की परवाह नहीं होती। वहाँ ख़ामिशें होती हैं, शहवतें होती हैं, वहाँ निजासत की बदबू होती है और हमें परवाह नहीं होती कि हमारे दिल की क्या हालत बन गई। लिहाज़ा अपने जिस्म को ज़ुरू ख़ूबसूरत बनाएं मगर इससे भी ज़्यादा अपनी
तीरत की ख़ूबसूरत बनाई। अल्लाह ताज़ाला की नज़र इस्लाम की
tीरत पर होती है।

मेरी वहन! मेरी वातें जुरा दिल की तरज़हें से सुन लेना। यद रखता कद बगैर ऊँची हील के भी नज़र आ सकता है अगर
इस्लाम की अपनी शहीदत युवांद हो, इस्लाम की ओहँके बगैर सुने
के भी ख़ूबसूरत लग सकती हैं अगर उन ओहँकों में हया हो, इस्लाम
की पलकें बगैर मस्करे के भी दिलफरेब बन सकती हैं अगर वे
पलकें शर्म से झुक कर हैं, इस्लाम की एक्सांगी बगैर विलादों के भी
ख़ूबसूरत लगती हैं अगर उस पर सज़दों के निशान हों। तो क्यों न
tू अपने आपको अल्लाह के हयाले कर दे। यह के महबूब
सल्लाल्लाहु अलेिहि वसल्लम की सुन्नतों पर अमल कर ते, अल्लाह
रब्बुलइज्ज़त तुझे लोगों में महबूबियत अता फरमा देंगे, लोग से
सामने विचूरे फिरेंगे, तुझे दुनिया में भी इज्ज़त भिड़ींगी। रब्बे
करिम हमें इज्ज़तों भरी ज़िंदगी नसीब फरमा दें। हमारी कोलाहलों
को माफ़ फरमाकर हमें अपने पसंदीदा बंदों में शामिल फरमा दें।
(आमीन सुमा आमीन)

इल्म, अमल और इज्ज़त

हमद ल्ल्ह और सलाम उपरि उबादा दिनों निष्टिए अंगि बदा!
फाउड़ बयले मने दिना रहिम बोस्म दिना रहिम
यरफ़ु कर्दिन कर्दिन अनेक अनेक दिना रहिम दर्ज़त। केर ल्ल्ह
तहाली की मकम एकर एक यहुम्ली मने उबादा दिना। केर राष्ट्र
कर्दिन सलम उपरि उवादा दिना मने महमूद ल्ल्ह ल्ल्ह ल्ल्ह ल्ल्ह ल्ल्ह ल्ल्ह ल्ल्ह
उन्ही-उन्ही इस्लाम और सलाम सम्म रब्ब रब्ब रब्ब रब्ब रब्ब रब्ब रब्ब रब्ब रब्ब रब्ब रब्ब रब्ब
वसम उपरि कर्दिन और असल ल्ल्ह ल्ल्ह ल्ल्ह ल्ल्ह ल्ल्ह ल्ल्ह ल्ल्ह ल्ल्ह ल्ल्ह ल्ल्ह ल्ल्ह ल्ल्ह
हर इस्लाम चन्निया में इज्ज़त की जिंदगी गुज़ारना चाहिए है।
इस इज्ज़त की तलाश में उसे दिन रात मेहनत करना पड़े तो भी
नहीं घबराता, अपने आराम को कुर्बान करना पड़े तो भी पीछे नहीं
हटता।

इज्ज़त मिलने के दो ज़रिए

उसके दिल में एक तड़प और तनना होती है कि मुस्लिम इज्ज़त
की जिंदगी नसीब हो। दुनिया में इज्ज़त दो तरह से मिलती है।
एक माल के ज़रिए और दूसरे नेक अमाल के ज़रिए। मगर दोनों
इज्ज़तों में स्फर है। माल जिस तरह स्फुट बनती चीज है, ठलती
छाँद है, इससे मिलने वाली इज्ज़त भी नापाएँदार होती है।
जो शाखा नाजुक पे आशियाना बनेगा नापावधार होगा

नेक आमँला क्योंकि बाकी रहने वाले होते हैं, बाक़्यात्तुस-सालिहात में से होते हैं तो यह पक्की बात है कि इल्म को माल पर कई वजहों की वजह से फ़ुज़ीलत हासिल है। इल्म से इस्मान अमल करता है और आमँल की वजह से उसे दुनिया व आख़िरत में इज़ज़तें मिलती हैं। इसलिए जो इज़ज़त इस्मान को नेकी की वजह से मिलती है वह हमेशा की इज़ज़त हुआ करती है। फ़रायाबः

(जाना अल्लाह रब्बुलइज़ज़त के लिए, उसके रसूल के लिए और इस्मान वालों के लिए है।

इल्म की फ़ुज़ीलत माल पर

1. इल्म अंविया किराम की मीरास है और माल काफ़ून की मीरास है।

2. इल्म के हासिल होने से इस्मान के दोरा बढ़ते हैं और माल के हासिल होने से इस्मान के हासिद बढ़ते हैं।

3. इल्म की चोरी का ख़तरा नहीं होता और माल को कभी अमन नसीब नहीं होता।

4. इल्म तो सीने का नूर है इस्मान जहाँ जाएगा साथ होगा जब कि माल तो तिज़ोरी में होता है हर वक़्त साथ नहीं होता।

5. इल्म जितना भी पुराना हो उतना गहरा होता है, उसका मुक़ाम और मर्दवा बढ़ता चला जाता है और माल जितना
पुराना हो यह अपनी कीमत घटा बैठता है। आज से पचास साल पहले रुपए की जो कीमत थी आज आपके रुपए की आधी कीमत भी नहीं मिलेगी।
6. इल्म की महत्वत से इंसान करीम हुआ करता है जबकि माल की महत्वत से इंसान बख़्रील हुआ करता है।
7. इल्म को जितना ख़र्च किया जाए उतना बढ़ता ही चला जाता है और माल को जितना ख़र्च किया जाए वह उतना घटता चला जाता है।
8. इल्म की महत्वत दिल में हो तो इंसान के दिल में नूर आता है जबकि माल की महत्वत दिल में हो तो इंसान के दिल में अंधेरा आता है।
9. इल्म इंसान की हिफ़ाज़त करता है जब कि माल की हिफ़ाज़त इंसान को करना पड़ती है।
10. इल्म से इंसान माल तो कमा सकता है मगर माल से इंसान इल्म को नहीं ख़रीद सकता।
11. माल की ज्ञात की वजह से फ़िर ओम ने कहा था कि यानी ख़ुदाई का दावा किया था। माल ने उसमें तकबुर पैदा कर दिया था जबकि इल्म की कसरत की वजह से अल्लह रब्बुलइज़़त के महबूब ने फ़ृसाया :

(क्रमशः इब्दुनकुल ख़ित इबादत और उसका दावा कर दी।)

माल की बेसबाती

आमतौर पर तास्सुर पाया जाता है कि माल होगा तो सब
काम संवर जाएगे। कहावत मशहूर है कि माल हो तो इसान
का दूध भी खरीद सकता है। यह सिफ़्र धोका है। माल से
बहुत सारे काम ठीक हो जाते हैं मगर हर काम ठीक नहीं होता।
आप खुद सोचिए कि :
1. माल से इसान ऐनक तो खरीद सकता है, बीनाई तो नहीं
खरीद सकता।
2. माल से इसान किताब तो खरीद सकता है, इल्म तो नहीं
खरीद सकता।
3. माल से इसान नर्म बिस्तर तो खरीद सकता है मीठी नींद तो
नहीं खरीद सकता।
4. माल से इसान अच्छे कपड़े तो खरीद सकता है, हुस्न व
जमाल तो नहीं खरीद सकता।
5. माल से इसान घर में नौकर तो ला सकता है, नेक बेटा तो
नहीं ला सकता।
6. माल से इसान दवाएं तो खरीद सकता है, अच्छी सेहत तो
नहीं खरीद सकता।
7. माल से इसान ख़िज़ाब तो खरीद सकता है, शबाब तो नहीं
खरीद सकता।
8. माल से इसान को लोगों की खुशामद खरीद सकता है, किसी
के दिल में मुहब्बत तो नहीं खरीद सकता।
9. माल से हर काम दुनिया में भी नहीं होते और रोज़ मह्षार तो
माल बिलकुल ही काम नहीं आएगा।
अल्लाह तौफ़ीक के दर्शाद है, फरमाया :
कियोम लाइ निश्चित माल तो नवन निश्चित तो नाम आते अल्लाह ने बप्तिक सलाम।
इल्म और जिहालत का मुकाबला
कुरआन पाक की रोशनी में

कुरआन मजीद में अल्लाह तजाला इश्की फरमाते हैं:

क्या हल यह तेरी देखने लिए और जो नहीं देखने लिए जो हो आप फरमा।

इल्म का बारे में है इल्म वाले और बेइल्म वाले हो सकते हैं? बल्कि कुरआन मजीद में सात चीजों को कहा गया है कि वे सात चीजों के बारे में हो सकती हैं। इसी इल्म के बारे में फरमाया गया कि इल्म वाले और बेइल्म वाले हो सकते हैं।

दूसरी जगह फरमाया कि पाकिज़ा चीज और नापाक चीज़ बराबर नहीं हो सकती।

फरमाया नहीं अिसकाबीबर बाद दिया और जननाई बाद बाद नहीं हो सकते।

(आखों बाद) और नाबीना (अंधे) बाद नहीं हो सकते।

(जय काल अंधेरा) और रोशनी बाद नहीं हो सकती।

(जूलमत अंधेरा) और रोशनी बाद नहीं हो सकती।

(धूप और) गुज़बाद बाद नहीं हो सकती।

(वो मययो अलीहम ला आमात) सकते।
इब्राम गुज़राती रहो फरमाते थे कि इन आयतों में सात चीजों से मुराद इल्म है और उनके मुकाबले की सात चीजों से मुराद जिहालत है। लिहाजा इल्म, तैत्तिव, जन्मत, बसारत, नूर, धूप और हयात सारे के सारे अल्फाज़ अल्लाह तालाबा ने इल्म के लिए इस्तेमाल फरमाए और दूसरे अल्फाज़ अल्लाह तालाबा ने जिहालत के लिए इस्तेमाल फरमाए।

इल्म की फृज़ीलत
कुरआन मजीद से

इस दुनिया में असली इज़जत मिली अंबियाएँ किराम को और वह हमेशा की इज़जत थी। और ये वे लोग थे जो अल्लाह तालाबा के पसंदीदा और चुने हुए लोग थे। जिनकी ज़िद्दिये इसानियत के लिए नमूना थी। दुनिया दाहल असबाब है, सबब की ज़रूरत होती है। अंबियाएँ किराम अल्लाहुस्सलाम को दुनिया में इज़ज़त मिलने का जो सबब भी बना वह इल्म बना। आइए, कुरआन पाक से हम कुछ भिलाशें देखें।

हज़रत आदम अल्लाहुस्सलाम की निसाल

हज़रत आदम अल्लाहुस्सलाम को अल्लाह तालाबा ने मस्ज़ूदुल मलाइका बनाया, मलाइका को हुकूम दिया कि तुम आदम अल्लाहुस्सलाम को सज्दा करो मगर इस सज्दा करने का सबब इल्म बना। फरमाया और हमने आदम अल्लाहुस्सलाम को तमाम अस्मा का इल्म अता कर दिया। तो जो चीज़ सबब बन रही है वह ऐसा इल्म था जो फृश्तों को नहीं
मालूम था। लिहाज़ा फरमाया हुम सज्जा करो। तो जब चीजों के इल्म होने की वजह से हज़रत आदम अल्लाहिसलाम मस्जिदुल मलाइका बन तो यहाँ आरिफ़ीन ने एक नुक्ता लिखा, ऐं इसान! जब चीजों के नामों का इल्म हो तो इसान मस्जिदुल मलाइका बन जाता है तो जिस इसान की अल्लाह रब्बुलज़ज़ूत के नामों का इल्म और उसकी मारिफत होगी फिर उसके मुकामात कितने बुलंद कर दिए जाएगे।

हज़रत दाऊद अल्लाहिसलाम की मिसाल

हज़रत दाऊद अल्लाहिसलाम को अल्लाह त़ज़ाला ने दुनिया में बड़ी सल्तनत अता फरमाई। इसका सबब क्या बना? कुरआन पाक में इशाक फरमाया को और हमने उनको लोहे की जिराह बनाने का इल्म अता कर दिया था। (وعلماه صنة للعس لكم) और हमने अता कर दिया था, निक्खत अपनी तरफ़ फरमाईं और हमने उनको लोहे की जिराह बनाने का इल्म अता कर दिया था। इस बिना पर अल्लाह त़ज़ाला ने दुनिया में उनको बड़ी सल्तनत अता कर दी थी।

हज़रत सुलेमान अल्लाहिसलाम की मिसाल

हज़रत सुलमान अल्लाहिसलाम को दुनिया की भी शाही मिली और दीन की शाही भी। नबी अल्लाहिसलाम ने इशाक फरमाया कि उन जैसी दुनिया की शाही न पहले कभी किसी को मिली थी न फिर मिलेगी। ऐसी शाही मिली कि इंसानों के भी बादशाह, जिन्नों के भी, परिवारों के भी, हैवानों के भी, दरिंदों के भी, ख़बरुक की मख़्ूक के भी और तरी की मख़्ूक के भी बादशाह बने। अल्लाह
तात्त्त्विक ने हर चीज़ पर उनकी शाही अता फरमाई थी। अल्लाह तात्त्त्विक ने उनको मलिका सबा पर गुलवा अता किया। अब उनकी फर्तेह और गुलवे का वाहिका कुरआन मजीद में बयान किया तो उसकी वजह क्या बताई गई? उन्होंने फरमाया:

फ़िल्मा नासु हमना नम्बू तैर्र।

ऐ इंसानो! भुजे अल्लाह तआला ने परिन्दों की बोली को समझने का इल्म अता कर दिया।

दुनिया के अंदर ऐसी शाही मिलने और गुलवा नसीब होने का सबब उनका इल्म बना।

हजरत यूसुफु अल्लाहिस्लाम की मिसाल

हजरत यूसुफु अल्लाहिस्लाम को अल्लाह तआला ने गुलामी की दातत से निकलकर तक्त के ऊपर बिठाया। फ़र्श पर थे अर्श पर बिठ दिए गए। एक वक़्त वह भी था कि जब मिले के बाज़ार में बिक गए थे, उनके भाव और दाम लग रहे थे और लोग खरीदने के लिए आ रहे थे। हजरत यूसुफु अल्लाहिस्लाम के लिए कीमतें लगा रहे थे लेकिन यह इल्म के हासिल होने से पहले का बुझ्त था। फरमाया:

फ़िल्मा भुल एशदाह एतनसा हकमा और उल्मा।

देखिए अब इल्म अता हो रहा है और फिर इल्म के बाद अल्लाह तआला ने उनको शाही अता फरमाई। उनको दुनिया का तक्त मिला, ख़ज़ाने की चाबियां मिलीं। फरमाया:

फ़िल्मा हुज़ूल ऑलियु बुज़ू एज़्मा。

अब मुझे ख़ज़ानों का वाली बना दो। अब यह जो चाबियां उनके हवाले हो रही हैं उसका सबब "ख़ज़ाब की ताबीर" का इल्म
हज़रत ईसा अल्लाहसल्लाम की निसाल

हज़रत ईसा अल्लाहसल्लाम ने दुनिया में अपनी वालिदा से इल्ज़ाम को दूर किया आपने इल्म की वजह से। कुरआन गवाही देता हैः

腰部मे के कौनों मे के नीतिसक एवं कथित एवं अनुसूची के लिए।

देखिए उनको भी इल्म अता किया गया।

हज़रत ख़िज़र अल्लाहसल्लाम की निसाल

हज़रत ख़िज़र अल्लाहसल्लाम के बारे में मुफ़्तिसीरीन ने लिखा है कि औलिया में सबसे बड़ा मुक़ाम रखने वाले हैं। उन्हें एक नवी अल्लाहसल्लाम का उस्ताद बनने का शर्फ़ नसीब हुआ और नवी भी कितनी शान वाले कि कलीमुल्लाहः फ़ख़्म अल्लाह मुस्त्रि तक्विलमे। उनको उस्ताद बनने का जो मुक़ाम नसीब हुआ उसकी वजह
उनका इलम बना। अल्लाह तअला फरमाते हैं : 

हमने उसे अपने पास से इलम अता कर दिया। इलम सबब बन रहा है एक वली के लिए कि वह अल्लाह रख्लुलइजज़त के पेग़बर का भी उस वक़्त उस्ताद बने।

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अल्लाहि वसल्लाम की मिसाल

नबी अल्लाहस्लाम को अल्लाह रख्लुलइजज़त ने कौनैन की शाही अता फरमाई थी। सैयदुल अवलीन वल अह्लीन बनाया और उनको भी अल्लाह तअला ने इलम में मुतताज़ फरमाया।

और आपको वह इलम दिया जो आपके पास न था और आप पर अल्लाह तअला का बड़ा फज़्ल हुआ।

इन तमाम हस्तियों के लिए दुनिया में इजजतें, शराफ़तें और गुलबे मिलने का सबब जो चीज़ बन रही है वह उनका इलम है। मालूम हुआ कि इलम से जो इजज़तें मिलती हैं वे हमेशा की हुआ करती हैं और माल के जरिए जो इजज़तें मिलती हैं वे वक़्त हुआ करती हैं। सुबह के वक़्त तक पर होते हैं और शाम के वक्त तक पर हुआ करते हैं, रात को वज़ीर हैं सुबह को असीर (कैदी) हैं, रात को सदर हैं सुबह को मुल्क बदर (बाहर) हैं, रात को अमीर हैं सुबह को फज़ीर हैं। माल से मिलने वाली ऐसी वक़्ती इजज़त से क्या फायदा।
अक्लमंद इंसान

अक्लमंद इंसान यह है जो अपने आपको इल्म के जेवर से सजाए। जो अपने दिल को इल्म के नूर से मुनवर करे तकि वह दुनिया के अंदर इज़्ज़तों वाली जिंदगी और कामयाबियों वाली जिंदगी अपना सके।

अनमोल बातें

हज़रत सुफ़ीयान सीरी रहूए एक बड़े फूक़ीह (आलिम) पुज़रे हैं। फ़स्माया करते थे कि अगर नेक नीयत हो तो तालिब इल्म से अफज़ल कोई नहीं होता। सच्ची बात यही है कि जिस घर में कोई अहले इल्म न हो तो वह घर जानवरों का डड़ा होता है (उल्लेख के) कत्लासुमाबरहेमःप्लेक। वह तो जानवर हैं बल्कि उससे भी बदूर तालिब हैं (उल्लेख के) महमदःsaving। यह भी दृष्टांकन है कि अगर इस्लाम रास्ते से वाकिफ़ हो तो वह अपने लंगड़े गधे को भी मज़िल पर पहुँच लेता है और जिसको रास्ते का पता न हो उसका मोटा ताज़ा गधा भी रास्ते में खड़ा होता है। मालूम हुआ कि अगर इल्म हो तो इस्लाम अपनी जिंदगी में मज़िले मक्कूद पर पहुँच जाया करता है। इल्म की अहमियत इस लिहाज से बहुत ज्यादा है।

अमल की ज़ुरूत

एक नुक़ता समझिए कि जिस तरह चिराग जले बग़ैर रोशनी नहीं देता इसी तरह इल्म भी अमल के बग़ैर फायदा नहीं देता। अमल के बग़ैर इल्म मालूमत कहलाता है। इसीलिए तो हुजूरानः मज़ीद में बनी इस्लाम के बेअमल पीरों को कुत्तों से तश्वीर दी
इश्लास की जुरूत

इल्म के बाद एक कृदंब और है जिसको इश्लास कहते हैं। ये तीन चीजें जब इकट्ठी हो जाती हैं (इल्म, अमल और इश्लास) तो फिर यह एक कुव्वत बन जाती है एक ताक़त बन जाती है। जिस इंसान के अंदर इल्म भी होगा, अमल भी होगा और इश्लास भी होगा तो अब ये अल्फ़ाज़ और हफ़्र नहीं वलिक अब यह एक ताक़त है, एक कुव्वत है। और इस कुव्वत की कजह से उसे अल्लाह तजाला दुनिया और आख़िरत में इज़ज़तें देते हैं। इसलिए ये अपने अंदर इश्लास पैदा करने की जुरूत है।

आसिफ़ बिन बर्ख़िया के इल्म, अमल

और इश्लास की बरक़त

देखिए दुनिया के अंदर भी इंसान ऐसे काम कर दिखाता है जो जिन्न भी नहीं कर पाते। पढ़िए कुरान पाक कि जब मलिका बिल्क़ूम का ताक़त मंगवाना था तो इज़ज़त सुलेमान अलैहिस्लाम
कहा था कि उसके पास किताब का इल्म था। सुबहनअल्लाह, सुबहनअल्लाह। जहाँ इफ़्रीत भी कोई काम करने से बेबस हो जाते। वहाँ एक इल्म वाला खड़ा होता है:

और जब उन्होंने पत्थर झपक कर देखा वह रहा मस्तफा अदेरा का कहा था कि इसे इल्म, अमल और इश्कास जब तीन चीज़ें जमा हो जाएं तो फिर यह कुश्त और ताक़त बन जाया करती है। फिर यह इमानी कुश्त और ताक़त इस्नान को दुनिया और आख़िरत में इज़वज़त दिया करती है।
हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्नु के इलम, अमल और इज्ज़ास की बरक़तें

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्नु के पास इलम, अमल और इज्ज़ास से मिलने वाली कुव्वत और ताक़त मौजूद थी और उसी कुव्वत और ताक़त की बजह से अल्लाह ताआला ने दुनिया के हाकिमों और बादशाहों के ताज उनके कदमों में लाकर डाल दिए। फ़ूकीराना जिंदगी थी लेकिन वक़्त की बड़ी-बड़ी सुपर पावर वाले बादशाह कैसर व किसरा भी धराया करते थे। नाम सुनकर क़ौतरे थे, तरज़ जाया करते थे। इसलिए कि उनके पास इलम, अमल और इज्ज़ास की कुव्वत मौजूद थी।

हवा पर हुक्म

एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्नु ने मिंबर पर खड़े होकर फरमाया "ये सारिया! पहाड़ की तरफ़ से ध्यान रखना। हवा उनका यह पैगाम को ज्वान से लेकर अमीरे लश्कर तक पहुँचा देती है। यह उनका हवा पर हुक्म चल रहा है।

ज़मीन पर हुक्म

किताबों में लिखा है कि एक बार मदीना मुनब्बरा में जलज़ला आया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्नु ने ज़मीन पर ऐड़ी मारी, फरमाया, ऐ ज़मीन तू क्यों हिलती है? क्या उमर ने तेरे ऊपर इसाफ़ कायम नहीं किया? ज़मीन का जलज़ला उसी वक़्त हुक जाता है।
आग पर हुक्म

एक बार मदीना के बाहर एक आग निकलती है और मदीना
तैयाब़ा की तरफ बढ़ना शुरू कर देती है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु
अन्दु एक सहाबी को बुलाकर हुक्म देते हैं कि इस आग को पीछे
इसके निकटने की जगह की तरफ धकेल दीजिए। वह अपनी
चादर को कोड़े की तरह बनाकर उस आग की तरफ मारना शुरू
करते हैं। आग हटते-हटते जहाँ से निकली थी वहाँ पर वापस
चली जाती है। सुकानअल्लाह! आग पर हुक्म चल रहा है, हवा
पर हुक्म चल रहा है, ज़मीन पर हुक्म चल रहा है। दरियाओं के
पानी पर हुक्म चल रहा है।

पानी पर हुक्म

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्दु को एक बार मिस्र के अमीर
लख़क़र ने लिखा, ऐ! अमीरुल मोमिनीन! दरियाए नील के पानी
जारी होने के लिए हर एक साल एक जवान लड़की की कुर्बानी
दी जाती है। आपने जवाबी ख़ृत लिखा कि उसे दरिया में डाल
दो। उस ख़ृत में लिखा था ऐ! नील! अगर तू अपनी मर्जी से
चलता है तो मत चल लेकिन अगर तू अल्लाह रब्बुलइक्बाल के
हुक्म से चलता है तो अमीरुल मोमिनीन उमर बिन स्त्राब तुझे
हुक्म देता है कि तू चलना शुरू कर। दरियाए नील का पानी आज
भी चल रहा है और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्दु की अज़मतों के
फरेरे लहरा रहा है।

बैतुलमुक़दस कैसे फूटेह हुआ

बैतुल मुक़दस को जीतने का मसूला है। मुसलमानों ने वहाँ
पर चढ़ाई की। वहाँ के लोगों ने कहा कि आप अपने ख़लीफ़ा को हमारी तरफ से भेजिए। हमारे पास उनकी निशानियाँ हैं, हम देखेंगे कि अगर वे निशानियाँ मौजूद हुईं तो बगैर किसी लड़ाई के हम चाबियाँ उनकी झोली में डाल देंगे। हज़रत उमर रज़ाउल्लाह अन्ततः की ज़ियाद़ती ज़िदगी यह थी कि अपने कुर्ते पर भी चढ़ने के पेंदे लगे हुए हैं। अदल और ईसाफ़ इतना कि अगर गुलाम नाम हैं तो कुछ फासले पर खुद सवारी पर बैठे और वह पैदल चलता और कुछ फासला आप पैदल चलते हैं और उसको सवारी पर बिठाते हैं और जब आज़ादी वक़्त आया तो वह मज़लिस आपके पैदल चलने की थी और गुलाम के सवारी पर बैठने की थी। मुसलमानों का अमीरुल मोसनिन! इस ज़हाज में दुश्मन के सामने पेश होता है कि उसने ऊँट की मुहार पकड़ी हुई है, गुलाम ऊपर बैठा हुआ है, कपड़े में पेंदे लगे हुए हैं मगर उनके चेहरे पर वह जाह्न व जलाल था, वह हैवत थी। आल्लाह त़बला ने रोब के जुरिए उनकी ऐसी मदद की कि जब काफ़िरों ने देखा तो उनके पिसे पानी हो गए। कहने लगे, वह वही हस्ती है जिसकी निशानियाँ विलायत में हैं। बैटुल मुक़दस के चाबियाँ उनकी झोली में डाल दी जाती हैं। वह इज़्ज़तें कैसे मिल रही हैं? लिफ़ ज़हाज़े ईमानी के सबब जो इस्तान को इलम, अमल और ईलाज़ा की वजह से नसीब होती हैं।

चिराग़ इलम जलाओ

तो आज इस बात की ज़रूरत है कि वह पढ़ने वाली बच्चियाँ जो सन्दे लेकर फ़ार्रिग हुईं हैं और जिनको अल्लाह त़बला ने वह ख़ुशी का मीठा दिया कि इलम की निस्तवल नसीब हुई बे इस इलम
पर अमल करके खुद भी नेक बनें और जहाँ हों वहाँ भी इल्म की रोशनी को फैलाएं।

चिरागः इल्म जलाओ बड़ा अंधेरा है

आज जुशँत है इस बात की जहाँ-जहाँ जो बच्ची जाए वह इल्म के चिरागः को जलाएं ताकि उम्मत के अंदर जो जिहाद का अंधेरा आ चुका यह रोशनी में तब्दील हो जाए और वह रोशनी मीनाराए नूर बन जाए और लोगों की जिंदगियों को मुनब्वर करने लग जाए। नबी अल्लाहसल्लाम ने जो दीन की मेहनत की और दीन हम तक पहुँचाया उस दीन की हिफाजत करने वाली जमात में आए भी शामिल हो जाएं। जब आप इल्म पर अमल करेंगी और इसकी रोशनी फैलाएंगी तो आप इस दीन की हिफाजत करने वालों के गिरोह में और जमात में शामिल हो जाएंगे।

नबी अकरम सल्ल्लाहु अलैहि बसल्ल्लाम की बेहतरीन दुआ

अल्लाह तालाला के महबूब सल्ल्लाहु अलैहि बसल्ल्लाम ने फर्माया:

"फ़िन्‌ज़िरद अल्लाह अद्वितीय स्वरूपा और विद्वद्वा अल्लाह के द्वारा सुनाया है।"

अल्लाह तालाला उस आदमी के चेहरे को तर व ताजा रख कि जिसने मेरी बात को सुना, उस पर अमल किया फिर उसको महफूज़ किया और लोगों तक उसको ऐसे पहुँचाया जैसे उसको सुना। ऐ बेदी! अगर अल्लाह के महबूब फर्माते हैं, अल्लाह उसके चेहरे को तर व ताजा रखे, कितनी प्यारी दुआ दी। मालूम हुआ
फ़िक़ की यहाँ

आज भी जो ईसान चाहे कि मुझे ये इज़ज़तें नसीब हों तो राज़ा वही है कि इल्म हासिल करे। उसको अमली जामा पहनाए और अमल सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए करें। अपने अंदर अमल को पैदा कर लीजिए फिर देखिए अल्लाह तआला दुनिया में इसी इज़ज़तें अला फ़रमा देते हैं। हम गुनाहों की जिंदगी गुज़ारकर इज़ज़तों के तलबगार बनते फिरते हैं। यह केवल मुमक्न है कि हम नफ़स व ज़ियादा हिसाब वाली जिंदगी गुज़ारें और फिर सोचें कि इज़ज़तों भरी जिंदगी सिमखी। इसलिए इज़ज़त वाली जिंदगी उस ईसान को मिलती है जिसकी जिंदगी की दुनियाद सच पर होती है। याद रखिए एक गुनाह को छिपाने के लिए झूठ बोलना पड़ेगा और एक झूठ को छिपाने के लिए कई झूठ बोलना पड़ेगा।
कभी-कभी झूठ पर जिंदगी की बुनियाद होती। इसलिए तत्परता अपने दिलों में झांककर देखें कि उन्होंने इल्म की जो निश्चित पाई, क्या सिर्फ लोगों को दिखाने के लिए है। अगर सारी दुनिया हमें नेक कहती रही मगर अल्लाह तथाकथा के यहाँ नेकों में शुमार न हुआ तो यह दुनिया की तारीफ़ किस काम की और अगर सारी दुनिया हमें बुरा कहती रही लेकिन अल्लाह तथाकथा के हाँ हम नेक लोगों में गिने गए तो हमें दुनिया वालों का बुरा कहना क्या नुकसान पहुँचा सकेगा?

लोग समझें मुझे महसूस ओ आँख आ न तकरीं।

वह न समझें कि मेरी क़िमत के काबिल न रहा।

अगर अल्लाह तथाकथा के दफ्तर में हमारा नाम झूठ लिखा गया कि यह झूठ है, बात-बात में झूठ बोलना, बात बदल कर करना, अल्फ़ाज़ बदल कर बोलना, बात कुछ थी अंदाज़ किसी और में पेश करना, हर एक के सामने उसी तरह बातें। जब झूठ हमारी जिंदगी की बुनियाद होगा तो भला इस्माईल को सकून गैरसे मिल सकता है। याद रखिए गुनाह इस्माईल को किसी न किसी सूरत वर्तमान ज़ुस्तर रखता है। कोई इस्माईल ऐसा न मिलेगा जो गुनाहों वाली जिंदगी गुज़ारे और उसका दिल आपको मुतमिसन ज़ुस्तर आए, उसका दिल हमेशा परेशान होगा। यहाँ तक कि कामयाबी से गुनाह करने वाले जिन्होंने अपने कृतियों अजून्तों की आँखों पर पहेंचाँ वाँछियाँ, उनकी आँखों में धूल झूक दी, किसी को पता न चलने दिया। इस तरह कामयाबी से गुनाह करने रहने वाले के दिल को झांक कर देखें उनके दिलों में भी बेसुकूरी पाएँ। वह मुजर्मित होते है। अल्लाह तथाकथा के भी और अपने ज़मीर के भी। उनका
ज़मीर उन्हें हर दिन में मलामत कर रहा होता है। वे आँखें बंद करते हैं तो अपने आपको मुजरिम खड़ा पाते हैं। जैसे ज़मीर की अदालत के कट्टरों में खड़े हैं और उन्हें ज़मीर पुकार कर कह रहा है कि तुम अपनी अवकाश को पहचानो, दुनिया तुझों क्या समझती है और तुम अपने मन में झाँककर देखो तुम्हारी अवकाश क्या है? हकीकत क्या है? तुम अल्लाह को क्या चेहरा दिखाओगे?

कितनी अजीब बात है कि सुबह विकार से उठते हैं। मूंह बगैर धोए लोगों के सामने नहीं जाते कि मेला मूंह लेकर कैसे जाएगी। अरे! जिस चेहरे को दुनिया ने देखा उसको धोए बगैर तुम सामने नहीं जाते, जिस चेहरे को परवर्दिगार ने देखा है जब उस पर गुनाहों का मेल लग गया तो फिर परवर्दिगार को वह चेहरा कैसे दिखाएगे?

गुनाहों की माफ़ी किस तरह मांगे

हम अब तक ज़िंदगी में जो गुनाह कर चुके हैं हमें चाहिए कि आज की इस महफिल में अल्लाह तालाला से पक्की माफ़ी मांगे, दिल में इशादा करें। रब्बे करीम! जो हो चुका वह तो गुज़र चुका, हम उस पर नादिम हैं, शर्मिन्दा हैं, रब्बे करीम! जो बक़ृत ज़िंदगी का आईवा बाक़ी है उसमें नेकोकारी की ज़िंदगी नसीब फरमा दे। ऐ, अल्लाह! आपने हमें दुनिया में इल्म की निस्वत्त दी दी, अल्लाह! इस निस्वत को निभाने की लोभीक अटा फरमा। ऐसा न हो कि हम इल्म की बदनामी का सबब बनें, इल्म के नाम पर बड़ा लगाने का सबब बन जाएं। कहीं ऐसा न हो कि कोई ऐसी कोठाही कर बैठें, कोई ऐसा गुनाह कर बैठें, कोई ऐसी गुल्ली कर बैठें कि लोग यूँ कहें कि देखो इल्म पढ़ने वालों का ज़िंदगी ऐसी होती है। अरे
इल्म वाले तो बड़ी शान वाले गुज़रे हैं। उनकी जिंदगियाँ तो बिल्कुल पाकीज़ा जिंदगियाँ थीं जिन पर फूलों की पाकीज़ी भी कुर्खन कर दी जाए। उनके दामन इतने साफ़ होते थे। आज हमें अल्लाह तआला ने अगर आज के दौर में इल्म की यह निस्कत अता की तो हमें भी अपने दामन को गुनाहों से बचाकर जिंदगी गुजारनी है, पाकदामनी की जिंदगी, परहेजगारी की जिंदगी, नेकोकारी की जिंदगी, जब इस तरह एहतियात की जिंदगी गुजारने तो अल्लाह तआला की रहमतें बरसेंगी। अल्लाह तआला हम पर मेहरबानी फर्माएं।

आप अपने गुनाहों की अल्लाह तआला से खूब माफ़ी मांगे। जिन्दगी के साथ, तक़क़र के साथ, बार-बार इलिज़ा लगाकर माफ़ी माँगिए। एक छोटा बच्चा माँ से कुछ मांगता है, माँ इंकार कर देती है, बच्चा बाज़ नहीं आता वह फिर मांगता, माँ ज़िंदकठ भी देती है, वह फिर पीछे नहीं हटता, बच्चा छोटा सही मगर इस रज़ को जानता है कि बार बार मांगने से मेरा काम बनेगा और आशिर्वाद अभी मुझे चीज़ दे देगी। कभी तो माँ उसको ध्यान भी लगा देती है वह रो भी पड़ता है मगर माँ की तरफ़ लपकता है।

जब एक छोटा बच्चा माँ के सामने इतने जमाने के साथ खड़ा हो जाता है और उसकी तरफ़ बढ़ाता है तो माँ को भी प्यार आता है, बच्चे को उठाकर वह सीने से लगा लिया करती है। हम भी इसी तरह अल्लाह तआला के दर को पकड़ लें। माफ़ी मांगिए और बार-बार मांगे, अपनी नदामत का इज़हार करें, अपने दिल के अंदर अपने आपकी मुज़रिम समझाते हुए गुनाहगार समझते हुए अल्लाह तआला से सच्चे दिल से माफ़ी मांगें। रच्चे करीम! हम पर मेहरबानी फर्मा कि हमें तुने इल्म की निस्कत अता फर्माई,
अल्लाह! इस निस्वत की लाज रख लेना—
अमल की अपने असास क्या है
बघुज्ज नदामत के पास क्या है
रहे सलामत तुम्हारी निस्वत
मेरा तो बस आसरा यही है
अल्लाह तज़ाला ने जिस तरह ज़हिर में हिम के साथ यह निस्वत दी, अल्लाह तज़ाला क्रयामत के दिन भी तलबा, उलमा के कुदमों में जगह आता फ़र्मा दे। यही हमारे लिए मग़फिरत का सबब बन जाएगी।

अपनी “मैं” को मिटा दीजिए
कभी कभी इस्मान की “मैं” उसके रास्ते की रूकावट बन जाती है। इस “मैं” को मिटा दीजिए। नफ़स को अल्लाह के लिए पामाल कर दीजिए और मिटकर अल्लाह के दीन का काम कीजिए।

रब्बे करीम का दरवाजा
हम सच्चे दिल से माफ़ी मांगे, बार-बार परवरदिगार का दरवाजा खोलन्ताएं। जो इस्मान बार बार दरवाजा खोलन्ताता है आदिर्द्र उसके लिए यह दरवाजा खोल दिया जाता है। मगर दिल के अंदर पक्का यक़ीन हो कि हमें रहमत मिलनी है तो इसी दरवाजे से मिली हैं, मग़फिरत मिलनी है तो इसी दरवाजे से, हमें बिख़रने मिलनी है तो इस दरवाजे से, इज़ज़त मिलनी है तो इसी
दरवाज़े से। अल्लाह के महबूब ने हमें वह दर दिखाया और साथ ही बता दिया कि इस दर के सिवा कोई दर नहीं है।

अल्लाह को राज़ी कर लें

अल्लाह तवाला को उस बक़्त तक मनाना है जब तक वह राज़ी न हो जाए। इस दरवाज़े को पकड़े रहिए, दिन रात दुआएं कीजिए, तहज्जुद पढ़कर, नमाज़ पढ़कर अपनी तन्हाईयों में बैठकर अल्लाह के सामने सर झुकाकर, सज्जे में सर डालकर माफ़ियाँ मांगिए। उस रब को मनाने की कोशिश कर लीजिए। ऐ अल्लाह! तु राज़ी तो सारा जग राज़ी। अगर परवर्दियार राज़ी हो गए तो ईसान को दुनिया में भी इज़ज़त मिलेगी। इस दरवाज़े के ऊपर जमांव के साथ जमे रहिए यहाँ तक कि अल्लाह तवाला हमारे लिए ख़ैर के पैसले फ़र्मा दे।

एक देहाती की अजीब दुआ

मुझे एक देहाती की बात धार आई। देहात के रहने वाले थे। सहायी थे। आ गए मसिज़ेदे नबवी में, दुआ मांगते हैं और क्या कहते हैं:

"लल्लम ईवुफ़ू लल्लम ईवुफ़ू फ़ाइतक न ईवुफ़ू फ़ाइज़र।"

ऐ अल्लाह! मुझे माफ़ कर दे, ऐ अल्लाह! मुझे माफ़ कर दे और अगर दूने मेरी पग़फ़ित नहीं भी करनी तो फिर भी पग़फ़ित फ़र्मा दे।

बार-बार यही दुआ कर रहे थे। सोचिए कि जब कोई इतनी आज़ज़ी के साथ, इतनी इन्किसारी के साथ अल्लाह तवाला से
दुआ मांगेगा कि ऐ अल्लाह मेरी बद्द्वार फरमा दे, अगर बद्द्वार नहीं भी करनी तो परवरिदगार! फिर भी बद्द्वार फरमा दे। 
अल्लाह तजाला की रहमत जोश में क्यों नहीं आएगी। फिर 
अल्लाह तजाला मेहरबानी फरमाते है। कुरआन हमें पुकार रहा है:

फळया या वादिय जिनों असर्फ़ाउ उल्लास से त्याहाॅला दोहरु का आमान से रहमाॅत से मामूल न होगा।

अल्ला वन दूरर दली जबुजब आपनी रहमाॅत फरमाॅए, 
हमारी जिंदगी की कोटाहियों से दरगुज़र फरमाॅए और जो बड़ा 
बाक़ी है अल्लाह तजाला उसकी इल्म, अमल और इख्तास के 
साथ गुजारने की तोफ़ीक नसीब फरमाए।

फ़िस्टवेर दुवानांन अन्हें हमद ल्लहर बुल्लमन।
दिल प्रजीत नसीहत

अत्यन्त अहम कथा है कि इस विषय में कोई गलती हो जो भी हो सके। इसका अर्थ है कि जब आप उसे समझते हैं तो आप उसके अनुसार काम कर सकते हैं। इसलिए यह बहुत अहम है।
सबसे बड़ा ठोका

ज़िंदगी एक मोहलत है जो हमें आश्रित की तैयारी के लिए दी गई है। हम आश्रित की तैयारी करने के बजाए दुनिया के गृह और खुशी में उज्ज्वल जाते हैं और इस इतिज़ार में रहते हैं कि हमें ऐसा वक्त मिले जब हमारे ऊपर कोई गृह और कोई परेशानी न हो। हर काम मज़ी के मुताबिक चल रहा हो फिर हम सच्चे और तसल्लि से इबादत करेंगे। इसी को कुरआन मज़ीद की जज़बान में ठोका कहा गया है। और यह ठोका सिर्फ जाहिल को ही नहीं आलम को भी लगता है। सोचते रहते हैं कि नेक बनें और अच्छे काम करेंगे, अच्छे वक्त के इतिज़ार में रहते हैं और इस बात को भूल जाते हैं कि वक्त हायों से निकला जा रहा होता है। हम मौत को भूल जाते हैं लेकिन मौत हमें नहीं भूलती। हमारी ज़िंदगी का हर आने वाला दिन हमें अपनी मौत के क़रीब से क़रीब कर रहा होता है। जो कर पुजारने वाले होते हैं वे इसी ज़िंदगी के इसी वक्त में कर लिया करते हैं।

उलझे तुलझे इसी का कल में गिरफ़्तार रहो
गृह हो या खुशी हर हाल में आश्रित की तैयारी करते रहें।
खुशी की घड़ियाँ हों तो अलाह तआला का शुक्र अदा करें और गुम की घड़ियाँ हों तो सम्र करें। शुक्र करने वाला भी जन्नती और सम्र करने वाला भी जन्नती।

उम्र के मौसम

इस्लाम की जिंदगी की अलग-अलग मजिलें होती हैं, अलग-अलग उम्र मजिलें होते हैं जिन्हें 'मवासिमुल उम्र' कहते हैं। जब इस्लाम बच्चा होता है तो उसे खेलने का शौक होता है। उसका सारा का सारा बक़्त खेलकूद में गुज़रता है। उम्र बढ़ने के साथ-साथ उस की कौशिक्यता अलग-अलग होती रहती है। नज़र दीन नसफी रहो ने लिखा है कि हर आठ साल के बाद बच्चे की कौशिक्यता बदलती रहती है। पहले आठ साल फिर फिर फिर फिर फिर फिर फिर उसके बाद ओशुवेनसलाइफ़ ओर ओशुवेनसलाइफ़ ओर ओशुवेनसलाइफ़ है। आठ-आठ साल अगर ये हों तो चालीस साल का अरसा गुज़र गया और बाक़ी चालीस साल के बाद फिर इस्लाम को होश आती है कि दुनिया में आया किस लिए था।

कामयाब इस्लाम

जो लोग जिक्र व जुलूक की जिंदगी गुज़रते हैं उनको हर जगह यही तालीम दी जाती है कि एक हाथ में कुराआन और दूसरे हाथ में नबी अल्लाहुस्लाम के फरमान की लज़िम पकड़े। जिसने अपनी जिंदगी उन दो चीजों के तहत गुज़री वह इस्लाम कामयाब इस्लाम होगा।

जन्मत दो क़दम

जिस आदमी का पहला क़दम उसके नफ़स पर जाएगा उस बदे
बुरे लोगों की निशानी

हज़रत इब्ने अब्बास रज़िय़ अल्लाहु अल्लह बाबी हैं कि नबी अल्लाह उल्लामा ने एक बार इश्शाद फरमाया कि मैं तुम्हें वह आदमी न बताऊँ जो सबसे ज्यादा बुरा हो। अर्जें किया गया, ऐ अल्लाह के नबी ज़्ज़र बताइए। इश्शाद फरमाया, जो अकेला खाए और अपने गुलाम को मारे। अकेला खाने से मुराद यह कि मिल जुलकर रहने की आदत न हो और अपने मातहतों पर सख्ती करने वाला हो। फिर उसके बाद फरमाया कि मैं तुम्हें एक आदमी बताऊँ जो उससे भी बुरा हो; अर्जें किया गया, ऐ अल्लाह के नबी। वह भी बता दिजिए। इश्शाद फरमाया कि जो आदमी लोगों से बुग़ज़ रखे और लोग उससे बुग़ज़ रखें। ऐसा आदमी उससे भी बुरा है। फिर फरमाया कि मैं तुम्हें एक आदमी बताऊँ जो इससे भी ज्यादा बुरा हो; अर्जें किया गया, ऐ अल्लाह के नबी। बता दिजिए। फरमाया, ऐसा बंदा कि न उससे नेकी की उम्मीद हो और न. उसके शर से बद़ी को अपन हो। फिर उसके बाद फरमाया कि मैं तुम्हें एक और ऐसा बंदा बताऊँ जो इससे भी ज्यादा बुरा हो। अर्जें किया गया, ऐ अल्लाह के नबी। कौन है? फरमाया कि
जो किसी की ग़लती से दश्युजर न करे और किसी भी बंदे की माज़ज़त को कुबूल न करे। यह मामला तो फरवर्दिगार ने अपने हाथ में रखा अगर इसानों के बत भी बत होती तो यह तो जीते जानाते बंदे को जहन्नम में पेंक देते।

मुहब्बत हो तो ऐसी

मख्लूक में से माँ वह हस्ती होती है जो अपने बदकार और गुनाहगार बच्चे से भी मुहब्बत करती है। औलाद नेक बने फिर भी मुहब्बत है और औलाद नेक न बने तो उसको फिर भी मुहब्बत है। यह मुहब्बत के हायों मजबूर होती है और अपने नेक और बच्चे हर तरह के बच्चे से मुहब्बत करती है। और एक अल्लाह की ज़ात है जिस बदे ने भी कलिमा पढ़ लिया अल्लाह तब उस बदे से मुहब्बत करते हैं क्योंकि वह रहमान भी हैं रहीम भी, हमान भी मन्नान भी, जयवाद भी है और करीम भी। इसान की नेकी में बढ़ते वाला हो या बढ़त ज्यादा गुनाहगार हो फिर भी उससे नफरत नहीं फहमाते, फिर भी उसको अपने दर से मायूस नहीं करते। इसलिए बुराई से नफरत लोगी चाहिए, बुरों से नहीं लोगी चाहिए--

नशा पिला के गिराना तो सब को आता है
मजा तो तब है किर गिराने को हाम ले सकी

सबसे बुरा शख्स

एक हदीस पाक में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलेहि बसल्लाम ने फरमाया कि मेरी उम्मत में ऐसे लोग भी आएंगे जो रंग-बिरंग के खाने खाएंगे, तरह-तरह की चीज़ें पिएंगे, तरह-तरह के कपड़े
फहमें और खूब बातें बनाएंगे। वे मेरी उम्मत के सबसे बुरे लोग होंगे।

आज जिस इसान को खूशी का वक्त मिल गया वह दूसरे आदमियों को अपने से हकीर समझता है। इस बात को भूल जाता है कि आजमाइश भेरे ऊपर भी आ सकती है। दिन बदलते देर नहीं लगती।

इतनी सक़ल वईदँ

हदीस पाक में है कि जो आदमी किसी मुसलमान की मुसीबत पर खूश हो अल्लाह तड़कला उसको उस वक़्त तक मौत नहीं देते जब तक वह खूद उस मुसीबत में गिरफ़्तार नहीं हो जाता। एक दूसरी हदीस पाक में आया है कि अगर इसान ने कोई गुनाह किया तेरिन अल्लाह तड़कला के हुबुूर में सच्ची तोबा कर ली। अब तोबा करने के बाद भी अगर कोई आदमी उसको उस गुनाह का ताना देता है तो अल्लाह तड़कला उसको उस वक़्त तक मौत नहीं देते जब तक खूद उस गुनाह में फाूंस नहीं देते। किसी को परेशानी और मुसीबत में देखकर खूश हुए तो जरा ध्यान से, और किसी बदे की गूँली और ऐस का पता चले तो उसका ताना न दे मुमिक न है वह अपने दिल में सच्ची तोबा कर चुका हो।

तहस्जुद की नमाज से महसूम की वजह

सुफ़ियां सौरी रहो फ़समाया करते थे कि मैंने एक गुनाह किया जिसकी वजह से मुझे पाँच नहीं ने के लिए तहस्जुद की नमाज से महसूम कर दिया गया। किसी ने पूछा, हजारत! कौनसा गुनाह किया था? फ़समाया, एक आदमी बैठा दुआ मांगते हुए रो
रहा था। मैंने अपने दिल में समझा कि यह रियाकार है। मेरी इस बदगुमानी के गुनाह की वजह से अल्लाह तआला ने पाँच महीने के लिए तहजुद की नमाज से महसूस कर दिया। जिनका काम ही सुबह शाम बदगुमानी हो, जिनका काम ही सुबह व शाम बदजबानी हो तो ऐसी हालत में फिर अपने ईमान की ख़ैर मनानी चाहिए।

अपनी फ़िक्र कीजिए

मोहतरम जमात! उस रात को याद कीजिए जिसकी सुबह को क्यामत का दिन होगा। जब हमें अल्लाह तआला के हजूर पेश होना होगा (क़ल अमरः बसा क़सब रहि) हर वंदा अपने आमाल के बदले में रहन रखा हुआ है। अपने-अपने अमलों का हर बंदे को हिसाब देना होगा। हमारे हजारों मुशिद अल्लाह फरहात करते थे, "अपनी पोई ते पराई भल विंजी" और आज हमें अपनी फ़िक्र नहीं होती दूसरों के पीछे पड़े हुए होते हैं, आँखें खुली रहती हैं; गद्दे तनी रहती है, निगाहें दूसरों के चेहरों पर पड़ती हैं और अपने मन में झांक कर नहीं देखते कि हमारे अपने अंदर क्या कुछ मौजूद है।

जिक्र के इलाही की अहमियत

जिक्र की कसरत से इस्नान में फ़िक्र की गंदगी दूर होती है। यह बात दिल में बिठा लीजिए कि फ़िक्र की गंदगी हमेशा जिक्र से दूर होती है। जो लोग शैतानी वसवसों, ज़्रही उलझनों और परेशानियों का शिकार हों वे इस बात को पल्ले बांधें लेकि हमारी इन परेशानियों का हल अल्लाह तआला की याद में मौजूद है।
जान लो कि अल्लाह तभाला की याद के साथ दिलों का
इल्मनान वायस्ता है।

एक इल्मी नुक्ता

हदीस पाक में आया है कि नबी अल्लाहसल्लाम ने इशारों
फर्माया जब कोई परिन्दा जिक से ग्राफिल होता है तो शिकारी
उसको अपना निशाना बना लेता है, उसका शिकार कर लेता है।
अब यहाँ तलबा के लिए नुक्ता है अगर परिन्दा ग्राफिल हुआ,
उसको अल्लाह तभाला ने शिकारी के हाथ पहुँचा दिया तो अगर
कोई बंदा अल्लाह से ग्राफिल होगा तो अल्लाह तभाला उसको
जहान्नाम के फरिश्तों के हाथ पहुँचा देंगे। मकसद यही है कि हम
यहाँ कुछ दिन शुरुआत करे। अज्जाना की बात नहीं में हम ऐसे अल्लाह
इस्तेमाल किया करें कि जिनसे हमारे दिलों में अल्लाह तभाला
की याद रहे।

विस्मिल्लाहिर्मानिरिहीम के इम्याहिरिह

‘विस्मिल्लाह’ को त्रितीय कहते हैं। यह हर छोटे बड़े को याद
है भक्ति हम अपने हर काम से पहले विस्मिल्लाह पढ़ने की
आदत नहीं होती।

इंसानी सतर का पदार्थ

हदीस पाक में आया है कि अगर कोई आदमी अपने कपड़े
बदलना चाहें, पहले उतार कर दूसरे पहनना चाहें तो अगर वह
विस्मिल्लाह पढ़ ले तो अल्लाह तभाला फरिश्तों के ऊपर और
उसके बीच आड़ बना देते हैं। जिन्नात हों या फरिश्ते हों वे इस इस्लाम के बदन को सलाम नहीं देख सकते। अब यहाँ एक नुक्ता मिला कि बिस्मिल्लाह का पड़ना जिन्नात और फरिश्तों के बीच आड़ बन जाता है तो अगर हम अपनी जिंदगी के हर काम में बिस्मिल्लाह पढ़ने की आदत डालेंगे तो यह जहन्नम के फरिश्तों और हमारे बीच आड़ बन जाएगी।

जहन्नम से बचने का मतलब

बिस्मिल्लाहरुहमानिर्हिम के उन्नीस हस्फ़ु हैं और जहन्नम के फरिश्ते भी उन्नीस हैं। उनको दारोगा कहा जाता है। उन्नीस हस्फ़ु बिस्मिल्लाह के और उन्नीस फरिश्ते जहन्नम के निगाही। हर-हर हर्फ़, हर-हर फरिश्ते से बचने का सबब बन जाएगा। इसलिए बिस्मिल्लाह को अक्सर पढ़ने की आदत डालिए।

गुनाहों का कपुर्फ़ारा

बिस्मिल्लाहरुहमानिर्हिम यह चार अलफ़ाज़ हैं और चार ही तरह के गुनाह होते हैं या तो इस्लाम ज्ञात में करता है या छिपकर करता है या दिन में करता है और या रात में करता है। हर-हर लफ़्ज़ मुख्तालिफ़ गुनाहों के के लिए कपुर्फ़ारा बनेगा।

तीन किस्मों के गुनाहों से निजात

बिस्मिल्लाह के अंदर अल्लाह तभाला ने अपने तीन नाम इस्तेमाल फर्माए। एक नाम अल्लाह, दूसरा रहमान और तीसरा रहीम और तीन ही गुनाहों के दर्जत या अक्साम हैं।

पहली किस्म क्रूफ़ और शिक्षा से बचना और ईमान न्यूल बनेगा और दूसरी किस्म कपुर्फ़ारा और तीसरी किस्म आदत डालने के लिए बनेगा।
करना, दूसरी किस्म कबीरा गुनाहों को छोड़कर अल्लाह ताज़ा की फरमांबरदारी की जिंदगी अपनाना और तीसरी किस्म कि वस्त्रों से निजात पाकर यक्तूि के साथ अल्लाह ताज़ा की इबादत करना। लिहाजा जो बंदा अपने हर काम कि इतिदा विस्मिललाह से करेगा अल्लाह ताज़ा तीनों गुनाहों से बचने की तौफीक अति फरमा देंगे।

अल्लाह ताज़ा की रज़ा की दलील

जब कोई आदमी किसी को ख़त लिखता है तो ख़त की इतिदा से ही पता चल जाता है कि उस बदे की तबियत कैसी थी, क्या वह राज़ी था या नाराज़ था। तो ख़त की शुरूआत के अल्पसंख्यक उस बदे की रज़ा या नाराज़गी पता देते हैं। क़ुरआन मज़दूर की इतिदा में विस्मिललाह लिखी हुई है। अब यह विस्मिललाह की आयत ही हमें बता रही है कि अल्लाह ताज़ा हम से राज़ी हैं। वह यहूदी भी फरमा सकते थे कि ٦٧٣

क़िस्म-٦٨٣

लोहा ए हारम महर जिस इसमें अपने कस्तो और जब्बार होने का लफ़ून भी शामिल कर सकते थे मगर परवर्तियाँ आलम ने अपने सिद्धांती नामों को शामिल नहीं किया। अगर क्या तो किन नामों को किया? वे नाम जो रहमत की दलील है वादी सरहमान और अर्ह्मान। तो मालूम हुआ कि किलाबुलाह की इतिदा हमें बता रही है कि अल्लाह ताज़ा का इरादा हमारे बारे में देर का है।

वह बदे को अज़ाव नहीं देना चाहते, वह बदे को सवाब देना चाहते हैं। अज़ाव तो हम अपने हाथों से ख़रीदते हैं, उसको दावत देते हैं अपनी तरफ। इसलिए अपने हर काम की शुरूआत में
विस्मिल्लाह कहने की आदत दालिए, अल्लाह ताआला हर काम में बरकत अता फरमाएंगे।

नेमतों की कृददानी

«الحمدلله» अलूहमदुल्लाह मुख्तासर सा लफ़ज़ है। अपनी बातचीत में इसको कहने की आदत दालिए। अल्लाह ताआला की नेमतों पर जिसने अलूहमदुल्लाह कह दिया उसने गोया नेमत का शुक्र अदा कर दिया। एक उसूली बात है यदि रखिए कि नेमतों की कृददानी के लिए नेमतों के छिन जाने का इतज़ार न किया करें। अक्सर लोगों को देखा, मियाँ-बीबी जिंदगी गुज़ार रहे होते हैं तो आपस में झगड़े, शौर्ह मर गया, अब कही औरत बेटी रो रही है और अपने शौर्ह की सिप़ूते बचान कर रही है। जो शौर्ह हर वक़्त बीवी से नाराज़ था उसकी बीवी पर अंब उसके प्रति की खूबियाँ समझ में आ रही हैं। भाई के साथ जिंदगी में दुश्मनी का मामला था, अब भाई पर गया तो उसका एहसान यंदा आ रहा है। तो यदि रखिए कि नेमतों की कृददानी के लिए नेमतों छिन जाने का इतज़ार न किया करें। इससे पहले पहले उनकी कृद कर लिया करें।

अलूहमदुल्लाह कहने पर ईनामात

जो ईसान अपनी जिंदगी में अलूहमदुल्लाह कसरत से कहता है उल्ला ने लिखा है कि अल्लाह ताआला उसकी दो ईनाम अता फरमाते हैं। पहला ईनाम यह मिलता है कि अल्लाह ताआला उसके लिए सख्ती में से आसानी निकाल दिया करते हैं, मोहताज़ हो तो
अल्लाह ताआला उसकी खुशाली अता फरमाते हैं, दुनिया से निजात अता फरमा देते हैं। इसलिए अपने अक्सर कामों को शुरू करते हुए बिस्मिल्लाह और फिर आयते में अल्लाहुव्लिल्लाह कहने आदत डालिए। अल्लाहुज़ुल्लाह के अंदर आठ हफ्ते हैं और उल्लाह ने लिखा कि जननत के आठ दरवाजे हैं। गोया हर हर हफ्ते जननत के हर दरवाजे की कूंजी की तरह होगा। तो जिस बर्षे की अल्लाहुज़ुल्लाह कसरत से कहने की आदत होगी अल्लाह ताआला उसके लिए जननत के आठों दरवाजों को खोल देंगे।

कलिमा तैराका में छ: नकाल

'ला इलाहा इल्लाल्लाह' यह कलिमा है जिसको पड़कर इस्लाम कुरू और शिक्षा से शोध करता है और अल्लाह रखनेवाले के परमेश्वर बंदों में शामिल हो जाता है। अक्सर अपने जीवन पर इसका जिक्र रखा। हमारे सिलसिला आलिया मुजबादिया में 'ला इलाहा इल्लाल्लाह' तो एक मुसलमान सबक है जिसको 'हरीली लिसानी' कहते हैं। इसमें 'ला इलाहा इल्लाल्लाह' की कसरत की जाती है, चलते-फिरते उठते-बैठते, 'ला इलाहा इल्लाल्लाह' का सबक दिया जाता है। यह अल्फाज़ अजीब हिकमतों भरे और करकतों भरे हुए होते हैं।

पहला नुक्ता

'ला इलाहा इल्लाल्लाह' के हफ्ते की अपर आप गिनें तो 12 हफ्ते बनते हैं और मुहम्मदुस्लुल्लाह के हफ्ते गिनें तो वे भी 12 बनने तो 'ला इलाहा इल्लाल्लाह' का जो जिक्र कसरत से करेगा
उसके 12 हफ्ते बाद के लिए 12 महीनों के गुनाहों की वांछना का जरिया बनाने।

दूसरा नुक्ता  

दिन रात के अंदर 24 घंटे होते हैं (لا اله الا الله محمد رسول الله) 'ला इलाहا इल्लाहु मुहम्मदुरस्लुल्लाह' के भी 24 हफ्ते हैं तो अल्लाह ताज़ारा हर-हर घंटे के गुनाहों को माफ़ फरमाएगे।

तीसरा नुक्ता  

इस कहिले के अंदर 7 अलफाज़ हैं (لا اله الا الله محمد رسول الله) 'ला इलाहा इल्लाहु मुहम्मदुरस्लुल्लाह' ये सात अलफाज़ बनते हैं और इस सात में आज़ा से ही गुनाह करता है। अंख से, कान से, जबान से, हाथ से, पाँव से, शर्मगाह से और पेट में खा के। जो इस सात अलफाज़ का जितना कसरत से करेंगे तो सातों आज़ा के गुनाहों को अल्लाह ताज़ारा माफ़ फरमा देगे और जहानम के भी सात दरवाज़े हैं (ولهم سبعة أبواب) तो मालूम हुआ कि (لا اله الا الله محمد رسول الله) 'ला इलाहा इल्लाहु मुहम्मदुरस्लुल्लाह' का एक-एक लफ्ज़ जहानम के हर-हर दरवाज़े से बचाओ का सवाल बन जाएगा।

चौथा नुक्ता  

इस कहिले के अंदर अजीब हीकमते हैं कि आपको कोई भी लफ्ज़ नुक्ते वाला नहीं मिलेगा। यह दलील है कि अल्लाह ताज़ारा इसमें वहदानियत का पैगाम दे रहे हैं कि मेरे दरबार में जिक्र की गुजाई नहीं।
पाँचवा नुक्ता

हर्फ ही ऐसे इस्तेमाल किए कि जो नुक्तों से पाक थे तो
इसलिए यह कलिमा हमें तौहीद की दावत देता है।

छटा नुक्ता

एक नुक्ता जो पद्ने बालों के लिए कि इसमें अल्लाह तंजाला
ने तमाम वे हर्फ इस्तेमाल किए जो जौफे दहन से निकलते हैं।
हर्फ मुक्लिफ़ तरह के होते हैं, कुछ हर्फ हल्की कहलाते हैं, वे
हसक़े से निकलते हैं। कुछ शफ़ुवी कहलाते हैं कि होटों से
निकलते हैं, कुछ जौफे दहन से निकलते हैं यानी पूँछ का दर्मियान
का हिस्सा है उससे निकलते हैं। परवरिंद्ग आलम ने लेखा
"ला इस्लाम इल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" का जो
पहला हिस्सा या उसमें तमाम हर्फ वही रखे जो हर्फ जौफे दहन से
निकलते हैं। पूरकसद यह था कि जिस प्रकार हर्फ तुफान मुँह के
अंग से निकल रहे हैं उसी प्रकार यह कलिमा तुफान दिल के अंदर
से निकले तब अल्लाह तंजाला के यहाँ खुला होगा। तो हम इन
जिन्हों की कसरत के साथ करें। जो मसनून दुआएँ नवी अकरम
मल्लालह् अल्लाह वसल्लाम से नकल किए गए हैं और शिज़ूर के
अंदर दो गर्वी उनको अपना मामूल बना लें।

मसनून दुआओं के दो बड़े फायदे

दो बातें जहाँ में रखिए। जो आदमी मसनून दुआओं को
अपने वक़्त पर पढ़ने की आदत बनाएगा, अल्लाह तंजाला उसके
लिए कहाँ क्त्वः करहा आसान फासमा देंगे। कुछ लोगों को
निस्बत का नूर इसी तरह मिला कि वे मसनून दुआओं को अपने बक्त पर पाबंदी से पड़ा करते थे। उनको और कोई मुजाहिदा नहीं था सिर्फ मसनून दुआओं के पहलिमाम से अल्लाह तआला ने दिल में इतना नूर अता फरमा दिया कि वे लोग साहिबे निस्बत बन गए। दूसरी बात कि जो आदमी मसनून दुआओं को पढ़ने की आदत बनाएगा उस आदमी को फिर किसी दम, तावीज और इस किस्म के अमल की कोई स्थिति नहीं रहेगी। परवरदिगार खुद उसका मुहाॅफिज़ बन जाएगा और हर तरह की परेशानियों से उसको महफौज़ फरमाएगा। इसलिए दुआ मांगनी चाहिए।

الف الله انا نسترك المعافات في الدنيا والاخرة

ऐ अल्लाह! में दुनिया और आयत में तुझसे आफियत का तलबगार हूं।

आफियत का मतलब

आफियत कहते हैं कि इस्माई की पुरस्कृत जिंदगी मिल जाए। हमारे मशाइख ने आफियत की तीन निशानियाँ बताई हैं। पहली बात तो यह है कि उस बंदे की जिंदगी ऐसी हो कि उसको हाकिम के पास जाने की ज़रूरत महसूस न हो। दूसरी बात उसको तबीब और डाक्टर के पास जाने की ज़रूरत महसूस न हो और तीसरी बात कि वह अपनी जिंदगी में अपने किसी भाई का मोहताज न हो। तो आदमी हाकिम, तबीब और भाई की मदद से बेनियाज़ हो गया गोपा अल्लाह तआला ने उसको आफियत की जिंदगी अता फरमा दी। बाज़ ने कहा जिस आदमी को अल्लाह तआला ने घर अता कर दिया, रोज़ी अता कर दी और अल्लाह ने
नेक बंदी थी। उनका मामूल यह था कि वह दो दिन रोज़ा रखती थीं और तीसरे दिन इफिटार किया करती थीं। हज़रत दाउद अलीह्स़लाम की आदत थी कि वह एक दिन रोज़ा रखते थे और एक दिन इफिटार किया करते थे। और नवी अकरम सल्लाल्हू अल्लाह यस्लाम की सुन्नत मुबारका थी कि आप हर महीने अय्याम बीज (13, 14, 15) तारीख के रोज़ा रखा करते थे। यह रोशन दिन कहलाते हैं कि चाँद की भी पूरी रोशनी के दिन होते हैं और उन दिनों में रोज़ा रखने वाले के दिल को भी अल्लाह तात्ताल रोशन फूर्मा देते हैं।

हज़रत आदम अलीह्स़लाम और अय्याम बीज़ के रोज़े

हदीस पाक में आया है कि जब अल्लाह तात्ताल ने आदम अलीह्सलाम को जीवन पर उतारा तो अपनी भूल के गुम की वजह से उनका चेहरा स्वाभाविक हो गया था। अब अल्लाह तात्ताल ने उनको महीने के तीन रोज़े के बारे में फूर्माया तो उन तीन दिनों के रोज़े रखने की वजह से उनके चेहरे की स्वाभाविक उनके चेहरे के नूर में तब्दील हो गई। लिहाज़ा जो इस्नान अय्याम बीज़ के रोज़े रखेगा अल्लाह तात्ताल उसके चेहरे को तर व ताज़ा रखेगें।

हज़रत अबू बुज़ा रज़ियल्लाहु अन्नु की पहलियाँ

हमें हर काम शरीएल सुन्नत के मुताबिक करना चाहिए चाहे वह काम छोटा हो या बड़ा। सहायता किराम इतने पहलियाँ करने
बाले थे कि हज़रत अबू दुजाजा एक सहाबी हैं। वे फ़ज़्र की नमाज़ पढ़ते और पढ़ने के बाद जल्दी अपने घर चले जाते। नबी अकरम सल्ल्लाहु अल्लाहू वसल्लम की महफिल में नहीं बैठते। किसी ने नबी अकरम सल्ल्लाहु अल्लाहू वसल्लम से अर्ज़ किया कि अबू दुजाजा पता नहीं किस हाल में है कि जल्दी चला जाता है। जब नबी अकरम सल्ल्लाहु अल्लाहू वसल्लम ने उनसे पूछा कि तुम जल्दी क्यों चले जाते हो? तो वह बह लगे ऐ अल्लाह के नबी! मेरे हमसाए के घर में एक पेड़ है जिस पर फल लगे हुए है उसकी कुछ शाखाएं मेरे घर पर भी आती हैं और जब रात होती है तो शाखाओं से फल मेरे घर में गिर जाते हैं। मैं फ़ज़्र की नमाज़ पढ़कर जल्दी जाता हूं कि उन फलों को उठाकर उस आदमी के घर में वापस डाल दूं। ऐसा न हो कि मेरे बच्चे जाग जाएं और बिला इजाज़त दूसरे के फल खाने का गुनाह कर लें। इतनी छोटी सी बात में मशीन का ख़ियाल रखते थे।

ख़ैय़ाम़ी की अहमियत

हर काम में दूसरों की ख़ैय़ाम़ी करें। (दिन सरयास 'ख़ैय़ाम़ी' है। याद रखना कि जब एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का बुरा चाहने वाला बन गया तो फिर दीन न बचा। दीन की धर्मियाँ उड़ गईं। याद रखें कि मोमिन हमेशा 'ख़ैय़ाम़ा' होता है।

ख़ैय़ाम़ी की एक उद्दा मिसाल

एक बार दो आदमियों ने कोई साज़े में कोई काम किया। एक बूढ़े थे और दूसरे जवान थे। जब वे अपनी चीज़ों को बांटते तो
नेक बंदी थीं। उनका मामूल यह था कि वह दो दिन रोज़ा रखती थीं और तीसरे दिन इफितार किया करती थीं। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की आदत थी कि वह एक दिन रोज़ा रखा करते थे और एक दिन इफितार किया करते थे। और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लाम की सुनन्त मुबारका थी कि आप हर महीने अयामे बीज़ (13, 14, 15) तारिख़ के रोज़े रखा करते थे। वह रोज़न दिन कहलाते हैं कि चाँद की भी पूरी रोज़नी के दिन होते हैं और उन दिनों में रोज़ा रखने वाले के दिल को भी अल्लाह तअलाका रोज़न फरमा देते हैं।

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और अयामे बीज़ के रोज़े

हदीस पाक में आया है कि जब अल्लाह तअला ने आदम अलैहिस्सलाम को जमीन पर उतारा तो अपनी भूल के गुम की वजह से उनका चेहरा स्वाभ बन गया था। अब अल्लाह तअला ने उनको महीने के तीन रोज़े के बारे में फरमाया तो उन तीन दिनों के रोज़े रखने की वजह से उनके चेहरे की स्वाभी उनके चेहरे के नूर में तब्दील हो गई। लिहाज़ा जो इसान अयाम बीज़ के रोज़े रखेगा अल्लाह तअला उसके चेहरे को तर व ताज़ा रखेगे।

हज़रत अबू दुज़ाज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की ईहतियात

हमें हर काम शरिअत सुन्नत के मुताबिक करना चाहिए चाहे वह काम छोटा हो या बड़ा। सहाबा किराम इतने ईहतियात करते
हर काम में दूसरों की ख़ैरवाही करें। (الدین السدحة) दीन सरासर ख़ैरवाही है। यदि रखना कि जब एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का चुरा चाहते बन गया तो फिर दीन न बचा। दीन की धज्जियाँ उड़ गयीं। यदि रखना कि मोमिन हमेशा ख़ैरवाही होता है।

ख़ैरवाही की एक उम्मद मिसाल

एक बार दो आदमी ने कोई साझे में कोई काम किया। एक बूढ़े थे और दूसरे जवान थे। जब वे अपनी चीज़ों को बांटते तो
मुहब्बते इलाही में एक अहितियात

जिस इंसान के दिल में अल्लाह तबाला की शरीद मुहब्बत होती है वह इंसान खुशनसीब है। ज्ञानदार पर जो हज़रत समस्ति में दाख्तित हैं और अल्लाह तबाला की मुहब्बत के तलवार हैं वे हर वक्त इस चीज को अपने जहन में देखते हैं कि ऐसा तो नहीं कि दिल में किसी ग्रीव की मुहब्बत आ रही है, उसकी तरफ झुकाव बढ़ रहा है या तबक्जह हो रही है। अगर ऐसा है तो अल्लाह तबाला उसको अपनी मुहब्बत से महरूम फरमा देगे। इसकी कई मिसालें कुरान व हदीस में मिलती हैं।

हज़रत इब्राहीम अल्लाहिस्सलाम का
मुहब्बते इलाही में मुकाम

हज़रत इब्राहीम खलिलुल्लाह अल्लाहिस्सलाम को अपने हाँ बेटा होने की बड़ी चाहत थी जिसके लिए अकसर दुआएं मांगते थे। आफ़िसर अल्लाह तबाला ने बेटा अता फरमा दिया। हज़रत इस्माईल अल्लाहिस्सलाम को एक दफा उन्होंने मुहब्बत भरी नज़र से देखा। अब मुकरिंगेन का यूं मुहब्बत भरी नज़र से किसी को देखना अल्लाह तबाला को अच्छा नहीं लगता क्योंकि मुहब्बत का रिश्ता होता ही बड़ा नाज़ुक है। लिहाज़ मुहब्बत की नज़र बेटे पर डालना अल्लाह तबाला को अच्छा न लगा। इसलिए हूँक़ दिया कि ऐं मेरे इब्राहीम खलिलुल्लाह! आप अपने बेटे को जिब्र कर
दीजिए। हज़रत इब्राहीम अल्लाहिस्लाम ने बेटे को ज़िब्ब़ करने की तैयारी कर ली। जब देखा कि बेटे को ज़िब्ब करने के लिए तैयार हैं तो साबित हो गया कि बेटे की मुहब्बत ग़लिब नहीं है बल्कि मुहब्बत मेरी ही ग़लिब है। लिहाज़ा बाप ज़िब्ब करना चाहता है मगर अल्लाह तख़ता ने बेटे को महफू़ज़ फ़रमा लिया क्योंकि ज़िब्ब करवाना नहीं चाहते थे, मक़सद तो यह था कि देखे कि बेटे की मुहब्बत ज़ियाद़ा है या हमारी मुहब्बत ज़ियाद़ा है।

हज़रत याकूब अल्लाहिस्लाम का
मुहब्बते इलाही में मुक़ाम

हज़रत याकूब अल्लाहिस्लाम अपने बेटे हज़रत यूसुफ़ अल्लाहिस्लाम की मुहब्बत की नज़र से देखते थे। परवर्तितार आलम ने उनके बेटे को क़ुँए में ड़रवा दिया। बाप बेटा जुदा हो गए और बाप की आँखों की रोशनी को ले लिया। बेटा भी जुदा और रोशनी भी गई। एक दक़्त आया कि अपने बेटों को यूसुफ़ अल्लाहिस्लाम को तलाश करने के लिए भेजते थे लेकिन बेटे की ख़बर नहीं दी गई। एक बार तलाश करने गए तो उन्होंने आकर कहा कि आपका बेटा अब आपको मिल सकता है। यह सुनकर उन्होंने कहा कि मैं तो अब सब कर लेता हूँ। जब हज़रत याकूब अल्लाहिस्लाम ने सब करने के अलक़ज़ अदा कर लिए तो अब पता चल गया कि बेटे की मुहब्बत दिल से निकल गई फ़िर अल्लाह तख़ता ने रोशनी भी अता फ़रमा दी, बेटा भी अता फ़रमा दिया और मुलाक़ात भी करवा दी।
एक उसूली बात

उसूल थान रखें कि मुहब्बत के इस रास्ते में इस्माइल के लिए गैर की तरफ डॉज़ा सा ज्ञान भी बहुत ज्ञान न्यूक्सान देने वाला होता है। आम लोगों की इन चीज़ों पर कोई पकड़ नहीं होती। इसलिए कि उनसे तो उम्मीद ही नहीं की जाती लेकिन जो मुहब्बत के मैदान में कदम बढ़ाने वाले हों और वे परवरिशिग ते उसकी मुहब्बत के तलबमार हों, अब अगर उनके दिल गैर की तरफ मुतावज़ीह होंगे तो महबुब बड़ा गैरत वाला है। इसलिए हदीस पाक में फरमाया कि में सबसे ज्ञान गृह्य हूँ, मुझसे ज्ञान गैरत वाला कोई नहीं। जब इस्माइल परंतू की और चाहत की नज़र किसी गैर पर डालता देता है तो अल्लाह तजाला उसको इवादत की लज़ज़त से महाने फरमा देते हैं। इसलिए इस रास्ते में इसका बहुत ज्ञान रखें कि दिल को अल्लाह तजाला की मुहब्बत से तबरेज़ फरमा लीजिए। असल में हमारे अलाबे अल्लाह के हुन व जमाल के जलवे नहीं खुले जिसकी बजह से महसूल की तरफ ध्यान चला जाता है वरना जो लोग अल्लाह तजाला की मुहब्बत का मज़ा पा लेते हैं फिर उनके सामने दुनिया की शक्लें और सूरतें बेमानाने बन जाती हैं। फिर वे उनमें नहीं उलझते, उनका मामला इससे बुलंद हो जाता है।

हज़रत मूसा अल्लहस्सलाम और दीदारे इलाही

हज़रत मूसा अल्लहस्सलाम को अल्लाह तजाला से मुहब्बत थी। चाहते थे कि दीदार मिले और कह भी दिया (रसी اردن انظर) ऐ अल्लाह! मैं आपकी जियारत करना चाहता हूँ। फरमाया
एक इल्मी नुक्ता

एक नुक्ता यदि रखिए कि जब अल्लाह तजाला के महबूब मेराज से वापस आ रहे थे तो हदीस पाक में आया है कि तमाम अवियाओं किराम अल्लमुस्लम ने बैतुलमक़ड़ में अल्लाह के महबूब के पीछे नमाज़ पढ़ी थी। वापसी में हज़रत मूसा अल्लमुस्लम इतिज़ार में थे कि अल्लाह के महबूब कब वापस तशियाफ़ लाएगे और मैं उनसे मुलाक़ात कहंगा, बात कहंगा। यहाँ उल्लमा ने एक नुक्ता लिखा है कि वापसी में बाकी अवियाओं किराम में से तो किसी से मुलाक़ात नहीं हुई हज़रत मूसा अल्लमुस्लम से हुई। तो आखिर क्या कहा क्या था? फ़सिलते हैं कि इसलिए कि हज़रत मूसा अल्लमुस्लम अल्लाह रबुलइज़ार के दीदार के तलबगार थे, दुनिया में उनको दीदार न मिल सका। जब उन्हें पता लगा कि अल्लाह तजाला के अपने महबूब को दीदार के लिए बुलाया है तो वापसी पर रास्ते में इतिज़ार में बैठे थे कि मैं अल्लाह तजाला का दीदार खुद तो नहीं कर सका, जो दीदार
तौहीद का सबकः

हज़रत जुनैद बग़दादी रहॉ फ़रमाते हैं कि मुझे तो एक औरत ने तौहीद सिखा दी। किसी ने पूछा कि हज़रत वह कैसे? फ़रमाते लगे कि मेरे पास एक औरत आई जो पर्दः में थी। कहने लगी कि मेरा ख़ाबिदः दूसरी शादी करना चाहता है। आप फ़तुआ लिखकर दें कि उसको दूसरी शादी करने की इजाज़त नहीं है। उन्होंने समझाया कि अल्लाह बंदी! अगर वह अपनी ज़ुल्क़तः के तहत दूसरी शादी करना चाहता है तो शरीअत ने चार तक की इजाज़त दी है। मैं कैसे लिखकर दे सकता हूँ? फ़रमाते हैं कि जब मैंने यह कहा तो उस औरत ने ठंडा साँस लिया और कहने लगी कि हज़रत! शरीअत का हुक़म रास्तः में राफाकट है बरना अगर इजाज़त होती और मैं आपके सामने चेहरा खोल देती और आप मेरे हुसन व जमाल को देखते तो आप इस बात के लिखने पर मजबूर हो जाते कि जिसकी बीवी इनसी सूक्ष्मतः हो उसको दूसरी शादी करने की इजाज़त नहीं है। फ़रमाते हैं कि वह तो चरी गई मगर मेरे दिल में यह बात आई कि ऐ अल्लाह! आपने औरत को आरज़ी हुसन व जमाल अता किया। उसको अपने हुसन पर इतना नाज़ूँ है कि वह कहती है कि मैं जिसकी बीवी हूँ अब उसको
मुहब्बत की नज़र दूसरी तरफ़ ढालने की इजाज़त नहीं तो ऐपरवर्दिगार! तेरे अपने हस्त व जमाल का क्या आलम है। आप कहना पसंद करेंगे कि आपके होते हुए बंदों की मुहब्बत की नज़र किसी गैर की तरफ़ उठ सके।

मजनूँ के ज़हाबत

किसी शायर ने मजनूँ के ज़हाबत की तरजुमानी करते हुए कहा है-

तरजुमा : अगर लैला अपने हस्त व जमाल को खोल देती और उसके जमाल को सब देख लेते तो वह भी मेरी तरह दीवाने बन जाते। मगर लैला ने अपने जमाल को पोशीदा कर लिया। इसलिए लोगों को भी उसके साथ वह तालुक़ नहीं जो होना चाहिए था।

तो हमारे सामने जब अल्लाह तामाला की ज़ित के जमाल और कमाल की तपस्सी खुलेगी फिर अल्लाह तामाला से बेपनाह मुहब्बत होगी। अल्लाह तामाला ने बंदे के दिल को अपनी याद के लिए बक़्क़फ़़ कर लिया है।

परिन्दों के अंडे और मआरिफ़त के मोटी

यह बात ज़हब में रखिए कि कुछ परिन्दे ऐसे हैं जो अंडे देते हैं और फिर दूर चले जाते हैं और अपनी तवज्जेह अंडों की तरफ़ रखते हैं और उनकी तवज्जेह की वजह से अंडों में से बच्चे निकल आते हैं। मुग़ल की तरह उनको अंडों पर बैठकर गमी पहुँचाने की जरूरत नहीं। कछवे के बारे में हयातुल हैवान में
शैतान से बचने का हथियार

देखिए वैलुलह अल्लाह तआला का घर है। अबरहा ने चाहा था कि उस घर के ऊपर कब्जा जमाए मगर अल्लाह तआला ने अबाबीलों को मुसलमान कर दिया। उन्होंने ककरियाँ मार-मार कर उसकी पूरी लशकर को खाए हुए भूसे की तरह बना दिया था। बिलकुल इसी तरह इस्मान का दिल भी अल्लाह तआला का घर है अगर शैतान उसकी तरफ़ क्रूँ बढ़ाना चाहे तो ‘ला इलाह इल्लाल्लाह’ की जर्खों से अल्लाह, अल्लाह के अल्फाज़ से उसके ऊपर तीरों की बौछाड़ की कीजिए। फिर देखिए कि अल्लाह तआला आपको शैतान से महफूँज़ फर्रमा लेगे। इसलिए कुरआन पाक में फर्रमाया:

कैसे दिनों तभी तक जो मुसलमान तथा शैतान ने जीने का इरादा किया था वो अब तब से मारे हुए हैं।
दिल की कुंजी

अल्लाह तःता ने कुरआन पाक में फूरमाया कि मैंने इस्मान के नफ्स को और माल को जन्नत के बदले में खरीद लिया है। अब नफ्स की कौतम तो जन्नत लगा दी, दिल की कौतम अल्लाह तःता ने अपना मुशाहिदा रखा। तिहाज़ा जो इस्मान अपना दिल रख के हवाले कर देगा अल्लाह तःता कुर्यामत के दिन उसको अपना दीदार अता फूरमाएगे।

जोहो युवमन नास्रा रिमहा नास्रा

हदीस पाक में आया है कि कौतम के दिन कुछ लोग होगे जो खड़े होंगे। अल्लाह तःता की तरफ़ देखेंगे और देखकर मुस्कराएगे तो अल्लाह तःता उनकी तरफ़ देखकर मुस्कराएगे। ये जैसे कुश्नसीब लोग होंगे कि जो कौतम के दिन अच्छे हाल के अंदर खड़े होंगे। अल्लाह तःता ने जन्नत को बनाया तो उसकी कुंजी रिस्तवान (जन्नत के निगरान फरिश्ते) को दे दी, जहन्नम को बनाया तो उसकी कुंजी अल्लाह तःता ने मालिक (जहन्नम के निगरान फरिश्ते) को दे दी। अल्लाह तःता ने बैतुल्लाह को अपना घर बनाया और उसकी कुंजी बनी शंदा के हवाले फूरमा दी कि उनके पास रहेगी किती और के पास नहीं जा सकती। इस तरह अल्लाह तःता ने इस्मान का दिल बनाया मगर उसकी कुंजी अपने दस्ते कुदरत में रखी। वही दिलों को फेरने वाले हैं। वह जिसे चाहते हैं उसे फेर देते हैं। गोया हमारे दिल का ताला अगर खुल सकता है तो अल्लाह तःता की रहमत के साथ खुल सकता है। तिहाज़ा हमें चाहिए कि अल्लाह के हजूरु मुआए मांगा करें, अल्लाह तःता से तलब करे और फ़रियाद किया करें।
कि रब्बे करीम! जब हमारे दिलों का मामला आपकी दो उंगलियों के दर्शन है तो दिल के ताले को खोल दिये ताकि हम भी आपकी मुहब्बत भरी जिंदगी को इह्तियार कर सकें।

मुहब्बते इलाही का गुलबा

कुछ ऐसे भी लोग दुनिया में गुज़रे जिनको अल्लाह तअला ने अपनी ऐसी मुहब्बत अता कर दी थी कि वह दुनिया के अंदर किसी गैर की तरफ मुतबज़ेह ही नहीं होते थे। ऐसी उनको अल्लाह तअला ने मुहब्बत अता की थी। इसलिए हमारे अकार्बिरन उल्माए देववंद में से एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। उनको अल्लाह तअला ने जिक्र का ऐसा गुलबा अता कर दिया था कि उनका दामाद अता तो वह पूछते आरे मियाँ! तुम कौन हो? वह कहता हज़रत! मैं अल्लाह बैंदा हूं। उसका नाम अल्लाह बैंदा था। हज़रत फरमाते, भाई सब ही अल्लाह के बैंदे हैं। तुम कौन हो? वह कहता, हज़रत मैं आपका दामाद, अल्लाह बैंदा हूं। फिर वह फरमाते, अच्छा, अच्छा। कुछ दिनों के बाद फिर सामने से गुज़रता पूछते, आरे मियाँ! तुम कौन हो? अर्ज़ करते, हज़रत! मैं अल्लाह बैंदा हूं। हज़रत फिर फरमाते, आरे मियाँ! सब ही अल्लाह के बैंदे हैं, तुम कौन हो? अर्ज़ करते, हज़रत! मैं आपका दामाद अल्लाह बैंदा हूं। एक नाम ने दिल पर ऐसा गुलबा कर लिया था कि अब किसी दूसरे के नाम की गुंजाइश न रही थी।

हज़रत माफ़ करख़ी रहौ पर

मुहब्बते इलाही का गुलबा

किताबों में लिखा है कि सिर्फ़ सिख़ी रहौ ने एक बार ख़ाब
देखा और उन्हें क्रामत का मंजूर दिखाया गया। उन्होंने देखा कि
क्रामत का दिन है। सोच अल्लाह रब्बुलइज्ज़त की हज़ूर में खड़े
हैं और उनमें एक आदमी है जो अल्लाह की मुहब्बत में मंत्र और
दीवाना है और दीवानों की तरह अल्लाह के याद में लगा हुआ
है। पूछा गया कि यह कौन है? तो अल्लाह रब्बुलइज्ज़त ने
फरमाया, ऐ अहले मीक़फ़! ऐ यहाँ खड़े होने वाले लोगो! तुम इस
बदने को हैरान होकर देख रहे हो। यह मेरा बन्दा माफ़ करखी
है। इस पर मेरी मुहब्बत का जन्या तारी है। इन्को उस वक़्त
तक सकून नहीं मिलेगा जब तक मेरा दीवार नहीं कर लेगा।
लिहाज़ा अल्लाह रब्बुलइज्ज़त उनकी अपनी दीवार अता फरमाएगे
तब उनके जिस्म को सकून होगा।

बरकतों वाला नाम

हम अल्लाह त़ज़ाला की मुहब्बत को अपने लिए ताज़िम कर
से फिर देखिए उसके असराल ज़िदिग़ में क्या होते हैं। याद रखिए
हमारा मशाइँख की सोहबत में आने का मक़सद अल्लाह त़ज़ाला
का ज़िद़त सीखना और पाबंदी के साथ करना है। अल्लाह का नाम
बड़ी बरकतों वाला है। अल्लाह त़ज़ाला फरमाते हैं ﴿۶۳﴾
वर्केन्द्र वाला नाम है तेरे रब का। लिहाज़ा जो आप तीन
दिन यहाँ गुज़ारिये या उलमाज़ जो बक़िया दिन गुज़ारिये। इस दौरान
सियासत की या दुनियादारी की कोई वाल ज़बान पर न हो।
हालाते हाज़ीरा पर तब्सिरा मंत कीजिए बल्कि इन दिनों को आप
अमानत समझिए, अपने वक़्त को अल्लाह की याद में लगा
लिए। हर वक़्त दिल में अल्लाह का ध्यान हो और मुरक़ब़ा
कीजिए, अपने वक्त में ज्यादा से ज्यादा अल्लाह ताज्जुला की तरफ तकज्जेह रखने की कोशिश कीजिए ताकि इन दिनों में अल्लाह ताज्जुला हमारे दिल की गिरह को खोल दें और वापस जाने से पहले-पहले अल्लाह ताज्जुला हमारे दिलों में अपनी मुहब्बत अता फ़र्माएं।

“अलिफ़” और “बा” के मारिफ़

एक इल्मी बात अभी ज्यादा में आई, तब तक बात के लिए फायदेमंद है। देखिए “अलिफ़” के बारे में कहते हैं कि खड़ी खड़ी होती है “बा” के बारे में कहते हैं कि लेटी लेटी होती है। “अलिफ़” खड़ी खड़ी थी और “बा” लेटी लेटी थी लेकिन यहूद से किसी आरिफ़ ने दो नुक्ते निकाले हैं। उसने कहा अलिफ़ जो खड़ी होती है वह ख़ाली होती है, उस पर नुक्ता नहीं होता अलिफ़ ख़ाली होती है तो उसमें नुक्ता निकाला कि जिस के की जिंदगी के अंदर तकबुर होगा वह उल्लूम व मारिफ़ से ख़ाली रह जाएगा।

‘बा’ के बारे में कहते हैं कि यह लेटी लेटी होती है और लिखा भी ऐसा ही नहीं होता है लेकिन एक अल्लाह के लिए यह तब बात है कि जब ‘बा’ को बिस्मिल्लाह में लिखते हैं तो आपने देखा कि ‘बा’ को ज़रा ऊँचा करके लिखते हैं, बिस्मिल्लाह की शुरु की ‘बा’ के लिखने का अंदाज़ बदल जाता है, यह लेटी लेटी नहीं होती बल्कि इस के साथ ‘बा’ फ़र्माएं तो अल्लाह ताज्जुला ने ‘बा’ के हफ़्फ़ की शान बढ़ा दी और उसको बुलंदी अता फ़र्माएं। ऐ सोमन! अगर तेरे दिल को अल्लाह के नाम के साथ निस्तब्ध होगी फिर अल्लाह ताज्जुला तुझे क्यों नहीं बुलंदी अता फ़र्माएं? लेटा हुआ हफ़्फ़ अगर
अल्लाह के नाम के साथ लग जाता है अल्लाह उसको बुलंदी के देते हैं तो हम भी आजिज़ मिस्कीन बदे हैं अगर अल्लाह ताआला के नाम के साथ नत्थी हो जाएगे तो अल्लाह ताआला हमें भी बुलंदी अता फर्माएंगे। दुआ है कि आपका जितना वक़्त भी यहं है अल्लाह ताआला आपको ज़िक्र व अज़्कार में गुज़रने की तैफ़ीक़ अता फर्माएं। एक दूसरे के साथ कम से कम बात कीजिए, कोशिश कीजिए कि आपका वक़्त ज़़िक्र व अज़्कार में गुज़रे।

(वाह दुआ)